

”بجاری عشق و محبت کی آفات“

اس کتاب کے مؤلف نے تعلق ایک ایسے ایسے کتاب ہوا ہے  
نورانیل کے ایک نامور مؤلف ہوا ہے

# شیطان کی چیر

مصنف

مفتی محمد اکمل مدنی







مجازی عشق و محبت کے شکار زخمی قلوب  
کے لئے مرہم لاجواب

# شیطانی چکر

مؤلف

حضرت علامہ محمد اکمل عطا قادری عطاری مدظلہ العالی

ناشر

مکتبہ اعلیٰ حضرت، لاہور، پاکستان

الصلاة والسلام على من لا نبي بعده وعلی اللہ واصحابہ باحیث اللہ

### ﴿جمہ حقوق بحق ناشر محفوظ ہیں﴾

|           |       |                           |
|-----------|-------|---------------------------|
| نام کتاب  | _____ | شیطانی چکر                |
| مؤلف      | _____ | علامہ محمد اکمل عطا قادری |
| صفحات     | _____ | عطاری مدظلہ العالی        |
| ہدیہ      | _____ | 208                       |
| اشاعت اول | _____ | اوپے                      |
|           | _____ | اگست 2000                 |

ناشر: مکتبہ اعلیٰ حضرت سرانے مغل جنازہ گاہ مزنگ لاہور

﴿لاہور اور کراچی میں ہماری کتب ملنے کے چند پتے﴾

|   |   |
|---|---|
| سنی کتب خانہ ستا ہوٹل دربار مارکیٹ لاہور                                | پروگریسو بکس ۴۰ اردو بازار لاہور              |
| رضاورا کٹی ہاؤس دربار مارکیٹ لاہور                                      | مکتبہ زاویہ ستا ہوٹل دربار مارکیٹ لاہور       |
| اسلام بک ڈپونگنج بخش روڈ لاہور  | مکتبہ المدینہ شہید مسجد کھارادر کراچی         |
| مکتبہ المدینہ دربار مارکیٹ لاہور  | ضیاء الدین پیلی کیشنز شہید مسجد کھارادر کراچی |
| ضیاء القرآن پیلی کیشنز گنج بخش روڈ لاہور                                | مکتبہ المدینہ امین پور بازار فیصل آباد        |
| اشال مکتبہ اعلیٰ حضرت؛ ہر جمعرات بعد نماز عشاء سوڈیوال اجتماع ﴿لاہور﴾   |   |
| اشال مکتبہ اعلیٰ حضرت؛ ہر ہفتہ بعد نماز مغرب فیضان مدینہ اجتماع ﴿کراچی﴾ |   |

| صفحہ نمبر | ﴿فہرست﴾                                 | نمبر شمار |
|-----------|---|-----------|
| 12        | ..... پہلے اسے پڑھئے                    | 1         |
| 14        | ..... غفلت کا شکار دو بڑے گروہ          | 2         |
| 17        | مجازی عشق و محبت شیطانی چکر<br>کیوں؟    | 3         |
| 17        | ..... محبت و عشق کی تعریف               | 4         |
| 18        | ..... عشق و محبت کی اقسام               | 5         |
| 18        | ..... غرض کے اعتبار سے اقسام            | 6         |
| 18        | ..... محبوب کے اعتبار سے اقسام          | 7         |
|           | (شیطانی چکر کی تباہ کاریاں)             | 8         |
| 22        | ﴿پہلا نقصان﴾                            | 9         |
| 25        | ﴿دوسرا نقصان﴾                           | 10        |
| 27        | ..... ☆ گھروں کو کبھی نہ آتی            | 11        |
| 27        | ..... ☆ اپنے بازو چبانے والا برہنہ عاشق | 12        |
| 28        | ..... ☆ محبوب کی بے رخی سے موت          | 13        |
| 29        | ..... ☆ اللہ کے قرب کی خواہش مند لڑکی   | 14        |
| 33        | ﴿تیسرا نقصان﴾                           | 15        |

|    |  |    |
|----|--|----|
| 33 | ﴿چوتھا نقصان﴾                          | 16 |
| 34 | ﴿پانچواں نقصان﴾                        | 17 |
| 34 | (۱) غیبت، چغلی، الزام تراشی، حسد       | 18 |
| 36 | (۲) بدنگاہی کا وبال.....               | 19 |
| 38 | چہرہ سیاہ پڑ گیا.....                  | 20 |
| 39 | (۳) زناء میں مبتلا ہونا.....           | 21 |
| 41 | عابد، کافر ہو گیا.....                 | 22 |
| 45 | (۴) قتل و غارت.....                    | 23 |
| 49 | ☆ زندہ دفن کر دیا.....                 | 24 |
| 50 | ☆ صحرا والا گناہ.....                  | 25 |
| 52 | ☆ تدبیر الٹی پڑ گئی.....               | 26 |
| 53 | (۵) خود کشی.....                       | 27 |
| 54 | ☆ تیرپیٹ میں گھسائے.....               | 28 |
| 56 | (۶) اپنے ہاتھ سے غسل واجب کرنا.....    | 29 |
| 57 | (۷) جھوٹ اور منافقت میں گرفتار ہونا... | 30 |
| 59 | ﴿چھٹا نقصان﴾                           | 31 |
| 60 | ☆ باپ کو قتل کروادیا.....              | 32 |

|    |  |    |
|----|--|----|
| 62 | ☆ باپ کو زہر دے دیا.....                 | 33 |
| 67 | ﴿ساتواں نقصان﴾                           | 34 |
| 68 | ☆ عاشق کافر اور محبوب مسلمان ہو گیا..... | 35 |
| 69 | ☆ مؤذن عیسائی ہو گیا.....                | 36 |
| 70 | ﴿آٹھواں نقصان﴾                           | 37 |
| 71 | ﴿نواں نقصان﴾                             | 38 |
| 72 | خیالات کی پانچ اقسام.....                | 39 |
| 75 | ﴿دسواں نقصان﴾                            | 40 |
| 76 | ﴿گیارہواں نقصان﴾                         | 41 |
| 78 | ﴿بارہواں نقصان﴾                          | 42 |
| 80 | ﴿تیرہواں نقصان﴾                          | 43 |
|    | ﴿شیطانی چکر کے اسباب﴾                    | 44 |
| 84 | پہلا سبب اور اس کا حل.....               | 45 |
| 84 | دوسرا سبب اور اس کا حل.....              | 46 |
| 86 | تیسرا سبب اور اس کا حل.....              | 47 |
| 87 | چوتھا سبب اور اس کا حل.....              | 48 |
| 88 | پانچواں سبب اور اس کا حل.....            | 49 |

|     |  |    |
|-----|--|----|
| 89  | ..... چھٹا سبب اور اس کا حل                    | 50 |
| 90  | ..... ساتواں سبب اور اس کا حل                  | 51 |
|     | شیطانہی چکر کا علاج                            | 52 |
| 91  | پہلا علاج                                      | 53 |
| 92  | دوسرا علاج                                     | 54 |
| 92  | ..... ☆ پیارے آقا ﷺ کا فیصلہ                   | 55 |
| 93  | ..... ☆ حضرت علی رضی اللہ عنہ کا فیصلہ         | 56 |
| 94  | ..... ☆ تاجر نے زندگی بچالی                    | 57 |
| 95  | ..... ☆ حضرت ابو بکر رضی اللہ عنہ کا عمل       | 58 |
| 96  | ..... ☆ حضرت عثمان رضی اللہ عنہ کا فیصلہ       | 59 |
| 96  | ..... ☆ حضرت علی رضی اللہ عنہ کا ایک اور فیصلہ | 60 |
| 98  | ..... ☆ حضرت امیر معاویہ رضی اللہ عنہ کا فیصلہ | 61 |
| 98  | ..... ☆ بڑی نیکی                               | 62 |
| 99  | ..... ☆ شہوت سے نجات ممکن نہیں                 | 63 |
| 100 | ..... ☆ عاشق کے لئے شرعی حکم                   | 64 |
| 102 | تیسرا علاج                                     | 65 |
| 102 | چوتھا علاج                                     | 66 |



|     |   |    |
|-----|---|----|
| 108 | ☆ میں انگوٹھے کو دیکھتا رہا ہوں.....                | 67 |
| 108 | ☆ آنکھ باہر نکال دی.....                            | 68 |
| 110 | ☆ نظر کی حفاظت سے درجہ ولایت.....                   | 69 |
| 112 | پانچواں علاج  | 70 |
| 113 | ☆ کفل کی مغفرت ہو گئی.....                          | 71 |
| 114 | ☆ فاحشہ کی توبہ.....                                | 72 |
| 115 | ☆ اپنا ہاتھ جلادیا.....                             | 73 |
| 116 | ☆ جان داؤ پر لگادی.....                             | 74 |
| 118 | ☆ عورت کا فریب.....                                 | 75 |
| 118 | ☆ اسکے کے علاوہ میرے لئے کوئی اور علاج بھی ہے؟..... | 76 |
| 121 | ☆ خوشبودار بزرگ.....                                | 77 |
| 122 | ☆ حضرت یوسف علیہ السلام کی تشریف آوری.....          | 78 |
| 122 | ☆ چالیس سال کی کمائی.....                           | 79 |
| 123 | ☆ دو جنتیں.....                                     | 80 |
| 125 | ☆ متقی نوجوان.....                                  | 81 |
| 126 | ☆ عجیب معاملہ.....                                  | 82 |
| 127 | ☆ نیک اعمال کا وسیلہ.....                           | 83 |

|     |                                      |     |
|-----|--------------------------------------|-----|
| 129 | ☆ بادل کا سایہ.....                  | 84  |
| 130 | ☆ لیکن ایک دروازہ رہ گیا.....        | 85  |
| 130 | ☆ کیا اللہ عزوجل بھی سو رہا ہے؟..... | 86  |
| 131 | ☆ تمام گناہ معاف.....                | 87  |
| 132 | ☆ آگ نے جلا دیا.....                 | 88  |
| 132 | ☆ اپنا ہاتھ جلا دیا.....             | 89  |
| 133 | ☆ شیر کبھی داخل نہ ہوگا.....         | 90  |
| 134 | چھٹا علاج                            | 91  |
| 136 | ☆ دو کھجور کی گھٹلیاں.....           | 92  |
| 138 | ☆ حوریں ہاتھ باندھے کھڑی ہیں.....    | 93  |
| 141 | ☆ اللہ تعالیٰ کی محبت کا ثمر.....    | 94  |
| 141 | ☆ خوابِ غفلت سے بیدار ہو!.....       | 95  |
| 142 | ☆ عام جنتی کا انعام.....             | 96  |
| 143 | ☆ نو مسلم جنت میں.....               | 97  |
| 145 | ☆ شہزادے کی توبہ.....                | 98  |
| 149 | ☆ میں عبادت کیوں نہ کروں؟.....       | 99  |
| 149 | ساتواں علاج                          | 100 |

|     |  |     |
|-----|--|-----|
| 152 | ☆ مردہ ہاتھ چبارہا تھا.....            | 101 |
| 152 | ☆ تمام بدن میں کیلیں.....              | 102 |
| 152 | ☆ ہائے میں نماز پڑھتا تھا.....         | 103 |
| 153 | ☆ نہ پگھلنے والی کیلیں.....            | 104 |
| 153 | ☆ کالے رنگ کا آدمی.....                | 105 |
| 153 | ☆ کفن چوراندھا ہو گیا.....             | 106 |
| 154 | ☆ آہ، آہ کی آوازیں.....                | 107 |
| 155 | آٹھواں علاج                            | 108 |
| 156 | ☆ اتباعِ نفس کی مذمت.....              | 109 |
| 157 | ☆ مخالفتِ نفس کی فضیلت.....            | 110 |
| 157 | ☆ بزرگ ہوا میں.....                    | 111 |
| 158 | ☆ اپنی مرضی، اللہ کی مرضی کے تابع..... | 112 |
| 158 | ☆ حور کا مھر.....                      | 113 |
| 159 | نواں علاج                              | 114 |
| 160 | دسواں علاج                             | 115 |
| 163 | ☆ کوچ کے لئے تیار قافلہ.....           | 116 |
| 163 | ☆ مُردوں کی تمنا.....                  | 117 |



|     |   |     |
|-----|---|-----|
| 164 | ☆ آپ کو بھی ایک دن مرنا ہے.....           | 118 |
| 165 | گیارہواں علاج                             | 119 |
| 166 | ☆ اسکی تجبیز و تکفین فرشتے کریں گے.....   | 120 |
| 167 | ☆ پاگل کنیز.....                          | 121 |
| 168 | ☆ اپنے پروردگار عزوجل سے محبت کر.....     | 122 |
| 169 | ☆ باندی جنت میں.....                      | 123 |
| 174 | بارہواں علاج                              | 124 |
| 175 | ☆ عقل مند شخص کی نصیحت.....               | 125 |
| 177 | تیرہواں علاج                              | 126 |
| 183 | مسلمان بہنوں کی خدمت میں چند<br>معروضات   | 127 |
| 186 | ☆ جس سے محبت کی وہ قبول کیجئے.....        | 128 |
| 189 | متعلقین کی خدمت میں عرض                   | 129 |
| 190 | ☆ دل بیمار ہو گیا.....                    | 130 |
| 191 | ☆ شفقت کے باعث عشق سے توبہ کر لی.....     | 131 |
| 192 | ☆ پانی مٹی سے بنی ہوئی چیزیں چھوڑ دے..... | 132 |
| 192 | ☆ کیا ابھی توبہ کا وقت نہیں آیا؟.....     | 133 |

|     |   |     |
|-----|---|-----|
| 193 | ☆ تو نے گندگی سے محبت کی ہے.....                  | 134 |
| 194 | ☆ پہلے چالیس دن باجماعت نماز پڑھو.....            | 135 |
| 195 | شادی شدہ خواتین و حضرات کی<br>خدمت میں خصوصی عرض  | 136 |
| 197 | مفلس کون؟.....                                    | 137 |
| 201 | دوسروں کا گہرا جاڑنے والے عشاق کی<br>خدمت میں عرض | 138 |
| 202 | ☆ بادشاہ گونگا بہرہ ہو گیا.....                   | 139 |
| 203 | حرف آخر.....                                      | 140 |
| 204 | ☆ افسوس کی بات ہے.....                            | 141 |
| 205 | ☆ قاتل کی مغفرت ہو گئی.....                       | 142 |
| 208 | ☆ خصوصی توجہ فرمائیے                              | 143 |

## ”پہلے اسے پڑھئے“

”مجازی عشق و محبت“ نے تقریباً ہر دور میں بے شمار لوگوں کو ہزار ہا

قسم کے فتنوں میں مبتلاء کیا ہے، ہمارے موجودہ مسلمان معاشرے میں بھی اس کی ”کرم نوازیاں“ کسی پر مخفی نہیں۔ ہماری نوجوان نسل خاص طور پر اس فتنے کا بری طرح شکار ہو چکی ہے اور نفس و شیطان نے اس چکر میں مبتلاء کروا کر لاکھوں لوگوں کی آخرت و ایمان کو تباہ و برباد کر ڈالا ہے۔

اس قابل توجہ صورت حال کو دیکھتے ہوئے حسب سابق مکتبہ اعلیٰ حضرت

رضی اللہ عنہ نے اس بارے میں بھی تحریری شکل میں اصلاحی کوشش کے لئے ”علامہ محمد اکمل عطا قادری عطاری مدظلہ العالی“ کی خدمت میں درخواست پیش کی، جسے آپ نے اپنی شدید مصروفیات کے باوجود قبول فرمایا اور کم و بیش ”بارہ (12) دن“ کی مسلسل محنت کے بعد تقریباً ﴿208﴾ صفحات پر مشتمل ایک لاجواب کتاب مرتب فرما کر احسانِ عظیم فرمایا۔

اس کتاب لاجواب میں اولاً ”عشق و محبت“ کی تعریف اور ان کی اقسام کا بیان

ہے۔ پھر ان کی ”تباہ کاریاں اور اسباب“ کو مفصل ذکر کیا گیا ہے اور آخر میں اس سے محفوظ رہنے یا اپنی جان چھڑانے کے لئے ”علاج“ کے عنوان سے قابل حفظ باتیں تحریر فرمائی گئی ہیں۔ ان شاء اللہ تعالیٰ مطالعہ فرمانے والے خواتین و حضرات اسے ”موضوع سے متعلق معلومات کا خزانہ“ پائیں گے۔

امید ہے کہ ایک بار اس کتاب کو شروع کر لینے کے بعد ”ہر لمحہ نئی نئی دلچسپ

و پزیرا کیفیات کے وارد ہونے کے باعث“ بہد کرنے کو دل نہیں چاہے گا اور ان شاء اللہ



عزوجل جس مسلمان بھائی یا بہن کا دل زندہ ہوا، وہ اس کے ایک ایک لفظ سے ہدایت و عبرت کے بے شمار مدنی پھول چننے کی سعادت حاصل کرے گا اور غالب گمان ہے کہ اس کی عملی زندگی میں کچھ نہ کچھ تبدیلی، ضرور واقع ہوگی۔

مطالعہ فرمانے والے قارئین کرام کی خدمت میں مؤدبانہ گزارش ہے کہ اگر آپ بعد مطالعہ محسوس فرمائیں کہ یہ کتاب آپ کے اطراف میں رہنے والے ”کسی مسلمان بھائی یا بہن“ کی اصلاح کا سبب بن سکتی ہے تو ان تک پہنچانے میں ذرہ برابر سستی نہ کیجئے، اگر آپ کے شفقت فرمانے سے کسی مسلمان کا دل چوٹ کھا گیا اور اس نے اپنے گناہوں سے توبہ کر لی تو ان شاء اللہ تعالیٰ آپ کی نجات کے لئے ایک اور ذریعہ معروض وجود میں آجائے گا۔

اللہ تبارک و تعالیٰ اس کتاب کو ہر پڑھنے والے، مؤلف اور مکتبہ اعلیٰ حضرت کے اراکین کے لئے باعثِ نجات اور وجہِ بلند کی درجات بنائے۔

امین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

خادم مکتبہ اعلیٰ حضرت رضی اللہ عنہ

محمد اجمل قادری عطاری

۳ ربیع الثانی ۱۴۲۱ھ

بمطابق 6 جولائی 2000ء

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

الصَّلٰوةَ وَالسَّلَامَ عَلٰی سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ الطَّيِّبِينَ الطَّاهِرِينَ

ہر ذی شعور مسلمان خوب اچھی طرح جانتا ہے کہ آخرت کی تیاری کے لئے، اس موجودہ زندگی کے علاوہ مذہبِ اسلام میں کسی اور زندگی کے دئے جانے کا کوئی تصور موجود نہیں، لہذا سعادت مندی کی علامت و تقاضا یہی ہے کہ ”اپنی اس مختصر ترین زندگی کا ایک لمحہ اللہ تعالیٰ اور اس کے محبوب ﷺ کی اطاعت اور نفس و شیطان کی مخالفت میں گزارا جائے۔“

لیکن اس حقیقت کا اعتراف کرنے کے باوجود، انسان بتقاضائے بشریت، اکثر و بیشتر غفلت کی جانب مائل ہو کر، مختلف اسباب کی وجہ سے اپنے لئے، ایسے اعمال کا انتخاب کر بیٹھتا ہے کہ جن کے باعث نہ صرف اس کی آخرت سخت خطرے میں پڑ جاتی ہے بلکہ وہ دنیاوی لحاظ سے بھی سراسر خسارے میں رہتا ہے۔

اب اس مقام پر مذکورہ بالا اشخاص دو بڑے بڑے گروہوں میں تقسیم ہو جاتے ہیں۔

(i) ان میں سے بعض تو وہ ہوتے ہیں کہ جو اس بات کو بخوبی سمجھتے ہیں کہ جس چیز کو ہم نے اپنے لئے پسند کرنے کی حماقت کی ہے، اس میں ہمارا اپنا ہی نقصان ہے۔  
(ii) اور بعض ایسے ہوتے ہیں کہ جو سستی و غفلت اور علمِ دین سے محرومی کے باعث اپنی غلطی تسلیم کرنے اور باعثِ ہلاکت اعمال کو نقصان کا سبب ماننے کے لئے ہی تیار نہیں ہوتے، بلکہ وہ اسے بالکل درست، بلکہ بعض اوقات تو ان کی ادائیگی کو اپنا کمال تصور کرتے ہیں۔

اگر اللہ عزوجل کی کرم نوازی شامل حال نہ ہو تو یہ دوسری قسم کے حضرات، عموماً دنیا والوں کے لئے نشانِ عبرت بن جاتے ہیں اور بعض اوقات تو انھیں اپنے

ایمان سے بھی ہاتھ دھونے پڑ جاتے ہیں۔

پہلی قسم کے حضرات پھر دو بڑی جماعتوں میں تقسیم ہو جاتے ہیں۔

(i) ان میں سے بعض تو اس نقصان کو محسوس کر کے ”ہمت و جرأت اور اللہ

تعالیٰ کی عنایت“ کے سبب بربادی کا باعث بننے والے اعمال سے ”تباہی و ہلاکت کا شکار ہونے سے پہلے ہی“ توبہ و چھٹکارا حاصل کرنے میں کامیاب ہو جاتے ہیں۔

(ii) جب کہ دوسرے بعض ان افعال و اعمال میں پوشیدہ ”لذت یا دنیاوی

منافع“ کے ”نشے“ کے اتنے زیادہ عادی ہو چکے ہوتے ہیں کہ سب کچھ جاننے کے باوجود خود کو حالات کے سپرد کر کے اپنی آخرت اور دنیا والوں کی طرف سے بالکل آنکھیں بند کر لیتے ہیں۔ نتیجتاً ان کا انجام بھی ما قبل مذکورہ دوسری قسم کے لوگوں کی مانند ہی ہوتا ہے۔

دنیا میں خسارے اور آخرت کی ذلت و رسوائی میں مبتلاء کروانے والے اعمال

میں سے ایک عمل ”مجازی عشق و محبت“ میں گرفتار ہو جانا بھی ہے۔ اگر ”مجازی عشق و محبت“ کو بطور مثال سامنے رکھ کر ذکر کردہ اقسام کا جائزہ لیا جائے تو غالباً مذکورہ تمام گفتگو ذرا زیادہ بہتر انداز میں سمجھ میں آسکے گی۔ چنانچہ:

(1) بعض تو ”معاشرے میں ہونے والے پے درپے عبرت ناک واقعات“

کی وجہ سے، اسے اپنے لئے زبردست نقصان و خسارے کا سبب سمجھتے ہیں۔ لیکن.....

(2) بعض ایسے بھی ہیں کہ جو اپنی نادانی و جہالت کی بناء پر اسے درست و

صحیح، بلکہ ”عبادت“ کا نام دیتے ہیں، اور بطور دلیل کسی آوارہ ذہن کا تخلیق کردہ یہ شعر پڑھ کر خود کو جھوٹی تسلیاں دیتے رہتے ہیں کہ،

پیار کرنا تو اک عبادت ہے

پیار کرنا کوئی گناہ تو نہیں



یہ ”پریشان حال گروہ“ کسی بھی صورت میں اسے ”غلط و خلاف شرع و باعثِ ہلاکت و نقصان کام“ تسلیم کرنے کے لئے تیار نظر نہیں آتا، بلکہ جنس مخالف کو اپنی طرف مائل کر لینا ان کے نزدیک ایک بہت بڑا کارنامہ اور لائقِ تحسین امر ہے۔ نتیجتاً جیسا کہ پہلے ذکر کیا جا چکا ہے کہ اگر اللہ تعالیٰ کا کریم شامل حال نہ ہو تو ایسے لوگ عموماً، دنیا کے لئے باعثِ عبرت بن جاتے ہیں اور بعض اوقات اس ”شیطانی چکر“ کی وجہ سے ”کفر“ تک جا پہنچتے ہیں۔ (جیسا کہ عنقریب بیان کیا جائے گا۔ ان شاء اللہ تعالیٰ)

پھر حسبِ بیانِ سابق، پہلی قسم (یعنی اپنی حماقت کے نقصان دہ ہونے کو تسلیم کر لینے) والے لوگ، دو طرح کے ہوتے ہیں۔

(1) بعض وہ کہ اسے ایک برا فعل تصور کر کے اور اس کے نقصانات کا اندازہ لگا کر توبہ کی توفیق حاصل کر لیتے ہیں۔

(2) جبکہ اکثر اس ”فعلِ قبیح کی آفات جاننے کے باوجود حصولِ لذت اور نفس کی خواہشِ شدید کے باعث جان چھڑانے کی ہمت سے خود کو خالی پاتے ہیں۔ بطورِ نتیجہ ان کا انجام بھی ذکر کردہ ”پریشان حال گروپ“ سے مختلف نہیں ہوتا۔

ان اقسام کے بارے میں گہری نظر سے مطالعہ کرنے کے بعد، ہمیں بھی اپنے بارے میں خوب ٹھنڈے دل سے غور کرنا چاہیے کہ ”خدا نخواستہ ہمارا تعلق مذکورہ اقسام میں بیان کردہ ان حضرات سے تو نہیں کہ جن کے بارے میں ”دنیا کے لئے نشانِ عبرت بن جانے اور ایمان کے برباد ہو جانے“ کے سلسلے میں خدشے کا اظہار کیا گیا ہے؟.....

اگر آپ کو اس سوال کا جواب ”قلبی و زبانی اقرار“ کی صورت میں حاصل ہو تو پھر ہمارے مخلصانہ مشورے کے مطابق اس ”شیطانی چکر“ سے خود کو بچانے کی بھرپور کوشش کیجئے، اس سے پہلے پہلے کہ ”آپ واپس آنا چاہیں لیکن آپ کو واپسی کا راستہ نہ

ملے اور پھر شدید غم و پچھتاوے آپ کا مقدر بن کر ”دنیا میں بے سکونی اور آخرت میں ذلت و رسوائی“ کا سبب عظیم واقع ہو جائیں۔

”مجازی عشق و محبت“ کو ”شیطانی چکر“ کا نام کیوں دیا گیا ہے؟

اس کی وجہ سے ”دنیا و آخرت“ میں انسان بے شمار آفتوں کا شکار ”کیوں اور کس طرح“ ہو جاتا ہے؟ اور یہ عمل اللہ عزوجل اور اس کے محبوب ﷺ کی نافرمانی میں کیوں شمار کیا جاتا ہے؟

ان تمام سوالات کا بالتفصیل جواب جاننے کے لئے ہمیں درج ذیل مضمون کو ”خوب غور و تفکر“ کے ساتھ پڑھنا پڑے گا۔ اللہ تبارک و تعالیٰ کی رحمت سے امید قوی ہے کہ ان سطور کا بغور مطالعہ، بے شمار معلومات کے حصول، کثیر گناہوں سے بذات خود محفوظ رہنے یا دوسروں کو محفوظ رکھنے اور اللہ تعالیٰ اور اس کے پیارے محبوب ﷺ کی بارگاہ میں مقبول بننے میں بے حد مددگار ثابت ہوگا۔

اس سلسلے میں سب سے پہلے محبت اور عشق کی تعریف و اقسام اور ان کے بارے میں چند ضروری باتوں کا جاننا بہت مفید رہے گا۔

**محبت کی تعریف:**۔ امام راغب اصفہانی رضی اللہ عنہ ارشاد فرماتے ہیں۔

”إِرَادَةُ مَا تَرَاهُ أَوْ تَظُنُّهُ خَيْرًا ☆ یعنی اس چیز کی خواہش کرنا کہ

جسے تو اچھا و بہتر گمان کرتا ہے۔“ (مفردات امام راغب رحمۃ اللہ علیہ)

**وضاحت:**۔ تعریف میں لفظ خواہش پر غور کریں تو معلوم ہوگا کہ محبت دراصل ہمارے دل کی ایک کیفیت کا نام ہے کیونکہ جب انسان کے دل کو کوئی چیز اچھی لگتی ہے تو وہ اس کے حصول کے لئے بے تاب ہو جاتا ہے اور بار بار انسان سے اس کا مطالبہ کرتا ہے اور یہی مطالبہ ”خواہش“ کہلاتا ہے، پس نتیجہ یہ نکلا کہ ”دل کے کسی پسندیدہ شے کی طرف مائل ہو جانے کا نام ہی محبت ہے۔“

**عشق کی تعریف:** حضرت علامہ ابن منظور رحمہ اللہ علیہ ارشاد فرماتے ہیں۔

”الْعِشْقُ فَرَطُ الْحُبِّ۔ یعنی محبت میں حد سے تجاوز کرنا عشق ہے۔“ (لسان العرب۔ جلد ۹)

**وضاحت:** معلوم ہوا کہ جب دل کسی کی جانب مائل ہونے میں حد سے تجاوز کر جائے تو اس میلان کو ”عشق“ کہتے ہیں۔

**خلاصہ:** مذکورہ بیان کا خلاصہ یہ ہوا کہ جب تک دل کسی کی طرف مائل ہونے میں حد سے تجاوز نہ کرے تو اس میلان کو ”محبت“ کہتے ہیں اور اگر اس میلان میں بہت زیادہ شدت پیدا ہو جائے، تو اسے ”عشق“ کا نام دیا جاتا ہے۔

## عشق و محبت کی اقسام:

عشق و محبت کی تقسیم دو طریقے سے کی جاتی ہے۔

(1) غرض کے اعتبار سے۔ (2) محبوب کے اعتبار سے۔

(1) غرض کے اعتبار سے عشق و محبت کی اقسام:

انسان کے دل کا مختلف چیزوں کی طرف مائل ہونا

مختلف اغراض پر مبنی ہوتا ہے، اس اعتبار سے عشق و محبت کی تین قسمیں ہیں۔

(i) لذت کی غرض سے: جیسے کسی مرد کا عورت یا بے ریش لڑکوں سے

عشق و محبت کرنا۔

(ii) دنیاوی منافع کی غرض سے: جیسے انسان کا اپنے کاروبار و مال وغیرہ

سے عشق و محبت رکھنا۔

(iii) اللہ تعالیٰ کی رضا کے حصول کی غرض سے: جیسے ہمارا انبیاءِ عظیم

السلام و صحابہ و اہل بیت اطہار رضی اللہ عنہم و اولیائے کاملین رحمہم اللہ اور اہل علم حضرات سے

عشق و محبت رکھنا۔

(2) محبوب کے اعتبار سے عشق و محبت کی تقسیم:

اس اعتبار سے ان کی چار اقسام ہیں۔

(۱) واجب۔ (۲) مستحب۔ (۳) مباح۔ (۴) ناجائز و حرام  
(۱) واجب:-

یعنی اس عشق و محبت کا اختیار کرنا ہر مومن پر لازم و ضروری

ہے۔ جیسے اللہ تعالیٰ اور اسکے محبوب ﷺ سے محبت۔

سوال:- ابھی کچھ دیر پہلے تعریفِ محبت میں کہا گیا کہ ”یہ کسی کی طرف دل کے مائل ہونے کا نام ہے۔“ اور یہ بات کسی پر پوشیدہ نہیں کہ دل کا مائل ہونا انسان کی قدرت و اختیار سے باہر ہے۔ اور جب ایک چیز انسان کی قدرت و اختیار سے باہر ہے تو پھر اس چیز کے حصول کو واجب قرار دینا کس طرح درست ہو سکتا ہے؟

جواب:- یہاں اس حصولِ محبت کے واجب ہونے کا مطلب یہ ہے کہ ”انسان ایسے اعمال و افعال“ اختیار کرے کہ جو اس کے قلبی میلان اور اس کی شدت پر دلالت کرنے والے ہوں، جیسے اللہ تعالیٰ اور اس کے حبیب ﷺ کے حقوق کو سب سے مقدم رکھنا، فرض و واجب کردہ عبادات کو ان کی تمام شرائط کے ساتھ ”خوش دلی“ کے ساتھ ادا کرنا یا ”پیارے آقا ﷺ کی سنتوں پر استقامت کے ساتھ عمل کی سعادت حاصل کرنا۔“

(۲) مستحب:-

یعنی یہ عشق و محبت لازم و ضروری تو نہیں، ہاں باعثِ اجر و ثواب

۱۔ یاد رکھئے کہ اللہ تبارک و تعالیٰ کے لئے عاشق یا معشوق کے لفظ استعمال کرنا ناجائز ہے۔ اعلیٰ حضرت رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں ”معنی عشق اللہ عزوجل کے حق میں محالِ قطعی ہے اور ایسا لفظ بے درودِ ثامت شرعی حضرت عزت کی شان میں بولنا ممنوعِ قطعی ہے (فتاویٰ رضویہ۔ جلد ۱۱۔ نصف اول۔ صفحہ ۶۱) ہاں! محبت کا لفظ اللہ تعالیٰ کے لئے استعمال کرنا جائز ہے، چنانچہ یوں کہہ سکتے ہیں کہ ”وہ اپنے محبوب سے محبت فرماتا ہے یا ہم اس سے محبت کرتے ہیں۔“

ضرور ہے۔ جیسے دینی دوستوں سے اللہ تعالیٰ کی رضا کی خاطر عشق و محبت رکھنا۔

ملابینہ :- اس محبت میں اخلاص کی علامت یہ ہے کہ اس کا آغاز دورِ میان و انجام ”گناہ“ سے خالی ہو۔

(۳) مباح :-

یعنی جس کا کرنا، نہ گناہ، نہ ثواب۔ جیسے اپنے پالتو جانوروں سے عشق و محبت کرنا۔

(۴) ناجائز و ممنوع :-

یعنی ایسا عشق و محبت جو کسی حرام و ناجائز شے سے ہو جیسے سو دور شوت سے عشق و محبت ”یا“ وہ عشق و محبت جو کسی ایسے شخص سے ہو کہ جسے اللہ تعالیٰ اور اس کے حبیب ﷺ ناپسند فرماتے ہوں جیسے فاسق و فاجر اور بد مذہبوں سے عشق و محبت ”یا“ ایسا عشق و محبت جو گناہوں اور اللہ تعالیٰ اور اس کے پیارے رسول ﷺ کی نافرمانی میں مبتلاء کروانے کا سبب بن جائے۔ جیسے نامحرم عورتوں اور بے ریش لڑکوں سے عشق و محبت کرنا۔

یہاں تک بیان کردہ تفصیل کے بعد یقیناً آپ بھی اس حقیقت کو تسلیم فرمائیں گے کہ ”فی نفسہ عشق و محبت“ کو اس وقت تک اچھا یا برا نہیں کہا جاسکتا، جب تک کہ ان کی نسبت کسی ایسی چیز کی طرف نہ کی جائے کہ جس سے انسان ”عشق و محبت“ کا دعویٰ کرتا ہے۔ اس محبوب شے کے معلوم ہو جانے کے بعد ہی کسی انسان کے لئے ان کے فائدے یا نقصان، ان کے نتیجے میں ثواب یا گناہ کے حصول، دنیا و آخرت میں عزت یا ذلت کے مقدر ہونے اور اللہ تعالیٰ و سید الانبیاء ﷺ کی بارگاہ میں مقبول یا مردود ہونے کا کوئی حکم لگایا جاسکتا ہے۔

ما قبل مذکورہ اقسام میں سے دو اقسام زیادہ اہمیت کی حامل ہیں۔ جنہیں



عموماً درج ذیل ناموں سے جانا جاتا ہے۔

(i) عشق و محبت حقیقی (ii) عشق و محبت مجازی

(i) عشق و محبت حقیقی :-

یعنی عشق الہی عزوجل۔ (اس قسم میں ہر وہ عشق و محبت داخل ہو

گی جسے اللہ تعالیٰ کی رضا کی خاطر کیا جائے، چاہے وہ انبیاء علیہم السلام سے ہو یا دیگر مومنین و مومنات سے۔)

(ii) عشق و محبت مجازی :-

یعنی دنیوی انسانوں و غیرہ کا عشق۔ (فیروز اللغات)

حاجت :- اب چاہے کوئی کسی نامحرم عورت سے محبت کرے یا اپنے ہم جنسوں سے،

دونوں صورتیں ہی اس میں داخل ہیں۔ لیکن ہمارا موضوع فی الوقت صرف وہ عشق

مجازی ہے کہ جو ایک مرد، نامحرم عورتوں یا کوئی عورت، نامحرم مردوں سے کرتی ہے۔

ان شاء اللہ عزوجل ذیل میں اس ”شیطانی چکر“ کی تباہ کاریاں، اس کے

اسباب اور اس سے محفوظ رہنے اور چھٹکارہ پانے کے طریقے بیان کئے جائیں گے۔ اللہ

تعالیٰ کی رحمت سے امید ہے کہ مطالعہ فرمانے کے بعد اس ”شیطانی چکر“ میں ”چکر

کھانے والے ہمارے مسلمان بھائی اور بہنیں“ بہت حد تک ”چکرانے“ سے باز آجائیں

گے۔

اپنے مسلمان معاشرے پر ایک سرسری نگاہ دوڑائیے، آپ ملاحظہ فرمائیں

گے کہ آج مسلمانوں کی اکثریت اس ”شیطانی چکر“ میں اس طرح گرفتار ہے کہ جس

سے یوں محسوس ہوتا ہے کہ گویا ان کی زندگی کا مقصد صرف اور صرف ”جلس مخالف“

کو کسی نہ کسی طریقے سے اپنی جانب مائل کرنا ہی رہ گیا ہے۔، کاش! کبھی ہمارے

مسلمان بھائی اور بہنیں، نفس کی اس خواہش بد کی تکمیل کی کوشش میں مصروف عمل

ہونے کی صورت میں بطور نتیجہ حاصل ہونے والے نقصانات پر بھی ٹھنڈے دل سے

غور کر لیتے۔.....

آئیے، دیکھتے ہیں کہ اس ”شیطانی چکر“ کے بھور میں ”چکرانے والے یا والی“ کو کون کون سے ”انعامات“ حاصل ہوتے ہیں۔

## شیطانی چکر کی تباہ کاریاں ﴿پہلا نقصان﴾

وقت کا ضیاع :-

قدر کرنے والے جانتے ہیں کہ وقت، اللہ تعالیٰ کی طرف سے عطا کردہ ایک ایسا قیمتی سرمایہ ہے کہ جسے صحیح مقام پر خرچ کرنا، انسان کو دنیا و آخرت میں کامیابی و کامرانی کے قریب تر کر دیتا ہے، جب کہ اس کے برعکس اس دولت کا غلط استعمال انسان کو مسلسل ناکامیوں کی دلدل میں دھنساتا چلا جاتا ہے۔ یہی وجہ ہے کہ ہماری والدہ سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہا ارشاد فرماتی ہیں کہ ”مصیبتیں تو بے شمار ہیں لیکن وقت کا ضائع کر دینا سب سے بڑی مصیبت ہے۔“ (معدن اخلاق غالباً)

اور حضرت محمد بن حاتم ترمذی رضی اللہ عنہ نے ارشاد فرمایا کہ ”تمہارا اصل سرمایہ تمہارا دل اور تمہارا وقت ہے، جب کہ تم نے ان دونوں کو خیالات کی گندگیوں میں پھنسا دیا ہے اور اپنے اوقات کو ان گناہوں میں ضائع کر دیا ہے جو کرنے کے نہیں تھے۔ وہ شخص کب نفع کما سکتا ہے کہ جس کا اس المال (یعنی اصل سرمایہ) ہی خسارے میں ہو۔“ (ذم الہوی المنجوزی)

”شیطانی چکر“ میں بتلاء خواتین و حضرات اپنی زندگی کے قیمتی لمحات کو مختلف بے کار کاموں میں صرف کر کے آخرت میں طویل پچھتاوے کا سامان کرتے نظر آتے ہیں۔ مثلاً

(i) محبوب کا انتظار :-

سکول و کالج و یونیورسٹی کے گیٹ کے باہر کھڑے ہوئے جس مخالف کی ایک جھلک کے منتظر نوجوان چھٹی کے انتظار اور چھٹی کے بعد بس اسٹاپ تک بلکہ بعض اوقات تو گھر تک پہنچانے کے لئے پیچھا کرنے میں اپنا قیمتی وقت ضائع کرتے ہوئے باسانی دیکھے جاسکتے ہیں۔

یو نہی بعض اوقات محلے میں رہنے والی کسی خاتون سے محبت ہو جائے اور اپنی چھت پر سے اس کی زیارت ممکن ہو تو بھی چھت پر ٹہلتے ہوئے کئی گھنٹے اسی انتظار میں کاٹ دئے جاتے ہیں کہ شاید ابھی ”محترمہ“ کسی کام سے اوپر چڑھیں اور ہم ان کی ایک جھلک دیکھ کر اپنے دل کی ٹھنڈک کا سامان کریں۔

(ii) خط اور اس کی تیاری :-

اپنے قلبی جذبات سامنے والے تک پہنچانے اور اندازِ تحریر اور استعمالِ الفاظ سے اسے متاثر کرنے کے لئے ”ایک بہترین خط“ کی تیاری میں بھی کثیر وقت خرچ ہو جاتا ہے، کیونکہ سب سے پہلے ایسے مواد کو پڑھنا کہ جس سے خط لکھنے میں کچھ مدد مل سکے، پھر اشعار کی صورت میں محترمہ کی شان بیان کرنے کے لئے ”عشقیہ اشعار پر مشتمل کتب کا مطالعہ کرنا“ اور پھر خوب سوچ سمجھ کر اپنی تمام تر صلاحیتوں کو بروئے کار لاتے ہوئے ایک ”عظیم الشان خط“ کو معرضِ وجود میں لانا یقیناً کثیر وقت کا تقاضا کرتا ہے۔ پھر اس خط کو دوسروں کی نگاہوں سے پوشیدہ رکھتے ہوئے مطلوبہ شخصیت تک پہنچانے کے لئے منصوبہ بندی کرنا اور پھر اس پر عمل پیرا ہونا بھی بہت سارا وقت، فضول خرچ کروا دیتا ہے۔ یو نہی دوسری جانب سے بھیجا گیا مکتوب پڑھنے میں نیز مستقبل کے بارے میں ”خوشنما خیالی پلاؤ پکانے“ میں۔

(iii) خود کو بنانا، سنوارنا :-

فلموں، ڈراموں کی برکات سے مالا مال ”عاشق حضرات“ خوب

اچھی طرح جانتے ہیں کہ کسی کا دل اپنی جانب مائل کرنے کے لئے کم از کم اپنے ظاہر کو سنوارنا اور کسی مشہور فلمی شخصیت سے مشابہت اختیار کرنا بے حد ضروری ہے، یہی وجہ ہے کہ ایسے حضرات ”مشن“ پر روانہ ہونے سے پہلے ایک طویل مدت تک اپنے آپ کو آئینے میں مختلف پہلوؤں سے دیکھ کر خود سے سوال کرتے رہتے ہیں کہ ”میں کیسا لگ رہا ہوں؟“ یہاں تک کہ اندر سے آواز آتی ہے کہ ”آج تو تو ایسا خوبصورت لگ رہا ہے کہ جو دیکھے بس دیکھتا ہی رہ جائے اور شاید ہی کوئی زبان ایسی ہو کہ جو تیری تعریف نہ کرے۔“ اس قابلِ اطمینان اور مرضی کے مطابق آواز کو سننے تک یقیناً بہت وقت خرچ ہو چکا ہوتا ہے۔

(iv) ملاقات کرنے میں :-

سامنے والے کی رضامندی کی صورت میں ”ملاقاتوں کا شروع ہو جانے والا لامتناہی سلسلہ“ بھی روزانہ کئی گھنٹے کی بربادی کا مطالبہ کرتا ہے، جسے دل کے ہاتھوں مجبور ہو کر پورا کرنے میں قیمتی وقت کے گزرنے کا احساس ہی نہیں ہوتا، چنانچہ طویل ملاقات کے باوجود آخر میں یہی کہا جاتا ہے کہ آج تو وقت گزرنے کا پتا ہی نہیں چلا، کاش! پیاری پیاری باتوں اور دل کے جذبات کے اظہار کے لئے کچھ وقت اور مل جاتا.....

کاش! اتنا ہی وقت اللہ تعالیٰ اور اس کے محبوب ﷺ کو راضی و خوش کرنے میں صرف کیا جاتا تو قوی امید ہے کہ اللہ عزوجل کی بارگاہ میں کوئی نہ کوئی مرتبہ و مقام ضرور ضرور حاصل ہو جاتا۔ جیسا کہ،

حضرت عبد اللہ بن مبارک رضی اللہ عنہ کی توبہ کے بارے میں منقول ہے کہ ”آپ ایک عورت پر اس قدر فریفتہ ہو گئے کہ کسی پل چین ہی نہ آتا تھا۔ ایک مرتبہ سردیوں کی ایک طویل رات میں محبوبہ کے انتظار میں، اس کی دیوار کے ساتھ صبح تک

لگے کھڑے رہے۔ جب فجر کی اذان ہوئی تو آپ نے گمان کیا کہ شاید ابھی عشاء کا وقت ہوا ہے، لیکن جب کچھ دیر بعد سفیدی نمودار ہوئی اور لوگوں کی آمد و رفت شروع ہوئی تو آپ کو علم ہوا کہ یہ ساری رات تو انتظار میں ہی کٹ گئی ہے۔ اس پر آپ کو شدید ندامت ہوئی کہ ”میں مفت میں ایک مخلوق کی خاطر اتنا انتظار کرتا رہا۔“ اپنے آپ سے فرمانے لگے، ”مبارک کے بیٹے! شرم کر، تو نے ایک نفسانی خواہش کی خاطر ساری رات گزار دی؟ اگر یہی رات نماز پڑھتے ہوئے گزارتا تو نہ جانے کیا کچھ پا لیتا۔“ چنانچہ فوراً توبہ کی اور عبادتِ الہی عزوجل میں مصروف ہو گئے، اور پھر یہاں تک مرتبہ حاصل کیا کہ ”ایک روز آپ کی والدہ نے دیکھا کہ ”آپ ایک درخت کے نیچے سوئے ہوئے ہیں اور ایک سانپ، زرگس کی شاخ منہ میں لئے آپ کو ہوا کر رہا ہے۔“ (تذکرۃ الاولیاء)

یابھی وقتِ اخروی معاملات میں غور و تفکر کرنے میں خرچ کیا جاتا تو کتنا فائدہ مند ثابت ہوتا جیسا کہ سرکارِ مدینہ صلی اللہ علیہ وسلم کا فرمانِ عالیشان ہے، ”تَفَكَّرْ سَاعَةً خَيْرٌ مِنْ عِبَادَةِ السَّنَةِ“ یعنی گھڑی بھر غور و فکر کرنا سال بھر کی عبادت سے بہتر ہے۔“

(اسرار المرئیۃ لعلی القادری)

## ﴿دوسرا نقصان﴾

ذہنی سکون تباہ و برباد :-

یہ ایک مسلمہ حقیقت ہے کہ جو اس ”شیطانی چکر“

میں پڑ گیا اسے ذہنی سکون کبھی بھی نصیب نہ ہوگا جس کے باعث اس کا جینا حرام ہو جاتا ہے، بلکہ بعض اوقات تو یہ بے سکونی اس کی موت کا سبب بھی بن جاتی ہے اور اگر موت نہ بھی آئی تو کم از کم دنیاوی و اخروی معاملات میں بے شمار کوتاہیاں اور ان کوتاہیوں کے جواب میں اللہ تعالیٰ اور اس محبوب صلی اللہ علیہ وسلم کی ناراضگی کا عظیم خطرہ تو موجود ہے ہی۔



پھر یہ بے سکونی کئی وجوہات کی بناء پر پیدا ہوتی ہے، چنانچہ کبھی تو اپنی مرضی کے مطابق نتیجہ نہ نکلنے اور محبوب کی بے رخی کی بناء پر، کبھی اس وجہ سے کہ مطلوبہ شخصیت کے ایک سے زیادہ امیدوار ہیں اور خطرہ ہے کہ کوئی دوسرا اپنے نمبر بنانے میں کامیاب ہو جائے گا، کبھی خود میں کسی کو متاثر کرنے کی صلاحیت میں کمی کے احساس میں مبتلاء ہونے کے باعث، کبھی بدنامی کے خوف کی وجہ سے اور کبھی اپنے محبوب کے ساتھ گھر سے بھاگ جانے کے بعد، لڑکی کے گھر والوں کی طرف سے جان سے مار دئے جانے کے خوف کی بناء پر۔

جدید سائینسی تحقیق کی روشنی میں اس بات کو یوں بیان کیا گیا ہے کہ ”دماغ میں سر حرام مغز وہ حصہ ہے جہاں سے ہیجانات پیدا ہوتے ہیں، لیکن اس کے اوپر کبیر (یعنی بڑا مغز سر) ہے جو تفکر کا کام سر انجام دیتا ہے۔ فکر کے عمل کے ذریعے ہیجانات کو دبایا جاسکتا ہے یا یوں کہہ لیجئے کہ ہم دلائل سے ہیجانات کو قائل کر سکتے ہیں، لیکن اگر یہ عمل نہ ہو تو ہیجانات سوچ پر غالب آجاتے ہیں، پھر کچھ بھائی نہیں دیتا اور سوچنے سمجھنے کی صلاحیت ختم ہو جاتی ہے۔ لہذا ایک صحت مند دماغی سر گرمی کے لئے ہیجانات کو قابو میں رکھنا بے حد ضروری ہے۔ مثلاً شہوت کو ہی لے لیجئے، اس کے دوران جسم میں ایسے کیمیائی مادے پیدا ہوتے ہیں جو سرور اور ہیجانی کیفیت پیدا کرتے ہیں، ذہن پر خمار سا چھا جاتا ہے اور سوچنے سمجھنے کی صلاحیت مفقود ہو جاتی ہے، ایسی حالت میں بھلا انسان کوئی تخلیقی کام کیسے سر انجام دے سکتا ہے؟ توجہ بری طرح متاثر ہو جانے سے حافظہ اور آموزش (یعنی سیکھائی) کا عمل بھی متاثر ہوتا ہے، لہذا شہوت کا عمل اگرچہ جائز حدود میں بھی ہو تو ایک حد میں رہنا چاہئے۔ اور پھر چونکہ اس کے لئے احساس گناہ کا تصور بھی پایا جاتا ہے، لہذا ایسے افراد پر ”گھبراہٹ اور تشویش کی حالت“ طاری رہتی ہے جو صحت انسانی کے لئے زہر قاتل ہے۔ بہت سی جسمانی اور

جنسی الجھنوں کی وجہ، یہی تشویش ہوتی ہے۔ اسی تشویش اور گھبراہٹ کے باعث جسم میں فشارِ خون (یعنی خون کا دباؤ) بڑھ جاتا ہے اور جسم کی رنگت سیاہی مائل یا سرخ ہو جاتی ہے اور مستقل یہی کیفیت رہنے سے چہرہ بھی سیاہ پڑ سکتا ہے۔“

(Tou fexis(1993)The Right Chemistry Time,141(7),49...51)

اس ضمن میں ایک حدیثِ پاک اور چند واقعات ملاحظہ فرمائیے۔

سرکارِ مدینہ صلی اللہ علیہ وسلم کا فرمانِ عالیشان ہے کہ جس نے اس حال میں صبح کی کہ اس کا سب سے بڑا فکر دنیا ہے تو اللہ تعالیٰ نے اس پر چار چیزیں لازم کر دیتا ہے۔ {1} ایسا غم جو اس سے کبھی جدا نہ ہو۔ {2} ایسی مصروفیت کہ کبھی فراغت نہ ملے۔ {3} ایسا فقر کہ کبھی استغنانہ ہو۔ {4} ایسی امید ہے کہ کبھی بر نہ آئے۔ (کنز العمال للمصنفی الحدی)

☆ گھر دیکھ کر ہی نیند آتی تھی :-

عمر و بن مناة خزاعی، ایک مرتبہ لیلیٰ خزاعیہ کے پاس سے گزرا، جب کہ یہ ”اراکہ“ کی بیوی تھی اور اپنی قوم کی عورتوں کے ساتھ بیٹھی ہوئی تھی۔ یہ عمرو، حسنِ گفتار اور نفیس اشعار کہنے میں مشہور و معروف تھا۔ اس سے عورتوں نے کہا، ”اؤ ہمارے ساتھ باتیں کرو۔“ وہ ان کے ساتھ باتیں کرنے بیٹھ گیا۔ جو نہی اس کی نگاہ لیلیٰ پر پڑی، یہ اسے دل دے بیٹھا اور اس کا معاملہ عشق بڑھ گیا اور اتنا زیادہ بڑھا کہ ”جب تک لیلیٰ کے گھرانے والوں کے گھر نہ دیکھ لیتا، اسے نیند ہی نہ آتی تھی، اسے وسوسہ لاحق ہو گیا، عقل گم ہو گئی اور ہر وقت زبان پر اسی کا تذکرہ رہا کرتا تھا، اس نے اس کے بارے میں کئی اشعار کہے۔ (زم المہوی لابن جوزی)

☆ اپنے بازو چبانے والا برہنہ عاشق :-

محمد بن زیاد اعرابی کہتا ہے کہ ”میں نے گاؤں میں ایک

نوجوان کو دیکھا کہ ”اس گلے میں کچھ تعویذ لٹکے ہوئے تھے، برہنہ حالت میں تھا صرف

شرمگاہ پر لیک چیتھڑا باندھا ہوا تھا، اس کے پاؤں میں ایک رسی تھی جس کا سر اچھے پچھے آنے والی ایک بڑھیا کے ہاتھ میں تھا، یہ دیوانہ خود اپنے بازو چبارہا تھا۔“ میں نے بڑھیا سے اس کے بارے میں پوچھا، کہنے لگی ”یہ میرا بیٹا ہے۔“ میں نے پوچھا کہ اس کی یہ حالت کیوں ہے؟ کیا اس پر کوئی جن تو نہیں آگیا؟“ کہنے لگی، ”واللہ! نہیں، بلکہ معاملہ یہ ہے کہ یہ اور اس کی چچا زاد ایک ہی مکان میں پروان چڑھے، جب جوان ہوئے تو یہ، اس سے دل لگا بیٹھا اور وہ اس محبت کرنے لگی۔ اب لڑکی کے گھر والوں نے اسے پابند کر رکھا ہے اور اسے، اس سے ملنے یاد دیکھنے سے روک دیا ہے، بس اسی صدمے کے باعث میرے بیٹے کی عقل زائل ہو گئی ہے اور وہ کچھ ہو گیا جو تم دیکھ رہے ہو۔“ میں نے بڑھیا سے پوچھا کہ ”اس کا نام کیا ہے؟“ اس نے کہا ”عکرمہ۔“ میں نے نوجوان سے مخاطب ہو کر کہا، ”عکرمہ! تمہیں کیا تکلیف ہے؟“ تو اس نے کہا،

أَصَابَنِي دَاءٌ قَيْسٍ وَ عُرْوَةَ وَ جَمِيلَ

فَلِجَسْمِ مَنِي نَحِيلٍ وَ فِي الْفُؤَادِ غَلِيلَ

﴿یعنی مجھے قیس (مجنوں)، عروہ اور جمیل (جیسے عاشقوں) کی بیماری پہنچی ہے، اس لئے میرا جسم لاغر

ہے اور دل میں (محبت کی) سخت پیاس ہے۔﴾ (ذم الہوی)

☆ محبوب کی بے رخی سے موت :-

ابو عبد اللہ، ”صغراء عملاقیہ“ سے عشق کرتا تھا، حالانکہ وہ رنگ

کی کالی کلوٹی تھی، لیکن یہ اس کی محبت میں بیمار پڑ گیا، جب اس کے مرنے کا وقت

قریب آیا تو اس کے گھر والوں میں سے کسی نے ”صغراء“ کے مالک کو کہا کہ ”اگر تم اپنی

لونڈی کو ابو عبد اللہ کے پاس بھیج دو تو شاید اس کے ہوش و حواس درست ہو جائیں۔

چنانچہ اس نے ”صغراء“ کو اس کے پاس بھیج دیا۔

اس نے وہاں پہنچ کر پوچھا، ”اے ابو عبد اللہ! کیسے ہو؟“ اس نے کہا کہ

”جب تک تو سامنے رہے تو ٹھیک ہوں۔“ پوچھا، ”تمہیں کس شے کی طلب ہے؟“۔  
 اس نے کہا، ”تیرے قریب رہنے کی۔“ پوچھا، ”تمہارا مرض کیا ہے؟“۔ کہا، ”تیرا  
 عشق۔“۔ پوچھا، ”تم کوئی وصیت کرنا چاہتے ہو؟“ کہا، ”ہاں، اگر وہ ماں لیں تو میں  
 تمہیں چاہتا ہوں۔“ اس نے کہا، ”اب میں واپس جانا چاہتی ہوں۔“ وہ بولا، ”تو پھر  
 جلدی سے میری نمازِ جنازہ کا ثواب حاصل کر لینا۔“ پھر وہ اٹھ کھڑی ہوئی۔ جب ابو  
 عبد اللہ نے اسے منہ پھیر کر جاتے دیکھا تو ایک درد بھرا سانس کھینچا اور اسی وقت مر  
 گیا۔ (ذم الہوی ثانی جوزی)

☆ اللہ کے قرب کی خواہش مند لڑکی :-

ایک بزرگ ارشاد فرماتے ہیں کہ ”ان کے محلہ میں ایک بے  
 حد حسین و جمیل، عبادت گزار، صاحبِ سخاوت اور متقیہ لڑکی رہتی تھی، اس کی ماں اس  
 سے بھی زائد عبادت میں مشہور تھی۔ یہ دونوں لوگوں سے بہت کم میل جول رکھتی  
 تھیں۔ ان کا تجارت کا مال طائف کے ایک شخص کے پاس ہوا کرتا تھا، جو تجارت کر  
 کے اس کا نفع انھیں پہنچا دیتا تھا۔ ایک دن اس تاجر نے اپنے کم عمر لڑکے کو ان کے ہاں  
 ان ہی کے کسی کام سے بھیجا، اس لڑکے کی ابھی داڑھی مونچھیں نہیں آئی تھیں اور لمبے  
 لمبے بالوں کے باعث عورت معلوم ہوتا تھا، اس نے جا کر انھیں بتایا کہ میں فلاں شخص  
 کا بیٹا ہوں اور کسی کام سے حاضر ہوا ہوں، لڑکی کی ماں نے اسے اندر بلا لیا، لڑکا بیٹھا ہی تھا  
 کہ وہ لڑکی بھی وہاں آگئی اور سمجھی کہ یہ کوئی عورت ہے، حتیٰ کہ اس لڑکے کے سامنے  
 بیٹھ گئی، جب اسے معلوم ہوا تو فوراً اٹھ کر وہاں سے چلی گئی، لیکن اتنی دیر میں لڑکے کا  
 دل اس کی طرف مائل ہو چکا تھا۔ وہ کام ختم کر کے واپس چلا آیا لیکن اسے کسی پل سکون  
 نہ ملتا تھا، حتیٰ کہ اس نے پگھلنا شروع کر دیا، تنہائی پسند ہو گیا اور اتنا فکر مند ہوا کہ بے  
 ہوش ہو کر بستر پر گر گیا۔ اس کے باپ نے کئی طبیبوں کو دکھایا لیکن کوئی اس کی بیماری

نہ سمجھ سکا۔

جب بیماری بہت ہی بڑھ گئی تو آخر اس نوجوان نے اپنے خاندان کی ایک بڑھیا کو بلوایا اور کہا، ”میں تمہیں ایک بات بتانا چاہتا ہوں جو آج سے پہلے میں نے کسی کو نہ بتائی، چونکہ مجھے اپنی زندگی سے ناامیدی ہو چلی ہے لہذا صرف تمہیں یہ بات بتانا چاہتا ہوں، اس شرط پر کہ تم اسے پوشیدہ رکھنے کی ضمانت دو، ورنہ میں صبر کرتا رہوں گا، حتیٰ کہ اللہ تعالیٰ میرے معاملے میں کوئی فیصلہ فرمادے، یہ بلا جو مجھ پر نازل ہوئی ہے یقیناً مجھے مار ڈالے گی، مجھ پر لازم ہے کہ میں جس سے محبت کرتا ہوں اس کی عزت پر حرف نہ آنے دوں۔ میں اس کے معاملے میں لوگوں کے طعن و تشنیع سے ڈرتا ہوں، لہذا تم اس راز کو اپنے سینے میں چھپا کر رکھنا۔“ جب اس عورت نے رازداری کا وعدہ کر لیا تو نوجوان نے اسے سارا معاملہ بتا دیا۔ عورت بولی، ”بیٹا! تو نے یہ تمام معاملہ مجھے پہلے کیوں نہ بتا دیا؟“ نوجوان نے کہا، ”اس لڑکی کو حاصل کرنے کا کونسا طریقہ ہو سکتا تھا؟ تم تو اس کی عبادت و ریاضت کا حال جانتی ہی ہو۔“ بڑھیا بولی، ”بیٹا! یہ میرے ذمے رہا میں تمہارے پاس ایسی خبر لاؤں گی کہ تم خوش ہو جاؤ گے۔“

پھر وہ بڑھیا اس لڑکی کی ماں کے پاس پہنچی اور لڑکے کی باطنی و ظاہری حالت کی شکستگی اور اس کے باوجود صبر و تحمل کی تمام داستان بیان کر دی۔ لڑکی کی ماں نے اسے اپنی بیٹی کے پاس پہنچا دیا تاکہ وہ براہ راست اس سلسلے میں اس سے بات کر لے۔ بڑھیا نے تمام حادثہ اس کے سامنے بھی بیان کر دیا اور پھر اسے سمجھانا شروع کیا کہ ”بیٹی! تم نے اپنی جوانی بوسیدہ کر دی اور زندگی کے دن اس حال میں گزار رہی ہو؟“

لڑکی :- چچی جان آپ مجھ پر کون سا برا حال دیکھتی ہیں؟

بڑھیا :- بات یہ نہیں، لیکن تم جیسی عورت کو دنیا میں خوش رہنا اور جس تھوڑے کو



اللہ عزوجل نے حلال کیا ہے (یعنی نکاح) اس سے فائدہ اٹھانا چاہیے اور اس کے ساتھ ساتھ اللہ تعالیٰ کی عبادت بھی نہ چھوٹے، اس طرح اللہ تعالیٰ دونوں جہانوں کی نعمتیں تمہارے لئے جمع کر دے گا۔“

لڑکی :- چچی! کیا یہ دنیا کا گھرباتی رہنے والا ہے کہ جس پر بدن کے اعضاء تکیہ کر بیٹھیں اور اللہ تعالیٰ اور دنیا کو اس کا آدھا آدھا دے دیا جائے، کیا دنیا کا یہ گھر فناء ہونے والا نہیں؟

بڑھیا :- یہ فنا کا گھر ہے، لیکن اللہ تعالیٰ نے اس میں اپنے بندوں کے لئے کچھ اوقات ایسے بنائے ہیں کہ جو اس کی طرف سے اپنی جان پر صدقہ کرنے کے ہیں، لہذا اس میں سے کچھ حاصل کر سکتی ہو کہ جسے اللہ تعالیٰ نے حلال قرار دیا ہے۔“

لڑکی :- آپ نے سچ کہا، لیکن اللہ عزوجل کے کچھ بندے ایسے ہیں کہ جن کے نفسوں میں اطمینان ہے اور وہ عبادت پر صبر کرنے پر راضی ہو گئے ہیں تاکہ انھیں بہت بڑا مرتبہ نصیب ہو۔ واللہ! میں تو آج سے پہلے آپ کے بارے میں یہ سمجھتی تھی کہ آپ مجھے اللہ تعالیٰ کی عبادت اور پاکیزہ اعمال اختیار کر کے اس کا مقرب بننے میں مزید حرص دلائیں گی لیکن آپ تو بالکل بدل گئی ہیں۔

بڑھیا نے لڑکے کے کا حال دوبارہ بیان کیا۔ لڑکی نے جواب دیا، ”اسے میری طرف سے کہنا کہ ”اے بھائی! میں نے اپنے آپ کو ایسے مالک کے ہاں ہیہ کیا ہے جو سب بڑے بڑے انعام و اکرام کرنے والوں سے بڑا ہے اور جو بندہ سب سے کٹ کر اس کا ہو رہے اور اس کی عبادت اختیار کرے، وہ اس کا مددگار ہے، اب ہیہ ہو جانے کے بعد واپسی کی کوئی سبیل نہیں، اب تم محبت کے ساتھ اپنے اللہ کا وسیلہ پکڑو اور جتنے گناہ کر کے اپنے لئے آگے روانہ کر چکے ہو ان کی معافی کے لئے اللہ کے سامنے عاجزی اور زاری کرو۔ یہ پہلا موقع ہے جو تجھ پر اللہ سے سوال کرنا لازم ہے اور میرے سامنے بھی

یہ پہلا موقع ہے کہ میں تجھے نصیحت کروں، اگر تو نے اللہ تعالیٰ کی عبادت شروع کر دی تو اللہ تعالیٰ تمہارے گناہ کم کر دے گا اور قلب کی شہوات اور سینوں کے خیالات سے تجھے آزادی نصیب ہوگی، کیونکہ انسان کو یہ زیب نہیں دیتا کہ وہ اللہ تعالیٰ کی نافرمانی کرے، گناہوں اور معافی مانگنے کو بھول جائے اور دنیاوی خواہشات پوری ہونے کی دعا کرنے لگے۔

اے بھائی! خود کو گناہوں کی کھائیوں سے بچا اور اللہ عزوجل کے فضل سے مایوس نہ ہو، اگر وہ تجھے صرف اپنا بننے والا دیکھے گا تو ہو سکتا ہے کہ وہ تجھے اور مجھے ملادے، جو کچھ میں نے تجھے نصیحت کی اسے اپنے دل میں بٹھالے، آئندہ مجھ سے اس بارے میں گفتگو نہ کرنا، میں تجھے جواب نہ دوں گی۔“

اب وہ بڑھیا اٹھ کھڑی ہوئی اور جا کر اس نوجوان کو سارا ماجرا سنا دیا۔ لڑکائیہ سب سن کر بہت رویا۔ بڑھیا نے کہا ”بیٹا! میں نے کسی عورت کو اس لڑکی کی طرح اللہ تعالیٰ کی یاد اپنے دل میں بساتے ہوئے نہیں دیکھا، اب تم وہی کرو جس کا اس نے تم کو حکم کیا ہے، واللہ! اس نے نصیحت میں کوئی کسر نہیں چھوڑی اب تم خود کو ہلاکت کے کاموں میں مت ڈالو ورنہ اس وقت شرمندگی اٹھاؤ گے جس وقت شرمندگی سے کوئی فائدہ نہ ہوگا۔ اے بیٹے! اگر میں کوئی ایسا حیلہ جانتی کہ، جس سے تیرا کام بن جاتا تو میں وہ بھی کر گزرتی لیکن میں نے اس لڑکی کو دیکھا کہ اس نے اپنی دونوں آنکھوں کے سامنے اللہ کو بسا رکھا ہے، اب اسے دنیا کی زینت کی طرف کون پھیر سکتا ہے؟“ اس پر وہ نوجوان پھر رونے لگا اور کہا۔ ”میں اسے کس طرح کر سکتا ہوں جس کی اس نے دعوت دی ہے اور معلوم نہیں کہ وہ آخری وقت کب آئے گا جب ہم دونوں ایک دوسرے سے ملیں گے؟“

پھر اس کا درد تیز ہو گیا، بڑھیا نے اس کے قصے کو چھپا کر رکھا، اسکے گھر

والوں نے اسے ایک کمرے میں مقید کر دیا حتیٰ کہ اس کا وہیں دم نکل گیا۔ (ذم الہوی)

کاش! اس واقعہ میں مذکور لڑکی کے جواب سے ہماری وہ بے لگام مسلمان بہنیں درسِ عبرت حاصل کریں کہ جو جان بوجھ کر لڑکوں کو اپنے پیچھے لگا کر لذت و مزہ حاصل کرنے کی کوشش میں گناہِ کبیرہ کی مرتکب ہوتی رہتی ہیں۔

### ﴿تیسرا نقصان﴾

پڑھائی سے دل اُچاٹ :-

اس چکر میں پھنسنے والوں کی پڑھائی کی طرف سے توجہ بالکل ہٹ جاتی ہے، کیونکہ جب ذہن ہر وقت مطلوبہ شخصیت کے قریب کے حصول اور اسے اپنی ذات سے متاثر کرنے کی منصوبہ بندی میں مشغول ہو تو پڑھائی پر اس کا منفی اثر مرتب ہونا ایک لازمی امر ہے، نتیجتاً پہلے بہترین پڑھنے والے اس ”برے کام“ میں مشغولیت کے بعد اپنی کلاس میں پڑھائی کے معاملے میں سب سے پیچھے نظر آتے ہیں، سارا سال ان چکروں میں ضائع کرنے کے بعد امتحان کے دنوں میں ان کی پریشانی قابلِ دید و باعثِ عبرت و نصیحت ہوتی ہے۔ اور پڑھائی میں ناکام رہنے والے کے دنیاوی مستقبل پر اس کا کتنا برا اثر پڑے گا، اس کا اندازہ لگانا، کم از کم ذی شعور حضرات کے لئے بالکل دشوار نہیں۔

### ﴿چوتھا نقصان﴾

کاروبار و غیرہ برباد :-

بعض اوقات اس نفسانی کھیل میں حد سے زیادہ مشغولیت، انسان کے کاروباری معاملات کے لئے بھی تباہی کا سببِ عظیم بن جاتی ہے، خود سے راضی رکھنے کے لئے قیمتی تحفوں کی فراہمی کے سلسلے میں بھاری رقوم کا مسلسل خرچ، کاروباری لین دین اور ملازموں کی کارکردگی پر سے توجہ کا ہٹ جانا، نیز اپنی ان

”پرائیویٹ منصروفیات“ کی بناء پر وقت کی تنگی کے باعث ہر معاملے میں ملازموں پر اندھا اعتماد کرنا، آہستہ آہستہ انسان کو تنزی کی جانب مائل کرتا چلا جاتا ہے حتیٰ کہ ایک وقت ایسا بھی آتا ہے اچھا خاصا چلتا ہوا کاروبار عدم توجہ کی بناء پر دوسروں کے ہاتھوں میں چلا جاتا ہے اور ”بے چارہ یہ عاشقِ نامراد“ پائی پائی کو محتاج ہو کر ”محترمہ“ کی نگاہوں سے بھی گر جاتا ہے۔

### ﴿پانچواں نقصان﴾

کثیر گناہوں میں مبتلاء ہونا:-

جو انسان اس چکرِ شیطانی میں پھنس گیا اس کا اپنے آپ کو بہت سے گناہوں سے بچانا تقریباً ناممکن ہو جاتا ہے بلکہ اس کی وجہ سے بے شمار دیگر افراد بھی اللہ تعالیٰ کی نافرمانی میں مبتلاء ہو جاتے ہیں۔ ایسے ہی چند گناہوں کی تفصیل درج ذیل ہے۔

#### (۱) غیبت و چغلی و الزام تراشی و حسد:-

اکثر اوقات بے پردہ باہر نکل کر دعوتِ نظارہ فراہم کرنے والی خواتین کی ”نگاہِ کرم“ کے ایک سے زائد امیدوار پیدا ہو جاتے ہیں (اور کبھی جان بوجھ کر پیدا کئے جاتے ہیں)، خصوصاً کالج و یونیورسٹی کے ماحول میں یہ نظارے عام دیکھے جاسکتے ہیں، ایسے حالات میں کسی ایک ”حضرت“ کا باقی حضرات پر غالب آنا کچھ مشکل نظر آتا ہے، نتیجتاً ”محترمہ“ کی نگاہوں سے دوسروں کو گرانے کے لئے ہر عاشق، دوسرے کے ایسے راز اور ذاتی کمزوریوں کی جستجو کرتا ہے کہ جسے سن کر دیگر افراد کی جانب سے ”اس“ کا دل کھٹا ہو جائے اور ان حضرات کے لئے راستہ صاف ہو جائے، لہذا مخالفین کے مذکورہ قسم کے ”کمزور پہلو ہاتھ میں آتے ہی سب میں عام کرنے کی کوشش کی جاتی ہے اور اگر کوئی کمزور پہلو ہاتھ نہ آسکے تو الزام تراشی کے ذریعے ہی ذکر کردہ مکروہ

مقصد حاصل کرنے کی ناپاک کوشش جاری رہتی ہے، اور اس طرح ایک نفسانی مقصد میں کامیابی کے حصول لئے ”غیبت و چغلی و الزام تراشی“ کا دروازہ کھل جاتا ہے۔

پھر بسا اوقات ”مطلوبہ شخصیت“ کا میلان کسی اور جانب ہو جاتا ہے ایسے وقت میں دیگر ”عشاق حضرات“ کو اپنے ”مطلوب و مقصود“ سے دست بردار ہو کر دوسروں کے لئے راستہ چھوڑ دینا ایک مشکل ترین امر محسوس ہوتا ہے، نتیجتاً ان کے دل میں اس شخص کے لئے سخت بغض و حسد پیدا ہو جاتا ہے اور یہ حسد اس وقت اور زیادہ شدید ہو جاتا ہے کہ جب دوسرا دعوے دار، اس شخص کی نسبت قدرتی اعتبار سے زیادہ حسن و جمال رکھتا ہو کیونکہ اس صورت میں محروم رہ جانے کا یقین، غالب ہو جاتا ہے اور پھر اس کا نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ بعض اوقات یہ کینہ و حسد ایسے حضرات کو ”شدید نقصان پہنچانے اور قتل و غارت میں مبتلاء ہونے“ کی راہ دکھا دیتا ہے جیسا کہ عام مشاہدہ کیا جاسکتا ہے۔

گزشتہ دنوں اخبار میں شائع شدہ اس خبر کو بطور دلیل ملاحظہ فرمائیے۔

☆ گوالمنڈی لاہور کے علاقے مین بازار میں لڑکی کے عاشق نے اس کے ہونے والے شوہر کو چھریوں کے پے درپے وار کر کے شدید زخمی کر دیا، زخمی کی اگلے روز شادی تھی۔ بتایا گیا ہے کہ ”مین بازار گوالمنڈی کے محمد اشرف کے بیٹے شکیل کی شادی فیروز والا میں طے پائی، تاہم اس کا ایک رشتہ دار نوجوان لطیف عرف مانی اس کی ہونے والی بیوی کا عاشق تھا، گزشتہ روز شکیل گھر سے باہر نکلا تو گلی میں چھپے لطیف عرف مانی نے اسے چھریاں مار دیں۔“

نیز چونکہ ”محترمہ“ کی نگاہوں میں مقام و مرتبہ حاصل کرنا ہی مقصود زندگی بن چکا ہوتا ہے لہذا ایسے حضرات کو یہ پرواہ کرنے کی بھی فرصت نہیں ہوتی کہ ان گناہوں کی آخرت میں کیا سزا مقرر کی گئی ہے۔



کاش! یہ ”گروہ“ درج ذیل احادیث مبارکہ پر ٹھنڈے دل سے غور کر کے صرف خواہشِ نفس کی خاطر کئے جانے والے ان گناہوں سے بچنے کی کوشش کرتا۔

☆ سرکارِ مدینہ ﷺ کا فرمانِ عالیشان ہے کہ ”قبر میں عذاب (عموماً) تین

چیزوں کی وجہ سے ہوتا ہے، پیشاب (کی چھینٹوں سے نہ بچنا)، غیبت اور چنغل خوری۔ (صحیح)

☆ حضرت ابو سعید خدری رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ

نے حدیثِ اسراء میں ارشاد فرمایا، ”پھر میں ایسے مقام سے گزرا کہ جہاں کچھ لوگ

ایسے تھے کہ جن کے پہلوؤں پر سے گوشت کاٹ کر کہا جا رہا تھا کہ ”یہ اسی طرح کھا

جس طرح تو اپنے بھائی کا گوشت کھایا کرتا تھا۔“ میں نے پوچھا، ”یہ کون لوگ ہیں، تو

انہوں نے کہا کہ ”یہ لوگ غیبت اور عیب جوئی کرنے والے ہیں۔“ (صحیح)

☆ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے

ارشاد فرمایا ”حسد سے دور رہو کیونکہ ”حسد“ نیکیوں کو اس طرح کھا جاتا ہے جیسے آگ

لکڑی کو کھا جاتی ہے۔“ (ابودود)

(۲) بد نگاہی کا وبال:-

اس چکر میں پھنسنے کی ابتداء نگاہ کو آزاد چھوڑ دینے کی

بناء پر ہی ہوتی ہے، اور ایک بار اس جال میں پھنسنے کے بعد پھر اپنی نگاہ کی حفاظت کا

تصور، ایک خواب کے علاوہ اور کچھ نہیں۔ نتیجتاً انسان مسلسل بد نگاہی کا شکار ہوتا رہتا

ہے جس کی بناء پر اس کے نامہ اعمال میں نہ صرف گناہوں کا ڈھیر لگ جاتا ہے، بلکہ

بعض اوقات اللہ تعالیٰ کی طرف سے فوری سزا کا مستحق بھی ٹھہرتا ہے۔ اس سلسلے میں

چند احادیث مبارکہ، اقوالِ بزرگانِ دین اور عبرت انگیز واقعات کو بغور ملاحظہ فرمائیے۔

(۱- حسد کی تباہ کاریاں اور علاج جاننے کے لئے علامہ محمد اکمل عطا قادری عطاری مدظلہ کی تالیف لطیف

”باطنی گناہ اور ان کا علاج“ کا ضرور مطالعہ فرمائیے۔ ادارہ)

☆ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ کا فرمانِ عالیشان ہے کہ ”آنکھیں بھی زناء کرتی ہیں اور ان کا زناء (حرام اشیاء) کو دیکھنا ہے۔“

(بخاری و مسلم)

☆ حضرت علی رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا ”اے علی! (غیر محرم) پر ایک بار (غیر ارادی طور پر) نظر پڑنے کے بعد اسے (ارادۃً دوبارہ) نہ دیکھ، کیونکہ یہ زہر آلود تیر ہے، جو دل میں شہوت کو بھرد کا دے گا۔ (مشکوٰۃ)

☆ حضرت انس رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ کا فرمانِ عالیشان ہے، ”نَظَرُ الْمُؤْمِنِ فِي مَحَاسِنِ الْمَرْأَةِ سَهْمٌ مِّنْ سَهَامِ ابْلِيسَ“ یعنی مؤمن کا عورت کے محاسن کو دیکھنا، ابلیس کے تیروں میں سے ایک تیر ہے۔“

(اتحاف السادة المتقين للزمبیدی)

☆ مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا، ”اللہ عزوجل دیکھنے اور دکھانے والی دونوں پر لعنت فرمائے۔“ (یعنی)

☆ سرکارِ مدینہ ﷺ کا فرمانِ عالیشان ہے کہ ”جو شخص نامحرم عورت کے محاسن پر شہوت کی نگاہ ڈالے، تو بروز قیامت اس کی آنکھ میں سیسہ پگھلا کر ڈالا جائے گا۔ (شرح الکافی لشمس الامام الخلدانی)

☆ بعض بزرگانِ دین سے منقول ہے کہ ”نگاہ ایک تیر ہے جو دل میں زہر ڈال دیتی ہے۔“ (تفسیر ابن کثیر)

☆ حضرت ابو القاسم جنید بغدادی رضی اللہ عنہ ارشاد فرماتے ہیں کہ ”اپنی نگاہ کو اللہ عزوجل کی محبت میں مصروف کر دو اور جس آنکھ کے ذریعے تم نے اللہ تعالیٰ کا دیدار کرنا ہے، اس کو غیر اللہ کی طرف سے بند کر دو ورنہ اللہ عزوجل کی نظروں سے گر جاؤ گے۔“ (ذم الہوی لابن جوزی)

☆ حضرت حسن بصری رضی اللہ عنہ فرمایا کرتے تھے کہ، ”جس نے اپنی نظر کو آزاد چھوڑ دیا (یعنی حرام چیزوں کے دیکھنے سے اسے نہ روکا) تو اس کے غم طویل ہو گئے۔“

(ذمہ الہوی لابن جوزی)

☆ حضرت علاء بن زیاد رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”اپنی نگاہ عورت کی چادر پر بھی مت ڈالو، کیونکہ (ایسی نگاہ بھی) دل میں شہوت کا بیج بونتی ہے۔“ (ذمہ الہوی۔ ابن جوزی)

☆ چہرہ سیاہ پڑ گیا:-

ابو عمر بن علوان کہتے ہیں کہ ”میں کسی کام سے رجبہ بازار میں گیا، تو مجھے ایک جنازہ نظر آیا، میں شرکت کی نیت سے اس کے پیچھے پیچھے چل دیا، نماز و دفن کے بعد میری نگاہ بلا ارادہ ایک حسین عورت کے چہرے پر پڑ گئی، میں نے آنکھیں بند کر لیں اور ”انا لله و انا الیہ راجعون“ کہا، استغفار پڑھا اور اپنے گھر لوٹ آیا۔ ایک بڑھیا نے مجھ سے کہا کہ ”اے آقا! مجھے کیا ہو گیا ہے کہ میں آپ کا منہ کالا دیکھ رہی ہوں؟“ میں نے آئینہ اٹھا کر دیکھا تو واقعی میرا منہ کالا ہو چکا تھا، میں نے غور و تفکر شروع کیا کہ یہ کالک مجھے کہاں سے لگی ہے، اچانک مجھے اپنی بغیر ارادے کے کی گئی بد نگاہی یاد آگئی، تو میں نے خلوت میں جا کر اللہ تعالیٰ سے معافی مانگی اور چالیس دن تک کی مہلت طلب کی، پھر مجھے خیال آیا کہ اپنے شیخ حضرت جنید رضی اللہ عنہ کی زیارت کروں، چنانچہ میں بغداد کو روانہ ہو گیا۔ جب میں نے آپ کے حجرہ مبارکہ کا دروازہ کھٹکھٹایا، تو آپ نے (بذریعہ کشف) فرمایا، ”اے ابو عمرو! آ جاؤ، تم گناہ تو رجبہ بازار میں کرتے ہو اور اپنے پروردگار سے معافی مانگنے کے لئے وسیلہ ڈھونڈنے بغداد میں آتے ہو۔“

(ذمہ الہوی لابن جوزی)

حلیینہ :- بلا ارادہ نظر حکم حدیث اگرچہ گناہ نہیں لیکن بزرگ کا اسے غلطی شمار کرنا اور اس پر اللہ تعالیٰ کی جانب سے فوری سزا کا ملنا، اس بات کی طرف اشارہ ہے کہ

”مقربین، خوفِ خدا عزوجل کے باعث اپنی معمولی سی غفلت کو بھی قابلِ گرفت شمار فرماتے تھے نیز اللہ تعالیٰ اپنے ایسے بندوں کو فوراً تنبیہ فرما کر خطاؤں سے محفوظ و مامون رکھتا ہے۔“

☆ یَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ (یعنی اللہ جانتا ہے چوری چھپے کی نگاہ)۔ مفتی نعیم

الدین مراد آبادی رضی اللہ عنہ ”خزائن العرفان“ میں (چوری چھپے کی نگاہ کی تفسیر کرتے ہوئے) فرماتے ہیں ”یعنی نگاہوں کی خیانت اور چوری، نا محرم کو دیکھنا اور ممنوعات پر نظر ڈالنا ہے۔“ (سورہ مؤمن ۱۹ پ ۲۴)

(۳) زناء میں مبتلاء ہو جانا۔

جب آدمی جس مخالف کے عشق میں

گرفتار ہو جاتا ہے تو شیطان اس سے ایسے ایسے گناہ کروالیتا کہ جن میں مبتلاء ہو جانے

کے بارے میں اس نے گزشتہ زندگی میں کبھی تصور بھی نہ کیا تھا۔ اکثر اوقات شروع

شروع میں اپنے عشق و محبت میں بے حد اخلاص نظر آتا ہے، انسان اسے ”پاکیزہ محبت

“ کا نام دیتا ہے، اگر کوئی اسے سمجھانے کی کوشش کرے تو بھی یہی جواب دیا جاتا ہے

کہ ”واللہ! میرا فلانہ سے کوئی برائی کا ارادہ نہیں ہے بلکہ میں تو اس معاملے میں بالکل

سنجیدہ اور صاف ذہن رکھنے والا ہوں۔“ لیکن درحقیقت یہ سب شیطان کی طرف سے

محض ”جھوٹی تسلیوں“ کا نتیجہ ہوتا ہے، یہی وجہ ہے کہ کچھ عرصے بعد جب فاصلے سمٹنا

شروع ہوتے ہیں تو انسان نہ چاہتے ہوئے بھی قابلِ نفرت کاموں میں مشغول ہوتا چلا

جاتا ہے۔ خصوصاً جب کہ ”کم عمری یا بے روزگاری یا بڑے غیر شادی شدہ بھائی بہنوں

کی موجودگی یا برادری و ذات و قوم کے مختلف ہونے یا غربت یا کسی گھٹیا پیشے سے منسلک

ہونے کے باعث ”محترمہ“ سے شادی کرنے پر خود کو قادر نہیں پاتا۔“ اس سلسلے میں

کسی ذیہناتی نے بہت ہی پیاری بات کہی چنانچہ،

☆ حضرت اہمعی رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”میں نے ایک دیہاتی سے پوچھا، ”تم کچھ محبت کی حقیقت ذکر کرو؟“ اس نے جواب دیا ”محبت ایک پودا ہے، اس کا بیج دیکھنا ہے، اس کا پانی بار بار دیکھنا ہے، اس کی پرورش وصال ہے، اس کی کمی عکسیدگی ہے اور اس کا نتیجہ ”گناہ، اللہ عزوجل کی نافرمانی اور جنون ہے۔“ (ذم الہوی لابن جوزی)

☆ یونہی حضرت لقمان رضی اللہ عنہ نے اپنے بیٹے سے فرمایا، ”میں سب سے پہلے تجھے تیرے نفس سے ڈراتا ہوں، اس لئے کہ ہر نفس کی خواہش و شہوت ہوتی ہے، اگر تو نے اس کی شہوت پوری کر دی، تو یہ سرکشی کرے گا اور اسکے علاوہ مزید چاہے گا، اس لئے کہ دل میں شہوت اس طرح چھپی رہتی ہے جیسے آگ پتھر میں کہ جب اس پر ضرب لگائیں تو آگ کا شعلہ نکلتا ہے اور اگر چھوڑ دیں تو آگ چھپ جاتی ہے۔“ (مکاشفہ)

☆ کسی عربی شاعر نے اسی بات کو ان الفاظ میں بیان کیا ہے،

إِذَا مَا أَحْبَبْتَ النَّفْسَ فِي كُلِّ دَعْوَةٍ

دَعَوْتِكَ إِلَى الْأَمْرِ الْقَبِيحِ الْمُحْرَمِ

(یعنی جب تو نفس کی ہر دعوت کو قبول کر لے گا، تو یہ تجھے سخت حرام و برے کام کی طرف بلائے گا۔) (ایضاً)

☆ ایک اور شاعر کا قول ہے کہ،

إِذَا أَنْتَ لَمْ تَعْنِ الْهَوَى قَادَكَ الْهَوَى

إِلَى كُلِّ مَا فِيهِ عَلَيْكَ مَقَالٌ

(یعنی اگر تو خواہش کی نافرمانی نہ کرے گا، تو یہ تجھے ہر اس کام کی طرف لے جائے گی کہ جس پر تجھ کو اعتراض ہوگا۔) (ایضاً)

☆ اور ایک شاعر نے بہت عمدہ بات کہی کہ،

وَقَدْ أَصَابَ رَأْيُهُ عَيْنُ الصَّوَابِ  
مَنْ اسْتَشَارَ عَقْلَهُ فِي كُلِّ بَابٍ

وَقَدْ رَأَى أَنَّ الْهُوَى مَهْمَا يَجِبُ

يَدْعُو إِلَى سُوءِ الْعَوَاقِبِ وَالْعُقَابِ

(یعنی اس کی رائے بالکل درست رہی کہ جس نے عقل سے ہر معاملہ میں مشورہ کیا، اور اس نے دیکھ

لیا کہ جب خواہش پختہ ہو جائے، تو وہ برے نتائج اور عذاب کی طرف دعوت دیتی ہے۔) (کاشف)

شیطان کس طرح انسان کو پر اخلاص نیت سے دور کر کے غیر

محسوس طریقے سے گناہوں کی جانب گھسیٹ کر اس کی دنیا و آخرت کو تباہ و

برباد کر دیتا ہے، اس بارے میں درج ذیل عبرت انگیز واقعہ کو دل کی آنکھوں

سے پڑھنے کی سعادت حاصل کیجئے۔

عابد، کافر ہو گیا۔

حضرت وہب بن منبہ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”بنی اسرائیل میں ایک عابد

تھا، جو اپنے زمانے کے عابدوں سے زیادہ عبادت گزار تھا، اس کے زمانے میں تین بھائی

تھے جن کی ایک کنواری بہن بھی تھی۔ ان پر دشمن فوج نے حملہ کر دیا، انہوں نے باہم

مشورہ کیا کہ اپنی بہن کو کس کی حفاظت میں چھوڑ کر جہاد کے لئے جائیں؟ کیونکہ ان کو

کسی پر بھروسہ نہ تھا۔ ان کی رائے اس پر متفق ہوئی کہ ”اس کو مذکورہ عابد کے پاس

چھوڑ جاتے ہیں۔“ چنانچہ یہ اس کے پاس آئے اور اس سے اپنی بہن کو اپنے پاس رکھنے

کی درخواست کی۔ عابد نے اس سے انکار کر دیا اور اللہ تعالیٰ سے اس معاملے میں پناہ

طلب کرنے لگا، مگر وہ پھر بھی اصرار کرتے رہے، یہاں تک کہ عابد کو مجبوراً ماننا پڑا، اس

نے کہا کہ ”میں اسے اپنے ساتھ تو نہیں رکھ سکتا، ہاں میرے عبادت خانے کے

سامنے ایک گھر خالی ہے، اس میں ٹھہرا دو، میں ہر ممکن دیکھ بھال کرتا ہوں گا۔“ وہ



بھائی لڑکی کو اس گھر میں چھوڑ کر چلے گئے۔

یہ لڑکی ایک عرصہ تک عابد کے پڑوس میں رہی، عابد اپنے عبادت خانے کے دروازے پر کھانا لٹکا کر اتار دیتا، پھر کسی طرح لڑکی کو اطلاع کرتا اور وہ کھانا اٹھا کر لے جاتی۔ کچھ عرصے کے بعد شیطان نے عابد کے دل میں نرمی کا جذبہ بیدار کیا اور مشورہ کہا ”کم از کم دن میں تو لڑکی کے دروازے تک جا کر کھانا دے آیا کر، کیونکہ ایسا نہ ہو کہ لڑکی کو کھانا لے جاتے دیکھ کر کوئی اس پر عاشق ہو جائے، ویسے بھی اس میں زیادہ ثواب ہے۔“ عابد نے اس کا مشورہ قبول کر لیا۔ چنانچہ اب وہ لڑکی کے دروازے تک کھانا پہنچانے لگا، لیکن اس سے کسی قسم کی بات چیت نہیں کرتا تھا۔ کچھ عرصہ گزرنے کے بعد شیطان پھر اسکے پاس آیا اور نیکی کی ترغیب دیتے ہوئے کہا ”اگر تو اس کے گھر کے اندر جا کر کھانا رکھ آیا کرے تو تیرے لئے اور زیادہ ثواب ہو گا۔“ چنانچہ اب وہ گھر کے اندر کھانا رکھنے لگا۔ پھر کچھ عرصے بعد شیطان نے اسے کہا ”تو اس سے کچھ باتیں کرتا تو اسے سکون ملتا، اکیلے رہ رہ کر بے چاری پریشان ہو گئی ہو گی۔“ اس مشورے پر عمل پیرا ہوتے ہوئے وہ کچھ عرصے اس سے باتیں کرتا رہا اور کبھی کبھار عبادت خانے سے اس کی طرف جھانک بھی لیا کرتا۔

اسی طرح شیطان مختلف اوقات میں اس کے پاس آتا رہا اور اسے آہستہ آہستہ آگے بڑھنے کی ترغیب دیتا رہا مثلاً کاش! تو اپنے عبادت خانے کے دروازے پر اور وہ اپنے دروازے پر بیٹھ کر آپس میں باتیں کرتے تو زیادہ انسیت کا سبب ہوتا۔ جب یہ بھی مان لیا تو کہا، اگر اس کے دروازے کے پاس جا کر باتیں کرے تو اور بہتر ہے، جب یہ مان لیا گیا تو کہا، اگر تو گھر کے اندر جا کر گفتگو کرے تو اور بھی اچھا ہے تاکہ اسے چہرہ بھی باہر نہ نکالنا پڑے۔ جب عابد نے اس ترغیب کو بھی باسانی قبول کر لیا تو اب شیطان نے اس پر بڑا وار کیا اور اس کے دل میں لڑکی کے حسن و زیب و زینت کا بار بار خیال ڈالنے لگا، حتیٰ

کہ ایک وقت ایسا بھی آیا کہ وہ اس لڑکی سے گناہ میں مبتلاء ہو گیا جس کے باعث وہ حاملہ ہو گئی اور پھر اس نے ایک بچہ جنم دیا۔

اب شیطان پھر عابد کے پاس آیا اور اس کے دل میں خوف پیدا کرتے ہوئے بولا، ”تیرا کیا خیال ہے کہ جب اس لڑکی کے بھائی آئیں گے تو کیا تجھے ذلیل و رسوا نہ کریں گے؟ اس سے پہلے کہ وہ تجھے شرمندہ کریں تو اس بچے کو قتل کر دے، اور یقیناً لڑکی خوف و بدنامی کے باعث اپنے بھائیوں کو کچھ نہ بتا سکے گی لہذا اسے چھوڑ دے۔“ عابد نے اخروی انجام کی پرواہ کئے بغیر بچے کو قتل کر دیا۔ اب شیطان پھر آ موجود ہوا اور بولا، ”کیا تو یہ سمجھتا ہے کہ جو کارنامہ تو نے کیا ہے یہ لڑکی اسے اپنے بھائیوں کو نہ بتائے گی؟ ضرور ضرور بتائے گی، لہذا اسے بھی جان سے مار دے۔“ عابد نے شقاوت کا مظاہرہ کرتے ہوئے اسے بھی قتل کر دیا اور مقتول بچے کے ہمراہ مکان کے صحن میں دفن کر دیا اور اوپر سے ایک بھاری چٹان رکھ دی، اور اپنی خانقاہ میں عبادت میں مصروف ہو گیا۔

تھوڑے عرصے کے بعد لڑکی کے بھائی واپس آئے تو کسی سبب سے لڑکی کے مرنے کا ذکر کیا، ان سے تعزیت کی، دعائیہ جملے کہے اور پھر انھیں لڑکی کی قبر پر لے گیا۔ اس کے بھائیوں نے اس پر یقین کرتے ہوئے سخت افسوس کا اظہار کیا، ایک دن اس کی قبر پر رہے اور پھر اپنے گھروں کو واپس لوٹ گئے۔

جب رات تینوں بھائی سوئے تو شیطان ان کے خواب میں آیا اور انھیں بتایا کہ عابد نے تم سے جھوٹ بولا ہے بلکہ اس نے تو تمھاری بہن کے ساتھ حقیقتاً ایسا ایسا کیا ہے اور اسے فلاں فلاں جگہ دفن کیا ہوا ہے۔“ جب ان کی آنکھ کھلی اور یہ ایک دوسرے کے سامنے آئے اور اپنا اپنا خواب بیان کیا تو بڑے بھائی نے کہا کہ یہ کوئی جھوٹا خواب ہے، اس پر توجہ نہ کرو۔“ لیکن چھوٹے بھائی نے کہا کہ میں تو ضرور اس مقام پر جاؤں گا

اور تحقیق کروں گا۔“ چنانچہ وہ تینوں چل پڑے اور جب قبر کھودی تو خواب کو بالکل سچا پایا۔ انھوں نے جا کر عابد پر سختی کی تو اس نے بھی مجبوراً اپنے گناہ کا اعتراف کر لیا۔ مقدمہ بادشاہ کے سامنے پیش کیا گیا اور عابد کے لئے سزائے موت کا فیصلہ سنا دیا گیا۔

جب اسے سولی پر چڑھانے کو لے جایا گیا تو اس وقت شیطان پھر آپہنچا اور عابد سے بولا کہ ”میں تیرا وہی ساتھی ہوں کہ جس نے تجھے اس تمام فتنے میں مبتلاء کر دیا، آج تو میری بات مان کر ”اللہ تعالیٰ کا انکار“ کر دے تو میں تجھے اس مصیبت سے نجات دلوا سکتا ہوں۔“ عابد نے اپنی بد بختی پر آخری مہر لگاتے ہوئے صرف دنیاوی عذاب سے نجات کی خاطر اللہ عزوجل کا انکار کر دیا۔ جیسے ہی اس سے یہ کفر سرزد ہوا شیطان اس کے اور اس کے دشمنوں کے درمیان سے فرار ہو گیا اور اس عابد کو حالت کفر میں ہی سولی پر چڑھا دیا گیا۔“ (انا لله وانا اليه راجعون) (ذمہ الہوی لابن جوزی)

اور پھر اگر کوئی اپنی بد بختی کے باعث اس گندے فعل میں مبتلاء ہو جائے تو دنیاوی بدنامی کے ساتھ ساتھ اخروی عذاب بھی اس کا مقدر بن جاتے ہیں، بشرطیکہ وہ موت سے پہلے پہلے توبہ نہ کر لے۔ چنانچہ

☆ حضرت سمرہ بن جندب رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا، ”آج رات میں نے خواب دیکھا کہ میرے پاس دو شخص آئے اور مجھ سے کہا کہ ”ہمارے ساتھ چلئے۔“ میں ان کے ساتھ چلا، وہ مجھ کو ایک مقام مقدس میں لے آئے، وہاں ہم نے ایک تنور دیکھا جس میں سے شور و غوغا کی آوازیں آرہی تھیں۔ ہم نے اندر جھانک کر دیکھا تو اس میں کچھ ننگے مرد و عورت تھے، نیچے سے ان کی طرف شعلے لپکتے تھے، جب شعلے ان کی جانب بڑھتے تو وہ شور و غوغا کرتے تھے۔ میں نے پوچھا کہ یہ کون ہیں تو عرض کی گئی کہ ”یہ زانی مرد اور زانی عورتیں ہیں۔“ (بخاری)

☆ حضرت عطاء خراسانی رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”دوزخ کے سات

دروازے ہیں سب سے زیادہ غم ناک، اندوہ ناک، گرم، اور زیادہ بدبو دار ان زانیوں کا دروازہ ہوگا جنہوں نے جان بوجھ کر زناء کا ارتکاب کیا تھا۔“ (ذم اھوی ابن جوزی)

### (۴) قتل و غارت:-

اللہ عزوجل کی نافرمانیوں سے بھرپور ”شیطانی چکر“ اکثر اوقات ”قتل و غارت“ کا سبب بھی واقع ہوتا رہتا ہے۔ کبھی لڑکی کے رشتہ دار ”حضرت عاشق“ کو ”قید زندگی“ سے رہائی دلاتے نظر آتے ہیں، تو کبھی محبت میں ناکام خود یہ ”عاشق نامراد“ راہ میں مختلف انداز سے رکاوٹ بننے والے حضرات کو آخرت کا راستہ دکھا کر ”راستے کی صفائی یا ذاتی انتقام کی آگ کو ٹھنڈا“ کرتا ہوا نظر آتا ہے اور کبھی یوں بھی ہوتا ہے کہ کسی ایک فریق کی بے وفائی اسے دوسرے فریق کے ہاتھوں مروا کر کہانی کا اختتام کرواتی دکھائی دیتی ہے، جیسا کہ اس موجودہ معاشرے میں باسانی و بخت دیکھا جا رہا ہے۔

اس سلسلے میں اخبارات کی درج ذیل خبریں بغور ملاحظہ فرمائیے۔

☆ ناجائز تعلقات پر نوجوان کو درخت سے باندھ کر مار ڈالا۔ بتایا گیا ہے کہ ناروال کے گاؤں اولکھ پنڈی میں بائیس سالہ محمد امین کے اپنے کزن محمد انور کی بیٹی (گ) سے ناجائز تعلقات تھے، جس کا لڑکی کے گھر والوں کو رنج تھا۔ گذشتہ روز انور نے محمد امین کو گھر سے باہر بلایا اور کہا کہ ”ہمارے ساتھ چلو ہم اپنی لڑکی کا تمہارے ساتھ نکاح پڑھانے کو تیار ہیں۔“ نکاح کا جھانسہ دے کر امین کو دوسرے گاؤں لے گیا جہاں انور نے اپنے رشتہ داروں اسلم، اشرف، امجد وغیرہ کی مدد سے امین کو درخت سے باندھ دیا اور ڈنڈے مار مار کر ہلاک کر دیا۔

☆ ٹاؤن شپ میں نوجوان نے اپنی سولہ (۱۶) سالہ بہن کو بد چلنی کی بناء پر گلا

گھونٹ کر ہلاک کر دیا۔ بتایا گیا ہے کہ ”ٹاؤن شپ کے پلاٹ نمبر ۵۲۵ میں رہائش پزیر

ایک شخص عبدالغنی کے بیٹے طارق کو اپنی ۱۶ سالہ بہن کو ثربی ملی پر بد چلنی کا شبہ تھا، گزشتہ رات وہ مبینہ طور پر گھر دیر سے آئی، جس بناء پر وہ طیش میں آ گیا اور اسے گلا گھونٹ کر ہلاک کر دیا۔“

☆ خانقاہ ڈوگراں کے نواحی گاؤں ڈھیگر باٹھ میں مرضی سے شادی کرنے پر محمد یوسف اور اللہ دتہ نے اپنی سگی بہن زاہدہ کو کلہاڑیوں کے پے در پے وار کر کے قتل کر دیا۔

☆ محمود بوٹی باغبانپورہ میں بھائی نے آشنا کے ساتھ فرار ہونے والی بہن کو پھانسی دے دی، تفصیلات کے مطابق محمود بوٹی کی رہائشی نوجوان شبانہ بارہ روز قبل اپنے آشنا آصف کے ساتھ گھر بھاگ گئی تھی۔ شبانہ کے گھر والوں نے پنجائی طریقے سے شبانہ کو واپس بلا لیا۔ اسلم کے بیٹے پرویز عرف پیجا کو شبانہ کو ترکے گھر سے بھاگنے کا رنج تھا۔ گزشتہ روز بہن بھائی میں اسی بات پر تلخ کلامی بھی ہو گئی، جس پر پرویز نے اس کے گلے میں پھندہ ڈال کر اسے قتل کر دیا اور فرار ہو گیا۔

☆ راو خان والا میں ۱۰ سالہ بھائی نے فائرنگ کر کے ۱۵ سالہ بہن کو موت کے گھاٹ اتار دیا، بتایا گیا ہے کہ اس کی بہن کے علاقہ کے کسی نوجوان کے ساتھ ناجائز تعلقات تھے اور اسی وجہ سے لوگ اسے طعنہ زنی کرتے تھے۔ وقوعہ کے روز بہن بھائی اپنے والد کے ساتھ کھانا کھا رہے تھے کہ بہن بھائی میں جھگڑا ہو گیا، ملزم نے فائرنگ کر کے بہن کو ہلاک کر دیا۔

☆ شیخوپورہ کے ایک گاؤں میں بد چلنی کے شبہ میں باپ نے اپنے بیٹے کی مدد سے کلہاڑی اور لائٹھیوں سے حملہ کر کے اپنی بیٹی اور اس کے آشنا کے ٹکڑے کر دئے۔ تفصیلات کے مطابق ملزم چن پیر کو مقتولہ (ن) اور مقتول آصف کے ناجائز تعلقات کا شبہ تھا، وقوعہ کے روز دونوں کو اکٹھا دیکھ کر، اپنے بیٹے کی مدد سے کلہاڑی اور

لاٹھیوں کے وار کر کے دونوں کو موت کے گھاٹ اتار دیا۔

☆ شیخوپورہ کے نواحی گاؤں کالوداواڑہ میں نوجوان شمعون مسیح نے جان بچانے کی خاطر محبوبہ کو قتل کر دیا۔ بتایا گیا ہے کہ ”اس نوجوان کے اپنے ہمسائے کی بیٹی (ش) سے ناجائز تعلقات تھے۔ گزشتہ رات شمعون (ش) سے ملنے گیا، لیکن رات کو اڑھائی بجے (ش) کا بھائی آپہنچا، ان دونوں کو قابل اعتراض حالت میں دیکھ کر اس نے شور مچا دیا، جس پر (ش) کا باپ، ماں اور دیگر بہن بھائی بھی اکٹھے ہو گئے، انہوں نے شمعون کو پکڑنے کی کوشش کی تو اس نے فائرنگ کر دی، جس سے (ش) گولیاں لگنے سے ہلاک ہو گئی۔

☆ گھر سے بھاگ کر ”پسند کی شادی کرنے والی“ خاوند سمیت بھائی اور چچا کے ہاتھوں ہلاک ہو گئی، مقتولہ چھ ماہ کی حاملہ تھی۔ بتایا گیا ہے کہ ”گاؤں مرانی والا“ کے محمد افضل کی بہن روپینہ نے ڈھائی سال قبل گھر سے بھاگ کر اپنے آشنا خوشی محمد سے کورٹ میرج کر لی تھی۔ میاں بیوی دوسرے گاؤں میں جا کر بس گئے تھے۔ چھ ماہ قبل دوبارہ گاؤں میں آگئے، اس بات کا محمد افضل کے خاندان کو بہت دکھ تھا، لوگ انہیں طعنہ دیتے، جس پر گزشتہ شام محمد افضل اور اس کے چچا وارث نے روپینہ کے گھر پر حملہ کر دیا اور خنجروں کے وار کر کے انہیں موت کے گھاٹ اتار دیا اور ”لاشوں پر گولیاں بھی برساتے رہے۔“

☆ مرالیاں میں ناجائز تعلقات سے منع کرنے پر نوجوان نے خنجر کے وار کر کے بڑے بھائی کو قتل کر دیا۔ تفصیلات کے مطابق، اس نوجوان کے کسی لڑکی سے ناجائز تعلقات تھے، جس پر اس کے باپ محبوب سائیں نے اسے منع کیا تو اس نے باپ پر خنجر سے حملہ کر دیا، اس کے بڑے بھائی نے باپ کو بچانے کی کوشش کی تو ملزم نے اسے خنجر مار کر ہلاک کر دیا، جبکہ محبوب سائیں زخمی ہو گیا اسے اسپتال داخل کروا دیا



گیا۔

☆ کاہنہ میں ایک شخص نے اپنی جواں سال بھانجی کو محبوب کے خلاف بیان نہ دینے پر بجلی کے کرنٹ لگا کر موت کے گھاٹ اتار دیا۔ بیانات کے مطابق امانت علی کی بیٹی روبینہ دو ماہ قبل باپ کے ملازم محمد اقبال کے ساتھ بھاگ گئی، جسے چند روز قبل پولیس نے برآمد کیا تو لڑکی گھر جانے کی بجائے دارالامان چلی گئی، جسے بعد ازاں باپ سمجھا بچھا کر گھر لے آیا، گزشتہ رات اس کا سالہ محمد یوٹا گھر پر آیا اور بھانجی کو عدالت کے روبرو، اقبال کے خلاف بیان دینے کے لئے دباؤ ڈالتا رہا۔ رات گئے اچانک روبینہ کے سر چیخنے چلانے کی آوازیں آئیں، باپ جلدی سے کمرے میں گیا تو دیکھا کہ ماموں، بھانجی کو بجلی کے ننگے تاروں سے کرنٹ لگا رہا تھا، باپ نے بیٹی کی جان بچانے کے لئے طبی امداد کی کوشش کی مگر وہ جانبر نہ ہو سکی۔

☆ فیروز والی کی نواحی بستی میں نوجوان محمد اقبال نے ساتھیوں کی مدد سے اپنی محبوبہ رخسانہ کو فائرنگ کر کے ہلاک کر دیا۔ (وجہ اخبار میں درج نہ تھی غالباً بے وفائی سبب بن گئی ہوگی۔)

☆ جنوبی چھاوئی لاہور کے علاقے نشاط کالونی میں گزشتہ روز پنجابی نوجوان سے پسند کی شادی کرنے پر پٹھان نے اپنے داماد اور بیٹی کو گولی مار کر موت کے گھاٹ اتار دیا۔ بتایا گیا ہے کہ نور محمد خان کی 18 سالہ بیٹی نے 24 سالہ نصیر احمد کے ساتھ شادی کر لی اور اس کے بعد دونوں میاں بیوی روپوش ہو گئے، مگر بعد ازاں نور محمد نے بیٹی کی محبت میں انھیں معاف کر دیا اور دونوں کو اپنے گھر لے آیا، مگر اس کے قبیلے والوں نے اسے طعنہ دینے شروع کر دیے، جس پر اس نے گزشتہ روز بیٹی اور داماد دونوں کو فائر کر کے قتل کر دیا اور خود فرار ہو گیا۔ مقتولہ دو ماہ کی حاملہ تھی۔

اس سلسلے میں درج ذیل واقعات بھی ملاحظہ فرمائیے۔

(i) زندہ دفن کر دیا:

وضاح الیمین اور ام البنین دونوں بچپن میں اکٹھے پروان چڑھے تھے اور ایک دوسرے سے شدید محبت رکھتے تھے۔ جب ام البنین جوان ہوئی تو اسے پردہ کروادیا گیا، ایک دوسرے کو دیکھنے سے محروم ہو جانے کی وجہ سے دونوں پر قیامت ٹوٹ پڑی۔ جب شام کے بادشاہ ونید بن عبد الملک نے حج کیا تو اسے ام البنین کے حسن کی رعنائیوں اور حسن ادب کی خبر پہنچی، چنانچہ اس نے اس سے شادی کر لی اور اسے اپنے ساتھ شام لے گیا۔ اس صدمے سے وضاح کی عقل ماری گئی اور یہ اس کے غم میں روز بروز گھلتا گیا، آخر جب مصیبت انتہاء کو پہنچی تو یہ سفر طے کر کے ملک شام پہنچ گیا اور کسی حیلے سے محل میں داخل ہونے کے لئے اس کے ارد گرد چکر کاٹنے لگا۔ ایک دن اس نے ایک لونڈی دیکھی تو اس سے انس پیدا کیا، پھر اس پوچھا کہ ”تم ام البنین کو جانتی ہو؟“ لونڈی نے کہا کہ تم تو میری مالکن کے بارے میں پوچھ رہے ہو۔“ اس نے کہا ”ہاں، وہ میری چچا زاد ہے، اگر تم اسے اطلاع کر دو تو وہ بہت خوش ہو جائے گی۔“

لونڈی نے جا کر ام البنین کو اطلاع کر دی۔ اس نے کہا، ”تو تباہ ہو جائے، کیا وہ ابھی زندہ ہے؟“ اس نے کہا ”ہاں۔“ ام البنین نے کہا کہ اس سے کہو کہ ”تم اپنی جگہ پر رہو جب تک کہ تمہارے پاس میرا قاصد نہ آجائے، میں تمہارے لئے کوئی تدبیر کرتی ہوں۔“ لونڈی نے یہ پیغام وضاح تک پہنچا دیا۔ کچھ عرصہ بعد اس نے حیلہ کر کے وضاح کو اپنے پاس بلوایا، اور ایک صندوق میں بند کر دیا۔ جب خطرہ ٹل جاتا تو اسے باہر نکال کر اس سے باتیں کرتی اور جب جاسوسی کا خوف ہوتا تو دوبارہ بند کر دیتی۔ ایک مرتبہ ولید کو ایک قیمتی جوہر تحفے میں پیش کیا گیا، اس نے اپنے ایک نوکر سے کہا کہ ”یہ جوہر ام البنین کے پاس لے جاؤ اور کہو کہ یہ امیر المومنین کو ہدیہ کیا گیا ہے۔“ جب نوکر وہاں پہنچا تو بغیر اجازت آگے بڑھ گیا، اس نے وضاح کو ام البنین کے پاس بیٹھے دیکھا تو

فوراً پیچھے ہٹ گیا، لیکن ام البنین اسے نہ دیکھ سکی۔ آہٹ محسوس کر کے اس نے وضاح کو صندوق میں چھپا دیا۔ خادم نے امیر المومنین کا پیغام پہنچا کر درخواست کی کہ ”یہ جوہر اسے عطا کر دیا جائے۔“ ام البنین نے کہا کہ ”تجھے کیوں دوں؟ تو اس کا کیا کرے گا؟“

خادم وہاں سے چلا تو سخت غصے میں تھا، چنانچہ اس نے جا کر تمام معاملہ بادشاہ کو بتا دیا۔ ولید نے کہا ”تو جھوٹ بولتا ہے، یہ کیسے ہو سکتا ہے؟“ اس نے عرض کی آپ خود جا کر دیکھ لیں، فلاں فلاں صندوق میں وہ شخص چھپا ہو گا۔“ یہ سن کر ولید تیزی کے ساتھ ام البنین کے پاس پہنچا، وہاں اس نے کئی صندوق رکھے دیکھے، وہ اسی صندوق پر جا کر بیٹھ گیا کہ جس کی نشانی غلام نے بیان کی تھی، اور کہا، ”ام البنین! یہ صندوق مجھے ہدیہ کر دو۔“ اس نے کہا، ”امیر المومنین! یہ سب اور میں، آپ ہی کے تو ہیں۔“ ولید نے کہا، ”نہیں مجھے تو بس یہی صندوق چاہیے۔“ اس نے عرض کی، ”ٹھیک ہے یہ آپ کا ہے۔“ اس نے صندوق اٹھوایا اور ایک کنواں اتنا گہرا کھدوایا کہ پانی نکل آیا، جب کنواں کھد چکا تو اس نے اپنا منہ صندوق کے پاس لے جا کر کہا، ”اے صندوق! ہمیں تمہارے بارے میں کوئی خبر پہنچی ہے، اگر یہ سچ ہے تو ہم تمہاری خبر کو دفن کر کے تیرے بعد والوں کو سبق سکھاتے ہیں اور اگر وہ خبر جھوٹی ہے تو لکڑی کے کسی صندوق کو دفن کرنے کا ہمیں کوئی گناہ نہیں۔“ پھر اس نے حکم دیا اور صندوق کنویں میں پھینک دیا گیا اور ساتھ ہی اس خادم کو بھی اس کے ساتھ ہی زندہ دفن کر دیا گیا کہ جس نے یہ خبر پہنچائی تھی۔ جب کنواں بند کروا کر محل واپس پہنچے تو ام البنین کو روتے ہوئے پایا گیا، کچھ عرصے کے بعد وہ بھی ایک دن منہ کے بل گر کر مری ہوئی پائی گئی۔ (ذم الہدیٰ)

(ii) صحر والا گناہ:

حضرت شعبی بیان کرتے ہیں کہ ”لقمان بن عاد جس نے سات

صدیاں پائی تھیں، عورتوں کے عشق میں مبتلا رہا کرتا تھا، وہ جس بھی عورت سے

نکاح کرتا وہ اس کی عزت کے معاملے میں خیانت کرتی تھی، یہاں تک کہ اس نے ایسی کم سن لڑکی سے نکاح کیا کہ جس نے مردوں سے شناسائی نہیں کی تھی۔ اس نے اس کے لئے پہاڑ کی چوٹی پر ایک گھر بنوایا اور پھر زنجیر کی سیڑھی ہوئی اور اسی کے ذریعے اس کے پاس چڑھ کر جاتا اور اترتا تھا۔

یہاں تک کہ عمالقہ قوم کا ایک طاقتور جوان، اس لڑکی تک پہنچ گیا اور وہ لڑکی اس کے دل میں اتر گئی۔ وہ نوجوان واپس اپنے بھائیوں کے پاس آیا اور کہا، ”واللہ! میں تمہیں ایک جنگ میں پھنسانا چاہتا ہوں، تم میرا ساتھ دو۔“ انہوں نے معاملہ پوچھا۔ اس نے کہا کہ لقمان بن عاد کی بیوی مجھے تمام لوگوں سے زیادہ محبوب ہو گئی ہے۔“ انہوں نے کہا کہ ”ہم اس تک تیرے پہنچنے کا کیا حیلہ کر سکتے ہیں؟ اس نے کہا کہ تم اپنی تلواروں کو جمع کرو، پھر مجھے ان کے درمیان رکھ کر ایک بڑا سا گھڑ بنا لو، اس کے بعد لقمان کے پاس جا کر کہو کہ ہم سفر کا ارادہ رکھتے ہیں چنانچہ یہ تلواریں بطور امانت اپنے پاس رکھ لو۔“ انہوں نے حسب ترکیب لقمان سے درخواست کی، اس نے قبول کر کے تلواریں اپنے گھر کے ایک کونے میں رکھ دیں۔ اب جب بھی لقمان باہر جاتا، لڑکی تلواریں کھول دیتی اور نوجوان اس سے باتیں کرتا، جب محسوس ہوتا کہ لقمان آنے والا ہے تو لڑکی اسے دوبارہ چھپا دیتی۔ اسی طرح کئی دن گزر گئے۔ آخر ایک دن اس کے بھائی آئے اور تلواریں لے کر چلے گئے۔ ان کے جانے کے بعد لقمان نے دیکھا کہ چھت کے قریب تھوک چمٹا ہوا ہے۔ اس نے بیوی سے پوچھا ”یہ کس نے تھوکا ہے؟“ اس نے کہا میں نے۔“ لقمان نے کہا ”اچھا ذرا تھوک کے بتا، جب لڑکی نے تھوکا تو اس کا تھوک وہاں تک نہ پہنچ سکا۔ لقمان نے کہا، ”ہائے تباہی! مجھے تلواروں نے دھوکہ میں مبتلا رکھا۔“ پھر اس نے غصے میں لڑکی کو پہاڑ سے نیچے پھینک دیا، جس کے باعث اس کے ٹکڑے ٹکڑے ہو گئے۔ پھر وہ نیچے اترتا تو اس کی ”صحر“ نامی بیٹی

سامنے آگئی، اس نے پوچھا، ”لباجان! خیریت تو ہے؟ کیا بات ہے؟“ اس نے جواب میں کہا کہ ”تو بھی عورتوں میں سے ہے۔“ پھر اس کے سر کو بھی چٹان پر دے مارا اور وہ بھی ہلاک ہو گئی۔ اس وقت سے عرب میں یہ کہاوت چل نکلی ”مَا أَذْنَبْتُ إِلَّا ذَنْبَ صَحْرٍ۔ یعنی اس عورت نے کوئی گناہ نہیں کیا، مگر جیسا گناہ صحرا نے کیا ہے۔“ (ذم الموی)

(iii) تدبیر الٹی پڑ گئی :-

ابو القاسم جہنی کہتے ہیں کہ بغداد کی لڑکیوں میں ایک نہایت پاک دامن خوبصورت لڑکی رہتی تھی۔ اس کا چچا زاد بھائی اسے پسند کرتا تھا، کیونکہ یہ دونوں اکٹھے پروان چڑھے تھے۔ لیکن اس کے باپ نے اس کی شادی ایک غریب لڑکے سے کر دی۔ اس کے چچا زاد کو اس بات کا بے حد صدمہ ہوا اور وہ اکثر و بیشتر لڑکی کے گھر کے چکر لگانے لگا، جس کو اس کے خاوند نے بھی محسوس کر لیا۔ چنانچہ وہ بہت احتیاط کرنے لگا۔ ایک دن خاوند باہر گیا ہوا تھا، لڑکی نے چاہا کہ کچھ ٹھنڈک حاصل کر لے۔ چنانچہ اس نے غسل کے لئے اپنے کپڑے اتارے اور اپنی سونے کی انگوٹھیاں کپڑوں کے پاس ہی رکھ دیں، اور پھر غسل شروع کر دیا۔ اتفاقاً ایک کوئے نے اس کی انگوٹھیاں اٹھائیں اور دروازے کی طرف سے باہر اڑ گیا۔ دروازے کے قریب موجود اس چچا زاد کی نگاہ ان پر پڑ گئی، اس نے کوئے کا پیچھا کیا اور کسی طرح انگوٹھیاں حاصل کر کے خود پہن لیں اور دروازے پر آکر اس نیت سے بیٹھ گیا کہ لڑکی کے خاوند کی ان انگوٹھیوں پر نگاہ پڑ جائے اور وہ بدظن ہو کر لڑکی کو طلاق دے دے۔

چنانچہ جب خاوند آیا تو یہ سلام کرنے کے بہانے کھڑا ہوا اور جان بوجھ کر ہاتھ اٹھا کر سلام کیا تو شوہر نے وہ انگوٹھیاں پہچان لیں۔ پھر وہ اندر گیا تو اس نے بیوی کو نہاتے ہوئے دیکھا، جس کے باعث اس کے دل میں زبردست بدگمانی پیدا ہو گئی اور اس نے دروازہ بند کر کے بغیر تحقیق کئے اس لڑکی کو ذبح کر دیا۔ اتفاقاً اس کی خادمہ

نے یہ سب کچھ دیکھ لیا، اس نے زور زور سے شور مچانا شروع کر دیا۔ لوگوں نے شوہر کو پکڑ کر بادشاہ کے حضور پیش کر دیا، نتیجتاً اسے بھی بیوی کے قتل کے جرم میں قتل کر دیا گیا۔ بعد میں اس چچا زاد نے اصل قصہ لوگوں کو بتایا، پھر یہی قتل اس کی توبہ کا سبب بنا اور وہ مرتے دم تک اللہ تعالیٰ کی عبادت میں مشغول رہا۔“ (ذم الہوی)

(۵) خود کشی :-

یوں تو خود کشی کے بہت سے اسباب ہوتے ہیں۔ لیکن اگر ان اسباب کی اصل پر غور کیا جائے تو کسی معاملے میں ”شدید صدمہ“ سر فرست نظر آئے گا۔ اس ”شیطانی چکر“ میں پھنس کر بھی انسان کو کئی مقامات پر شدید غم کا سامنا کرنا پڑتا ہے، کبھی محبوب کی بے رخی کی وجہ سے، کبھی سامنے والے کے مرضی کے مطابق بات نہ ماننے کی بناء پر، کبھی کسی سبب سے محبوب سے ہمیشہ کے لئے دست بردار ہونے کے کامل یقین کے باعث اور کبھی محبوب کی اچانک موت کے سبب۔ کمزور حوصلہ رکھنے والے حضرات ان غموں سے لڑنے کی ہمت مفقود ہونے کے باعث ”راہ فرار“ اور ”سکون“ کی تلاش میں حرام موت کو گلے لگانا پسند کر لیتے ہیں، اور اس طرح نہ صرف دنیا میں کامیابی سے محروم رہ جاتے ہیں بلکہ (اگر اللہ ناراض ہو اتو) آخرت میں بھی انہیں ناکامی کا منہ دیکھنا پڑے گا۔ جیسا کہ مسلم شریف میں حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا، ”جس کسی نے لوہے کے ہتھیار سے خود کو ہلاک کیا تو نار دوزخ میں وہ ہتھیار اس شخص کے ہاتھ میں ہو گا اور وہ اس سے خود کو ہمیشہ زخمی کرتا رہے گا اور جو شخص زہر کے ذریعے خود کو زخمی کرے گا تو وہ نار دوزخ میں ہمیشہ زہر کھاتا رہے گا اور جو شخص پہاڑ سے گر کر خود کشی کرے گا، وہ نار

۱۔ خود کشی کے مکمل احکام اور اس فعل حرام سے بچنے کے لئے ترغیبات پر مشتمل علامہ محمد اکمل عطا قادری عطاری کی پراثر تالیف ”نجات یا ہلاکت؟“ کا ضرور مطالعہ کیجئے۔ (ادارہ)



دوزخ میں ہمیشہ ہمیشہ گر تار ہے گا۔

اس ضمن میں دو خبریں اور ایک واقعہ ملاحظہ فرمائیے۔

☆ فیروز والا میں شرقپور کے نواحی علاقہ فیصل پور کلاں میں ایک نوجوان جمیل احمد نے والدین کے رویہ سے تنگ آ کر اور پسند کی شادی نہ کرنے پر خودکشی کر لی۔

☆ مضافاتی شہر غزہ میں کم سن لڑکیوں نے اس لئے زہر کھا کر خودکشی کرنے کی کوشش کی، کیونکہ ان میں سے ایک لڑکی کے والدین اس کی مرضی کے خلاف شادی کرنا چاہتے تھے۔ عرب ملکوں میں والدین اپنے بچوں کی شادی خود طے کرتے ہیں لیکن مذکورہ لڑکی والدین کی مرضی سے طے ہونے والے رشتہ پر راضی نہ تھی۔ چنانچہ اس نے اپنی دو چچا زاد بہنوں کے ساتھ ملکر زہر کھا لیا۔ جب مٹی کا والد گھر لوٹا تو اس نے تینوں بچیوں کو بڑی نازک حالت میں پایا اور انہیں فوری طبی امداد کے لئے ہسپتال پہنچا دیا گیا۔ ذرائع کے مطابق دیگر دو بچیوں نے محض اپنی چچا زاد بہن کی حمایت میں زہر کھایا۔

☆ تیز پیٹ میں گھسائے :-

ابو مسکین ذکر کرتے ہیں کہ قبیلہ تمیم کے ایک نوجوان کی اونٹنی گم ہو گئی، یہ اسے تلاش کرنے کے لئے بنی شیبان کے قبیلے میں گیا، ابھی اسے ڈھونڈھ ہی رہا تھا کہ اس کی نگاہ ایک حسین و جمیل لڑکی پر پڑی، وہ لڑکی حسن میں سورج کی طرح تھی، نوجوان اسی وقت اس کا عاشق ہو گیا، چنانچہ جب واپس ہوا تو اپنی عقل کھو چکا تھا۔ رات ہوئی تو اس نے سوچا کہ شاید میں اس کو ایک نظر دیکھ کر چین حاصل کر سکوں، چنانچہ یہ اس لڑکی کے قبیلے میں آیا، دیکھا تو وہ ایک مقام پر بیٹھی ہوئی تھی اور اس کے بھائی قریب ہی سو رہے تھے، اس نے لڑکی سے کہا کہ ”شوق نے میری عقل کو برباد کر دیا ہے اور میری زندگی تلخ بنا دی ہے۔“ لڑکی نے کہا، ”تم اسی حالت میں واپس

لوٹ جاؤرنہ میں اپنے بھائیوں کو جگادوں گی اور وہ تجھے قتل کر دیں گے۔“ لڑکے نے کہا کہ ”میں جس حالت میں مبتلاء ہوں اگر اس میں تیرے بھائی مجھے مار دیں تو یہ میرے لئے زیادہ آسان ہے۔“ لڑکی نے کہا، ”کیا قتل سے زیادہ بھی کوئی سخت چیز ہے؟“ اس نے کہا، ”ہاں، تیری محبت جس میں، میں گرفتار ہو چکا ہوں۔“ اس گفتگو کی بناء پر لڑکی کا دل بھی اس کی طرف مائل ہو گیا، اور اس طرح لڑکے کو روزانہ رات میں آنے کا موقع حاصل ہو گیا۔

جب یہ ملاقاتوں کا سلسلہ دراز ہوا تو آہستہ آہستہ لڑکی کے قبیلے والوں اور بھائیوں کو اس نوجوان کی آمد کی خبر ہو گئی اور ایک رات وہ اسے پکڑنے کے لئے چھپ کر بیٹھ گئے۔ لڑکی کو جب اس صورتِ حال کے بارے میں معلوم ہوا تو اس نے کسی طرح اس لڑکے کو پیغام روانہ کیا کہ ”میرے قبیلے والے تجھے قتل کرنا چاہتے ہیں، لہذا خود کو غفلت سے بچا کر رکھو۔“ پھر اس رات خوب بارش ہوئی، جس کے باعث قبیلے والے اس نوجوان کی آمد سے مایوس ہو کر سو گئے۔ جب بادل چھٹ گئے اور چاند ظاہر ہو گیا، تو اس لڑکی نے خوشبو لگائی، بال بکھیرے اور ارادہ کیا کہ اسی حال میں اس نوجوان سے ملنے کے لئے جاؤں، چنانچہ اس نے اپنی ایک رازدار سہیلی کو ساتھ لیا اور نوجوان سے ملاقات کے لئے ان پہاڑوں کی طرف چل دی کہ جن میں وہ نوجوان لوگوں کے خوف کے باعث چھپا بیٹھا تھا۔ جب یہ دونوں پہاڑوں کے پاس پہنچیں تو اس نوجوان نے انھیں دور سے دیکھ کر گمان کیا کہ ”یہ دو افراد میرے پکڑنے والوں میں سے ہیں۔“ چنانچہ اس نے ایک تیر نکالا اور اتفاقاً اپنی محبوبہ کے ہی دے مارا، وہ خون میں لت پت ہو کر زمین پر گر گئی۔ اب جب نوجوان نے قریب آکر غور سے دیکھا تو اسے علم ہوا کہ اس نے تو خود اپنے ہاتھوں اپنی محبوبہ کو جان سے مار دیا ہے، اس وقت اس کے دل میں شدید اور ناقابل برداشت رنج و غم پیدا ہوا اور اس نے یہ شعر پڑھے،

نَعَبَ الْغُرَابُ بِمَا كَرِهَهُ

وَلَا إِزَالَتَهُ لِلْقَدَرِ

تَبِكِي وَأَنْتَ قَتَلْتَهَا

فَاصْبِرْ وَ إِنَّا فَاثْتَجِرْ

(یعنی (۱) جس چیز کو ناپسند کرتا تھا، کو اسی کے سبب کائیں کائیں کرنے لگا، حالانکہ تقدیر کے لکھے کے لئے زوال نہیں۔ (۲) اب تو روتا ہے حالانکہ تو نے ہی تو اسے قتل کیا ہے، پس اب صبر کرورنہ خود کو ذبح کر دے۔)

پھر اس نے اپنے تیر جمع کئے اور انھیں اپنے پیٹ میں گھسا کر خود کو ہلاک کر

لیا۔ (ذم الہدی)

(۶) اپنے ہاتھ سے غسل واجب کرنا:

جیسا کہ ما قبل میں گزر گیا کہ ”جب نفس کی ایک خواہش پوری کی

جائے تو یہ مزید برائی کا مطالبہ شروع کر دیتا ہے حتیٰ کہ انسان کو تباہ و برباد کر کے ہی دم لیتا ہے۔“ چنانچہ جب کوئی شخص نفس کی خواہش کی بناء پر اپنی نگاہ کو آزاد چھوڑ دینے کی پاداش میں ”عشق مجازی“ میں گرفتار ہو جاتا ہے تو اب نفس صرف کسی کو دیکھتے رہنے پر ہی راضی نہیں رہتا، بلکہ اس کے تقاضے مزید بڑھتے چلے جاتے ہیں۔ اب بعض اوقات ایسا بھی ہوتا ہے کہ انسان خود کو ان تقاضوں کی تکمیل پر قادر نہیں پاتا، نتیجتاً اکثر اوقات ”ان تقاضوں کی تکمیل سے عاجز آجاتا“ اس کی، ”مزید گناہوں کے ارتکاب کی ہمت کی طرف“ راہنمائی کرتا ہے اور چونکہ باطنی خواہش انتہائی شدید ہوتی ہے لہذا ”ان گناہوں کی آفت و مصیبت کو جاننے اور ان سے نفرت و کراہیت رکھنے کے باوجود، وہ انھیں اختیار کرتا ہی چلا جاتا ہے۔“

مثال کے طور پر ایک شخص کو کسی سے عشق ہوا، تو اب نفس بدکار صرف

محبوب کو دیکھتے رہنے پر ہی راضی نہ رہے گا بلکہ اس ”عاشقِ نامراد“ کو مزید آگے بڑھنے کی ترغیب دے گا۔ اب بالفرض یہ شخص کسی انتہائی شریف خاندان سے تعلق رکھتا ہے اور اسے زیادہ قریب ہونے میں بدنامی کا خوف ہے، یا گھر میں سختی بہت زیادہ ہے، یا یہ کسی گھٹیا پیشے یا بظاہر کسی نیچ قوم سے تعلق رکھتا ہے اور اس کا محبوب مالدار یا اعلیٰ خاندان و قوم کا فرد ہے، اب صورتِ حال یہ ہے کہ باطنی تقاضا تو محبوب کے قرب و وصال کا متمنی ہے، جب کہ حالات کی بناء پر وہ اس تقاضے کی تکمیل پر قادر نہیں، لہذا نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ اس باطنی تقاضے کی وجہ سے مسلسل حاصل ہونے والی تکلیف و بے چینی سے وقتی نجات کے لئے بعض اوقات ”مشت زنی“ کا کمزور سہارا قبول کر لیا جاتا ہے اور اس طرح وہ خود اپنے ہی ہاتھوں اپنی ہلاکت کا سامان جمع کرنا شروع کر دیتا ہے، کیونکہ اس فعلِ بد کی بناء پر نہ صرف اس کی صحت تباہ و برباد ہو جاتی ہے بلکہ توبہ نہ کرنے کی صورت میں، یہ، اللہ تعالیٰ اور اس کے محبوب ﷺ کی بارگاہ میں ذلیل و رسوا بھی ہو جاتا ہے۔ جیسا کہ

☆ رحمتِ عالم ﷺ کا فرمانِ عالیشان ہے کہ ”نَاكِحُ الْيَدِ مَلْعُونٌ“۔ یعنی

اپنے ہاتھ سے نکاح کرنے والا ملعون ہے۔“ (اسرار الرغوب لعلی القاری)

☆ مروی ہے کہ اللہ تعالیٰ نے ایک قوم کو ہلاک کر دیا، اس لئے کہ وہ اپنی

شرم گاہوں کے ساتھ فضول حرکت کرتے تھے (یعنی اپنے ہاتھوں سے غسل واجب کرتے

تھے)۔ اسے اسماعیل بن لبان نے انس بن مالک سے باسند بیان کیا ہے۔ (توت القلوب۔ للمحدثی)

(۷) جھوٹ اور منافقت میں گرفتار ہونا:

اس ”گناہوں سے بھر پور چکر“ میں مبتلاء ہو کر جہاں دیگر بے شمار

خطاؤں کا ”تحفہ“ وصول کرنا پڑتا ہے، وہیں جھوٹ و منافقت جیسے قابلِ نفرت و مذمت

کاموں میں مشغولیت بھی لازمی طور پر قبول کرنی پڑتی ہے۔ کیونکہ اس چکر کی وجہ سے

کبھی اپنے ماں باپ و دیگر رشتہ داروں کے سامنے جھوٹ بولنا پڑتا ہے تو کبھی زوجہ کے سامنے۔ (جب کہ عاشق صاحب پہلے سے شادی شدہ ہوں) اور سب سے زیادہ جھوٹ اپنی محبوب شخصیت کے سامنے ہی بولا جاتا ہے، وہ اس طرح کہ کبھی تو محبت کی شدت میں کمی کے باوجود محبوب کے سامنے اپنی مصنوعی بے قراری کا مختلف الفاظ میں اظہار کیا جاتا ہے مثلاً میرا تو تمہارے بغیر وقت ہی نہیں کٹتا ہے، جب تک تمہیں دیکھ نہ لوں مجھے ایک پل چین نہیں آتا ہے، میں ہر وقت بس تمہارے ہی تصور میں کھویا رہتا ہوں، میں تمہارے بغیر زندہ رہنے کا تصور بھی نہیں کر سکتا وغیرہ وغیرہ، حالانکہ وہ خود اچھی طرح جانتا ہے کہ رخصت ہونے کے بعد سے لے کر دوسری ملاقات تک، اس کے دل پر کسی قسم کی کوئی پریشانی و گھبراہٹ و بیقراری طاری نہیں ہوتی بلکہ وہ اپنے تمام کام بالکل نارمل انداز میں سرانجام دیتا رہتا ہے، حتیٰ کہ نہ تو کبھی ایک وقت کا کھانا ہی چھوٹا اور نہ کوئی ایسی رات گزری کہ جس میں آنکھوں سے نیند اڑ گئی ہو۔

بعض اوقات نہیں بلکہ اکثر اوقات مستقبل کے بارے میں ”کم عقل رکھنے والی مخلوق“ کو سبز باغ دکھائے اور کثیر ایسے وعدے بھی کئے جاتے ہیں کہ جن میں سے تقریباً کی بنیاد صرف جھوٹ پر رکھی گئی ہوتی ہے۔ نیز سامنے والے کی بھرپور توجہ کے حصول اور اسے مزید اپنی جانب مائل کرنے کے لئے جھوٹی تعریفوں کے پل باندھے جاتے ہیں (کیونکہ اس قسم کے چکر میں پڑے رہنے والے صنفِ نازک کی اس کمزوری سے مغولی واقف ہوتے ہیں)۔ کاش! یہ حضرات اس آیتِ پاک کو ہمیشہ اپنے پیشِ نظر رکھنے کی کوشش کرتے کہ ”لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ“ یعنی جھوٹوں پر اللہ کی لعنت۔“ (ال عمران - ۶۱)۔

جھوٹ کے ساتھ ساتھ اس چجرِ منحوس کی بناء پر انسان اپنے ظاہر و باطن کے اختلاف کے سبب منافقت میں بھی مبتلاء ہو جاتا ہے، وہ اس طرح کہ بعض اوقات کسی کو اپنی ذات سے متاثر کرنے کے لئے عبادت وغیرہ کا سہارا لیا جاتا ہے، کبھی شادی

شدہ شخص کو اپنی محبت کے ظاہر ہو کر فتنہ انگیزی کا سبب بن جانے کے خوف کے باعث اپنی زوجہ کے سامنے اس قسم کی اداکاریاں کرنی پڑتی ہیں کہ جس سے اسے اس کی توجہ کم ہونے کا بالکل احساس نہ ہو اور وہ اسے اپنے بارے میں بالکل مخلص تصور کرتی رہے اور کبھی اپنی محبوب شخصیت کو متاثر کرنے کے لئے چہرے پر مصنوعی تاثرات ظاہر کرنے پڑتے ہیں۔ اور اس طرح انسان جان بوجھ کر جھوٹ بولنے اور منافقت اختیار کر کے دوسرے کو بے وقوف بنانے کے باعث سخت گناہ گار ہوتا چلا جاتا ہے۔

### ﴿چھٹا نقصان﴾

دل کا سخت ہو جانا:۔

ما قبل میں بالتفصیل معلوم ہو چکا کہ یہ ”شیطانی چکر“ بے شمار گناہوں کے لئے سببِ عظیم کی حیثیت رکھتا ہے اور یہ مسلمہ حقیقت ہے کہ گناہوں کے سبب انسان کا دل سیاہ پڑ جاتا ہے، جیسا کہ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا ”جب کوئی مومن گناہ کرتا ہے تو اس کے دل پر ایک سیاہ نکتہ لگ جاتا ہے، اگر وہ توبہ کر لے، گناہ سے باز آجائے اور اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں استغفار کرے تو اس کا دل صاف ہو جاتا ہے اور اگر (توبہ نہ کرے بلکہ)، مزید گناہ کرے تو نکتہ بھی زیادہ ہوتا چلا جاتا ہے حتیٰ کہ اس کے دل کو گھیر لیتا ہے، پس یہی وہ زنگ ہے کہ جس کا ذکر اللہ تعالیٰ نے قرآنِ پاک میں فرمایا، ”كَلَّا بَلْ سَكَتَ رَانَ عَلَيَّ قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ“ ترجمہ: کوئی نہیں بلکہ ان کے دلوں پر زنگ چڑھا دیا ہے ان کی کماؤں نے۔ (المطففين - آیت ۱۳، پ ۳۰)۔ (ترذی)

اور جب دل سیاہ پڑ جائے تو اس کی ایک علامت یہ بھی ظاہر ہوتی ہے کہ انسان کا دل بے حد سخت ہو جاتا ہے اور جب دل سختی میں حد سے بڑھ جائے تو پھر انسان سے ایسے ایسے گندے اور قبیح افعال سرزد ہوتے ہیں کہ جن کا عام حالات میں اس نے



کبھی تصور بھی نہیں کیا ہوتا۔ اگر ”مجازی محبت“ میں گرفتار حضرات کی زندگی کا بغور مشاہدہ کیا جائے تو بآسانی معلوم ہو گا کہ بظاہر نرم دل نظر آنے والے یہ معصوم چہرے، حقیقت میں انتہائی قلبی سختی و خود غرضی میں مبتلاء ہیں، انھیں صرف اور صرف اپنے اس ناپاک مقصد میں کامیابی سے دلچسپی ہوتی ہے، چاہے اس کامیابی کے لئے انھیں کتنی ہی بڑی سے بڑی قربانی کیوں نہ دینی پڑ جائے اور ان کی اس کامیابی تک پہنچنے کے دوران اطراف میں رہنے والوں اور کسی بھی طرح وابستگی رکھنے والوں کو کتنی ہی اذیت و تکلیف کیوں نہ پہنچے، انھیں اس کی بالکل پرواہ نہیں ہوتی مثلاً،

(۱) راہ میں رکاوٹ بننے والے کو قتل کر دینا:-

جب ”مجازی محبت“ کا جن سر پر خوب اچھی طرح سوار ہو جائے تو اب اس راہ میں کسی بھی رکاوٹ کو پسند نہیں کیا جاتا، اگر وہ رکاوٹ آسانی سے درمیان سے ہٹائی جاسکتی ہو تو بہت خوب، ورنہ انتہائی قدم اٹھاتے ہوئے قتل سے بھی گریز نہیں کیا جاتا۔ چنانچہ کبھی تو اپنے محبوب کے دیگر دعویٰ داروں کا صفایا کیا جاتا ہے اور کبھی خاندان کی جانب سے ہونے والی سختی کے جواب میں سگے رشتہ داروں کو ہی قربان کر دیا جاتا ہے۔

اس ضمن میں درج ذیل واقعات ملاحظہ فرمائیے۔

(۱) باپ کو قتل کروا دیا:-

عبداللہ بن مسلم بن قتیبہ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”میں نے ”سراجم“ میں پڑھا ہے کہ جب ارد شیر کی حکومت مستحکم ہو گئی اور چھوٹے چھوٹے بادشاہوں نے اس کے زیر نگیں رہنے کا اقرار کیا تو اس نے ”ملک سریانیہ“ کا محاصرہ کیا، اس بادشاہ نے ”حضر نامی“ شہر میں پناہ لے رکھی تھی۔ ارد شیر کو محاصرے کے باوجود فتح حاصل نہ ہوئی، حتیٰ کہ ایک دن اس بادشاہ کی بیٹی قلعہ کی فصیل پر آئی تو

اس کی نگاہ ارد شیر پر پڑی، اسے دیکھتے ہی وہ اس پر عاشق ہو گئی اور اس نے ایک تیر پر لکھا، ”اگر تم مجھ سے شادی کی شرط کو تسلیم کر لو تو میں تمہیں وہ خفیہ راستہ بتا سکتی ہوں کہ جس کے ذریعے شہر کو معمولی حیلہ اور تھوڑی سی تکلیف کے ساتھ فتح کیا جاسکتا ہے۔“ پھر اس تیر کو ارد شیر کی طرف پھینکا، اس نے پڑھ کر جوانی تیر پر لکھا، ”جس کا تم نے مجھ سے مطالبہ کیا ہے میں اسے پورا کروں گا۔“ جب تیر شہزادی تک پہنچا تو اس نے ارد شیر کو وہ خفیہ راستہ بتا دیا، جس سے فائدہ اٹھا کر شہر فتح کر لیا گیا، بادشاہ کو قتل کر دیا گیا اور بے شمار لوگ مارے گئے، ارد شیر حسب وعدہ لڑکی سے شادی کر کے اسے اپنے ساتھ لے گیا۔

شادی کے بعد ایک رات وہ بستر پر دراز تھی لیکن اسے نیند نہیں آرہی تھی، ارد شیر نے پوچھا، ”تمہیں نیند کیوں نہیں آرہی؟ کیا میرا بستر درست نہیں؟“ یہ کہہ کر اس نے بستر کی چادر ہٹا کر دیکھی تو درخت مورو کے گچھے کی ایک لٹ نظر آئی، جس نے شہزادی کی جلد پر نشان کر دیا تھا۔ ارد شیر اس کی جلد کی نازکی سے بڑا حیران ہوا اور اس نے پوچھا کہ ”تیرا باپ تجھے کیا غذا کھلاتا تھا؟“ لڑکی نے جواب دیا کہ ”اس کے پاس میری اکثر غذا شہد، ہڈیوں کا گودا، مغز اور مکھن ہوتی تھی۔“ ارد شیر نے یہ سن کر کہا ”تیرے باپ سے زیادہ، تیرے ساتھ کسی نے اتنا اچھا سلوک نہیں کیا، لیکن اس کے باوجود تو نے اسے مروادیا، اور جب کہ تو نے اپنی طرف سے اس کے احسان کا بدلہ ”اس کی بیٹی ہونے اور اس کے حق کے عظیم ہونے کے باوجود اتنا گھناؤنا داکیا ہے تو میں ایسی عورت سے اپنے آپ کو بھی بالکل محفوظ تصور نہیں کرتا۔“ پھر اس نے حکم دیا کہ اس کے سر کے بالوں کو تیز رفتار گھوڑے کی دم کے ساتھ باندھ کر اسے دوڑا دو۔“ چنانچہ اس کے ساتھ ایسا ہی کیا گیا، تھوڑی ہی دیر میں اس کے بدن کے ٹکڑے ٹکڑے ہو گئے اور یوں وہ اپنے انجام کو پہنچی۔ (دم الھوی لاین جوزی)

(۲) باپ کو زہر دے دیا:-

رقاش نامی ایک عورت قبیلہ ایادین نزار سے تعلق رکھتی تھی۔ اس کا باپ اس سے شدید محبت کرتا تھا۔ اس کی قوم کے ایک شخص نے اس کی بیٹی کے رشتے کے لئے پیغام بھیجا، لڑکی اسے پسند کرتی تھی لیکن باپ نے اس رشتے سے انکار کر دیا۔ اسی غصے میں لڑکی نے اپنے باپ کو زہر دے دیا۔ جب باپ کو موت کا احساس ہوا تو اس نے کہا، ”اے رقاش! تو نے ایک غیر کے لئے میرا خون کر دیا، تجھے اس کا انجام عنقریب چکھنا ہو گا۔“ باپ کے انتقال کے بعد اس نے اسی شخص سے شادی کر لی۔ کچھ عرصہ کے بعد کسی بات پر اس کے شوہر نے اس کی پٹائی کی، کسی نے اس کہا کہ ”سنا ہے کہ تیرے شوہر نے تیری پٹائی کی ہے؟ اس جواب دیا کہ ”جس کے مددگار کم ہوں وہ رسوا ہی ہوتا ہے۔“ پھر اس کے خاوند نے دوسری شادی کر لی۔ جب کسی نے اس بارے میں احساس دلا کر طلاق کا مشورہ دیا تو رقاش نے کہا، ”میں شر کے ساتھ ایک اور شر کو نہیں ڈھونڈنا چاہتی، ایک شریف عورت کے لئے طلاق جیسی کالک بہت ہوتی ہے۔“ (ذم الہوی)

**ملینہ:** باپ کو قتل کرنے کے باوجود اپنے آپ کو شریف گمان کرنا بہت بڑی جرأت و بے غیرتی ہے یا نہیں؟ یقیناً اس کا فیصلہ کرنا ایک صاحب عقل کے لئے بالکل دشوار نہیں۔“

(۳) جسمانی تکلیف میں مبتلا کر دینا:-

اس ”شتر بے مہار گروہ“ کی قلبی سختی کبھی دیگر افراد کو سخت جسمانی اذیتیں دینے کی بناء پر ظاہر بھی ہوتی ہے، جس کی ایک ادنیٰ سی مثال موجودہ معاشرے میں وقوع پزیر ہونے والا یہ ”تازہ دلخراش واقعہ“ ہے، چنانچہ

ایک اخباری خبر کے مطابق، ”محمد نگر قلعہ گوجر سنگھ لاہور میں بیوی نے آشنا

سے مل کر شوہر کی آنکھوں میں تیزاب ڈال کر اسے اندھا کر دیا، پولیس نے ملزمہ اور اس کے آشنا کو گرفتار کر کے جیل بھجوا دیا۔ بتایا گیا ہے کہ ”۱۶ سال پہلے غفور کی شادی، شفقت بی بی سے ہوئی۔ بعد میں شفقت نے اپنے ہمسائے رمضان سے تعلقات استوار کر لئے۔ ان دونوں نے غفور کو راستے سے ہٹانے کا فیصلہ کیا، چنانچہ شفقت نے غفور کو نشہ آور چیز پلا دی اور سوتے میں اپنے آشنا کے ساتھ رمضان کی آنکھوں میں تیزاب ڈال دیا۔“

نیز اسی قسم کے سینکڑوں واقعات اپنے اطراف میں ملاحظہ کئے جاسکتے ہیں کہ جن میں اس ”فسادی گروپ“ کے افراد کسی کا سر پھاڑتے، کسی کی ٹانگیں توڑتے، کسی کے ہاتھوں کو ہمیشہ کے لئے ناکارہ کرتے اور کسی کے خوبصورت چہرے پر تیزاب پھینک کر اسے ساری زندگی سسک سسک کر گزارنے پر مجبور کرتے نظر آئیں گے۔

(۴) روحانی تکلیف میں مبتلا کرنا۔

یوں تو ہر جسمانی تکلیف، روحانی تکلیف کا سبب بھی ضرور بنتی ہے، لیکن بعض اوقات یہ ”شر پسند گروپ“ خالصتاً روحانی تکلیف کا سبب بن جاتا ہے۔ پھر اس کی کئی صورتیں ہیں۔

☆ بعض اوقات یہ باعثِ تکلیف ہونا اپنے والدین اور دیگر رشتہ داروں کے لئے ہوتا ہے مثلاً جب یہ یقین ہو جائے کہ گھر والے میری مطلوبہ جگہ پر میرا رشتہ نہیں کریں گے بلکہ میری مرضی کے برخلاف ان کا ارادہ مجھے کسی اور مقام پر مقید کر دینے کا ہے، تو ”ماڈرن ماحول میں پروان چڑھنے والی محترمہ“ علم بغاوت بلند کرتے ہوئے، اپنے محسن و مرئی والدین کے احسانات اور دیگر خاندان والوں کی عزت کی پرواہ کئے بغیر ”ایک غیر مرد“ کے ہاتھوں میں ہاتھ دے رہا فرار اختیار کر کے، سب کو ”بدنامی“ کے دریا میں غوطہ زن کرتی ہوئی نظر آتی ہے۔ اس عمل کو اپناتے ہوئے اس

خود غرض عاشقہ کو صرف اور صرف اپنے مستقبل کے بارے میں خوبصورت و سہانے خواب یاد ہوتے ہیں، اس پہلو پر غور و تفکر کرنے کی توفیق حاصل نہیں ہوتی کہ میرے اس بے غیرتی سے بھرپور اقدام کے بعد میرے ماں باپ، خاندان و محلے والوں کے طعنوں اور طنزیہ نگاہوں کا کس طرح سامنا کریں گے اور انھیں اس فعل کے باعث کس قدر روحانی اذیت و تکلیف پہنچے گی۔ خصوصاً جب اس لڑکی کا تعلق کسی صاحبِ عزت و شریف خاندان سے ہو یا وہ کسی گھٹیا یا (معاذ اللہ) غیر مسلم یا بد مذہب کے ساتھ فرار ہونے کی حماقت کرے۔ پھر اس کرب و اذیت میں اس وقت اور زیادہ اضافہ ہو جاتا ہے کہ جب اس ”ہو نہارنجی“ کا ”کارنامہ“ اخبارات کی زینت بن جائے۔

اس سلسلے میں یہ چار خبریں ملاحظہ فرما کر والدین کی اذیت کا تھوڑا بہت اندازہ لگائیے۔

﴿1﴾ ”والدین میری مرضی کے خلاف شادی کرنا چاہتے ہیں اس لئے گھر چھوڑ کر آگئی۔“ یہ بات بھائی پھیرو کی شازیہ نے بتائی۔ اس نے بتایا کہ ”ہم ۸ بہن بھائی ہیں، میں اپنے چچا کے بیٹے سے شادی کرنا چاہتی ہوں لیکن گھر والے نہیں مانتے۔ لڑکی کو ”دشک“ بھیج دیا گیا۔

﴿2﴾ گھر سے بھاگ کر شادی کرنے والی رائے و نڈ کی جواں سال لڑکی سمیرا پیر کے روز ”لاہور ہائی کورٹ سے بھی“، ”خواتین و کلاء“ کی مدد سے ماں باپ اور رشتہ داروں سے بچ کر فرار ہو گئی۔ واقعات کے مطابق سمیرا نے گھر سے بھاگ کر ایک لڑکے تجمل سے شادی رچالی، پولیس کی طرف سے ہراساں کرنے پر تجمل نے لاہور ہائی کورٹ میں رٹ دائر کر دی، رٹ کے مسترد ہونے کی بناء پر وہ عدالت سے غائب ہو گیا، والدین نے سمیرا کو ساتھ لے جانا چاہا، تو اس نے چیخ و پکار شروع کر دی اور زمین

پر لیٹ گئی۔ ”اسٹنٹ اے جی سلٹی اور دیگر خواتین و کلاء نے اسے والدین سے چھٹروا کر پولیس بلوالی اور اسے لیڈیز بار روم لے گئیں، جہاں سے وہ غائب ہو گئی۔“

﴿3﴾ شادی سے پندرہ روز قبل لڑکی آشنا کے ساتھ فرار ہو گئی۔ تفصیلات کے مطابق شادی سے پندرہ روز پہلے لڑکی رانی بی بی اپنے آشنا کے ساتھ ”جہیز کے لئے جمع کئے گئے طلائی زیورات، نقدی اور ملبوسات“ سمیت فرار ہو گئی۔

﴿4﴾ امریکی سپاہی کی محبت میں گرفتار بحرین کی شہزادی مریم نے امریکہ میں سیاسی پناہ کی درخواست دے دی۔ تفصیلات کے مطابق ایک امریکی سپاہی کی محبت میں گرفتار بحرین کی شہزادی مریم نے امریکہ میں سیاسی پناہ کی درخواست دے دی ہے، شہزادی مریم الخلیفہ نے موقف اختیار کیا ہے کہ وہ وطن واپس گئی تو اس کی زندگی محفوظ نہیں رہے گی۔ ۱۹ سالہ شہزادی مریم اور لانس کارل ول جیسن جانسن کا معاشرہ ایک سال سے زائد عرصہ تک چلا اور پھر شہزادی اس کے ساتھ چوری چھپے امریکہ چلی گئی، گزشتہ سال کے اختتام پر جانسن کی مدت تعیناتی ختم ہو رہی تھی، تو اس نے اپنی محبوبہ کے جعلی فوجی شناختی کاغذات بنائے اور دونوں کمرشل پرواز کے ذریعے امریکہ پہنچ گئے۔ شہزادی کا کہنا ہے اس نے بہت خطرناک قدم اٹھایا ہے اور واپس جانے پر اس کی زندگی حرام ہوگی۔

☆ کبھی اس کا شکار بیوی بچے یا شوہر بنتے ہیں۔ بیوی بچے اس طرح کہ جب کوئی شادی شدہ شخص اس لعنت میں گرفتار ہو جائے تو لا محالہ اسے اپنی بیوی اور بچوں کا وجود اس راہ میں رکاوٹ بننا ہوا نظر آتا ہے، جس کے باعث اس کی طبیعت میں بیزاریت اور چڑچڑاپن پیدا ہو جاتا ہے۔ اس کا لازمی نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ یا تو وہ معمولی معمولی باتوں پر، بہانے بنا بنا کر بیوی بچوں کو ڈانٹتا اور مارتا نظر آتا ہے اور یا پھر ان سے بالکل بے رخی اختیار کر لیتا ہے، اب نہ تو اسے بیوی کے حقوق ادا کرنے کی کوئی پرواہ ہوتی ہے نہ بچوں

پر شفقت اور ان کی تربیت کا کوئی خیال۔ یقیناً یہ صورتِ حال ”باپ کی طرف سے ملنے والی محبت سے محروم، سہمے ہوئے ان بچوں“ اور ”اجنبیت کا مظاہرہ کرنے والے شوہر کی حالت پر ہر وقت جلنے کڑھنے والی اس عورت“ کے لئے سخت روحانی تکلیف کا باعث بن جاتی ہے۔

اور شوہر کے لئے اس طرح کہ بعض اوقات زوجہ خوبصورت ہوتی ہے جب کہ شوہر ظاہری حسن و جمال سے محروم یا عورت مالدار و اعلیٰ خاندان سے تعلق رکھنے والی ہوتی ہے اور شوہر غریب و گھٹیا خاندان کا چشم و چراغ، چنانچہ ان اسباب کے باعث وہ ہمہ وقت بیوی کے مقابلے میں احساسِ کمتری کا شکار رہتا ہے۔ اب یہ زوجہ محترمہ کسی اور کی طرف مائل ہو جاتی ہیں تو نتیجتاً ان کی توجہ شوہر کی جانب سے بالکل ہٹ جاتی ہے، بلکہ اس کا قریب رہنا طبیعت پر بہت بڑا بوجھ محسوس ہوتا ہے۔ زوجہ کی اس بے رخی سے ”پہلے ہی احساسِ کمتری میں مبتلاء یہ شخص“ مزید احساسِ کمتری کا شکار ہو جاتا ہے۔ اور یوں ایک مسلسل ٹینشن اور احساسِ ندامت، اسے زبردست ”روحانی اذیت“ سے دوچار رکھتا ہے۔

**ملینہ:** بسا اوقات اس روحانی تکلیف کا شکار خود عاشقِ نامراد کو بھی بنا پڑتا ہے، اس کی بے شمار صورتوں میں سے ایک صورت یہ بھی ہے کہ بعض دفعہ لڑکی کے بھائیوں وغیرہ کو ان کے کارناموں کی اطلاع ملتی ہے تو وہ ”اپنی بہن کے قصور پر توجہ کئے بغیر“ جو بالانتقامی کارروائی کے طور پر اس عاشق کے گھر والوں کو تکلیف پہنچانے کی کوشش کرتے ہیں اور ان کا اس کوشش میں کامیاب ہو جانا یقیناً اس عاشقِ بے مراد کے لئے سخت روحانی تکلیف کا سبب بن جاتا ہے۔

اس کی ایک مثال موجودہ معاشرے میں ہونے والے ایک حالیہ دلخراش واقعے کے ذریعے پیش کرتا ہوں کہ جس کو پڑھ کر بہت دیر تک راقم الحروف کے دل



میں رنج و غم کی کیفیات گردش کرتی رہی تھیں، چنانچہ ایک اخباری خبر کے مطابق ایک نوجوان نے کسی لڑکی کو چھیڑا۔ جب اس کے بھائیوں کو اس کی اطلاع ملی تو انھوں نے غصے میں آکر اس نوجوان کی ماں کو ”اجتماعی زیادتی“ کا نشانہ بنا ڈالا۔ انا للہ وانا الیہ راجعون۔ اب آپ خود غور فرمائیں کہ جب اس نوجوان تک اس بات کی خبر پہنچی ہوگی تو اس کے دل کی کیا حالت ہوئی ہوگی.....

واقعی کسی نے صحیح کہا ہے کہ ”برے کام کا برا انجام۔“

### ﴿ساتواں نقصان﴾

کفر میں مبتلاء ہو جانا :-

اس ”شیطانی چکر“ کی سب سے بڑی آفت یہ ہے کہ انسان بسا

اوقات اس کے باعث کفر میں مبتلاء ہو جاتا ہے۔ یہ ابتلاء کئی لحاظ سے ہوتا ہے۔

{i} جب کوئی شخص اس چکر کے مزوں کا بے حد عادی ہو جائے تو اس سے

اس نشے کو چھڑوانا بہت دشوار گزار کام ہے۔ کیونکہ نفس ان لذتوں سے دست بردار

ہونے کے لئے کسی صورت تیار نظر نہیں آتا۔ ایسے انسان کو صرف وہی گفتگو اچھی لگتی

ہے جو اس معاملے میں ترقی کا سبب بنے، اس کے برعکس اس کی مذمت یا اسے ترک کر

دینے کے بارے میں کسی قسم کی بات اس کی طبیعت پر بے حد گراں گزرتی ہے، چنانچہ بسا

اوقات ایسا بھی ہوتا ہے کہ جب اسے کسی آیت پاک یا حدیث مبارکہ کے ذریعے اس

گناہ سے باز رکھنے کی کوشش کی جائے تو یہ جھنجھلاہٹ و غصے میں اللہ تعالیٰ یا اس کے

محبوب ﷺ کی شان میں گستاخی کر بیٹھتا ہے اور اس طرح یہ دنیاوی محبت اس کے ایمان

کی بربادی کا سبب بن جاتی ہے۔

{ii} کبھی یوں بھی ہوتا ہے کہ کسی غیر مسلم سے محبت ہو جاتی ہے، یقیناً اس

صورت میں مذاہب کے درمیان فرق ان کے قرب و وصال کے درمیان ایک بہت

بڑی رکاوٹ کی حیثیت رکھتا ہے۔ ایسے موقع پر بعض دین سے لا تعلق رہنے والے ”دین کی خاطر محبت کی قربانی دینے کے بجائے، دین کو اس عشق و محبت پر قربان کر قبول کر لیتے ہیں اور اس طرح دنیا و آخرت کی ذلت و رسوائی ان کا مقدر بن جاتی ہے۔ اس ضمن میں یہ عبرت ناک واقعے بغور ملاحظہ فرمائیے۔

☆ عاشق کافر اور محبوب مسلمان ہو گیا۔

ابو الحسن بن علی بن عبید اللہ زاغوانی رضی اللہ عنہ حکایت بیان کرتے

ہیں کہ ”ایک مسلمان، ایک عیسائی عورت کے دروازے کے سامنے سے گزرا تو اچانک عورت پر نگاہ پڑ گئی اور وہ اس کی محبت میں گرفتار ہو گیا اور اس کا یہ عشق اتنا بڑھا کہ اس کی عقل پر غالب آ گیا، چنانچہ اسے ایک دوسرے شہر میں منتقل کر دیا گیا۔ دوسری طرف وہ عورت بھی شدت سے اس کے عشق میں بے قرار رہنے لگی۔

اس عاشق کا ایک دوست تھا جو اس کے اور اس عورت کے درمیان خط و کتابت کا تبادلہ کیا کرتا تھا۔ پھر اس عاشق کی حالت مزید گر گئی، جب اس کا معاملہ نازک ہو گیا اور موت کا وقت قریب آ گیا تو اس نے اپنے دوست سے کہا، ”موت قریب آگئی ہے، میں اپنے دوست (یعنی اس عورت) سے دنیا میں تو نہیں مل سکا لیکن میرا ارادہ ہے کہ اس سے آخرت میں ملوں۔“ اس کے دوست نے پوچھا وہ کیسے؟“ اس نے کہا، ”میں، محمد ﷺ کے دین سے پھر کر عیسیٰ بن مریم اور ”صلیب اعظم“ کا قائل ہوتا ہوں۔“ یہ کہہ کر اس کا دم نکل گیا۔

اس کا یہ دوست اس سے فارغ ہو کر اس عورت کے پاس پہنچا تو اسے بھی یہ سار پایا۔ عورت نے اسے کہا۔ ”میں اپنے محبوب کو دنیا تو نہیں مل سکی لیکن چاہتی ہوں کہ اب اسے آخرت میں ملوں، چنانچہ میں گواہی دیتی ہوں کہ ”اللہ تعالیٰ کے سوا کوئی معبود نہیں اور میں گواہی دیتی ہوں کہ محمد ﷺ اس کے بندے اور رسول ہیں اور میں

عیسائی مذہب سے بیزار ہوں۔“ یہ سن کر اس لڑکی کے باپ نے اس شخص سے کہا کہ ”اب تم اسے اپنے ساتھ ہی لے جاؤ، کیونکہ یہ مسلمانوں میں سے ہو گئی ہے۔“ وہ شخص جانے کے لئے اٹھ کھڑا ہوا تو اس عورت نے کہا کہ ”تم کچھ دیر ٹھہر جاؤ۔“ وہ ٹھہر گیا، تھوڑی دیر بعد اس عورت کا بھی انتقال ہو گیا۔ (ذم اھوی لابن جوزی)

**ملینہ:** اس واقعے میں عقل رکھنے والوں کے لئے بے حد عبرت ہے، یہ اللہ تعالیٰ کا عدل و انصاف ہے کہ جس کو چاہے دولت ایمان سے مشرف فرمادے اور جسے چاہے اس کی شامت اعمال کی بناء پر اس نعمت سے ہمیشہ ہمیشہ کے لئے محروم کر دے، لہذا ہر شخص کو اپنے انجام کے بارے میں فکر مند رہنا بہت ضروری ہے۔ نیز اس شخص کا یہ خیال کہ عیسائی مذہب اختیار کر کے میں آخرت میں اس عورت کا قرب حاصل کر لوں گا، اس کی جہالت و حماقت پر مبنی تھا کیونکہ اگر بالفرض وہ عورت مسلمان نہ بھی ہوتی تو ان دونوں نے جہنم میں جانا تھا اور دوزخ میں وصال و قرب و لذت و مزہ متصور نہیں بلکہ وہاں ہر کافر کو علیحدہ علیحدہ اتنے سخت عذاب میں مبتلاء کیا جائے گا کہ دنیا کے سب مزے بھول جائیں گے اور وہ وہاں صرف اور صرف موت کی تمنا کرے گا، لیکن وہ بھی اسے میسر نہ آئے گی۔

☆ مؤذن عیسائی ہو گیا۔

امام ابن جوزی رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”مجھے ایک شخص کی حکایت معلوم ہوئی جو بغداد میں رہتا تھا، اس کا نام صالح تھا، اس نے چالیس سال تک اذان دی تھی اور نیک نامی میں بہت مشہور تھا۔ ایک دن یہ اذان دینے کے لئے منارے پر چڑھا تو مسجد کے ساتھ واقع عیسائیوں کے گھر میں اس کی نگاہ ایک لڑکی پر پڑ گئی، اس کے حسن و جمال کے باعث، یہ اس کے فتنے میں مبتلاء ہو گیا۔ اذان دے کر اس کے دروازے پر پہنچ گیا۔ دروازہ بجایا، لڑکی نے اندر سے پوچھا کون؟ اس نے کہا، ”صالح مؤذن۔“ نام

سن کر لڑکی نے دروازہ کھول دیا۔ مؤذن نے فوراً اس کی طرف اپنا ہاتھ بڑھایا۔ لڑکی نے حیرانگی سے پوچھا کہ ”تم مسلمان تو بڑے دیانت و امانت دار ہوتے ہو پھر یہ خیانت کیسی؟“ اس نے اپنا تمام حال اس کے سامنے بیان کر دیا۔ لڑکی نے کہا کہ ایسا ہرگز نہیں ہو سکتا، ہاں اگر تم اپنا دین چھوڑ دو تو شاید یہ ممکن ہو جائے۔ ”مؤذن بد بختی کا مظاہرہ کرتے ہوئے فوراً بولا، ”(معاذ اللہ) میں اسلام سے بیزار ہوں اور اس سے بھی جو محمد (ﷺ) لے کر مبعوث ہوئے۔“ یہ کہہ کر وہ لڑکی کے قریب ہوا۔ لڑکی نے کہا، ”یہ جو کچھ تم نے کہا صرف اس لئے تھا کہ اپنا مقصد حاصل کر لو، ہو سکتا ہے کہ اپنا مطلب پورا کر کے تم دوبارہ اپنے دین کی طرف لوٹ جاؤ، لہذا اب میری بھی کچھ شرائط ہیں، ان میں سے ایک یہ کہ پہلے تم خنزیر کا گوشت کھاؤ۔“ مؤذن نے عشق کے ہاتھوں مجبور ہو کر اسے کھا لیا۔ لڑکی نے کہا کہ ”اب شراب بھی پیو۔“ اس نے پی لی۔ جب شراب نے اپنا اثر کیا تو آگے بڑھا، لڑکی نے جلدی سے ایک کمرے میں داخل ہو کر اندر سے کنڈی لگالی، اور اندر سے ہی بولی، اب تم ہماری چھت پر چڑھ جاؤ، حتیٰ کہ میرا باپ آجائے اور میرا اور تیرا نکاح کر دے۔“ حسب ہدایت وہ نشے کی حالت میں چھت پر چڑھ گیا، جہاں سے اس کا پاؤں پھسلا اور وہ نیچے گر کر مر گیا۔ لڑکی نے اسے ایک کپڑے میں لپیٹ کر رکھ دیا، جب اس کا باپ آیا تو اس نے سارا قصہ اسے سنایا۔ دونوں نے رات کے وقت اسے اٹھا کر ایک گلی میں ڈال دیا، پھر اس کا قصہ مشہور ہو گیا اور لوگوں نے اسے اٹھا کر ایک گندگی کے ڈھیر پر پھینک دیا۔

(زم اھوی)

### ﴿آٹھواں نقصان﴾

عبادت اور اس کی لذت سے محرومی:

اس گندے فعل میں بتلاء ہو کر جہاں انسان کو بے شمار

دیگر انعاماتِ الہیہ سے محروم ہونا پڑتا ہے وہیں عبادت اور ان کے مزے بھی اس سے

چھین لئے جاتے ہیں۔ اس چکر میں پھنسنے کے بعد نہ تو نماز پڑھنے کی فرصت رہتی ہے اور نہ روزہ رکھنے کی، قرآن پاک کی تلاوت تو سالوں گزر جانے کے باوجود نصیب نہیں ہوتی۔ اگر کبھی جوش میں آ کر عبادت اختیار کرتے بھی ہیں تو اس میں بالکل لذت محسوس نہیں ہوتی، بس جلدی جلدی بے دلی کے ساتھ چند سجدے کئے اور یہ جاوہ جا۔

اس کی بڑی وجہ یہ ہوتی ہے کہ جسے حضرت یحییٰ بن معاذ رضی اللہ عنہ ان

الفاظ میں بیان فرمایا کہ

”جسم کی بیماری تکالیف سے ہوتی ہے اور دلوں کی بیماری گناہوں سے، تو

جس طرح جسم کو بیماری کی موجودگی میں کھانے کی لذت حاصل نہیں ہوتی بالکل اسی

طرح گناہوں کی موجودگی میں دل کو عبادت کی لذت نصیب نہیں ہوتی۔“ (ذم الہوی)

ہاں کبھی کبھی ایسا بھی ہوتا ہے کہ ”کسی سے سن لیتے ہیں کہ اگر نماز پڑھو گے

تو دعا جلدی قبول ہوگی، چنانچہ کچھ عرصہ کے لئے ”امتحاناً“ اس لئے نماز شروع کر دی

جاتی ہے کہ دعا کی مقبولیت کی صورت میں ہو سکتا ہے کہ ہمارا ”مقصد“ حل ہو

جائے۔ اس ”رشوتی نماز“ کی دلیل یہ ہوتی ہے کہ جب اس کا رزلٹ مرضی کے

مطابق فوراً ظاہر ہوتا نظر نہیں آتا تو کچھ عرصہ کے بعد یہ حضرات مایوس ہو کر دوبارہ

بے نمازی پن کی طرف لوٹ جاتے ہیں۔

### ﴿ نواں نقصان ﴾

گندہ ذہنی:

یہ مسلمہ قاعدہ ہے کہ جس بھی کام میں نفسانیت کا دخل ہو جائے

”پاکیزگی“ وہاں سے خاموشی کے ساتھ رخصت ہو جاتی ہے۔ اب چونکہ مجازی عشق و

محبت میں گرفتار ہونا بھی نفس و شیطان کی ترغیب کو عقل کی آنکھیں بند کر کے قبول کر

لینے کے نتیجے میں ہی ظہور پزیر ہوتا ہے، لہذا اس کا لازم نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ ایسے افراد

ہمہ وقت ”گندے اور غلیظ“ تصورات میں گھرنے رہتے ہیں، اپنے ذہن میں نامحرم کا تصور جمانا اور پھر اس سے آگے بڑھ کر ”اللہ تعالیٰ کی لعنت کے مستحق بنا دینے والے اعمال کی منصوبہ بندی کرنا“ انھیں کئی قسم کے دیگر امراض کا شکار کروا دیتا ہے۔ کم از کم نحوست یہ ظاہر ہوتی ہے کہ ایسے افراد کے لئے اپنے آپ یا اپنے کپڑوں کو ”پاک“ رکھنا بے حد مشکل ہو جاتا ہے، اور پھر اس ناپاکی کا ہر وقت مسلط رہنا انھیں اللہ تعالیٰ کی عبادات سے دور کر دیتا ہے، طبیعت بوجھل بوجھل رہتی ہے، ضمیر ملامت کرتا رہتا ہے اور پھر بد قسمتی سے بعض اوقات اسی ”ناپاکی کی حالت میں ہی موت کو گلے لگانا پڑتا ہے۔

نیز یہ بھی تسلیم شدہ امر ہے کہ ”مال، باپ“ کی ذہنی گندگی کا کچھ نہ کچھ اثر اولاد میں ضرور منتقل ہوتا ہے، اب یقیناً یہ بہت دکھ کی بات ہے کہ انسان صرف وقتی مزوں اور نفس کو راضی رکھنے کے لئے اپنی پیاری پیاری اولاد کی طبیعت میں گندگی و غلاظت پیدا کرنے کی مذموم حرکت کرے اور پھر اسے اس حرکت پر ندامت بھی محسوس نہ ہو!..... اللہ تعالیٰ سمجھ عطا فرمائے۔ آمین

**ملینہ:-** بہتر معلوم ہوتا ہے کہ اس مقام پر چند کلمات، ذہن میں گردش کرنے والے خیالات کے بارے میں بھی تحریر کر دئے جائیں تاکہ اس کی برکت سے معلوم ہو کہ بعض اوقات ان خیالات کی بناء پر بھی انسان، گناہ گار ہو تا رہتا ہے۔ چنانچہ یاد رکھئے کہ ذہن میں آنے والے خیالات کی پانچ قسمیں ہیں۔

(1) ہا جس :- اچانک کسی چیز کا خیال آنا۔ (مثلاً راستے میں چلتے ہوئے اچانک خیال آیا کہ پیچھے ایک عورت آرہی ہے۔)

(2) خاطر :- کسی چیز کا بار بار خیال آنا۔ (مثلاً نفس پیچھے آنے والی عورت کی طرف بار بار توجہ دلانے کی کوشش کرے۔)

(3) حدیثِ نفس: کسی چیز کا خیال آنے پر ذہن اس کے لئے منصوبہ بندی

شروع کر دے۔ (مثلاً ذہن سوچنا شروع کر دے کہ پلٹ کر عورت کو دیکھنا چاہئے۔)

(4) ہم: غالب جہت اس فعل کے کرنے کی ہو اور مغلوب سا خیال نہ کرنے کے

بارے میں ہو۔ (مثلاً غالب ارادہ یہ ہو کہ پلٹ کر اسے دیکھنا چاہئے لیکن ابھی دل میں تھوڑی سی مزاحمت

باقی ہے۔)

(5) عزم: مغلوب سا خیال بھی زائل ہو جائے اور اس فعل کے کرنے کا پختہ

ارادہ کر لیا جائے۔ (مثلاً اس عورت کو دیکھنے کے بارے میں دل میں جو تھوڑی بہت مزاحمت موجود

تھی وہ بھی زائل ہو جائے اور یہ شخص پختہ ارادہ کر لے کہ ابھی پلٹ کر دیکھتا ہوں۔)

اس تفصیل کے بعد یاد رکھئے کہ، ”اب اگر کسی شخص کے دل میں گناہ کا ارادہ

آئے تو ہا جس، خاطر، حدیثِ نفس اور ہم کے مرتبے میں اس کا مواخذہ نہ ہو گا (یعنی یہ

گناہ میں شمار نہ ہوں گے۔) البتہ اگر گناہ کا ”عزم“ کیا تو اب اس کا مواخذہ ہے اور اس کے نامہ

اعمال میں گناہ لکھا جائے گا، چاہے یہ عملی طور پر اس فعل کو کرے یا (کسی مجبوری یا خوف

وغیرہ کی وجہ سے) نہ کرے۔ ☆ (مجالس الاررار للردی۔ کچھ تصرف کے ساتھ)

اسی کے بارے میں اللہ تعالیٰ کا فرمانِ عالیشان ہے کہ ”إِنَّ السَّمْعَ

وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا“☆ ترجمہ: بے شک کان اور آنکھ

اور دل، ان سب سے سوال ہونا ہے (کنز الایمان، بنی اسرائیل، ۳۶ پ ۱۵) ”تفسیر خزائن العرفان

“میں اس سوال کے بارے میں وضاحت کچھ یوں ہے ”کہ (انسان سے ان اعضاء کے بارے

میں پوچھا جائے گا کہ تم نے ان سے کیا کام لیا؟“

اب ہر قاری اپنے بارے میں ایمانداری سے غور کرے کہ، ”اس

کے ذہن میں آنے والے خیالات کس مرتبے تک پہنچتے ہیں؟“

سوال: یہ بسا اوقات انسان اپنے ذہن میں کوئی خراب خیال صرف حصول لذت کے



لئے لے کر آتا ہے، اسے بالفعل کرنے کا کوئی ارادہ نہیں ہوتا، کیا یہ بھی قابلِ گرفت عمل ہے؟

جواب:۔ ایسا خیال جان بوجھ کر ذہن میں لانا اور طویل وقت تک اس کے بارے میں مختلف پہلوؤں سے غور کر کے لذت حاصل کرنے کی کوشش کرنا ”مکروہ“ ہے۔ کیونکہ شریعت ہر اس عمل کو ناپسند فرماتی ہے جو غفلت یا گناہ کی طرف راغب کرے اور اس قسم کے خیالات غفلت کے ساتھ ساتھ انسان کو کسی نہ کسی گناہ میں مبتلاء کرنے کا سبب بن جاتے ہیں۔ کیونکہ کبھی تو ان خیالات کی انتہاء کسی گناہ کے ”عزمِ مصمم“ پر اور کبھی اس گناہ کے ارتکاب پر ہوتی ہے، اور گناہ کا عزم و ارتکاب دونوں قابلِ گرفت اور توبہ نہ کرنے کی صورت میں دخولِ نار کا سبب ہیں۔

شیخ ابو طالب محمد بن عطیہ حارثی مکی رضی اللہ عنہ کی مشہور عالم تالیفِ منیف ”قوت القلوب“ میں ہے کہ ”حضرت امام ابو محمد سہل رضی اللہ عنہ سے پوچھا گیا، ”ایک آدمی ایک کام سے توبہ کرتا ہے اور اسے چھوڑ دیتا ہے، مگر پھر یہ چیز اس کے دل پر کھٹکتی یا متصور ہوتی ہے یا وہ اسے سن لیتا ہے تو اسے اس کی جلاوت (یعنی لذت) سی محسوس ہوتی ہے؟“

آپ نے جو بابر شاد فرمایا، ”جلاوت تو بشری طبع ہے (یعنی یہ تو اس کے ارادے کے بغیر انسان ہونے کے ناطے اس کی طبیعت کا تقاضا ہے) اور طبع کا وجود ایک لازمی بات ہے، اب اس کے لئے ایک ہی راہ ہے کہ، ”اپنے مولائے کریم کے سامنے فریاد کرے، دل سے اس کو برا سمجھے اور نفس کو اس بات پر مجبور کرتا رہے کہ اس گناہ کو برا سمجھتا رہے اور اس کا انکار کرتا رہے، اس پر دوام کئے رکھے اور اللہ تعالیٰ سے دعا کرتا رہے کہ ”اے اللہ! میرے قلب سے ہی یہ بری بات فراموش کر دے۔“ پھر دل کو اس ہٹا کر ذکر اللہ اور اعمالِ صالحہ میں لگائے۔ اس لئے کہ اس بات کا خطرہ ہے کہ اگر وہ لمحہ بھر بھی غافل ہوا

تو اس کے دل میں اس کام کی حلاوت آئے گی اور وہ مامون نہ رہ سکنے گا۔ البتہ یہ ضروری ہے کہ ”حلاوت پاتے ہی قلبی طور پر اس کا انکار کرے اور غمزدہ ہو جائے، پھر یہ برا خیال اسے ضرر نہ دے سکے گا۔“

### ﴿دسواں نقصان﴾

اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں شکوہ شکایت اور اس کی نعمتوں کو بنظرِ حقارت دیکھنے کے گناہ میں مبتلاء ہونا:

اس مرض میں مبتلاء افراد اکثر و بیشتر اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں نعمتوں کی کمی کا شکوہ اور موجودہ نعمتوں کو بیکار و حقیر جاننے کے گناہ میں مشغول نظر آتے ہیں۔ اس کی وجہ یہ ہوتی ہے کہ بعض اوقات یہ حضرات ”جلسِ مخالف“ کو اپنی طرف مائل کرنے والے ”قدرتی ہتھیاروں“ سے اپنے آپ کو محروم جب کہ اطراف میں موجود دیگر احباب کو اس سے مزین پاتے ہیں، جس کی بناء پر ہمہ وقت احساسِ کمتری کا شکار رہنا شروع کر دیتے ہیں اور جب ان نعمتوں کی کمی کے باعث انھیں اپنے قلبی ارادوں کی تکمیل ناممکن نظر آتی ہے تو پھر جھنجھلا کر اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں شکوہ شکایت کا انبار لگا دیتے ہیں، مثلاً میرا رنگ اتنا کالا کیوں ہے؟ ماتھا اتنا چوڑا کیوں بنایا؟ ناک اس قدر موٹی کیوں؟ کان پھلے بڑے بڑے کیوں بنائے؟ دانت اتنے چوڑے کیوں ہیں؟ ہونٹ اس قدر موٹے اور کالے کیوں؟ قد اتنا چھوٹا کیوں رکھا؟ ناخن خوبصورت کیوں نہیں بنائے گئے؟ آنکھیں اتنی چھوٹی چھوٹی کیوں؟ چہرہ خوبصورت کیوں نہیں؟ کندھے اتنے چوڑے کیوں ہیں؟ ہمیں غریب کیوں پیدا کیا؟ وغیرہ وغیرہ۔

اور جب ان کی مکمل توجہ نعمتوں کی اس کمی کی جانب مبذول ہو جاتی ہے تو

۱۔ شکوہ شکایت کے اسباب و علاج کے بارے میں علامہ محمد اکمل عطا قادری عطاری مدظلہ العالی کی مقبول عام و پراثر تالیف احساسِ نعمت کا ضرور ضرور مطالعہ فرمائیے۔ (ادارہ)

انہیں اس بات کا احساس بالکل ختم ہو جاتا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے ہمیں اپنے فضل و کرم سے بغیر طلب کئے بے شمار ایسی نعمتوں سے مالا مال بھی تو فرمایا ہے، کہ جن سے اس کے ہزاروں دیگر بندے محروم ہیں۔

کاش! یہ حضرات کبھی اس حدیثِ پاک پر بھی غور کر لیتے کہ ”سرکارِ مدینہ ﷺ کا فرمانِ عالیشان ہے کہ ”اللہ تعالیٰ فرماتا ہے، ”میں اس سے راضی ہوں جو مجھ سے راضی ہے اور جو شخص مجھ سے راضی نہ ہو گا میں اس سے بیزار ہوں اور قیامت تک یہی حال رہے گا۔“ (احیاء العلوم)

### ﴿ گیارہواں نقصان ﴾

فضول خرچی کا وبال :-

قرآنِ پاک میں اللہ عزوجل نے فضول خرچی کرنے والوں کو شیطان کا بھائی قرار دیا ہے، چنانچہ سورہ بنی اسرائیل میں ارشاد ہوتا ہے کہ ”وَلَا تَبْدِرْ تَبْدِيرًا ۚ إِنَّ الْمُبْدِرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيْطَانِ ط۔ اور (اپنا مال) فضول نہ اڑا، بے شک فضول (مال) اڑانے والے شیطانوں کے بھائی ہیں۔“ (پ ۱۵-۲۶، ۲۷)

جب انسان ”عشقِ مجازی“ میں گرفتار ہونے کی حماقت کر لیتا ہے تو اسے نہ چاہتے ہوئے بھی ”شیطان کے بھائی“ کا لقب قبول کرنا ہی پڑتا ہے کیونکہ اس چکر میں پھنسنے کے بعد انسان کو کئی مقامات پر بے دردی کے ساتھ اپنا مال فضول خرچ کرنا پڑتا ہے۔ مثلاً

(i) کسی ”محترمہ“ کو اپنی ذات سے متاثر کرنے کے لئے یقیناً ”خوبصورت ہیرا اسٹائل، جدید فیشن کے مطابق کپڑے، بہترین پرفیوم، اور اگر ممکن ہو تو کار یا موٹر سائیکل کا ہونا بھی بے حد ضروری ہے، پھر اگر یہ کار وغیرہ ذاتی نہ ہوں تو دوست سے مانگی ہوئی بھی چل جاتی ہیں لیکن اس صورت میں بھی پٹرول کا خرچہ تو حضرت کے ذمہ

ہی رہتا ہے۔ اب اگر ان تمام چیزوں میں کئے جانے والے خرچے کا تخمینہ لگایا جائے تو یقیناً ایک عام آدمی کے مہینے بھر کی تنخواہ سے زیادہ مالیت شمار میں آئے گی۔

(ii) پھر ”محترمہ“ کو خوش رکھنے اور اپنی پر خلوص محبت کا ثبوت فراہم کرنے کے لئے تحائف کا سلسلہ بھی بہت ضروری تصور کیا جاتا ہے، اور چونکہ ان تحائف سے حضرت کی مالی حیثیت کا اندازہ لگایا جانا یقینی امر ہے، لہذا بعض اوقات اپنی حیثیت سے بڑھ کر تحفے دئے جاتے ہیں۔ پھر عید وغیرہ کے موقع پر تو قیمتی تحفہ لازم ہے ورنہ دوسری جانب سے ”محبت میں پر خلوص نہ ہونے کا فتویٰ“ جاری ہونا عین ممکن ہے۔

(iii) محبت کے نئے نئے انداز، محبوب کو اپنی ذات سے متاثر کرنے کے جدید اور تجربہ شدہ گر اور اس سلسلے میں دیگر مفید مشوروں کے حصول کے لئے ”محبت بھرے افسانوں اور کہانیوں“ پر مشتمل ناول و ڈائجسٹ خریدے جاتے ہیں۔

(iv) ایک خوبصورت، متاثر کن، قلبی بے قراری کا یقین دلا دینے اور سامنے والے کے دل میں ہلچل مچا دینے والا خط لکھنے کے لئے ایسا لٹریچر خریداجاتا ہے کہ جس میں اس قسم کے واہیات خطوط کے نمونے درج ہوں، پھر ایک عدد ایسا لیٹر پیڈ بھی ہونا چاہئے کہ جس میں ایک دل اور اس دل میں ایک تیر اور اس تیر کے باعث ٹپکتے ہوئے خون کے قطرے، حضرت کے جذبات کی نشاندہی کر رہے ہوں۔ اور پھر اس خط کو مزید مزین و جاذب نظر بنانے کے لئے اشعار کا استعمال بھی بہت ضروری ہے لہذا قلبی جذبات کے اظہار کے لئے عشقیہ اشعار پر مشتمل ایک عدد کتاب کا ہونا بھی لازم و ضروری ہے۔

(v) پھر بسا اوقات آؤٹنگ کا پروگرام بھی بنایا جاتا ہے، یقیناً پکنک پوائنٹ پر پہنچ کر خالی پیٹ تو واپس آنے سے رہے، یونہی وال، سبزی پر گزارا بھی شان کے خلاف ہے

لہذا زبردست قسم کا کھانا اور ساتھ میں آئس کریم وغیرہ کھانے میں بھی کافی خرچ کرنا پڑتا ہے۔

(vi) کبھی کبھی ایسا بھی ہوتا ہے کہ تمام تر حربے استعمال کرنے کے باوجود ”مطلوبہ شخصیت“ کی توجہ حاصل کرنے میں ناکامی رہتی ہے۔ اس پریشانی کے عالم میں بعض اوقات سادہ لوح اور دل کے ہاتھوں مجبور حضرات ”مختلف قسم کے پرکشش اور دکھتی رگ پر ہاتھ رکھ دینے والے اشتہار چھاپ لے کر لوگوں کی جیبیں خالی کروانے والے، جھوٹے اور جادو کے ذریعے ہر مسئلے کو حل کر دینے کا دعویٰ کرنے والے عاملوں“ کے پاس پھنس کر، اپنا کثیر وقت اور سرمایہ مٹی میں ملا دیتے ہیں۔

کاش! اگر یہی پیسہ اللہ تعالیٰ کی راہ میں خرچ کرنے کا ذہن بنایا جاتا اور اس کے لئے عملی کوشش اختیار کرنے کی سعادت بھی حاصل کی جاتی تو آخرت کے لئے کتنا عظیم ذخیرہ اکٹھا ہو جاتا۔ جیسا کہ اللہ عزوجل کا فرمانِ عالیشان ہے کہ ”مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنْبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلٍ فِي كُلِّ سُنْبُلَةٍ مِائَةُ حَبَّةٍ ط وَاللَّهُ يُضْعِفُ لِمَنْ يَشَاءُ ط وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ“ ☆

ترجمہ: ان کی کہاوت جو اپنے مال اللہ کی راہ میں خرچ کرتے ہیں اس دانہ کی طرح جس نے اگائیں سات بائیس ہر بال میں سو دانے اور اللہ اس سے بھی زیادہ بڑھائے جس کے لئے چاہے اور اللہ وسعت والا علم والا ہے۔ (کنز الایمان البقرة ۲۶۱، پ ۳)

### ﴿بارہواں نقصان﴾

نشے کا عادی ہو جانا:

۱۔ مثلاً سنگ دل سے سنگدل محبوب آپ کے قدموں میں۔ ”ہر آرزو پوری ہوگی، ایک مرتبہ آزما کر دیکھیں، محبت میں ناکامی، کامیابی میں تبدیل ہو جائے گی، نفرت کو محبت میں بدل دینا ہمارے بائیں ہاتھ کا کھیل ہے وغیرہ وغیرہ۔

بعض اوقات اس چکر میں پھنسنے والے اس کی وجہ سے ایک

دوسرے چکر یعنی نشے کی عادت میں گرفتار ہو جاتے ہیں۔ اس کا اکثر سبب ”محبت میں ناکامی کی وجہ سے پیدا ہونے والا شدید ترین صدمہ بنتا ہے۔ چنانچہ بارہا مشاہدہ کیا جاسکتا ہے کہ جب مطلوبہ محبوب کی شادی کسی اور مقام پر ہو گئی اور یہ عاشق بد حال اپنے منصوبہ شدہ مقاصد کو حاصل کرنے میں ناکام ہو گیا اور اس میں ”بے وفا محبوب سے“ انتقام کی قدرت و ہمت بھی موجود نہیں ہوتی، تو اب شیطان اسے اس جدائی کے کرب و اذیت سے وقتی طور پر چھٹکارے کے لئے ”شراب و ہیروئن“ پینے کا مشورہ دیتا ہے، اور اس مشورے کے جواب میں ”عقل کا اندھا“ یہ بیوقوف انسان جو کہ اپنی ذات میں اس معمولی تکلیف کو برداشت کرنے کی ہمت نہیں پاتا تھا، اللہ تعالیٰ کے سخت عذاب کو اپنے گلے سے لگانے کے لئے خوشی خوشی تیار ہو جاتا ہے۔ کیونکہ

☆ ابن ابی الدنیانے حضرت مسروق رضی اللہ عنہ سے روایت کیا کہ ”جو شخص

چوری، زنا اور شراب نوشی میں مبتلاء ہو کر مرتا ہے تو (قبر میں) اس پر دو سانپ مسلط کر دئے جاتے ہیں جو اس کا گوشت نوچ نوچ کر کھاتے رہتے ہیں۔ (شرح الصدور)

☆ سرکارِ مدینہ صلی اللہ علیہ وسلم ارشاد فرماتے ہیں کہ ”جو شراب پئے گا تو چالیس دن

تک اس کی نماز قبول نہ ہوگی، لیکن اگر وہ توبہ کر لے تو اللہ تعالیٰ اس کی توبہ قبول فرمائے گا۔ پھر اگر دوبارہ اس نے شراب پی لی تو پھر چالیس دن تک اس کی نماز قبول نہ کی جائے گی، اگر توبہ کر لے تو توبہ قبول کر لی جائے گی، پھر اگر اس نے تیسری مرتبہ شراب پی لی تو پھر چالیس دن تک اس کی نماز قبول نہ کی جائے گی، ہاں اگر توبہ کر لے تو مقبول ہوگی۔ پھر اگر اس نے چوتھی مرتبہ شراب پی لی، تو پھر چالیس دن اس کی نماز قبول نہ ہوگی۔ لیکن اب اگر توبہ کرے گا تو اس کی توبہ بھی قبول نہ ہوگی اور بروز قیامت اسے جہنم میں دوزخیوں کی پیپ کی نہر میں سے پلایا جائے گا۔“ (ترمذی)

**ملینہ :-** چوتھی مرتبہ شراب پینے پر توبہ کے قبول نہ ہونے کی وعید فقط ڈانٹ ڈپٹ کے لئے ہے، ورنہ اس صورت میں بھی اس کی توبہ قبول کی جائے گی۔ یا پھر یہ مطلب ہے کہ اللہ تعالیٰ اس توبہ کی توفیق ہی عطا نہ فرمائے گا۔

### ﴿تیرھواں نقصان﴾

بلیک میلنگ :-

کسی کو بلیک میل کرنا یعنی اپنا مطالبہ منوانے کے لئے دوسرے کے کمزور پہلوؤں کو بطور ڈھال استعمال کرنا حرام و گناہ ہے، کیونکہ اس کے سبب ایک مسلمان کا دل ”اپنی عزت اور دیگر دنیاوی فوائد کے زوال کے یقین کے باعث“ شدید خوف و تکلیف میں مبتلا ہو جاتا ہے، اور شریعت کی اجازت کے بغیر کسی مسلمان بھائی کو کسی بھی قسم کی تکلیف میں مبتلا کرنا حرام اور اللہ تعالیٰ کی ناراضگی و عذاب کے مستحق ہونے کا سبب ہے۔ جیسا کہ

☆ سرکارِ مدینہ ﷺ نے فرمایا کسی مسلمان کو یہ جائز نہیں کہ وہ اپنے

مسلمان بھائی کو (بغیر شرعی عذر کے) تیز نظر سے دیکھے۔ (مسند امام احمد بن حنبل)

☆ رحمتِ عالم ﷺ کا فرمانِ عالیشان ہے کہ ”اللہ تعالیٰ مومنوں کو ایذا

دینے کو ناپسند فرماتا ہے۔“ (احناف السادة الثمین)

☆ سیدِ عالم ﷺ نے ارشاد فرمایا، ”جس نے (بلا شرعی عذر کے) کسی مسلمان کو

ایذا دی، اس نے مجھے ایذا دی اور جس نے مجھے ایذا دی اس نے اللہ تعالیٰ کو ایذا

دی (یعنی اسے غضبناک کیا)۔“ (طبرانی کبیر)

عشقِ مجازی کے باعث جہاں انسان دیگر بے شمار گناہوں میں ملوث ہو جاتا

ہے وہیں بسا اوقات ”بلیک میلنگ“ کے ذریعے بھی اپنی آخرت کی بربادی کا سامان کرتا

ہوا نظر آتا ہے، اس کی صورت یہ ہو سکتی ہے کہ کبھی ایسا بھی ہوتا ہے کہ عاشق صاحب



کے پاس اپنے محبوب کے کچھ محبت بھرے خطوط اور چند ایسی تصاویر ہوتی ہیں کہ جوان کے سابقہ زندگی میں قابل اعتراض قریبی تعلقات کی نشاندہی کر رہی ہوتی ہیں۔ اب حالات کے اتار چڑھاؤ کی بناء پر ان دونوں کا قریب رہنا اور ملاقاتوں کا سلسلہ قائم رکھنا ممکن نہیں رہتا مثلاً ”محترمہ“ کی مرضی کے برخلاف اس کے گھر والے کسی اور مقام پر اس کی شادی کر دیتے ہیں، تو اس وقت شیطان اس عاشق صادق کے دل میں شدید غصہ اور جذبہ انتقام پیدا کرنے کی کوشش کرتا ہے اور اس مقصد کے لئے اس قسم کی باتیں اس کے دل میں ڈالتا ہے کہ ”دیکھا فلاں کتنی بے وفا نکلی! اس کے تمام وعدے جھوٹے تھے، وہ تجھے زبردست بیوقوف بناتی رہی اور تو الوبتارہا؟ دیکھ لے! اب خود کتنے آرام سے اپنے گھر میں رہ رہی ہے جب کہ تو کرب و اذیت و تکلیف میں مبتلاء ہے اور افسوس کہ اسے تیری اس تکلیف کی کوئی پرواہ نہیں، کیا ایسی خود غرض عورت کو آرام سے رہنے دینا چاہیے؟ نہیں ہرگز نہیں۔ پس جس طرح اس نے تیری زندگی برباد کی تو بھی اس کی خوشگوار زندگی میں زہر گھول دے۔ اور اس کا بہترین ذریعہ تیرے ہاتھ میں ہے، اس کے خطوط اور تصاویر کس دن کام آئیں گی؟ شاباش ہمت کر اور برے کو اس کے گھر تک پہنچا! تاکہ آئندہ کوئی تجھ جیسے ”پر خلوص شخص“ کے ساتھ ایسا بھیانک مذاق نہ کر سکے۔“ شیطان کی طرف سے مسلسل ڈالے جانے والے یہ خطرناک دوسے اور ایسے موقع پر کسی مخلص خیر خواہ کا موجود نہ ہونا اسے عملی قدم اٹھانے پر مجبور کر دیتے ہیں، نتیجتاً وہ خطوط و تصاویر، گمنام شخص کی طرف سے ”محترمہ“ کے شوہر تک پہنچ جاتے ہیں، اور پھر نتائج کی پرواہ کئے بغیر ماضی میں کی گئی غلطیاں ”طلاق، لڑائی جھگڑوں، بے عزتی، خاندانوں کے درمیان قطع تعلق اور قتل و غارت تک پہنچا دیتی ہیں۔“

مطالعہ فرمانے والے مسلمان بھائیو اور بہنو!

”عشقِ مجازی“ کی تباہ کاریوں کا بغور مطالعہ کرنے کے بعد قوی امید ہے کہ آپ بھی اس کا نام ”شیطانی چکر“ رکھنے کے بارے میں ہم سے سو فیصد اتفاق فرمائیں گے۔ یقیناً وقتی لذتوں پر مشتمل جو عمل، ”قیمتی وقت کے ضیاع“، ”ذہنی سکون کی تباہی“، ”پڑھائی اور کاروبار سے دل اچاٹ کرنے“، ”بد نگاہی و زناء و خود کشی و قتل و غارت جیسے بڑے بڑے گناہوں میں ملوث کروانے“، ”دل کو سیاہ کروا کر اللہ تعالیٰ کی بارگاہ سے دور کرنے“، ”عبادات اور اس کی لذت سے محروم کرنے“، ”ذہن کو گندگی میں مبتلاء کرنے“، ”بارگاہِ خداوندی میں زبانِ شکوہ دراز کرنے اور اس کی نعمتوں کو حقیر جاننے کی ہمت فراہم کرنے“، ”فضول خرچی کے ذریعے شیطان کے بھائی کا لقب دلوانے“، ”نشے جیسے حرام فعل میں مصروف ہو جانے اور بلیک میلنگ کے ذریعے مسلمان بھائی کی اذیت و تکلیف کا سبب بن جائے، وہ ”شیطانی چکر“ نہیں تو اور کیا ہے؟

☆ کیا اسے عبادت کا نام دیا جاسکتا ہے؟

☆ کیا اس کے باعث (معاذ اللہ) اللہ تعالیٰ اور اس کے محبوب ﷺ کی رضا حاصل کرنا ممکن ہے؟

☆ کیا اس کے بدلے میں آخرت میں اللہ تعالیٰ کی جانب سے انعام و اکرام کی دولت سے نوازا جائے گا؟

☆ کیا اس فعل میں مبتلاء ہونے والوں کو دنیا میں عزت کی نگاہ سے دیکھا جاتا ہے؟

☆ کیا اس کے ذریعے زمانہ ماضی کے جن لوگوں نے ”بظاہر شہرت حاصل“ کر لی، کیا معاشرے میں ان کا ذکر ادب و احترام کے ساتھ کیا جاتا ہے؟

امید ہے کہ سوائے پہلے سوال کے بقیہ تمام سوالات کا جواب نفی میں دینے کے بارے میں آپ بالکل ہچکچاہٹ محسوس نہیں فرمائیں گے۔

جب یہ بات طے شدہ ہے کہ اس فعل میں سوائے دنیا و آخرت کے خسارے کے اور کچھ بھی نہیں، تو اب اس فعل حرام کے ذریعے سامان لذت جمع کرنے والے ”خواتین و حضرات“ کو دامن عقل تھامتے ہوئے اپنی دنیا و آخرت بچانے کی خاطر، موت سے پہلے پہلے باعثِ نجات عملی کوششوں کو بالکل سنجیدگی کے ساتھ اختیار کرنا بے حد ضروری ہے۔

نیز ایسے مسلمان بھائی اور بہنیں جو اللہ تعالیٰ کے فضل و کرم سے اس عملِ بد سے اپنا دامن آکودہ کرنے سے، ابھی تک محفوظ ہیں، انہیں بھی چاہیے کہ کسی آزمائش میں مبتلاء ہونے سے پہلے پہلے، احتیاطی تدابیر پر خوب اچھی طرح بار بار غور و تفکر کرتے رہیں تاکہ ”نفس و شیطان“ کے لئے اس معاملے میں ان پر غالب آنا ممکن نہ رہے۔

اس ”حرام لیکن نفس کے لئے لذت و مزے سے بھرپور کام“ سے اپنے دامن کو بچانا محفوظ رکھنا فی زمانہ مشکل ضرور ہے لیکن ناممکن نہیں، جس پر اللہ تعالیٰ کا فرمانِ عالیشان ”إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ“ یعنی بے شک اللہ سب کچھ کر سکتا ہے۔ (البقرہ ۲۰۱) ”سب سے عظیم دلیل ہے۔

یقیناً اللہ تعالیٰ چاہے تو بغیر ہماری عملی کوشش کے بھی اس کام سے محفوظ رکھنے پر قادر ہے لیکن اس نے ہمیں ہر معاملے میں کوشش کا حکم دیا ہے، لہذا اس کے حکم کی تعمیل میں ہمیں سب سے پہلے ان اسباب پر غور کرنا چاہیے کہ جو اس ”شیطانی چکر“ کی طرف دھکیلنے کا سبب بن جاتے ہیں۔ کیونکہ کسی بھی بیماری کے علاج کے لئے سب سے پہلے اس کے سبب کو تلاش کرنا اور پھر اسے دور کرنے کے لئے مصروفِ عمل ہو جانا بے حد ضروری ہے، اگر سبب باقی رہ جائے تو اچھی سے اچھی دوا بے کار اور بہترین سے بہترین ڈاکٹر بھی ناکام ہوتا نظر آتا ہے۔ چنانچہ آئیے دیکھتے ہیں کہ اس

”چکر“ میں مبتلاء کروانے والے اسباب کون کون ہیں اور ان سے چھٹکارے کے لئے کس قسم کی صورت اختیار کی جانی چاہئے۔

اگر سرسری طور پر بھی غور کیا جائے تو معلوم ہو گا کہ درج ذیل امور ہی اس کا سبب بنتے نظر آتے ہیں۔

### { پہلا سبب }

گھروں میں دینی ماحول کا نہ ہونا۔

فی زمانہ نوجوانوں کے برے اور خلاف

شرع کاموں میں ملوث ہونے کی غالباً سب سے بڑی وجہ گھر کے سرپرست کا اپنی اولاد کی دینی تربیت کی طرف سے غافل ہو جانا ہے۔ یقیناً جب اولاد کو یہی معلوم نہ ہو گا کہ شرعی لحاظ سے کسے دیکھنا جائز اور کس پر نگاہ ڈالنا حرام ہے؟ تو اس کے ذہن میں اپنی نگاہوں کی حفاظت کا تصور کس طرح پیدا ہو گا؟ پھر اگر یہ معلوم بھی ہو کہ نامحرم پر ارادۂ نگاہ ڈالنا حرام ہے تب بھی اس گناہ سے تو اسی وقت بچ سکتا ہے کہ جب اس کے دل میں اللہ عزوجل کا خوف اور آخرت میں سخت گرفت کا یقین موجود ہو، اور یہ دونوں چیزیں اپنے گھروں میں دینی ماحول نہ ہونے کے باعث اکثر نوجوانوں کو حاصل نہیں ہوتیں۔

حل :- اس کا حل اس کے سوا اور کچھ بھی نہیں کہ انسان کسی مذہبی ماحول

سے وابستگی اختیار کر لے، تاکہ اس کی برکت سے نہ صرف دینی معلومات میں اضافہ ہو بلکہ ان پر عمل پیرا ہونے کا جذبہ اور اس پر استقامت اور پھر اس راہ میں آنے والی مشکلات پر صبر کا حوصلہ بھی حاصل ہو جائے۔

### { دوسرا سبب }

۱۔ اس کے لئے دعوتِ اسلامی کے غیر سیاسی ماحول سے وابستگی بہت بہتر رہے گی۔ تقریباً ہر چھوٹے بڑے شہر میں دعوتِ اسلامی کے منعقد ہونے والے اجتماعات میں ضرور شرکت فرمائیے۔

## فلمیں، ڈرامے:-

”عشقِ مجازی“ کے فروغ میں جتنا اہم کردار ”فلموں، ڈراموں“ نے ادا کیا ہے، اتنا کوئی دوسری شے نہ تو ادا کر سکی ہے اور نہ غالباً ادا کر سکے گی۔ جب ہر فلم و ڈرامے میں ”جلسِ مخالف“ سے محبت کو زندگی کا لازمی حصہ قرار دینے کی مذموم حرکت کی جائے گی تو یقینی طور پر آنے والی نوجوان نسل اس کا منفی اثر ضرور قبول کرے گی۔ پہلے زمانے میں عشق و محبت بہت چھپ کر اور عمر کے ایک خاص حصے میں کیا جاتا تھا، لیکن موجودہ دور میں ان فلموں، ڈراموں کی نحوست کی بناء پر آپ مشاہدہ فرمائیں گے کہ ایسے بچے کہ جن کی ابھی پوری طرح مونچھیں بھی نہیں آئی ہیں، دیوانے بنے ”جلسِ مخالف“ کا پیچھا کرتے، ان پر آوازیں کستے اور انھیں محبت بھرے بے ربط خطوط لکھتے نظر آئیں گے۔ پھر اس کام میں مہارت کے لئے انھیں طویل عرصہ تک کسی ماہر و تجربہ کار استاد کی صحبت میں رہنے کی ضرورت بھی نہیں کیونکہ اس ”اہم مشن“ کی تکمیل کا فریضہ بھی ”فلموں، ڈراموں“ کے سپرد ہے، جسے وہ بہت احسن طریقے سے ادا کر رہے ہیں۔

اب خود غور فرمائیں کہ جب ماں باپ تربیت سے غافل ہوں اور فلموں، ڈراموں کو دیکھنے پر کوئی روک ٹوک بھی نہ ہو تو نوجوانوں کا پیرا غرق نہیں ہوگا تو کیا ہوگا؟ یہی وجہ ہے کہ موجودہ ماڈرن معاشرے میں سر عام ہمارے نوجوان ان فلموں میں دیکھے ہوئے مناظر کا پریچھل کرتے ہوئے اپنی آخرت کا نقصان کرتے نظر آئیں گے۔

خل :- اس کے لئے پوری ہمت کے ساتھ ”فلموں، ڈراموں“ سے جان چھڑانی پڑے گی اور اس میں آسانی کے حصول کے لئے، راقم الحروف کی تالیف

۱۔ یہ کتاب ”مکتبہ اعلیٰ حضرت سرائے مغل جنازہ گاہ مزنگ لاہور“ کے پتے پر خط لکھ کر ہدیہ حاصل کی جا سکتی ہے۔ (ادارہ)

”ایمان کی موت“ کا مطالعہ بے حد مفید رہے گا، جس میں ثابت کیا گیا ہے کہ ان خرافات کا دیکھنا گناہ کبیرہ، بے شمار نقصانات کا شکار کروانے اور بعض صورتوں میں کفر تک پہنچا دینے والا ہے۔

### { تیسرا سبب }

#### دوست نما دشمن :-

”عشق مجازی“ کے سمندر میں غوطہ زن کروانے میں ”دوست نما دشمنوں“ کا بھی بہت بڑا ہاتھ ہوتا ہے۔ یقیناً جو شخص دوستی کا دعویٰ کرنے کے باوجود کسی کو اللہ تعالیٰ کی نافرمانی اور نفس و شیطان کی اطاعت کی طرف مائل کرنے کی ناپاک کوشش کرے وہ اس کا دوست نہیں بلکہ بہت بڑا دشمن ہے، بلکہ اس کے دشمنوں سے زیادہ اس کے لئے خطرناک ہے۔ کیونکہ دشمن کی طرف سے پہنچنے والے خطرات کے پیش نظر انسان کچھ نہ کچھ حفاظتی اقدامات ضرور کرتا ہے اور اس طرح اپنے آپ کو محفوظ رکھنے میں کامیاب ہو جاتا ہے لیکن ان جیسے ”لباس دوستی میں ملبوس دشمنوں“ پر کامل اعتماد کی بناء پر ان کی طرف سے انسان بالکل غافل رہتا ہے اور یہی غفلت اس کے لئے تباہی کا سبب بن جاتی ہے۔

اس قسم کے لوگوں کی صحبت میں بیٹھنے والا جب ان کے بیان کردہ ”کارنامے“ سنتا ہے تو لاشعوری طور پر اس کے دل میں بھی اس فعل کے ارتکاب کا شوق بیدار ہو جاتا ہے، جب اس بیداری شوق کی اطلاع ان ”مخلص دوستوں“ کو ملتی ہے تو پھر اس کے سامنے شکار پھانسنے کے طریقے بیان کئے جاتے ہیں، اگر انتخاب پہلے ہی ہو چکا ہو تو مبارکباد کے ساتھ ساتھ ہر قسم کے تعاون کا یقین دلایا جاتا ہے، اگر درمیان میں کچھ مسئلہ کھڑا ہو جائے تو اس کے حل کے لئے مفید مشورے دئے جاتے ہیں، اگر کسی قسم کی کامیابی کی اطلاع ملے تو شاباش بھی دی جاتی ہے، اگر کوئی نوجوان

اس میدان میں نیا نیا ہو اور کسی سبب سے اس میں جھجک محسوس کرے تو اس کو مختلف طعنے دے کر غصہ میں لایا جاتا ہے تاکہ یہ ضد میں آکر اس ”عظیم مقصد“ میں کامیابی کو اپنے لئے ایک چیلنج بنائے، غرضیکہ ہر طرح اس کی حوصلہ افزائی کر کے دنیا و آخرت میں ذلت و رسوائی کی جانب دھکیلنے میں اہم کردار ادا کیا جاتا ہے۔ اور اکثر دیکھا گیا ہے کہ جب ان ”چکروں“ کے باعث یہ نوجوان کسی بڑی مشکل میں پھنس جائے تو پھر یہ دوست اپنی شکل دکھانا بھی گوارا نہیں کرتے۔

حل :- یقیناً اس کا حل یہی ہے کہ ایسے ”دوست نماد شمنوں“ سے فوراً جان چھڑا کر ”نیک و پاکیزہ و مخلص دوست“ تلاش کئے جائیں کہ جو گناہوں میں نہیں بلکہ صرف نیکیوں میں ہم سے تعاون کریں۔ فی زمانہ ایسے دوستوں کا ملنا ناممکن نہیں تو مشکل ترین ضرور ہے، لیکن اگر واقعی جذبہ صادق ہو تو ان شاء اللہ تعالیٰ ایک نہ ایک دن کامیابی ضرور حاصل ہوگی۔

## { چوتھا سبب }

### ڈائجسٹ و ناول :-

ڈائجسٹ و عشقیہ موضوعات پر لکھے گئے ناول بھی نوجوانوں، بلکہ شادی شدہ افراد کو بھی اس ”چکر“ کا راستہ دکھانے میں بہت اہم کردار ادا کرتے ہیں۔ انسان کی قلبی کیفیات مختلف ہوتی رہتی ہیں، بعض اوقات بہت کچھ پڑھنے کے باوجود دل پر مثبت یا منفی کچھ بھی اثر مرتب نہیں ہوتا لیکن کسی کی زبان سے نکلا ہوا ایک جملہ دل کی دنیا میں انقلاب پیدا کر دیتا ہے اور بعض اوقات بہت کچھ سننے پر بھی باطنی لحاظ سے کوئی تبدیلی محسوس نہیں ہوتی، لیکن ایک لکھا ہوا مختصر سا جملہ ذہن کی کایا

۱۔ اس کے لئے بھی دعوتِ اسلامی کے غیر سیاسی ماحول سے وابستگی بہت بہتر رہے گی۔ ان شاء اللہ اس پاکیزہ ماحول میں بے شمار مخلص مسلمان بھائیوں کے قریب رہنے کا موقع ملے گا۔



پلٹ دیتا ہے۔ لہذا اکثر ایسا ہوتا ہے کہ جو کام آوارہ گرد دوستوں کی صحبت اور ان کی واہیات باتیں نہیں کر پاتیں وہ کام ڈائجسٹوں میں لکھے ہوئے جملے کر دیتے ہیں، انھیں پڑھنے کے بعد انسان کافی دیر تک ان کے بارے میں سوچنے پر مجبور ہو جاتا ہے، پھر یہ جملے اس ذہن میں گردش کرتے رہتے ہیں اور بسا اوقات ان میں پوشیدہ پرکشش دعوت اسے ایسے کاموں کی طرف لے جاتی ہے جو بعد میں اس کے لئے طویل رنج و غم کا سبب بن جاتے ہیں۔

کاش! چند ٹکوں کی خاطر لوگوں کو جھوٹی کہانیوں کی شکل میں گناہوں اور اللہ تعالیٰ کی نافرمانی کا راستہ دکھانے والے بروز قیامت سخت مشکل میں گرفتار ہونے کے بارے میں بھی غور کر لیتے کیونکہ اس بارے میں شرعی ضابطہ بیان کرتے ہوئے خبر اعظم ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ ”جو شخص برا طریقہ جاری کرے اور لوگ اس پر عمل کریں تو اس پر اس کے جاری کرنے کا بھی گناہ ہو گا اور ان لوگوں کے عمل کا بھی اور عمل کرنے والوں کے گناہ میں کوئی بھی کمی نہ ہو گی۔“ (لکن ماجباب من سن سے حسہ اوسیۃ)

حل :- ان بے کار چیزوں سے جان چھڑانے کے لئے دینی کتب کے مطالعہ کا شوق بڑھانا چاہئے، اور بہتر یہ ہے کہ ابتداً اصلاحی موضوعات پر مشتمل لٹریچر کو زیر مطالعہ رکھا جائے، انشاء اللہ تعالیٰ ایک مرتبہ دینی کتب کے مطالعے کی چاشنی حاصل ہو گئی تو پھر ان ”پھیکا پھیکا ذائقہ رکھنے والے ڈائجسٹوں اور ناولوں“ کو پڑھنے سے بالکل لطف حاصل نہ ہو گا۔

{ پانچواں سبب }

نگاہ کا آزاد چھوڑنا:-

۱۔ اس سلسلے میں امیر دعویت اسلامی علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ کے مدنی رسائل اور مکتبہ اعلیٰ حضرت رضی اللہ عنہ کی شائع کردہ کتب کا مطالعہ بے حد مفید ثابت ہو گا۔ (ادارہ)

”عشقِ مجازی“ کی بنیاد عموماً وہ نگاہ بنتی ہے جسے انسان نے آزاد چھوڑنے کی حماقت کی تھی۔ جب نگاہ کسی کے حسن پر پڑے اور یہ دیکھنے والا باطنی لحاظ سے مضبوط نہ ہو تو پھر دل کو قابو میں رکھنا بے حد مشکل ہو جاتا ہے۔ آپ نے ما قبل میں بہت سے واقعات ملاحظہ فرمائے، ان پر دوبارہ غور فرمائیں، آپ دیکھیں گے کہ صرف ایک نگاہ نے زندگیوں میں کیسے کیسے انقلاب پیدا کئے ہیں اور یہ نگاہ کس قدر فتنوں کا باعث بنی اور اس ایک نگاہ کے آزاد چھوڑنے کے بدلے میں حاصل ہونے والے نقصانات سے غفلت نے کتنے انسانوں کو قیامت تک کے لئے نشانِ عبرت بنا دیا.....

یہی وجہ ہے کہ حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ فرمایا کرتے تھے، ”ان نفوس کو قابو میں رکھو۔ یہ شر کی دعوت دیتے ہیں۔ گناہ چھوڑ دینا، توبہ قبول کروانے سے زیادہ آسان ہے۔ کئی ”شہوانی نظریں“ اور ”گھڑی بھر کی لذتیں“ طویل غم کا باعث ہوتی ہیں۔ (مکاشفۃ القلوب)

حل :- اس کا حل کچھ آگے ”علاج“ کے عنوان کے تحت درج کیا گیا ہے، وہاں ملاحظہ فرمائیے۔

## { چھٹا سبب }

مخلوط طرزِ تعلیم :-

دینی تربیت کا نہ ہونا، برے دوستوں کی صحبت، فلمیں ڈرامے، ناول، ڈائجسٹ اور آوارہ نظری تو کسی نہ کسی طرح ”عشقِ مجازی“ کا سبب بنتے ہی رہتے ہیں، لیکن اب مخلوط طرزِ تعلیم نے تو یہی سہی کسر بھی پوری کر دی ہے۔ ایسے اسکول و کالج و یونیورسٹی اور ٹیوشن سینٹر کہ جن میں لڑکے، لڑکیاں ایک ساتھ تعلیم حاصل کر رہے ہوں، وہاں نگاہ کی حفاظت کے تصور کو (معاذ اللہ) بیوقوفی تصور کیا جاتا ہے۔ نتیجتاً جلسِ مخالف سے اتنا قرب حاصل کرنے کے بعد کوئی گناہ سے بچ جائے یہ

تقریباً تقریباً ممکن ہے۔ یہی وجہ ہے کہ سب سے زیادہ ”شیطانی چکر“ کے شکار، ایسے مقامات پر ہی پائے جاتے ہیں۔

ایسے والدین پر بے حد حیرت ہوتی ہے کہ جو ”غیرت مندی“ کا دعویٰ کرنے کے باوجود اپنی جوان بچیوں کو اس قسم کی طرزِ تعلیم رکھنے والے مقامات میں بھیجنے میں بالکل شرم و حیا محسوس نہیں کرتے۔ شاید آج کا مسلمان بھی سابقہ قوموں کی طرح اللہ تعالیٰ کی طرف سے کسی بہت بڑے اور اچانک آجانے والے عذاب کا منتظر ہے۔ اللہ تعالیٰ اپنے حبیبِ کریم ﷺ کے صدقے ہمیں اپنے غیظ و غضب سے محفوظ رکھے۔ آمین

حل :- اس کا حل بھی ”علاج“ کے تحت ملاحظہ فرمائیے۔

### {ساتواں سبب}

#### نفس و شیطان :-

انسان کے کسی بھی قسم کے گناہ میں مبتلاء ہونے کا سب سے بڑا سبب نفس و شیطان کی اطاعت ہے۔ ان خبیثوں کا کام ہی انسانوں کے ایمان کا بڑا غرق کر کے انہیں جہنم کا ایندھن بنانا ہے۔

اللہ تعالیٰ نے شیطان کے بارے میں قرآنِ پاک میں ارشاد فرمایا۔ ”إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ☆“ (یعنی شیطان) تو تمہیں یہی حکم دے گا بڑی اور بے حیائی کا اور یہ کہ اللہ پر وہ بات جوڑو جس کی تمہیں خبر نہیں۔“ (کنز الایمان۔ قرء۔ ۱۶۹۔ پ ۲۰۲)

اور نفس کے بارے میں ارشاد ہوا، ”إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوءِ۔“ بے شک نفس تو برائی کا بڑا حکم دینے والا ہے۔“ (کنز الایمان۔ پ ۱۳۔ یوسف۔ ۵۳)

”عشقِ مجازی“ کے سلسلے میں بھی دونوں فریقین کے قلوب میں ایک

دوسرے کے لئے ہمدردی و محبت کے جذبات بیدار کرنا، اس سلسلے کو آگے بڑھانے کے لئے مشورے دینا، انھیں دنیا و آخرت کے خطرات سے بے خوف کرنا اور بد نگاہی سے زناء تک پہنچا دینا انھیں دونوں کی ”پر خلوص“ کوششوں کا نتیجہ ہے۔

حل :- اس سبب کا حل ”نفس و شیطان“ سے مسلسل مقابلے کے علاوہ اور کچھ بھی نہیں، ان سے ذرا سی غفلت ”بربادی ایمان“ کا سبب بن سکتی ہے۔ ان سے مقابلے کا طریقہ اور اس میں آسانی کے حصول کے لئے ”علاج“ کے تحت تفصیل کا بغور مطالعہ فرمائیے۔

### ﴿علاج﴾

”عشق مجازی“ کی تباہ کاریاں اور اس کے اسباب کو بیان کرنے کے بعد اب آخر میں اس سے محفوظ رہنے اور اگر خدا نخواستہ گرفتار بلا ہیں تو چھٹکارا حاصل کرنے کے بارے میں چند کلمات تحریر کرنا بہت ضروری ہیں۔ اگر ان کے ذریعے کسی ایک مسلمان بھائی نے بھی اس گناہ سے بچنے یا دور رہنے کی نیت کر لی تو ان شاء اللہ عزوجل آخرت کا بہت سا ذخیرہ حاصل ہونے کی قوی امید ہے۔

اس سلسلے میں درج ذیل امور پر ”عمل کی نیت“ سے توجہ کرنا بے حد مفید محسوس ہوگا۔ ان شاء اللہ عزوجل۔

### پہلا علاج

اس کی تباہ کاریوں پر غور :-

مجھ دار انسان وہی ہے کہ جو اپنے لئے ایسے اعمال کا انتخاب کرے کہ جس میں اللہ تعالیٰ اور اس کے حبیب ﷺ کی رضا و خوشنودی پوشیدہ ہو۔ ”عشق مجازی“ کی آفتوں پر غور کرنے کے بعد کون ایسا بیوقوف ہوگا کہ جو اسے عبادت و رضائے الہی کا سبب قرار دے سکے؟ لہذا اس مرض میں گرفتار مسلمان

بھائیوں اور بہنوں کو چاہئے کہ اس ”شیطانی چکر“ کی وقتی لذتوں پر نہیں بلکہ اس کی تباہ کاریوں کو اپنے پیش نظر رکھیں، ان شاء اللہ عزوجل بہت جلد فائدہ محسوس فرمائیں گے۔ اللہ تعالیٰ اس کی آفتوں پر ہمہ وقت غور کرنے کی توفیق عطا فرمائے۔ آمین

## دوسرا علاج

شادی :-

اس ”گناہِ مُذْتَمِر“ سے بچنے کا بہترین ذریعہ یہ ہے کہ اگر ایسا شخص غیر شادی شدہ ہے تو فوراً شادی کر لے۔ اور بہتر یہ ہے کہ ”جائز طریقے سے ممکن ہونے کی صورت میں“ جس کی طرف دل مائل ہے اسی سے شادی کرے، تاکہ آئندہ کے لئے برائی کا راستہ ہی بند ہو جائے۔ کیونکہ کسی اور سے شادی کرنے پر ہو سکتا ہے کہ اس کا دل زوجہ کی طرف پورے طور پر مائل نہ ہو اور پرانی یادیں دور نہ ہو سکیں، اگر ایسا ہوا تو اس کا لازمی نتیجہ گھر میں لڑائی جھگڑے، بے سکونی اور زوجہ کے حقوق میں کوتاہی کی صورت میں نکلے گا۔

اور ایسی صورت میں لڑکی والوں کو بھی چاہئے کہ اگر کوئی شرعی قباحت نہ ہو تو انہیں شادی سے نہ روکیں۔ یہ اس سے کہیں بہتر ہے کہ ضد میں آکر انکار کریں اور لڑکی کوئی الٹا سیدھا قدم اٹھا کر بدنامی کا باعث بن جائے۔ یونہی لڑکے والوں کو بھی اس موقع پر بہت سمجھ داری کا مظاہرہ کرنا چاہئے، جو ان اولاد کے ساتھ سختی عموماً برے نتائج کا باعث بنتی ہے۔

اس سلسلے میں درج ذیل حدیث پاک اور چند واقعات پر غور فرمائیں۔

☆ پیارے آقا ﷺ کا فیصلہ :-

حضرت جابر رضی اللہ عنہ ارشاد فرماتے ہیں کہ ایک شخص

رسول اللہ ﷺ کی خدمت مبارکت میں حاضر ہوا اور عرض کی، یا رسول اللہ (صلی اللہ علیہ

وسلم)! ہمارے پاس ایک یتیم بچی رہتی ہے۔ اس بچی کے لئے ایک امیر اور ایک غریب کا رشتے کے لئے پیغام آیا ہے، لڑکی اس غریب کی طرف میلان رکھتی ہے جب کہ ہم اس امیر سے رشتہ کرنا چاہتے ہیں۔ (تو اب آپ اس بارے میں کیا حکم فرماتے ہیں؟)۔ سرکارِ مدینہ ﷺ نے ارشاد فرمایا، ”لَمْ نَرِ لِلْمُتَحَائِنِ مِثْلَ النِّكَاحِ“ (یعنی ہم نے دو محبت کرنے والوں کے لئے نکاح سے بہتر کوئی عمل نہیں دیکھا)۔ ﴿ذم الہوی بحوالہ ابن ماجہ بمزید ما﴾

### ☆ حضرت علی رضی اللہ عنہ کا فیصلہ:

ابو البختری فرماتے ہیں کہ ”حضرت علی رضی اللہ عنہ کی ایک لونڈی تھی جو نہر فرات سے بیٹھاپانی لایا کرتی تھی، راستے میں ایک موذن رہا کرتا تھا، یہ لونڈی جب بھی اس کے پاس سے گزرتی تو وہ اس سے کہتا، ”اے فلانی! واللہ، میں تجھ سے محبت کرتا ہوں۔“ جب اس نے یہ بہت دفعہ کیا تو لونڈی نے حضرت علی رضی اللہ عنہ سے اس کی شکایت کر دی۔ آپ نے ارشاد فرمایا کہ ”اب جب وہ تجھ سے یہ بات کہے تو تو بھی اس سے یہی جملہ کہہ کر پوچھنا کہ اب وہ کیا چاہتا ہے؟“ اگلے دن لونڈی نے اسی طرح کیا تو موذن بولا کہ ”ہم صبر کریں گے، حتیٰ کہ اللہ تعالیٰ کوئی فیصلہ فرما دے اور وہ بہترین فیصلہ فرمانے والا ہے۔“ جب لونڈی نے اس کا یہ جواب حضرت علی رضی اللہ عنہ کو سنایا تو آپ نے فرمایا کہ ”تم جاؤ اور اسے ساتھ لے کر آؤ۔“ جب وہ آپ کے پاس آیا تو آپ نے اسے بہت اچھے طریقے سے بیٹھایا اور فرمایا، ”اے فلاں! کیا تجھے فلانی سے (واقعی) محبت ہے؟“ اس نے عرض کی جی ہاں۔“ آپ نے فرمایا کہ ”کیا اس کا کسی اور کو بھی علم ہے؟“ عرض کی، ”واللہ! کسی کو بھی اس کا علم نہیں۔“ آپ نے تین مرتبہ اس سے قسم لی اس نے ہر مرتبہ یہی جواب دیا۔ تو آپ نے ارشاد فرمایا، ”میں نے یہ لونڈی تجھے دی، اس کا ہاتھ پکڑ اور اپنے ساتھ لے جا۔ یہ اللہ ہی کے حکم سے ہے اور اللہ بہتر ہی حکم کرتا ہے۔“ (ذم الہوی)

مدینہ۔ جو کوئی عشق مجازی میں گرفتار ہو جائے تو اس کے لئے شرعی اعتبار سے حکم یہ ہے کہ اسے چھپائے اور صبر کرے (جیسا کہ عنقریب آگے بیان ہوگا)، حضرت علی رضی اللہ عنہ کے ”لوٹڈی کو موذن کو اسی طرح کا جواب دینے کی تلقین فرمانے“ اور ”پھر خود اس سے بغرض تحقیق سوال کرنے میں“ اسی حکم پر عمل پیرا ہونے کے بارے میں اطمینان کا حصول مقصود تھا۔

### ☆ تاجر نے زندگی بچادی:

حضرت موسیٰ بن علقمہ مکی رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں کہ مکہ مکرمہ میں ایک شخص غلاموں اور لوٹڈیوں کی تجارت کرتا تھا، اس کے پاس ایک لوٹڈی ایسی بھی تھی کہ جس کے حسن و جمال کی بڑی تعریف کی جاتی تھی۔ یہ تاجر اسے حج کے موسم میں سامنے لاتا تھا۔ لوگ اس کے لئے بڑے بڑے ہدے اور تحفے پیش کرتے لیکن یہ اسے فروخت نہ کرتا اور بہت زیادہ قیمت مانگا کرتا تھا۔ اس کا یہ قصہ بہت شہروں تک پہنچ گیا اور لوگ دور دور سے لوٹڈی کو دیکھنے کے لئے آیا کرتے تھے۔

ہمارے ہاں ایک عبادت گزار نوجوان بھی تھا۔ ایک دن نمائش کے دوران اس کی نگاہ بھی لوٹڈی پر پڑ گئی اور وہ اس کے دل میں اترتی چلی گئی۔ یہ نوجوان نمائش کے دنوں میں اس لوٹڈی کو جا کر دیکھتا اور پھر لوٹ جاتا۔ جب لوٹڈی کو پردے میں بٹھا دیا گیا تو یہ بہت غمگین اور سخت بیمار ہو گیا، اس کا بدن کھلنے لگا اور وہ سب لوگوں سے الگ تھلگ ہو گیا۔ میں نے کئی مرتبہ اس سے اس کی وجہ دریافت کی لیکن وہ ٹالتا رہا، آخر ایک دن اس نے مجھے بتا دیا لیکن ساتھ ہی یہ مطالبہ کیا کہ اس بات کو کسی کے سامنے ذکر نہ کیا جائے۔ جب اس نے مجھے یہ تمام بات بتائی تو مجھے اس پر بہت رحم آیا اور میں دل کے ہاتھوں مجبور ہو کر اس لوٹڈی کے مالک کے پاس پہنچا اور اسے ساری صورت حال سے آگاہ کر دیا۔ تاجر نے یہ سب کچھ سن کر کہا کہ ”مجھے اس کے پاس لے چلو تاکہ میں اسے



خود اپنی آنکھوں سے دیکھوں۔“ جب تاجر نے اس قریب المرگ نوجوان کی حالت زار ملاحظہ کی تو اسے بھی اس پر بہت رحم آیا۔

وہ واپس اپنے گھر گیا اور اپنے خادموں کو حکم دیا کہ ”فلاں لونڈی کو بہترین لباس پہناؤ جیسا کہ حج کے دنوں میں پہنایا کرتے ہو۔“ خادموں نے حکم کی تعمیل کی، پھر تاجر اس لونڈی کو بازار میں لے گیا اور لوگوں کو پکارا۔ جب لوگ جمع ہو گئے تو اس نے کہا کہ ”تم سب گواہ ہو جاؤ کہ میں نے اپنی یہ لونڈی اور جو کچھ اس نے پہن رکھا ہے، سب اس نوجوان کو ہدیہ کیا، اس کے بدلے میں جو میرے رب عزوجل کے پاس ہے۔“ لوگوں نے اس سے کہا کہ ”تو برباد ہو جائے، یہ تو نے کیا کیا؟ تیرے سامنے اس کے اتنے بڑے بڑے معاوضے پیش کئے گئے لیکن تو نے اسے نہ بیچا اور اب ایک مفلس نوجوان کو یونہی بخش دی؟“ تاجر نے کہا ”مجھ سے دور ہو جاؤ، میں نے (اس نوجوان کی زندگی بچا کر) تمام روئے زمین کے لوگوں کو زندگی بخشی ہے، کیونکہ اللہ تعالیٰ کا فرمانِ عالیشان ہے کہ ”وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَانَتْ مِثْلَ نَفْسٍ نَّاطِقَةٍ مِّنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ“ (ترمذی، ۲۳۲۰) اور جس نے ایک جان کو چلا (یعنی بچا) لیا اس نے گویا سب لوگوں کو چلا لیا۔“ (کنز الایمان، المائدہ ۳۲، ۶) (ذم الھوی)

☆ حضرت ابو بکر رضی اللہ عنہ کا عمل :

ابو غسان بیان کرتے ہیں کہ ایک مرتبہ حضرت ابو بکر رضی اللہ

عند نے چلتے ہوئے ایک عورت سے یہ شعر سنا،

وَ هَوَيْتُ مِنْ قَبْلِ قَطْعِ تَمَامِي

مُتَمَاتِلًا مِثْلَ الْقَضِيبِ النَّاعِمِ

(یعنی میں اس پر چمن سے فریفتہ ہوں، وہ سیدھی نرم و نازک شاخ کی مثل ناز و انداز سے چلنے والا

ہے۔)

آپ نے اس سے دریافت فرمایا، ”تو آزاد ہے یا باندی؟“ اس نے عرض

کی، ”باندی۔“ پھر پوچھا، ”کیا تو نے کسی سے محبت کی ہے؟“ یہ سن کر وہ جھجکنے لگی۔ جب آپ نے اسے قسم دلائی تو اس نے یہ شعر پڑھا،

وَأَنَا الَّتِي لَعِبَ الْهَوَى بِفُؤَادِهَا

فَتَلَّنِي حُبُّ مُحَمَّدِ بْنِ الْقَاسِمِ

(یعنی میں وہ عورت ہوں جس کے دل کے ساتھ خواہش کھیل رہی ہے، محمد بن قاسم کی محبت نے مجھے قتل کر دیا۔)

سارا معاملہ سمجھ کر آپ نے اسے خرید کر ابن قاسم کے پاس بھیج دیا پھر فرمایا، ”مخدا! یہ عورتیں مردوں کے لئے فتنہ ہیں۔ خدا کی قسم! ان کے ذریعے بہت سے شرفاء موت کے گھاٹ اترے اور بہت سے پاک باز مصیبت کا شکار ہوئے۔“ (الجواب الکافی)

☆ حضرت عثمان رضی اللہ عنہ کا فیصلہ:

حضرت عثمان بن عفان رضی اللہ عنہ کی خدمت

میں ایک انصاری نے اپنی لونڈی کی شکایت کی۔ آپ نے لونڈی سے معاملہ دریافت فرمایا۔ اس نے عرض کی ”یا امیر المؤمنین! میں اس کے بچے پر فریفتہ ہوں اور اس سے ہنسی مذاق کرتی رہتی ہوں۔“ آپ نے اس انصاری سے فرمایا، ”یہ لونڈی اپنے بچے کو ہبہ کر دے، اس کی قیمت میں اور کر دیتا ہوں۔“ انصاری نے عرض کی اے امیر المؤمنین! گواہ رہے یہ اسی کی ہے۔“ (ایضاً)

☆ حضرت علی رضی اللہ عنہ کا ایک اور فیصلہ:

ایک مرتبہ حضرت علی رضی اللہ عنہ کی خدمت میں ایک

لڑکا پیش کیا گیا، جسے رات کی تاریکی میں کسی گھر سے گرفتار کیا گیا تھا۔ آپ نے اس دریافت فرمایا، ”سچ سچ ہتا کہ قصہ کیا ہے؟“ اس نے عرض کی کہ ”میں چور نہیں ہوں،

حق سچ عرض کرتا ہوں۔

تَعَلَّقْتُ فِي دَارِ الرَّبَاحِيِّ فَرِيْدَةً  
يَذِلُّ لَهَا مِنْ حُسْنِ نَظْرِ الْبَدْرِ

(یعنی مجھے رباحی کے گھر ایک ناسفہ موتی سے تعلق ہو گیا ہے، جس کے حسن و جمال کے سامنے بدر بھی بیچ ہے۔)

لَهَا فِي بَنَاتِ رُومِ حُسْنٌ وَ مَنْظَرٌ  
اِذَا فَخَرَتْ بِالْحُسْنِ عَانَقَهَا الْفَخْرُ

(یعنی وہ سب رومی دوشیزاؤں سے خوش منظر ہے، جب وہ اپنے حسن پر فخر کرتی ہے تو اوادائیں اس سے ہم آغوش ہوتی ہیں۔)

فَلَمَّا طَرَفْتُ الدَّارَ مِنْ حُبِّ مُهْجَتِي  
اَتَيْتُ وَ فِيهَا مَنْ تَوَقَّدَ الْجَمْرُ

(یعنی پس جب میں دن کی محبت سے مجبور ہو کر گھر میں پھاند گیا، میرا دل محبت کی حرارت سے دمک رہا تھا۔)

تَبَادَرَ اَهْلُ الدَّارِ بِي نَمِّ صَيْحُوْا  
هُوَ اللَّصُّ مَحْتُوْمٌ لَهٗ الْقَتْلُ وَالْاَسْرُ

(یعنی تو اہل خانہ جلدی سے میری طرف لپکے اور چیخنے لگے، وہ چور ہے، گرفتار کر لو، واجب القتل ہے۔)

یہ اشعار سن کر حضرت علی رضی اللہ عنہ کے دل پر رقت طاری ہو گئی اور ”مہلب بن رباح (یعنی وہ شخص جس کے گھر میں یہ نوجوان داخل ہوا تھا) کو حکم فرمایا کہ یہ باندی اسے ہبہ کر دو۔“ اس نے حکم کی تعمیل کرتے ہوئے کہا کہ، ”اسے لے جاؤ یہ تمہاری ہے۔“ (ایضاً)

ملايينه :- یہاں خدا نخواستہ اگر کسی کے دل میں دوسوہ آئے کہ حضرت علی رضی اللہ عنہ نے ایک ناجائز طریقے سے گھر میں کودنے والے شخص کی حوصلہ

افزائی فرمائی، حالانکہ اسے تو سزا دینی چاہیے تھی۔“ تو اس کا جواب یہ ہے کہ بظاہر بات یوں ہی معلوم ہوتی ہے لیکن تھوڑا سا غور کیا جائے تو معلوم ہو گا کہ دراصل آپ نے آئندہ کے لئے گناہوں کا سلسلہ موقوف فرمادینے کو ترجیح عنایت فرمائی ہے۔ اور کسی کو گناہوں سے چالینا بہت بڑی نیکی ہے، آپ اگر اسے تھوڑی بہت سزا دے بھی دیتے تو ہو سکتا تھا کہ وہ دوبارہ اس سے بڑی خطائیں مبتلا ہو جاتا۔

### ☆ حضرت امیر معاویہ رضی اللہ عنہ کا فیصلہ :-

منقول ہے کہ حضرت امیر معاویہ رضی اللہ

عنه نے ایک باندی خریدی، اس کے حسن و جمال کے باعث آپ کا دل اس کی طرف مائل ہو گیا۔ آپ نے اس کی قلبی کیفیت کے بارے میں سوال کیا تو اس نے عرض کی کہ ”میں اپنے پہلے مالک کی محبت میں گرفتار ہوں۔“ یہ سن کر آپ نے باوجود اس سے محبت رکھنے کے اسے اس کے پہلے مالک کی طرف واپس لوٹا دیا۔ (ایضاً)

### ☆ بڑی نیکی :-

زمخشری نے بیان کیا ہے کہ ”ملکہ زہیدہ نے مکہ مکرمہ کی کسی دیوار

پر یہ تحریر لکھی دیکھی،

”کیا کوئی ایسا سخی مرد یا عورت نہیں ہے کہ جو ایک حواس باختہ کے رنج و الم دفع کر سکے، آنکھیں اشک بار ہیں، آنتیں زخمی ہیں اور وہ اندرون شکم کی حرارت سے سچا ہے۔“

یہ تحریر پڑھ کر زہیدہ نے فوراً سارا معاملہ سمجھ لیا اور قسم کھائی کہ ”اگر مجھے یہ

شخص مل گیا تو میں اسے اس کے محبوب سے ملا دوں گی۔“ جب وہ مزدلفہ پہنچی تو اس

نے ایک شخص کو دیکھا کہ وہ وہی اشعار پڑھ رہا ہے۔ اس نے اسے بلوا کر معاملہ دریافت

کیا، تو اس نے بتایا کہ ”یہ اشعار میں نے اپنی چچا زاد کے لئے لکھے ہیں، میں اس سے محبت کرتا ہوں، لیکن اس کے گھر والے انکار کر رہے ہیں۔“

یہ سن کر زبیدہ اس کے چچا کے ہاں پہنچی اور اس کے متعلق انھیں راضی کرنے کی کوشش کی اور اس مقصد کے حصول کے لئے اتنا روپیہ خرچ کیا کہ آخر کار وہ لوگ راضی ہو گئے۔ بعد میں اسے معلوم ہوا کہ وہ لڑکی اپنے عاشق کی نسبت زیادہ فریفتہ و شیدا ہے۔ زبیدہ اپنے اس کارنامے کو ایک عظیم نیکی تصور کرتی تھی۔ (ایضاً)

والدین کی خدمت میں مؤدبانہ گزارش ہے کہ ”اگر کوئی عذر نہ ہو تو اپنی اولاد کی شادی جتنی جلدی ممکن ہو کر دیجئے تاکہ شیطان کے لئے اسے گناہوں میں مبتلا کروانا بے حد مشکل ہو جائے۔ ہمارے معاشرے میں اکثر نوجوانوں کی شادی میں دیر کی جاتی ہے، جس کے باعث وہ بے شمار گناہوں میں گرفتار ہوتے چلے جاتے ہیں۔ ایسا ہرگز نہیں ہونا چاہئے۔ درج ذیل حدیث پاک پر غور کیجئے۔

☆ حضرت جابر رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا، ”جو نوجوان شروع جوانی میں شادی کر لیتا ہے تو شیطان اس پر اوویلا کرتا ہے کہ ”ہائے افسوس! کہ اس نے مجھ سے اپنا دین محفوظ کر لیا۔“ (مجمع الزوائد للہیثمی)

یہ حکایت بھی قابل غور ہے کہ

☆ شہوت سے نجات ممکن نہیں :-

ایک شخص کا بیان ہے کہ ”ایک مرتبہ میں شہوت کے غلبے سے بے تاب ہوا، پریشان ہو کر اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں فریاد کی۔ رات کو خواب میں ایک بزرگ کو دیکھا، انھوں نے مجھ سے دریافت کیا، ”تجھے کیا ہوا ہے؟“ میں نے اپنا حال بیان کر دیا۔ آپ نے اپنا ہاتھ میرے سینے پر رکھ دیا۔ جب میں بیدار ہوا تو میری طبیعت میں سکون تھا۔ اسی طرح ایک سال گزر گیا۔ اس کے بعد پھر شہوت کا زور ہوا،

میں نے اللہ عزوجل کی بارگاہ میں پھر آہ وزاری کی۔ وہی بزرگ پھر خواب میں نظر آئے اور مجھ سے فرمایا، ”کیا تو اس شہوت کو دور کرنا چاہتا ہے؟“ میں نے عرض کی، ”جی ہاں۔“ انھوں نے فرمایا، ”گردن جھکا۔“ میں نے جھکا دی۔ انھوں نے ایک تلوار سے میری گردن اڑادی۔ جب میں بیدار ہوا تو پرسکون تھا۔ اسی طرح ایک سال اور گزر گیا، ایک سال بعد پھر وہی کیفیت طاری ہوئی۔ میں گھبرا کر رونے لگا۔ رات کو خواب میں انہی بزرگ کو دیکھا، فرما رہے تھے، ”تو خود سے ایسی چیز کو دفع کرنا چاہتا ہے جو خدا کی مرضی نہیں ہے۔“ جب میں بیدار ہوا تو (اس کلام میں واضح اشارے کو سمجھ کر) نکاح کر لیا اور اس غلبہ شہوت سے نجات حاصل کی۔“ (کیسائے سعادت)

اس کے برعکس اگر شادی میں بلا شرعی عذر دیر کی اور اولاد سے کوئی گناہ سرزد ہو گیا تو اس کا وبال باپ پر بھی ہو گا جیسا کہ حضرت ابو سعید خدری اور ابن عباس رضی اللہ عنہم روایت فرماتے ہیں کہ ”رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا ”جس کے کوئی لڑکا ہو، تو اس کو چاہئے کہ اس کا اچھا نام رکھے اور اسے ادب سکھائے، پھر جب وہ بالغ ہو تو اس کا نکاح کر دے، اگر لڑکا بالغ ہو اور اس شخص نے اس کی شادی نہ کروائی، پھر اس نوجوان سے کوئی گناہ سرزد ہو گیا تو اس کا گناہ اس کے باپ پر ہے۔“ (شعب الایمان)

☆ حضرت عمر فاروق اور انس بن مالک رضی اللہ عنہما روایت فرماتے ہیں کہ ”رسول اللہ ﷺ کا فرمان عالیشان ہے کہ ”توریت میں مکتوب (یعنی لکھا) ہے کہ ”جس کی بیٹی بارہ سال کی ہو جائے اور یہ شخص اس کی شادی نہ کرے، پھر اس لڑکی سے کوئی گناہ سرزد ہو گیا تو اس کا وبال باپ پر ہے۔“ (ایضاً)

☆ عاشق کے لئے شرعی حکم :-

اگر مطلوبہ شخصیت سے شادی ممکن نہ ہو تو حکم یہ ہے

کہ غلط و فاسد قدم اٹھانے کی بجائے صبر کرے، اس عشق کو چھپائے اور علاج کے دیگر

طریقوں پر غور و تفکر کر کے اپنے آپ کو گناہوں سے بچانے کی بھرپور کوشش جاری رکھے۔

پھر اس صبر کا نتیجہ یا تو ”دل سے محبوب کی محبت دور ہو جانے“ کی صورت میں حاصل ہو گا اور یا ”تمام یا کچھ زندگی غم میں جلتے ہوئے گزرنے کی شکل میں“ اور یا ”پھر گھلتے گھلتے مر جانے کی حالت میں۔“

اگر سمجھ داری سے غور کیا جائے تو یہ تینوں صورتیں ہر لحاظ سے اس سے کہیں بہتر ہیں کہ بے صبری کا مظاہرہ کر کے اپنی آخرت کو تباہ و برباد کر دیا جائے۔ کیونکہ ”محبت دور ہو جانے کی صورت میں تو ظاہر ہے کہ گناہ سے دوری بھی حاصل ہوگی اور آئندہ زندگی میں کوئی تکلیف بھی محسوس نہ ہوگی۔“ دوسری صورت میں جلنے کڑھنے کی تکلیف تو ضرور ہوگی لیکن اللہ تعالیٰ کا یہ فرمانِ عالیشان بھی تو ایک بشارتِ عظیمہ کے ساتھ موجود ہے کہ ”إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ“ یعنی بے شک اللہ صبر کرنے والوں کے ساتھ ہے۔ اور یہ بھی کہ ”وَاللَّهُ يُحِبُّ الصَّابِرِينَ“☆ ترجمہ اور صبر کرنے والے اللہ کو محبوب ہیں۔

اور درج ذیل حدیثِ پاک بھی کہ

☆ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے

فرمایا ”مَنْ عَشِقَ وَكْتَمَ وَعَفَّ وَصَبَرَ غَفَرَ اللَّهُ لَهُ وَأَدْخَلَهُ الْجَنَّةَ۔“ جس نے عشق کیا اور اسے چھپایا اور پاک دامن رہا اور صبر کیا تو اللہ تعالیٰ اس کی بخشش فرما کر اسے جنت میں داخلہ عطا کرے گا۔ (احناف سادۃ للتقین للزمبیدی)۔

اور تیسری صورت میں بظاہر جان سے ہاتھ دھو بیٹھنے کا نقصان ہوتا نظر آتا

ہے لیکن حقیقتاً اس میں بھی نقصان نہیں بلکہ فائدہ ہی فائدہ ہے، جیسا کہ



☆ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے

ارشاد فرمایا، ”مَنْ عَشَقَ فَاكْتَمَ وَعَفَّ ثُمَّ مَاتَ مَاتَ شَهِيدًا۔ یعنی جس نے عشق کیا پھر اسے چھپایا اور پاک دامن رہا پھر (اسی کے باعث) مر گیا تو وہ شہید کی موت مرا۔

(البدایہ النہایہ لابن کثیر)۔

اللہ عزوجل شادی یا صبر کے علاوہ کسی اور ”آخرت کی بربادی کی صورت“ کو

اختیار کرنے سے بچنے کی توفیق عطا فرمائے۔ آمین بجاہ النبی الامین ﷺ

## تیسرا علاج

روزے :-

جو شخص کسی سبب سے شادی پر قادر نہ ہو تو اسے چاہئے کہ

”روزے“ رکھنا شروع کر دے۔ ابتداء لگاتار رکھے، پھر آہستہ آہستہ وقفہ کرنا شروع

کرے، ان شاء اللہ عزوجل اس کی برکت سے نفسانی خواہشات پر قابو پانے میں بے حد مدد ملے گی۔ جیسا کہ اس حدیث پاک سے ظاہر ہے کہ۔

☆ حضرت عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ہم کچھ نوجوان رسول

اللہ ﷺ کے پاس ایسے تھے کہ جنہوں نے ابھی شادیاں نہیں کی تھیں۔ تو آپ نے

ارشاد فرمایا ”اے جوانوں کے گروہ! تم میں سے جو نکاح کی طاقت رکھتا ہے وہ شادی کر

لے کیونکہ یہ اجنبی عورت کی طرف نگاہ کرنے سے روکنے والا ہے اور شرمگاہ کی

حفاظت کرتا ہے اور جس جوان میں نکاح کی ہمت نہیں، تو وہ روزے رکھے کیونکہ روزہ

شہوت کو قطع کرنے والا ہے۔“ (حدیث مسلم)

اللہ تعالیٰ روزوں کے ذریعے بھی گناہ سے بچنے کی ہمت عطا فرمائے۔ آمین

## چوتھا علاج

اپنی نگاہ و خیالات کی حفاظت کرے :-

ہر مسلمان مرد و عورت کو چاہئے کہ حتی الامکان اپنی نگاہ کو حرام و فضول چیزوں کے دیکھنے سے چانے کی کوشش کرے۔ خصوصاً اس مصیبت میں گرفتار مسلمان بھائیوں اور بہنوں کو بغرض علاج کوشش کرنی چاہئے کہ دوسری شخصیت کو نہ تو ارادہ دیکھیں اور نہ ہی اس کا خیال جان بوجھ کر اپنے ذہن میں لائیں۔

اللہ تعالیٰ کا فرمانِ عالیشان ہے کہ، "قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغْضُوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَ يَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ"☆ وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَ يَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ۔ (یعنی مسلمان مردوں کو حکم دو اپنی نگاہ کچھ نیچی رکھیں اور شرم گاہوں کی حفاظت کریں، یہ ان کے لئے بہت ستھرا ہے، بے شک اللہ کو ان کے کاموں کی خبر ہے اور مسلمان عورتوں کو حکم دو اپنی نگاہ کچھ نیچی رکھیں اور اپنی پارسائی کی حفاظت کریں۔) (کنز الایمان۔ نور۔ ۲۱، ۲۰۔ پ ۱۸)

کیونکہ جب نگاہوں کی حفاظت ہوگی تو دل کی حفاظت بھی آسان ہو جائے گی اور جب دل کی حفاظت ہوگی تو بدن کے دیگر اعضاء بھی قابو میں رہیں گے، اور بالفرض اگر کبھی بلا ارادہ کسی پر نگاہ پڑ بھی جائے تو فوراً "لاحول شریف" پڑھ کر اللہ تعالیٰ سے امداد طلب کرے اور ذہن میں آجانے والے تصور کو فوراً جھٹک دے، اس کے بارے میں مزید نہ سوچے، کیونکہ مزید سوچنے کا مطلب یہ ہے کہ اس نے شیطان کو اپنا کام کرنے کے لئے راستہ فراہم کر دیا، اب وہ ایسے انداز میں دعوت دے گا اور اس کی مدد کرتے ہوئے نفس اس شدت سے اپنی خواہش کی تکمیل کا تقاضا کرے گا کہ پھر اگر اللہ تعالیٰ کا فضل و کرم شامل حال نہ ہو تو انسان بسا اوقات اپنے آپ کو ان کے سامنے بالکل بے بس و مجبور تصور کرتا ہے اور یہ دونوں اس سے اس طرح کھیلتے ہیں کہ جیسے کھ پتلی

والا، کٹھ پتلی کو استعمال کرتا ہے۔

اگر کوئی شخص کسی ایسی جگہ زیرِ تعلیم ہے کہ جہاں لڑکے، لڑکیاں دونوں ایک ساتھ پڑھتے ہیں یا کسی ایسی جگہ نوکری کرتا ہے کہ جہاں خواتین بھی موجود ہوں، تو وہ یوں سمجھے کہ اس وقت بالکل ”بھڑوں کے چھتے“ کے پاس ہے کہ ذرا سی حرکت کی تو ان کے زہریلے ڈنک کی شدید تکلیف برداشت کرنی پڑ جائے گی، اگر وہ واقعی اللہ تعالیٰ کی سخت گرفت پر یقین رکھتا ہے تو ایسے مقام پر لوگوں کی باتوں کی پرواہ کئے بغیر اپنی نگاہ کو جھکا کر رکھنے کی عادت ڈالنے، نامحرم کی طرف نظر نہ جمائے، ان سے بالکل فری ہونے کی کوشش نہ کرے، حتی الامکان سنجیدہ رہے، اپنی نشست لڑکیوں سے فاصلے پر رکھے اور صرف اور صرف لڑکوں کو دوست بنائے، ورنہ ہو سکتا ہے کہ ”فی الحال تو مطالعہ فرماتے ہوئے کوئی مسلمان، راقم الحروف کو بیوقوف اور دقیانوسی تصور کر رہا ہو“ لیکن ایک وقت ایسا ضرور آئے گا کہ اسے مذکورہ باتوں کی اہمیت کا ٹھیک ٹھیک اندازہ ہو جائے گا اور اس کے دل کو ان کے درست و حق ہونے کا اعتراف کرنے پر مجبور ہونا پڑے گا، ہو سکتا ہے کہ یہ موقع دنیا میں میسر نہ آئے لیکن موت اسے بہت کچھ سمجھا دے گی، مشورے کو نگاہِ حقارت سے دیکھنے کی صورت میں اسے چاہیے کہ اپنے ضرورت سے زیادہ سمجھ داز ہونے کے بھیانک نتیجے کا انتظار کرے۔

☆ حضرت علی رضی اللہ عنہ کا فرمانِ عالیشان ہے کہ ”لوگ سو رہے ہیں، یہ

جاگیں گے اس وقت جب انھیں موت آجائے گی۔“ (شرح الصدور)

راقم الحروف کا عورتوں سے اپنے دامن بچانے کی تلقین کرنا اپنی جانب سے

نہیں بلکہ یہ تو ہمارے پیارے آقا ﷺ کی احادیثِ کریمہ اور بزرگانِ دین کے اقوال سے حاصل ہونے والی تعلیمات کا نچوڑ ہے۔ اس ضمن میں چند احادیثِ مبارکہ ملاحظہ

فرمائیے۔

☆ حضرت اسامہ بن زید رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ کا

فرمان ہے کہ ”میرے بعد مردوں کے لئے سب سے زیادہ نقصان دہ فتنہ عورتوں سے زیادہ اور کوئی نہ ہوگا۔“ (شرح السنہ للنبوی)

☆ حضرت ابو سعید خدری رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے

ارشاد فرمایا، ”دنیا مینھی و سر سبز ہے، اللہ تعالیٰ نے تمہیں اس میں اس لئے بھیجا ہے تاکہ تمہارا امتحان لے کہ تم کیسے عمل کرتے ہو، پس تم دنیا اور عورتوں سے بچو، کیونکہ بنی اسرائیل میں سب سے پہلا فتنہ عورتوں سے اٹھا تھا۔ (مسلم۔ ترمذی)

☆ حضرت جابر بن عبد اللہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے

ارشاد فرمایا، ”جو شخص اللہ اور روز قیامت پر ایمان رکھتا ہے، وہ کسی ایسی (اجنبی) عورت کے ساتھ تہمانہ ہو کہ جس کے ساتھ اس کا محرم نہ ہو کیونکہ ان دو کے ساتھ تیسرا شیطان ہوتا ہے۔ (المجم الکبیر للطبرانی)

☆ حضرت عبد اللہ بن عمرو رضی اللہ عنہ روایت کرتے ہیں کہ ”رسول اللہ ﷺ نے

ارشاد فرمایا، ”کوئی شخص کسی ایسی (اجنبی) عورت کے ساتھ تہمانی اختیار نہ کرے کہ جس کے ساتھ اس کا محرم نہ ہو، ورنہ یا تو مرد گناہ کا ارادہ کر بیٹھے گا اور یا عورت۔“ عرض کی گئی یا رسول اللہ (صلی اللہ علیہ وسلم)! اگرچہ وہ دونوں نیک ہوں؟“ فرمایا، ”اگرچہ وہ مریم بنتِ عمران رضی اللہ عنہا (یعنی حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی والدہ) اور حضرت یحییٰ بن زکریا علیہ السلام ہی کیوں نہ ہوں۔“ (تخصیص الجبر لابن حجر)

☆ حضرت میمون بن مہران رضی اللہ عنہ فرماتے تھے کہ ”تین چیزوں میں اپنے

آپ کو کبھی مبتلا نہ کرنا۔ {1} بادشاہ کے پاس کبھی مت جانا، اگرچہ تم کہو کہ میں اس کو اطاعتِ خداوندی کا حکم کروں گا۔ {2} کسی اجنبی عورت کے پاس مت جانا، اگرچہ تم کہو کہ میں اس کو قرآنِ پاک کی تعلیم دوں گا۔ {3} اپنے کان کسی بھی خواہش پرست

طرف متوجہ نہ کرو، تم کو کیا معلوم کہ اس کی کون سی بات تمہارے دل کو قابو میں کر لے۔ (ذم الہوی لابن جوزی)

☆ حضرت ابو القاسم بن نصر آبادی رضی اللہ عنہ سے عرض کیا گیا کہ بعض لوگ عورتوں سے مجلس کرتے ہیں اور کہتے ہیں کہ ہم ان کو دیکھنے سے بچے ہوئے ہیں؟ آپ نے فرمایا، ”جب تک مرد و عورت باقی ہیں، امر و نہی (یعنی نیکی کا حکم کرنا اور برائی سے روکنا) بھی باقی ہے اور ”حلال و حرام“ کا حکم بھی ان کی جانب متوجہ ہے، شہادت (کے مقامات) پر وہی جرأت کر سکتا ہے کہ جو حرام کاموں میں مبتلاء ہو۔ (ذم الہوی)

☆ مروی ہے کہ ابلیس کہتا ہے کہ ”عورتیں میرا ایسا تیر ہیں کہ جب میں ان کو استعمال کروں تو وہ ٹھیک نشانے پر بیٹھتا ہے۔“ (ذم الہوی)

☆ منقول ہے کہ ابلیس نے حضرت موسیٰ رضی اللہ عنہ سے عرض کی ”کسی عورت کے ساتھ تنہائی اختیار نہ کیجئے گا، کیونکہ اس صورت میں، میں اس کے ساتھ ہوتا ہوں تاکہ اس کو آزمائش میں ڈالوں۔“ (یمیائے سعادت)

یہی وجہ تھی کہ ہمارے بزرگان دین عورتوں کے مغالے میں بے حد احتیاط کا مظاہرہ کیا کرتے تھے۔ چنانچہ

☆ حضرت سفیان ثوری رضی اللہ عنہ کی خدمت میں ایک عورت آئی اور عرض کی کہ میں آپ سے ایک مسئلہ پوچھنا چاہتی ہوں؟ ”آپ نے فرمایا، ”پہلے دروازہ بند کرو پھر اس کے پیچھے جا کر مجھ سے بات کرو۔“ (ذم الہوی)

نیز نگاہ کی حفاظت کا مزید شعور پیدا کرنے کے لئے درج ذیل احادیث کریمہ، اقوال مبارکہ اور احوال بزرگان دین کا بغور مطالعہ فرمائیے۔

☆ حضرت عبادہ بن صامت رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں کہ ”رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا، ”اگر تم اپنی جانب سے چھ چیزوں کی ضمانت دو تو میں تمہیں جنت

کی ضمانت دیتا ہوں۔ (1) جب بات کرو تو سچ بولو۔ (2) جب وعدہ کرو تو پورا کرو۔ (3) جب امانت رکھوائی جائے تو اسے ادا کرو۔ (4) اپنی شرم گاہوں کی حفاظت کرو۔ (5) ناجائز اشیاء (کے دیکھنے) سے اپنی نگاہ کو بچاؤ۔ (6) اپنے ہاتھوں کو (برے کاموں) سے روکو۔ (شعب الایمان)

☆ حضرت علی رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ ایک مرتبہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا، ”أَيُّ شَيْءٍ خَيْرٌ لِلْمَرْأَةِ؟“ یعنی عورت کے لئے کون سی چیز سب سے بہتر ہے؟“ مجلس میں موجود کوئی بھی شخص اس کا جواب نہ دے سکا، سب کے سب خاموش رہے، میں بھی اس کا جواب دینے سے قاصر رہا۔ جب گھر واپس آیا تو فاطمہ سے یہی سوال پوچھا۔ انھوں نے بر جستہ جواب دیا، ”لَا يَرَا هُنَّ الرِّجَالَ“ یعنی (سب سے بہتر یہ ہے کہ) انھیں مردوں میں سے کوئی نہ دیکھے۔“ میں اس جواب سے بہت خوش ہوا اور رسول اللہ ﷺ کی خدمت میں جا کر اس کا تذکرہ کیا۔ آپ (ﷺ) بھی بہت خوش ہوئے اور فرمایا، ”هِيَ بِضْعَةٌ مِّنِّي“ یعنی فاطمہ میرا ٹکڑا ہے۔“ (جمع الفوائد)

مدینہ :- صاحب کفایہ اس حدیث پاک کو ذکر کر کے ارشاد فرماتے ہیں کہ ”قَدَلَّ أَنَّهُ لَا يُبَاحُ النَّظَرُ إِلَى شَيْءٍ مِّنْ بَدَنِهَا“ یعنی پس یہ حدیث اس پر دلالت کرتی ہے کہ عورت کے اعضاء میں سے کسی عضو پر بھی نظر کرنا حلال نہیں۔

☆ حضرت علی رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ ”رسول اللہ ﷺ نے مجھ سے ارشاد فرمایا، ”اے علی! (نامحرم پر غیر ارادی طور پر) ایک مرتبہ نظر کے بعد دوسری نظر مت ڈالو، کیونکہ تمہارے لئے صرف پہلی نظر معاف ہے دوسری نہیں۔“ (مشکوٰۃ)

☆ مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ کا فرمان عالیشان ہے کہ ”کوئی مسلمان جب پہلی مرتبہ (غیر ارادی طور پر) کسی (نامحرم) عورت کی خوبصورتی پر نظر کرے، پھر وہ

اپنی نظر جھکالے تو اللہ تعالیٰ اسے ایسی عبادت کی توفیق عطا فرمائے گا کہ جس کی لذت اسے محسوس ہوگی۔“ (منداحم)

☆ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ ”قیامت کے دن ہر آنکھ رونے والی ہے سوائے اس آنکھ کے جس کو اللہ تعالیٰ کی حرام کردہ اشیاء (پر نظر پڑنے کے وقت) بند کر دیا گیا ہو، اور سوائے اس آنکھ کے جو اللہ عزوجل کے راستے میں جاگتی رہی ہو اور سوائے اس آنکھ کے جس سے اللہ تعالیٰ کے خوف کے باعث مکھی کے سر کے برابر آنسو نکل آیا ہو۔“ (ذم الھوی)

☆ حضرت معروف کرخی رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”اپنی نگاہ کی حفاظت کرو چاہے مادہ بکری سے ہی کیوں نہ ہو۔“ (ذم الھوی)

☆ مروی ہے کہ حضرت یحییٰ بن زکریا علیہ السلام سے لوگوں نے پوچھا کہ ”زنا کی ابتداء کہاں سے ہوتی ہے؟“ آپ نے فرمایا، ”آنکھ سے۔“ (کیسائے سعادت)

☆ حضرت مجاہد فرماتے ہیں کہ ”اللہ تعالیٰ کی حرام کردہ اشیاء کو نہ دیکھنے سے اللہ تعالیٰ کی محبت پیدا ہوتی ہے۔“ (ایضاً)

☆ میں انگوٹھے کو دیکھتا رہا ہوں:-

حضرت حسان بن اہلی سان رضی اللہ عنہ ایک روز عید کے روز باہر چلے گئے، جب گھر واپس ہوئے تو ان کی اہلیہ نے پوچھا کہ ”آج آپ نے کتنی حسین عورتیں دیکھیں؟“ آپ خاموش رہے، جب اس نے بار بار یہ سوال پوچھا تو آپ نے فرمایا، ”تو تباہ ہو جائے میں جب سے تیرے پاس سے گیا ہوں، اپنے انگوٹھے کو ہی دیکھتا رہا ہوں (یعنی نگاہ کی حفاظت کرتا رہا ہوں)۔“ (ذم الھوی)

☆ آنکھ باہر نکال دی:-

۱۔ یہ جملہ محاورہ ارشاد فرمایا بد دعا دینا مقصود نہیں۔



حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”ایک مرتبہ حضرت

عیسیٰ علیہ السلام لوگوں کے لئے بارش کی دعا کرنے کے لئے چلے۔ اللہ تعالیٰ نے آپ کی جانب وحی فرمائی کہ ”آپ کے ساتھ کوئی خطا کار ہوا تو بارش نہ برے گی۔“ آپ نے لوگوں سے اس بات کا ذکر فرمایا۔ یہ سن کر سب لوگ وہاں سے چلے گئے لیکن ایک شخص نہ گیا۔ اس کی ذہنی آنکھ خراب تھی۔ آپ نے اس سے نہ جانے کا سبب دریافت فرمایا۔ اس نے عرض کی، ”اے روح اللہ علیہ السلام! میں نے ایک پلک جھپکنے کے برابر بھی اللہ تعالیٰ کی نافرمانی نہیں کی، ہاں ایک مرتبہ میری نگاہ غیر ارادی طور پر ایک عورت پر پڑ گئی تھی، تو میں نے اپنی اس آنکھ کو ہی باہر نکال دیا تھا، اگر دوسری آنکھ بھی مشغول ہوتی تو اسے بھی نکال دیتا۔“ آپ (علیہ السلام) یہ سن کر رو پڑے، حتیٰ کہ ریش مبارک آنسوؤں سے تر ہو گئی۔ پھر (عاجزی اختیار کرتے ہوئے) فرمایا، ”تم دعا کرو، کیونکہ تم مجھ سے زیادہ دعا کرنے کے مستحق ہو، کیونکہ میں تو نبی ہونے کی ذبحہ سے معصوم ہوں اور تم اس کے بغیر ہی گناہ سے محفوظ ہو۔“ آپ کے ارشاد فرمانے پر وہ آگے بڑھا اور عرض گزار ہوا، ”اے رب کریم! تو نے ہمیں پیدا فرمایا، حالانکہ تو پیدا فرمانے سے پہلے ہی جانتا تھا کہ ہم کیا اعمال کریں گے، لیکن پھر بھی ان اعمال نے ہمیں پیدا کرنے سے نہیں روکا۔ تو جس طرح تو نے ہمیں اپنی مرضی سے پیدا فرمایا اور ہماری روزیوں کا کفیل ہوا اسی طرح سے ہم پر بارش کو بھی خوب برسا دے۔“

اس شخص کے منہ سے ابھی دعا پورے طور پر نکلی بھی نہ تھی کہ بارش برسنے

لگی اور اتنی برسی کہ دیہاتیوں اور شہریوں کو سیراب کر دیا۔ (زم الخوی)

**ملائینہ:** یاد رہے کہ اس شخص کا آنکھ نکال دینا، حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی شریعت میں جائز تھا لیکن اب شریعت محمدیہ ﷺ میں یہ اس قسم کا فعل اختیار کرنا حرام ہے۔

☆ حضرت غزوان رضی اللہ عنہ کسی جنگ میں شریک تھے کہ ”ان کے سامنے

ایک لڑکی آگئی اور آپ کی نگاہ اس پر پڑ گئی۔ نگاہ پڑتے ہی آپ نے اپنی آنکھ پر ایک زوردار چپت لگائی، وہ لڑکی ڈر کر بھاگ گئی۔ پھر آپ نے اپنی آنکھ کو مخاطب کر کے ارشاد فرمایا، ”تو اس چیز کو دیکھتی ہے کہ جو تجھے (دنیا و آخرت میں) مصیبت میں ڈال دے گی؟“ (زم اہودی)

### ☆ نظر کی حفاظت سے درجہ ولایت:

حضرت ابراہیم بن مہلب رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں نے تعلیہ اور خزیمہ کے درمیان ایک جوان کو نماز ادا کرتے ہوئے دیکھا وہ لوگوں میں الگ تھلگ تھا۔ میں نے اس کی نماز پورا ہونے تک اس کا انتظار کیا، جب اس نے نماز پوری کر لی، تو میں نے پوچھا ”تمہارے ساتھ تمہارا کوئی مددگار و غم گسار نہیں ہے (کہ تو جنگل میں اکیلا عبادت کر رہا ہے)؟“ اس نے کہا ”کیوں نہیں۔“ میں نے کہا ”وہ کہاں ہے؟“ اس نے کہا ”وہ میرے سامنے بھی ہے، میرے ساتھ بھی ہے، میرے پیچھے بھی ہے، میرے داہنے بھی ہے، میرے بائیں بھی ہے اور میرے اوپر بھی ہے۔“ تو مجھے علم ہو گیا کہ اس شخص کے پاس معرفتِ خداوندی موجود ہے۔

پھر میں نے پوچھا ”کیا آپ کے پاس توشہ سفر نہیں ہے؟“ اس نے کہا ”کیوں نہیں۔“ میں نے کہا ”وہ کہاں ہے؟“ اس نے اللہ تعالیٰ کے لئے اخلاص اور اس کی توحید اور اس کے نبی ﷺ (کی نبوت) کا اقرار کرنا اور ایمان صادق اور مضبوط توکل۔“ میں نے کہا کہ ”آپ میرے ساتھ رہنا پسند کریں گے؟“ فرمایا ”دوست مجھے اللہ تعالیٰ سے چھڑا کر اپنے ساتھ مشغول کرنے گا، اس لئے میں پسند نہیں کرتا، کہ کسی کی رفاقت میں رہوں اور ایک پلک جھپکنے کی دیر جتنا بھی اس سے غافل رہوں۔“ میں نے پوچھا ”کیا آپ اس جنگل میں اکیلے گھبراتے نہیں؟“ فرمایا ”اللہ تعالیٰ کے ساتھ انس قائم کرنے نے مجھے ہر قسم کے خوف سے محفوظ کر دیا ہے اب اگر میں

درندوں کے درمیان میں بھی ہوتا ہوں تو بھی ان سے گھبراتا اور ڈرتا نہیں ہوں۔“

میں نے پوچھا ”آپ کھاتے کہاں سے ہیں؟“ فرمایا ”جس نے مجھے رحم کے

اندھیرے میں (یعنی ماں کے پیٹ میں)، بچپن میں غذا کھلائی، بڑی عمر میں بھی وہی میرے

رزق کا کفیل ہے۔“ میں نے پوچھا ”آپ اپنے اسبابِ ضرورت کس وقت حاصل کرتے

ہیں؟“ فرمایا ”میری ضرورت کا مجھے علم ہے اور اس کے وقت کو بھی جانتا ہوں، جب

مجھے کھانے کی ضرورت ہوتی ہے تو میں جہاں بھی ہوتا ہوں، کھانا پالیتا ہوں، وہ ذات

میری ضرورت کا بخوبی علم رکھتی ہے، وہ مجھ سے غافل نہیں ہے۔“

میں نے پوچھا ”آپ کی کوئی ضرورت ہے؟“ فرمایا ”ہاں۔“ میں نے پوچھا

”وہ کیا ہے؟“ فرمایا ”اب جب آپ نے مجھے دیکھ لیا ہے تو میرے ساتھ کلام نہ کرنا اور

کسی کو نہ بتانا کہ آپ مجھے جانتے ہیں۔“ میں نے پوچھا ”آپ کی اس کے علاوہ کوئی اور

حاجت ہے؟“ فرمایا ”ہاں۔“ میں نے پوچھا ”وہ کیا فرمایا اگر توفیق ہو تو مجھے اپنی دعا میں نہ

بھلانا اور جب آپ پر کوئی مصیبت نازل ہو اس وقت بھی میرے حق میں بھی دعا کر سکو تو

کر لینا۔“ میں نے کہا ”میرے جیسا آپ جیسے کے لئے کیا دعا کر سکتا ہے؟ آپ تو خوفِ

خداوندی اور توکل کے اعتبار سے مجھ سے افضل ہیں۔“ فرمایا ”تم یہ نہ کہو کیونکہ میں کم

عمر ہوں اور آپ مجھ سے بڑے ہیں آپ نے پہلے بھی اللہ تعالیٰ کی نمازیں ادا کی ہیں

اور آپ پر اسلام کا حق بھی ہے اور آپ کو ایمان کی معرفت بھی حاصل ہے۔“

میں نے کہا ”میری بھی ایک حاجت ہے۔“ اس نے کہا ”وہ کیا ہے؟“ میں

نے کہا ”آپ میرے لئے اللہ تعالیٰ سے دعا کریں۔“ تو اس نے میرے لئے دعا کی

”اللہ تعالیٰ تیری نگاہ کو ہر گناہ سے محفوظ رکھے اور تیرے دل کو ایسا فکر نصیب کرے

جس میں اس کی رضا حاصل ہوتی ہو یہاں تک کہ اللہ کی ذات کے سوا تیرا کوئی مطلوب

و مقصود نہ رہے۔“ میں نے کہا ”اے میرے دوست میں آپ کو کہاں ملوں گا اور کہاں

تلاش کروں گا؟“ فرمایا ”دنیا میں تو خود کو میری ملاقات کا شوقین نہ بنانا، آخرت میں تو کیونکہ مجمع ہی متقین کا ہوگا (اس لئے وہاں پر ہی ہماری ملاقات ہوگی) جن چیزوں کا تجھے حکم دیا گیا ہے یا تیرے لئے مندوب کیا گیا ہے، ان میں اللہ تعالیٰ کی مخالفت نہ کرنا، اگر تو میری ملاقات کو چاہے گا تو مجھے اللہ تعالیٰ کی طرف دیکھنے والے مجمع میں تلاش کر لینا۔“ میں نے پوچھا ”آپ اس درجہ تک کیسے پہنچے؟“ فرمایا ”ہر حرام کردہ چیز سے اپنی آنکھ کی حفاظت کر کے اور ہر منکر اور گناہ سے اجتناب کر کے اور میں نے اللہ تعالیٰ سے یہ درخواست کی ہے کہ وہ میری، جنت بس اپنے دیدار ہی کو مقرر فرمادے۔“ پھر اس نے ایک چیخ ماری اور تیز تیز دوڑنے لگا حتیٰ کہ میری نظروں سے غائب ہو گیا۔“

”خیالات کی حفاظت“ کے لئے اچھی صحبت اور دینی کتب کا مطالعہ بے حد

مفید ثابت ہوگا۔ کیونکہ انسان جو کچھ بھی سنے یا پڑھے، عموماً بعد میں ان کے بارے سوچتا ضرور ہے، اب اگر وہ باتیں یا تحریر پاکیزہ ہو تو ان کے نتیجے میں آنے والے خیالات بھی اچھے اور صاف ستھرے ہوتے ہیں اور پھر ان کے نتیجے میں اچھے کام کی ہی توفیق حاصل ہوتی ہے۔ اور اس کے برعکس اگر وہ گفتگو یا تحریر گندگی پر مشتمل ہو تو اس کے نتیجے میں گندے اور فاسد خیالات پیدا ہوتے ہیں، جن پر غور و تفکر انسان کو عموماً اللہ تعالیٰ اور اس کے محبوب ﷺ کی نافرمانی والے کسی عمل کے ارتکاب تک لے جاتا ہے۔

اللہ تعالیٰ ہر مسلمان کو ”عورتوں کے فتنے“ سے محفوظ فرمائے۔ آمین

## پانچواں علاج

جنس مخالف سے بچنے کی فضیلت پر غور:-

ہر مسلمان مرد عورت کو عموماً اور اس بیماری میں مبتلاء

خواتین و حضرات کو خصوصاً شرعی طور پر ممانعت کی صورت میں، ”جنس مخالف“

سے اپنے آپ کو بچانے اور دور رکھنے کی فضیلت پر غور و تفکر کرنا چاہیے۔ اس سلسلے میں

درج ذیل کچھ احادیث اور چند واقعات خوب توجہ کے ساتھ پڑھنے کی سعادت حاصل کیجئے۔

☆ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ کا فرمان عالیشان ہے کہ ”سات قسم کے لوگ ایسے ہیں کہ جن کو اللہ تعالیٰ اپنے عرش کے سائے میں اس دن جگہ دے گا کہ جس دن اس سایہ کے سوا کسی چیز کا سایہ نہ ہو گا۔ (۱) عادل حکمران۔ (۲) وہ نوجوان جو اللہ تعالیٰ کی عبادت میں پروان چڑھا ہو۔ (۳) وہ شخص کہ جس کا دل مسجد سے وابستہ ہو۔ (۴) وہ دو آدمی جو آپس میں صرف اللہ عزوجل کی خاطر محبت رکھتے ہوں، اسی کی محبت میں جمع ہوں اور اسی کی محبت میں الگ ہوں۔ (۵) وہ آدمی جو چھپا کر صدقہ کرے حتیٰ کہ اس کے بائیں ہاتھ کو بھی خبر نہ ہو کہ اس کے دائیں ہاتھ نے کتنا خرچ کیا۔ (۶) وہ شخص کہ جس نے تنہائی میں اپنے رب عزوجل کو یاد کیا اور اس کی آنکھوں سے آنسو نکل گئے۔ (۷) وہ آدمی جس کو کسی منصب و جمال والی عورت نے اپنے پاس بلایا اور اس نے جواب میں کہا کہ میں اللہ عزوجل سے ڈرتا ہوں۔ (بخاری)

☆ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ ”رسول اللہ ﷺ نے اپنی وفات سے پہلے کے ایک خطبے میں ارشاد فرمایا، ”جس شخص نے کسی لونڈی یا عورت پر گناہ کی قدرت پائی اور اسے خدا کے خوف کے سبب چھوڑ دیا (یعنی گناہ سے رک گیا) تو اللہ تعالیٰ اسے بڑی گھبراہٹ کے دن میں امن نصیب کرے گا، اس کو دوزخ پر حرام اور جنت میں داخلہ عطا فرمائے گا۔ (ذم الہوی)

☆ کفل کی مغفرت ہو گئی :-

حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ میں نے یہ حدیث پاک

رسول اللہ ﷺ سے ایک دو مرتبہ نہیں بلکہ سات بار سے بھی زائد بار سنی ہے، آپ

نے ارشاد فرمایا، ”بنی اسرائیل کی قوم میں ایک کفل نامی شخص تھا جو کسی بھی گناہ سے نہ چوکتا تھا۔ ایک مرتبہ ایک عورت اس کے پاس آئی تو اس نے اسے ساٹھ دینار گناہ کروانے کے دئے، پھر جب وہ اس کے پاس گناہ کے ارادے سے بیٹھا تو وہ عورت کانپنے اور وہ رونے لگی۔ اس نوجوان نے اس سے پوچھا، ”تجھے کس چیز نے رلایا؟ میں نے تجھے اس کے لئے مجبور تو نہیں کیا؟“ عورت نے کہا کہ، ”نہیں یہ بات نہیں، دراصل یہ ایک ایسا گناہ ہے کہ جو میں نے کبھی بھی نہیں کیا، مگر آج ایک مجبوری نے مجھے اس کی طرف مائل کر دیا ہے۔“ اس جوان نے کہا کہ ”تو ایک ایسا کام کر رہی ہے جو اس سے پہلے تو نے کبھی نہیں کیا۔“ پھر وہ اس کے پاس سے ہٹ گیا اور بولا، ”تم چلی جاؤ اور یہ دینار بھی میں نے تمہیں بخشے۔“ پھر اس نے اپنے آپ سے کہا، ”خدا کی قسم! اب کفل کبھی بھی اللہ تعالیٰ کی نافرمانی نہیں کرے گا۔“ اتفاقاً اس کا اسی رات انتقال ہو گیا۔ جب صبح ہوئی تو اس کے دروازے پر لکھا ہوا تھا، ”قَدْ غَفَرَ اللَّهُ لِلْكَفْلِ يَعْنِي بِيَسْئَلِ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ نَعَمْ“

نے کفل کی مغفرت فرمادی ہے۔“ (ترمذی)

☆ فاحشہ کی توبہ :-

حضرت حسن بصری رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”ایک فاحشہ عورت کے بارے میں کہا جاتا تھا کہ دنیا کا تہائی حسن اس کے پاس ہے۔ وہ اپنے ساتھ گناہ کی اجازت کے سودینار لیتی تھی۔ ایک مرتبہ ایک عابد کی نگاہ اس پر پڑ گئی، اور وہ اس کے قرب کے لئے بے چین ہو کر سودینار جمع کرنے میں مشغول ہو گیا۔ جب مطلوبہ رقم پوری ہو گئی تو وہ اس کے پاس پہنچا اور کہا کہ ”تیرے حسن نے مجھے دیوانہ کر دیا ہے، میں نے اپنے ہاتھ کی محنت سے یہ سودینار جمع کئے ہیں۔“ فاحشہ نے کہا ”یہ میرے وکیل کو دے دو، تاکہ وہ پرکھ لے۔“ جب وکیل نے دینار پرکھ لئے تو اس نے عابد کو اندر آنیکی اجازت دے دی۔ پھر جب وہ گناہ کے لئے فاحشہ کے نزدیک بیٹھا، تو اس پر اللہ تعالیٰ

کی بارگاہ میں پیشی کا خوف غالب آگیا اور اسکے باعث کانپنے لگا اور اس کی شہوت مر گئی۔ اس نے فاحشہ سے کہا، ”مجھے چھوڑ دے میں واپس جانا چاہتا ہوں، اور یہ سو دینار بھی تو ہی رکھ لے۔“ عورت نے کہا، ”یہ کیا؟ میں تجھے پسند آئی، تو نے اتنی محنت سے یہ دینار جمع کئے اور جب تو قادر ہو تو اب واپس جانا چاہتا ہے؟“ عابد نے کہا، ”میں اپنے رب عزوجل کے سامنے کھڑا ہونے سے ڈر گیا ہوں، اس لئے میرا تمام عیش ہوا ہو گیا ہے۔“

اس طوائف پر اس بات کا بہت گہرا اثر ہوا، چنانچہ اس نے کہا کہ ”اگر واقعی یہ بات ہے تو میرا خاوند تیرے علاوہ اور کوئی نہیں ہو سکتا۔“ عابد نے کہا ”مجھے چھوڑ دے میں جانا چاہتا ہوں۔“ عورت نے کہا، ”میں تجھے صرف اس شرط پر جانے دوں گی کہ تو مجھ سے شادی کر لے۔“ عابد نے کہا کہ ”جب تک میں یہاں سے نکل نہ جاؤں یہ نہیں ہو سکتا۔“ عورت نے کہا کہ ”اچھا، اگر میں بعد میں تیرے پاس آؤں تو کیا تو مجھ سے شادی کر لے گا؟“ عابد نے کہا ”ٹھیک ہے۔“ پھر اس عابد نے منہ چھپایا اور اپنے شہر کو نکل کھڑا ہوا۔

اس عورت نے بھی توبہ کی اور اس عابد کے شہر میں پہنچ گئی، جب وہ پتہ معلوم کرتی ہوئی عابد کے سامنے پہنچی تو اس نے ایک زوردار چیخ ماری اور اس کا دم نکل گیا۔ عورت نے لوگوں سے پوچھا کہ ”اس کا کوئی قریبی رشتہ دار ہے؟“ بتایا گیا کہ ”اس کا ایک بھائی ہے جو بہت غریب ہے۔“ عورت اس کے بھائی کے پاس پہنچی اور اس سے کہا کہ ”میں تیرے بھائی کی محبت کی بناء پر تجھ سے شادی کرنا چاہتی ہوں۔“ چنانچہ انھوں نے شادی کر لی۔ پھر اس عورت کے سات بیٹے ہوئے اور سب کے سب نیک و صالح بنے۔ (ذم الھوئی)

☆ اپنا ہاتھ جلا دیا:



بنی اسرائیل کا ایک عابد اپنے عبادت خانے میں عبادت کیا

کرتا تھا۔ گمراہوں کا ٹولہ ایک طوائف کے پاس پہنچا اور اس سے کہا کہ ”تم کسی نہ کسی طرح اس عابد کو بہکا دو۔“ چنانچہ وہ فاحشہ ایک اندھیری رات میں، چپ کہ بارش برس رہی تھی، اس عابد کے پاس آئی اور اس کو پکارا۔ عابد نے جھانک کر دیکھا، تو عورت نے کہا کہ ”اے اللہ! کے بندے مجھے اپنے پاس پناہ دے۔“ لیکن عابد نے اس کی پرواہ نہ کی اور نماز میں مشغول ہو گیا۔ وہ طوائف اسے بارش اور اندھیری رات یاد دلا کر پناہ طلب کرتی رہی حتیٰ کہ عابد نے رحم کھا کر اسے اندر بلا لیا۔ وہ عابد سے کچھ فاصلے پر جا کر لیٹ گئی اور اسے اپنی طرف مائل کرنے کی کوشش شروع کر دی۔ یہاں تک کہ عابد کا دل بھی اس کی طرف مائل ہو گیا۔

لیکن اسی لمحہ اللہ عزوجل کے خوف نے اس کے دل میں جوش مارا، اس نے

اپنے آپ سے کہا، ”واللہ! ایسا نہیں ہو سکتا یہاں تک کہ تو دیکھ لے کہ آگ پر کتنا صبر کر سکتا ہے۔“ پھر وہ چراغ کے پاس گیا اور اپنی ایک انگلی اس کے شعلے میں رکھ دی، حتیٰ کہ وہ جل کر کوئلہ ہو گئی۔ پھر اس نے نماز کی طرف متوجہ ہونے کی کوشش کی لیکن اس کے نفس نے دوبارہ فاحشہ کی طرف بڑھنے کا مشورہ دیا۔ یہ چراغ کے پاس گیا اور اپنی دوسری انگلی بھی جلا ڈالی، پھر اس کا نفس اسی طرح خواہش کرتا رہا اور وہ اپنی انگلیاں جلاتا رہا، حتیٰ کہ اس نے اپنی ساری انگلیاں جلا ڈالیں، عورت یہ سارا منظر دیکھ رہی تھی، چنانچہ خوف و دہشت کے باعث اس نے ایک چیخ ماری اور مر گئی۔ (ذم الہوی)

☆ جان داؤ پر لگا دی ::

روایت میں ہے کہ بنی اسرائیل میں ایک نوجوان بہت حسین

و جمیل تھا، یہ پٹاریاں بیچا کرتا تھا۔ ایک دن وہ پٹاریاں پھرتا ہوا بادشاہ کے محل تک جا پہنچا

۔ جہاں شہزادی کی لونڈی کی نگاہ اس پر پڑ گئی۔ وہ جلدی سے اندر گئی اور شہزادی سے کہا

کہ ”آج میں نے ایک ایسے خوبصورت نوجوان کو باہر دیکھا ہے کہ اس جیسا پہلے کبھی نظر نہیں آیا۔“ شہزادی نے کہا کہ ”کسی طرح اسے اندر لے آ۔“ لوٹدی اس نوجوان کے پاس گئی اور کہا، ”اے جوان! اندر آؤ ہم بھی خریدیں گے۔“ جب وہ اندر داخل ہوا تو لوٹدی نے دروازہ بند کر دیا۔

تھوڑی دیر بعد شہزادی اس کے پاس پہنچ گئی۔ نوجوان نے کہا کہ ”آپ اپنی ضرورت کی چیز خرید لیں تو میں جاؤں۔“ اس نے کہا کہ ”ہم نے تمہیں کچھ خریدنے کے لئے نہیں بلایا بلکہ اپنے نفس کی حاجت پوری کرنے کے لئے بلایا ہے۔“ نوجوان نے اسے کہا کہ ”خدا سے ڈر اور اس سے باز آجا۔“ اس نے کہا، ”اگر تو میری بات نہیں مانے گا تو بادشاہ سے کہہ دوں گی کہ تو برے ارادے سے اندر آیا تھا۔“ نوجوان نے اسے کافی نصیحت کی مگر وہ نہ مانی۔ نوجوان نے کچھ سوچ کر کہا کہ ”اچھا، مجھے وضو کے لئے پانی چاہیے۔“ کہنے لگی، مجھ سے یہاں نہ کر۔“ پھر لوٹدی سے کہا، ”اس کے واسطے چھت پر وضو کا پانی رکھ دو تاکہ یہ کسی طرح بھاگ نہ سکے۔“ محل کی چھت زمین سے تقریباً چالیس گز اونچی تھی۔ جب وہ اوپر پہنچا تو عرض گزار ہوا، ”اے اللہ! مجھے برے کام پر مجبور کیا جا رہا ہے، لیکن میں اپنے آپ کو یہاں سے گزادینا، ارتکابِ گناہ سے بہتر سمجھتا ہوں۔“ پھر وہ بسم اللہ کہہ کر چھت سے کود پڑا۔ اللہ تعالیٰ نے فوراً ایک فرشتے کو بھیجا، جس نے اس کا بازو پکڑ کر زمین پر کھڑا کر دیا اور اسے کچھ بھی تکلیف نہ ہونے پائی۔

پھر اس نے اللہ عزوجل کی بارگاہ میں دعا کی، ”اے اللہ! اگر تو چاہے تو مجھے بغیر اس تجارت کے بھی روزی عطا فرما سکتا ہے۔“ دعا کرتے ہی غیب سے اس کے پاس ایک سونے کی تھیلی آ پہنچی۔ اسے دیکھ کر اس نے پھر عرض کہ، ”الہی! اگر یہ میری دنیا کی روزی ہے تو اس میں مجھے برکت دے اور اگر اس کے سبب میرا اخروی ثواب کم ہو جائے گا تو مجھے اس کی کوئی حاجت نہیں۔“

غیب سے آواز آئی کہ ”تو نے چھت سے گرتے وقت جو صبر اختیار کیا تھا، یہ سونا اس کا ایک جزء ہے۔“ یہ سن کر اس نے التجاء کی کہ ”اے رب کریم! جو چیز میرے اخروی ثواب کو گھٹادے، مجھے اس کی کوئی حاجت نہیں۔“ چنانچہ اس سے وہ سونا پھیر لیا گیا۔ (ذم الہوی)

### ☆ عورت کا فریب :-

حضرت ابو ذر عہ خینی رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”ایک عورت نے میرے ساتھ فریب کر کے کہا کہ ”اے ابو ذر عہ! آپ ایک مصیبت زدہ کی عیادت کر کے اور اسے دیکھ کر عبرت حاصل نہیں کریں گے؟“ میں نے کہا، ”کیوں نہیں۔“ اس نے کہا، ”تو پھر گھر میں تشریف لے آئیں۔“ جب میں اس کے گھر میں داخل ہوا تو اس نے اندر سے دروازہ بند کر دیا اور مجھے کوئی مریض نظر نہیں آیا۔ اس وقت مجھے اس کی نیت کی خرابی کا علم ہو گیا (یعنی میں سمجھ گیا کہ یہ برائی کا ارادہ رکھتی ہے)۔ تو میں نے اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں عرض کی کہ ”اے اللہ! اسے کالا کر دے۔“ میری بددعا کے ساتھ ہی وہ کالی سیاہ ہو گئی۔ جب اس نے خود پر عذاب الہی کے آثار دیکھے تو گھبرا کر دروازہ کھول دیا۔ جب میں بعافیت باہر نکل آیا تو میں نے دعا کی کہ ”اے اللہ! اس کو اس کی سابقہ حالت میں لوٹادے۔“ چنانچہ وہ ویسی ہی ہو گئی جیسی کہ پہلے تھی۔ (ذم الہوی)

### ☆ اس کے علاوہ میرے لئے کوئی اور علاج بھی ہے؟

حضرت احمد بن سعید رضی اللہ عنہ کے والد بیان کرتے ہیں کہ ہمارے ساتھ کوفہ میں ایک عبادت گزار نوجوان رہا کرتا تھا، وہ زیادہ تروقت، مسجد میں گزارتا تھا، شکل و صورت میں خوبصورت اور نیک سیرت تھا۔ ایک مرتبہ اسے ایک حسین و عقل مند عورت نے دیکھ لیا اور اس کے عشق کا دم بھرنے لگی۔ ایک دن وہ اس کے راستے میں کھڑی ہو گئی، جب نوجوان وہاں سے گزرا تو اس نے اسے متوجہ کرنے

کی کوشش کی۔ لیکن نوجوان نے اس پر بالکل توجہ نہ کی اور چلتا چلا گیا۔ دوسرے دن وہ پھر وہاں کھڑی ہو گئی، جب نوجوان پر نگاہ پڑی تو کہا، ”اے نوجوان! میری بات سن، مجھے تجھ سے کچھ کہنا ہے۔“ نوجوان نے سر جھکا کر کہا، ”یہ تمہمت کی جگہ ہے (یعنی وہ تمہارے گھر سے) تو انہی یہ سنی باتیں کہیں گے اور میں تمہمت کا نشانہ بننے سے گھبراتا ہوں۔ عورت نے کہا، ”واللہ! میں تیرے حال سے خوب واقف ہوں لیکن مجھے تیری ملاقات پر میرے نفس کے علاوہ کسی شے نے مجبور نہیں کیا، میں جانتی ہوں کہ اتنا معمولی سا تعلق بھی لوگوں کے نزدیک بہت برا ہے، تجھ جیسے نیک لوگ آئینہ کی مثل ہوتے ہیں کہ جن کو ادنیٰ سی غلطی عیب لگا دیتی ہے، میں جو کچھ تجھ سے کہنا چاہتی ہوں اس کا خلاصہ یہ ہے کہ ”میرے جسم کے تمام اعضاء تیری طرف مشغول ہو چکے ہیں۔“ یہ سن کر وہ نوجوان چپ چاپ اپنے گھر کی طرف چل دیا۔ گھر پہنچ کر ایک خط لکھا اور اسی مقام پر آیا وہ عورت وہیں موجود تھی، اس نے وہ خط اس کی طرف پھینکا اور واپس لوٹ گیا۔ عورت نے خط کھولا تو اس میں لکھا تھا،

بسم اللہ الرحمن الرحیم

”اے عورت جان لے! جب اللہ تعالیٰ کی نافرمانی کی جاتی ہے تو وہ بردباری کرتا ہے، پھر جب دوبارہ گناہ کیا جائے تو اس کی پردہ پوشی کرتا ہے، لیکن جب کوئی گناہ کو اوڑھنا چھوٹا بنا لیتا ہے، تو اللہ تعالیٰ اس پر اتنا زیادہ ناراض ہوتا ہے کہ اس کی ناراضگی کو تمام آسمان وزمین و پہاڑ و درخت و جانور بھی برداشت نہیں کر سکتے، تو پھر کس میں اتنی طاقت ہے کہ اس کو برداشت کر سکے؟ پس اگر جو کچھ تو نے بیان کیا ہے ”باطل“ ہے، تو میں تجھے وہ دن یاد دلاتا ہوں، جس میں آسمان پگھل جائے گا، پہاڑ روئی کی طرح دھن جائیں گے اور سب مخلوق اللہ جبار عظیم کے غلبہ کے سامنے گھٹنے ٹیک دیں گی۔ واللہ! میں اپنے نفس کی اصلاح میں کمزور واقع ہوا ہوں تو دوسروں کی اصلاح

کس طرح کر سکتا ہوں؟

اور اگر تو نے جو کچھ بیان کیا ہے ”درست“ ہے تو میں تمہیں ایسے طبیب کا پتہ بتاتا ہوں جو بیمار کر دینے والے زخموں اور توڑ دینے والے درروں کے لئے زیادہ لائق ہے۔ اور وہ ”اللہ تعالیٰ“ کی ذات گرامی ہے۔ تو سچی طلب کے ساتھ اس کی بازگاہ میں حاضری دے۔ میں تجھ سے اللہ عزوجل کے اس فرمانِ عالیشان کی وجہ سے بے تعلق ہوں، ”وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَظَمِينَ طَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ☆ يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ☆“ (یعنی اور انہیں ڈرو اس نزدیک آنے والی آفت کے دن (یعنی روزِ قیامت) سے، جب دل گلوں کے پاس آجائیں گے غم میں بھرے اور ظالموں کا نہ کوئی دوست اور نہ کوئی سفارشی، جس کا کہنا مانا جائے، اللہ جانتا ہے چوری چھپے کی نگاہ (یعنی حرام پر نگاہ ڈالنا) اور جو کچھ سینوں میں ہے۔ یہ جب یہ معاملہ ہے تو اس آیت سے کہاں بھاگا جاسکتا ہے؟“

پھر چند دنوں کے بعد وہ عورت دوبارہ آئی اور اس کے راستے میں کھڑی ہو گئی۔ جب نوجوان نے اسے دیکھا تو دور سے ہی جانے لگا۔ اسے جاتے دیکھ کر عورت نے زور سے پکارا، ”اے جوان! واپس نہ جا، اب اس کے بعد ہماری ملاقات کبھی بھی نہ ہوگی سوائے اس کے کہ ہم اللہ تعالیٰ کے سامنے ملاقات کریں۔“ پھر وہ بہت روئی اور کہنے لگی، ”میں اس اللہ تعالیٰ سے سوال کرتی ہوں کہ جس کے دستِ قدرت میں تیرے دل کے اختیارات ہیں کہ مجھ پر جو معاملہ مشکل ہو گیا، وہ اسے آسان فرمادے۔“ پھر وہ عورت اس کے پیچھے آئی اور اس سے بولی، ”مجھ پر ایک یہ احسان کرو کہ مجھے کوئی ایسی نصیحت کرو کہ جس پر میں عمل کر سکوں۔“ نوجوان نے اس سے کہا، ”خود کو اپنے نفس سے محفوظ رکھ، اور اللہ تعالیٰ کے اس فرمانِ عالیشان کو یاد رکھ، ”وَهُوَ الَّذِي

يَتَوَفَّكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ۔ (یعنی اور وہی ہے جو رات کو تمہاری روحیں قبض کرتا ہے اور جانتا ہے جو کچھ دن میں کماؤ۔)

اس آیت پاک کو سن کر اس عورت نے اپنے سر کو جھکا لیا اور پہلے سے بھی زیادہ روئی، اور جب کچھ ہوش میں آئی تو اپنے گھر کو روانہ ہو گئی اور عبادت میں مشغول ہو گئی۔ پھر جب اس کو اس کا نفس ستاتا تو اس نوجوان کا خط اٹھا کر آنکھوں سے لگاتی۔ جب اسے کہا جاتا کہ تجھے اس سے کیا فائدہ حاصل ہوتا ہے؟ ”تو وہ جواب دیتی کہ ”اس کے علاوہ میرے لئے اور کوئی علاج بھی ہے؟ جب رات ہوتی تو وہ اللہ تعالیٰ کی عبادت کے لئے کھڑی ہو جاتی حتیٰ کہ کچھ عرصے بعد اسی صدمے کے سبب فوت ہو گئی۔ (زم)

☆ خوشبو دار بزرگ :-

بصرہ میں ایک بزرگ ”مسکی (یعنی مشکدار)“ کے نام سے مشہور تھے، ان بزرگ کی خاصیت تھی کہ یہ ہر وقت معطر رہا کرتے تھے۔ ایک مرتبہ کسی نے باصرہ اس کی وجہ دریافت کی تو آپ نے ارشاد فرمایا، ”میں کوئی خوشبو استعمال نہیں کرتا، دراصل میرا قصہ بڑا عجیب ہے، میں بغدادِ معلیٰ کا رہنے والا ہوں۔ میں جوانی میں بے حد حسین و جمیل تھا اور ایک کپڑے والے کی دکان پر کام کیا کرتا تھا، ایک دن دکان پر ایک بڑھیا آئی اور اس نے کچھ قیمتی کپڑے نکلوائے، پھر دکان والے سے بولی، ”میں ان کپڑوں کو اپنے ساتھ لے جانا چاہتی ہوں، اس نوجوان کو میرے ساتھ بھیج دیجئے، جو پسند آئیں گے رکھ لیں گے، باقی اس کے ہاتھ واپس بھیج دوں گی۔“ مالک نے مجھے اس کے ساتھ جانے کا کہا، وہ مجھے ایک عالی شان گھر میں لے گئی اور ایک کمرے میں بٹھا دیا۔ کچھ دیر بعد ایک نوجوان عورت کمرے میں داخل ہوئی اور دروازہ اندر سے بند کر کے میرے پاس بیٹھ گئی۔ میں گھبرا کر اس سے دور ہو گیا، مگر وہ برائی کے ارادے سے

میرے پیچھے پڑ گئی۔ میں نے اسے ہر طرح سمجھانے کی کوشش کی لیکن وہ باز نہ آئی۔

اچانک میرے ذہن میں اس سے بچنے کی ایک ترکیب آئی، لہذا میں نے اس سے کہا، ”مجھے بیت الخلاء کی حاجت ہے۔“ اس نے اجازت دے دی۔ میں نے اندر جا کر دل مضبوط کر کے وہاں کی نجاست اپنے پورے بدن پر مل لی، اب جیسے ہی میں باہر آیا وہ گھبرا گئی اور پاگل پاگل کا شور مچا دیا۔ میں نے وہاں سے بھاگ کر ایک باغ میں پناہ لی اور غسل وغیرہ کر کے گھر کو روانہ ہو گیا۔ رات جب میں سویا تو خواب میں دیکھا کہ ایک آنے والا آیا اور اس نے میرے چہرے اور لباس پر اپنا ہاتھ پھیرا اور کہا، ”مجھے جانتے ہو میں کون ہوں؟ سنو! میں جبرائیل (علیہ السلام) ہوں۔“ پس جب میری آنکھ کھلی تو میرے سارے بدن اور لباس میں سے یہی خوشبو آرہی تھی جو آج تک قائم ہے۔

(روح الباقین)

☆ حضرت یوسف علیہ السلام کی تشریف آوری ::

حضرت یوسف بن الحسین رضی اللہ عنہ ابتداء میں چند

دوستوں کے ساتھ عرب کے ایک قبیلے میں پہنچے۔ وہاں امیر عرب کی لڑکی آپ پر عاشق ہو گئی، چنانچہ ایک روز موقع پا کر تنہائی میں آپ تک پہنچ گئی، اسے دیکھتے ہی آپ خوفِ خدا (عزوجل) کے باعث کانپنے لگے اور لڑکی کو وہیں چھوڑ کر بہت دور بھاگ گئے، ساری رات آپ کو نیند نہ آسکی، دوسرے دن بھی یہی حال رہا، تیسرے دن آپ سوئے تو حضرت یوسف علیہ السلام کو خواب میں دیکھا۔ آپ نے تشریف آوری کا مقصد دریافت کیا تو ارشاد ہوا کہ ”(تیرے لڑکی سے بھاگنے کے باعث) اللہ تعالیٰ نے مجھ کو ان فرشتوں کے ہمراہ تمہاری ملاقات کو بھیجا ہے اور تم کو بشارت دی ہے۔“ (ایضاً)

☆ چالیس سال کی کمائی ::

منقول ہے کہ حضرت جنید بغدادی رضی اللہ عنہ کے کچھ مخالفین نے



آپ کے خلاف خلیفہ کو الٹی سیدھی شکایتیں بھیجیں۔ خلیفہ نے کہا کہ ”جب تک حجت قائم نہ ہو، سزا کیسے دی جاسکتی ہے؟“ لوگوں نے کہا کہ ”ان کی باتوں سے فتنہ پھیلنے کا احتمال ہے۔“ جب اصرار زیادہ ہوا تو اتمام حجت کے لئے خلیفہ نے اپنی حسین و جمیل معشوقہ کو آراستہ و پیراستہ کر کے کہا کہ ”تم جنید رضی اللہ عنہ کے پاس جا کر نقاب اٹھا دینا اور کہنا ”میں بہت مال دار ہوں، میرا دل دنیا سے بیزار ہو چکا ہے، میں آپ کی صحبت میں رہنے کے لئے آپ کی خدمت میں حاضر ہوئی ہوں اور اپنے آپ کو پیش کرتی ہوں۔“ یعنی جس قدر ہو سکے خوشامد و چالوسی کرنا۔ ”ساتھ ہی ایک خادم بھی بھیج دیا جو اس سارے منظر کو اپنی آنکھوں سے دیکھے۔

کنیز نے حسب ہدایت حضرت کے سامنے جا کر نقاب اٹھا دیا، آپ نے فوراً نگاہیں جھکا لیں، اس نے، ”جو کچھ سکھایا گیا تھا“ آپ کے سامنے بیان کر دیا اور منت سماجت کر کے اپنے آپ کو پیش کیا۔ آپ نے جلال میں آکر، آسمان کی طرف منہ کر کے ”آہ آہ“ کہہ کر کنیز پر پھونک ماری، کنیز فوراً بڑپ کر ہلاک ہو گئی۔ جب خلیفہ کو اس کا علم ہوا تو اسے بڑی ندامت ہوئی اور اس کی زبان سے نکلا کہ ”جو شخص ایسی جسارت کرے اس کی یہی سزا ہونی چاہئے۔“ پھر وہ خود آپ کی خدمت میں حاضر ہوا اور عرض کی، ”یا شیخ! آپ کے دل نے کس طرح ایسی حسین و جمیل کنیز کو اتنی سخت سزا دی؟“ آپ نے فرمایا، ”امیر المؤمنین! آپ کو مسلمانوں پر ایسی ہی شفقت کرنی چاہئے تھی کہ مجھ غریب کی چالیس سال کی کمائی کو برباد کرنے کے درپے ہوئے؟۔“

(تذکرۃ الاولیاء)

☆ دو جنتیں:

روایت میں آتا ہے کہ ”حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ کے زمانہ مبارک میں ایک نوجوان بہت متقی و پرہیزگار و عبادت گزار تھا۔ حضرت عمر رضی اللہ عنہ بھی اس کی

عبادت پر تعجب کیا کرتے تھے۔ وہ نوجوان نمازِ عشاء مسجد میں ادا کرنے کے بعد اپنے بوڑھے باپ کی خدمت کرنے کے لئے جایا کرتا تھا۔ راستے میں ایک خوبرو عورت اسے اپنی طرف بلاتی اور چھیڑتی تھی، لیکن یہ نوجوان اس پر توجہ کئے بغیر گزر جایا کرتا تھا۔ آخر کار ایک دن اس نوجوان پر شیطان نے غلبہ حاصل کر لیا اور یہ عورت کی دعوت پر برائی کے ارادے سے اس کی جانب بڑھا، جب دروازے پر پہنچا تو اسے اللہ تعالیٰ کا یہ فرمانِ عالیشان یاد آگیا، ”إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَئْفٌ مِّنَ الشَّيْطَانِ قَدْ كَرُّوا فَاذَاهُمْ مُبْصِرُونَ“ ☆ ”بے شک وہ جو ڈروالے ہیں جب انہیں کسی شیطانی خیال کی ٹھیس لگتی ہے ہو شیار ہو جاتے ہیں اسی وقت ان کی آنکھیں کھل جاتی ہیں۔“ اس آیتِ پاک کے یاد آتے ہی اس کے دل پر اللہ تعالیٰ کا خوف اس قدر غالب ہوا کہ وہ بے ہوش ہو کر زمین پر گر گیا۔ جب یہ گھر نہ پہنچا تو اس کا بوڑھا باپ اسے تلاش کرتا ہوا وہاں پہنچا اور لوگوں کی مدد سے اسے اٹھوا کر گھر لے آیا۔ ہوش آنے پر باپ نے تمام واقعہ دریافت کیا، نوجوان نے پورا واقعہ بیان کر کے جب اس آیتِ پاک کا ذکر کیا، تو ایک مرتبہ پھر اس پر اللہ تعالیٰ کا شدید خوف غالب ہوا، اس نے ایک زور دار چیخ ماری اور اس کا دم نکل گیا۔ راتوں رات ہی اس کے غسل و کفن و دفن کا انتظام کر دیا گیا۔

صبح جب یہ واقعہ حضرت عمر رضی اللہ عنہ کی خدمت میں پیش کیا گیا تو آپ اس کے باپ کے پاس تعزیت کے لئے تشریف لے گئے۔ آپ نے اس سے فرمایا کہ ”ہمیں رات کو ہی اطلاع کیوں نہیں دی، ہم بھی جنازے میں شریک ہو جاتے؟“ اس نے عرض کی، ”امیر المؤمنین! آپ کے آرام کا خیال کرتے ہوئے مناسب معلوم نہ ہوا۔“ آپ نے فرمایا کہ ”مجھے اس کی قبر پر لے چلو۔“ وہاں پہنچ کر آپ نے یہ آیت

مبارکہ پڑھی، ”وَلَمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتٍ ☆ ﴿ترجمہ: اور جو اپنے رب کے حضور کھڑے ہونے سے ڈرے اس کے لئے دو جنتیں ہیں﴾ تو قبر میں سے اس نوجوان نے بلند آواز کے ساتھ پکار کر کہا کہ ”یا امیر المؤمنین! بے شک میرے رب نے مجھے دو جنتیں عطا فرمائی ہیں۔“ (شرح الصدور)

☆ متقی نوجوان :-

ابن جوزی نے ”عیون الحکایات“ میں روایت کیا کہ ”تین شرابی بھائی، رومیوں سے جہاد کرتے تھے۔ ایک مرتبہ رومی بادشاہ نے انھیں گرفتار کر لیا۔ بادشاہ نے انھیں پیشکش کرتے ہوئے کہا کہ اگر تم عیسائی ہو جاؤ تو میں نہ صرف اپنی حکومت میں سے تمھیں حصہ دوں گا بلکہ اپنی لڑکیوں کا نکاح بھی تمھارے ساتھ کرنے کے لئے تیار ہوں۔“ لیکن ان تینوں نے صاف انکار کر دیا۔ بادشاہ نے تیل کی تین دیکیں، تین روز تک آگ پر چڑھائے رکھیں اور ان کو ڈرانے کے لئے روزانہ وہ دیکیں دکھلاتا، لیکن وہ اپنی بات پر ڈٹے رہے۔ بالآخر سب سے بڑے کو کھولتے ہوئے تیل میں ڈال دیا گیا، پھر دوسرے کے ساتھ بھی اسی طرح کیا گیا، اب تیسرے کی باری تھی کہ ایک رومی سردار کھڑا ہوا اور کہا کہ ”اے بادشاہ! میں اسے اس کے دین سے توبہ کروا سکتا ہوں، یہ عرب والے عورتوں کو بے حد پسند کرتے ہیں، چنانچہ میں اسے اپنی حسین و جمیل بیٹی کے سپرد کر دیتا ہوں وہ اسے خود ہی اپنی جانب مائل کر لے گی۔“ بادشاہ نے رضامندی کا اظہار کیا۔ اس سردار نے اپنی بیٹی کو تمام معاملہ سمجھا کر مجاہد کو اس کے سپرد کر دیا۔ کئی دن گزرنے کے بعد اس نے بیٹی سے پوچھا کہ ”کیا تو اپنے ارادے میں کامیاب ہوئی؟“ لڑکی نے کہا کہ ”نہیں، میرا خیال ہے کہ اس کے دونوں بھائی چونکہ اسی شہر میں قتل کئے گئے ہیں لہذا اس کا دل یہاں نہیں لگتا، ہمیں کسی دوسرے شہر میں

منتقل کر کے مزید مہلت دی جائے۔“ چنانچہ انھیں دوسرے شہر میں منتقل کر دیا گیا۔ لیکن وہاں بھی وہ جوان حسب معمول دن بھر روزے سے رہتا اور رات نماز پڑھتے ہوئے گزار دیتا، لیکن اس کی توجہ قطعاً لڑکی کی جانب نہ ہوتی۔ اس پارسائی کو دیکھ کر وہ لڑکی اتنی متاثر ہوئی کہ اس نے اسلام قبول کر لیا۔ پھر وہ دونوں گھوڑوں پر بیٹھ کر وہاں سے بھاگ کھڑے ہوئے، دن میں چھپتے اور رات میں چلتے سفر طے کرتے رہے۔

اچانک ایک دن ان دونوں نے گھوڑوں کی ٹاپوں کی آواز سنی، انھوں نے گمان کیا کہ شاید بادشاہ کے سپاہی گرفتاری کی غرض سے قریب پہنچ گئے ہیں، لیکن اب جو غور سے دیکھا تو اسی مجاہد کے دونوں شہید بھائی، ملائکہ کی جماعت کے ساتھ سامنے کھڑے تھے۔ اس نے سلام کر کے ان سے حال دریافت کیا۔ تو انھوں نے کہا کہ ”بس تھوڑی دیر کے لئے تکلیف ہوئی اور پھر ہمیں جنت الفردوس عطا کر دی گئی۔“ (ایضاً) ☆ عجیب معاملہ :۔

منقول ہے کہ حضرت سلیمان بن بشار رضی اللہ عنہ بہت صاحب جمال تھے۔ آپ اپنا واقعہ خود بیان فرماتے ہیں کہ ”میں حج کو جا رہا تھا، جب مدینے سے نکل کر ابواء پڑاؤ کیا تو میرا ساتھی اناج لانے کے لئے چلا گیا، اتنے میں ایک عورت آئی جو حسن میں عرب کی ماہ جبین تھی، اس نے مجھ سے کہا کہ ”اٹھو۔“ میں سمجھا کہ شاید مجھ سے کھانا مانگ رہی ہے۔ دستر خوان لانے لگا تو اس نے کہا، ”یہ نہیں، بلکہ میں تو وہ چاہتی ہوں جو عورتیں، مردوں سے چاہتی ہیں۔“ یہ سن کر میں سر جھکا کر رونے لگا اور اس قدر رویا کہ وہ عورت مایوس ہو کر چلی گئی۔ جب میرا زینق واپس آیا اور میرے چہرے پر رونے کے آثار دیکھے تو وجہ دریافت کی۔ میں نے کہا، ”بچے یاد آگئے تھے ان کی وجہ سے رو دیا تھا۔“

۱۔ یقیناً اس وقت آپ کا بچہ بھی یاد آگئے ہوں گے، ورنہ اللہ کے ولی جھوٹ نہیں بولا کرتے۔ بوقت رنج و غم عموماً اپنے پیارے بچے کو یاد آتے ہیں۔

میرے دوست نے کہا، ”نہیں (صرف) یہ بات نہیں ہو سکتی تم پر جو افتاد پڑی ہے وہ مجھے سناؤ۔“ جب اس نے بہت ضد کی تو میں نے سارا واقعہ اسے سنا دیا۔ یہ قصہ سن کر وہ بھی رونے لگا۔ میں نے کہا تم کیوں رو رہے ہو؟“ اس نے کہا، ”اس لئے کہ اگر تمہاری جگہ میں ہوتا تو یقیناً مجھ سے انکار نہ ہو سکتا۔“

جب ہم مکہ مکرمہ پہنچے اور طواف و سعی سے فارغ ہو گئے تو میں ایک حجرے میں جا کر سو گیا، خواب میں ایک نہایت ہی حسین و جمیل شخص کو دیکھا، میں نے پوچھا، ”آپ کون ہیں؟“ انھوں نے جواب دیا کہ ”میں یوسف (علیہ السلام) ہوں۔“ میں نے عرض کی کہ ”اچھا آپ ہی یوسف صدیق علیہ السلام ہیں؟“ فرمایا، ”ہاں۔“ میں نے عرض کی کہ ”عزیز مصر کی بیوی کے ساتھ آپ کا معاملہ بہت عجیب و غریب ہے۔“ انھوں نے فرمایا، ”لیکن اعرابی عورت کے ساتھ تمہارا معاملہ اس سے بھی زیادہ عجیب ہے۔“

(کیسے سعادت)

درج ذیل واقعات پر ہماری مسلمان بہنیں خاص طور پر غور فرمائیں۔

☆ نیک اعمال کا وسیلہ :-

سرکارِ دو عالم ﷺ کا فرمانِ عالیشان ہے کہ ”گزشتہ زمانے میں

۳ آدمی کہیں جا رہے تھے کہ رات گزارنے کے لئے انہیں ایک غار کا سہارا لینا پڑا، وہ غار میں داخل ہوئے تو پہاڑ سے ایک چٹان لڑھک کر غار کے منہ پر آگئی، جس سے غار کا منہ بند ہو گیا انہوں نے سوچا کہ ”اس چٹان سے نجات کا ایک ہی طریقہ ہے کہ ہم اپنے اپنے نیک اعمال کا وسیلہ پیش کر کے اللہ تعالیٰ سے دعا مانگیں۔“

ان میں سے ایک نے دعا کی ”یا اللہ عزوجل! میرے ماں باپ بوڑھے ہو گئے تھے

اور میں ان سے پہلے اپنے بچوں اور خدام کو دودھ نہیں دیا کرتا تھا، ایک دن میں لکڑیوں کی تلاش میں دور نکل گیا جب واپس لوٹا تو والدین سوچکے تھے، میں ان کے لئے دودھ

لایا تو انہیں جگانا مناسب نہ سمجھا اور ان سے پہلے اہل و عیال کو دودھ پلانا بھی پسند نہ آیا، بچے بھوک کی وجہ سے میرے پاؤں میں بلبکتے رہے، لیکن میں تمام رات دودھ کا پیالہ ہاتھ میں لئے کھڑا رہا، یہاں تک کہ صبح ہو گئی پھر میرے والدین نے دودھ پیا، اے اللہ عزوجل! اگر میں نے یہ عمل محض تیری رضا جوئی کے لئے کیا ہے تو ہم سے یہ چٹان کی مصیبت دور فرما دے۔“ چٹان تھوڑی سی سرک گئی لیکن ابھی نکل نہ سکتے تھے۔

دوسرے نے دعا کی ”یا اللہ عزوجل! میری ایک چچا زاد بہن تھی جو مجھے سب سے زیادہ محبوب تھی میں نے اس سے بری خواہش کا اظہار کیا مگر اس نے انکار کر دیا یہاں تک کہ وہ قحط سالی میں مبتلا ہوئی اور میرے پاس آئی، میں نے اسے ۱۰۰ دینار اس شرط پر دیئے کہ وہ میرے ساتھ تھکنے میں جائے، وہ رضا مند ہو گئی۔ جب ہم تنہائی میں پہنچے تو اس نے کہا ”اللہ تعالیٰ سے ڈر اور ناحق یہ گناہ مت کر۔“ یہ سن کر میں اس گناہ سے باز آ گیا اور وہ دینار بھی اسی کو دے دیئے اے اللہ عزوجل! اگر میرا یہ عمل تیری رضا کے لئے تھا تو ہماری یہ مصیبت دور کر دے۔“ چٹان کچھ اور سرک گئی، مگر ابھی بھی باہر نہ نکل سکتے تھے۔

تیسرے نے دعا کی ”یا اللہ عزوجل! میں نے کچھ آدمیوں کو مزدوری پر لگایا، پھر ایک کے سوا سب اپنی مزدوری لے گئے، میں نے اس کی مزدوری کو تجارت میں لگا دیا، یہاں تک کہ اس کا مال زیادہ ہو گیا، ایک عرصہ بعد وہ میرے پاس آیا تو کہا ”میری مزدوری دے دو۔“ میں نے کہا ”یہ جتنے اونٹ، گائے، بکری، غلام دیکھ رہے ہو، یہ سب تمہارے ہیں۔“ اس نے کہا ”آپ میرے ساتھ مذاق نہ کریں۔“ میں نے کہا ”میں مذاق نہیں کر رہا۔“ اے اللہ تعالیٰ! اگر میرا یہ عمل محض تیری رضا جوئی کے لئے تھا تو ہمیں اس پریشانی سے نجات دلا دے۔“ چنانچہ چٹان ہٹ گئی اور وہ نکل کر چل پڑے۔ (بخاری)

## ☆ بادل کا سایہ :-

شیخ ابو بکر بن عبد اللہ حزنی رضی اللہ عنہ کہتے ہیں کہ ایک قصاب اپنے پڑوسی کی لونڈی پر عاشق تھا۔ ایک دن وہ لونڈی کسی کام سے دوسرے گاؤں کو جا رہی تھی، قصاب موقع غنیمت جان کر اس کے پیچھے لگ گیا اور کچھ دور جا کر اسے پکڑ لیا۔ تب کنیز نے کہا کہ ”اے نوجوان! میرا دل بھی تیری طرف مائل ہے لیکن میں اپنے رب عزوجل سے ڈرتی ہوں۔“ جب اس قصاب نے یہ سنا تو بولا، ”جب تو اللہ تعالیٰ سے ڈرتی ہے تو کیا میں اس ذاتِ پاک سے نہ ڈروں؟“ یہ کہہ کر اس نے توبہ کر لی اور وہاں سے پلٹ پڑا۔ راستے میں پیاس کے مارے دم لبوں پر آگیا۔ اتفاقاً اس کی ملاقات ایک شخص سے ہو گئی جو کہ کسی نبی کا قاصد تھا۔ اس مردِ قاصد نے پوچھا، اے جوان کیا حال ہے؟“ قصاب نے کہا، ”پیاس سے نڈھال ہوں۔“ قاصد نے کہا کہ آؤ ہم دونوں مل کر خدا سے دعا کریں تاکہ اللہ تعالیٰ ابر کے فرشتے کو بھیج دے اور وہ شہر پہنچنے تک ہم پر اپنا سایہ کئے رکھے۔“ نوجوان نے کہا کہ ”میں نے تو خدا کی کوئی قابلِ ذکر عبادت بھی نہیں کی ہے، میں کس طرح دعا کروں؟ تم دعا کرو میں آمین کہوں گا۔“ اس شخص نے دعا کی، بادل کا ایک ٹکڑا ان کے سروں پر سایہ نکلن ہو گیا۔

جب یہ دونوں راستہ طے کرتے ہوئے ایک دوسرے سے جدا ہوئے تو وہ بادل قصاب کے سر پر آگیا اور قاصد دھوپ میں ہو گیا۔ قاصد نے کہا، ”اے جوان! تو نے تو کہا تھا کہ تو نے اللہ عزوجل کی کچھ بھی عبادت نہیں کی، پھر یہ بادل تیرے سر پر کس طرح سایہ نکلن ہو گیا؟ تو مجھے اپنا حال سنا۔“ نوجوان نے کہا، ”اور تو مجھے کچھ معلوم نہیں لیکن ایک کنیز سے خوفِ خدا کی بات سن کر میں نے توبہ ضرور کی تھی۔“ قاصد بولا، ”تو نے سچ کہا، اللہ تعالیٰ کے حضور میں جو مرتبہ و درجہ تائب کا ہے وہ کسی دوسرے کا نہیں ہے۔“ (کیمائے سعادت)



☆ لیکن ایک دروازہ رہ گیا :-

منقول ہے کہ ایک رئیس اپنے باغ میں پہنچا، وہاں اس نے مالی کو اس کی بیوی کے ساتھ بیٹھے دیکھا، اس کی بیوی کے حسین و جمیل ہونے کی بناء پر رئیس کا دل اس کی طرف مائل ہو گیا اور برائی کا ارادہ دل میں جڑ پکڑنے لگا۔ اس نے مالی کو کسی کام کے لئے روانہ کر دیا۔ جب دونوں تنہا رہ گئے تو اس نے عورت سے کہا کہ ”باغ کے سب دروازے بند کر دے۔“ عورت فوراً اس کی نیت بھانپ گئی، چنانچہ تھوڑی دیر بعد اس کے پاس پہنچی تو اس نے پوچھا، ”سب دروازے بند کر دئے؟“ اس نے جواب دیا کہ ”ہاں، لیکن ایک دروازہ رہ گیا ہے۔“ رئیس نے پوچھا، ”وہ کون سا؟“ اس نے کہا، ”وہ، جو میرے اور میرے رب عزوجل کے درمیان ہے۔“ یہ بات سنتے ہی رئیس پر زبردست خوفِ خدا طاری ہوا اور وہ روتا ہوا وہاں سے رخصت ہو گیا۔ (کشف المحجوب)

☆ کیا اللہ عزوجل بھی سو رہا ہے؟ :-

مروی ہے کہ ایک آدمی کسی عورت پر فریفتہ ہو گیا اور اس کے ساتھ برائی کا موقع ڈھونڈنے لگا۔ ایک روز عورت اپنے قبیلے والوں کے ساتھ کسی سفر پر روانہ ہوئی۔ یہ آدمی بھی ان کے ساتھ چل پڑا۔ جب رات کو جنگل میں پڑاؤ ڈالا گیا اور سب لوگ سو گئے تو یہ اس عورت کے پاس پہنچا اور تمام حال بیان کر دیا۔ عورت نے پوچھا کہ ”کیا سب لوگ سو گئے ہیں؟“ یہ خوش ہوا کہ شاید اس نے میری بات مان لی ہے، چنانچہ فوراً اٹھا اور قافلے کے گرد گھوم کر دیکھا، سب لوگ سو رہے تھے۔ واپس آکر اس نے بتایا کہ سب لوگ سو رہے ہیں۔ عورت نے کہا، ”اللہ عزوجل کے بارے میں تو کیا کہتا ہے کیا وہ بھی اس وقت سو رہا ہے؟“ مرد بولا، ”نہیں، اللہ تعالیٰ نہ سوتا ہے، نہ اسے نیند آتی ہے اور نہ ہی اونگھ۔“ عورت نے کہا کہ ”جب وہ کبھی بھی نہیں سوتا تو یقیناً ہمیں دیکھ رہا ہے، چاہے ہم اسے دیکھیں یا نہ دیکھیں، اور جب یہ معاملہ ہے تو ہمیں تو اس سے

بہت زیادہ ڈرنا چاہیے۔“ جب مرد نے یہ سنا تو اللہ عزوجل کے خوف سے عورت کو چھوڑ دیا اور اپنے گناہ کے ارادے سے توبہ کر لی۔“ (مکاشفۃ القلوب)

☆ تمام گناہ معاف :-

بیان کیا جاتا ہے کہ ”بنی اسرائیل میں ایک عیال دار عابد رہا کرتا تھا، اسے شدید تنگ دستی نے گھیر لیا۔ بیقرار ہو کر اس نے اپنے بیوی کو بچوں کے لئے کچھ لانے کو باہر بھیجا۔ وہ ایک تاجر کے دروازے پر آئی اور بچوں کے لئے کچھ مانگا۔ اس تاجر نے کہا کہ ”ٹھیک ہے، میں تجھے کچھ دوں گا لیکن شرط یہ ہے کہ تو خود کو میرے حوالے کر دے۔“ عورت خاموشی سے گھر کو واپس آگئی، واپس آ کر بچوں کو بھوک سے بلکتے ہوئے ہوئے دیکھ کر دوبارہ اس کے پاس پہنچی اور بچوں کے بارے میں بات کی۔ تاجر نے پوچھا، ”میری بات مانتی ہے؟“ اس نے کہا، ”ہاں۔“ جب دونوں تنہائی میں پہنچے تو اس عورت کا بدن تھر تھر کانپنے لگا اور قریب تھا کہ اس کا جوڑ جوڑ اکھڑ جائے۔“ تاجر نے پوچھا، ”یہ تجھے کیا ہوا؟“ عورت نے کہا کہ ”میں اپنے اللہ عزوجل سے ڈرتی ہوں۔“ تاجر بولا، ”تو اس فقر و فاقہ کے باوجود اللہ تعالیٰ کا خوف رکھتی ہے تو مجھے تو اور زیادہ ڈرنا چاہیے۔“ یہ کہہ کر وہ برائی سے رک گیا اور عورت کی ضرورت پوری کر دی۔ عورت بہت سا سامان لے کر گھر آئی تو بچے اسے دیکھ کر بہت زیادہ خوش ہوئے۔

اللہ تعالیٰ نے موسیٰ علیہ السلام کو وحی بھیجی کہ ”فلاں ابن فلاں (یعنی اس تاجر) کو بتا دیں کہ میں نے اس کے تمام گناہ معاف فرمادئے ہیں۔“ موسیٰ علیہ السلام اس کے پاس تشریف لائے اور فرمایا، ”شائد تو نے کوئی نیکی کی ہے، جو تیرے اور تیرے خدا کے درمیان معاملہ ہے؟“ اس شخص نے سارا واقعہ بیان کر دیا۔ آپ نے اسے خوشخبری سنائی کہ ”اس گناہ سے بچنے کے باعث اللہ عزوجل نے تیرے تمام گناہ معاف فرمادئے ہیں۔“ (ایضاً)

## ☆ آگ نے جلا دیا:

منقول ہے کہ بنی اسرائیل میں دو عابد تھے۔ ایک دن ان دونوں کی نگاہ سوسن نامی ایک عبادت گزار لونڈی پر پڑ گئی، اس کی خوبصورتی کے باعث ان دونوں کو اس سے عشق ہو گیا۔ اور وہ دونوں درخت کے پیچھے سے چھپ چھپ کر اسے دیکھنے لگے۔ پھر ان دونوں نے طے کیا کہ ہم مل کر اسے بہکائیں گے۔ چنانچہ وہ دونوں اس کے پاس پہنچے اور اس سے کہا، ”تجھے تو پتا ہی ہے کہ بنی اسرائیل کی قوم ہمارا کتنا یقین رکھتی ہے، چنانچہ اگر تو نے ہمارا مقصد پورا نہ کیا تو ہم صبح ہونے پر لوگوں کو کہیں گے کہ ”ہم نے سوسن کو ایک آدمی کے ساتھ پکڑا ہے، وہ آدمی تو ہم سے نکل کر بھاگ گیا لیکن یہ ہاتھ آگئی ہے۔“ سوسن نے کہا کہ ”تم چاہے جو کچھ کر لو میں تمہیں تمہارا ناپاک ارادہ ہرگز پورا نہ کرنے دوں گی۔“ اس کا انکار سن کر انھوں نے حسبِ دھمکی سوسن پر جھوٹا الزام لگا کر اسے لوگوں کے حوالے کر دیا۔ بنی اسرائیل کا یہ طریقہ تھا کہ وہ گناہ گار کو ایک چبوترے پر تین دن کھڑا رکھتے تھے، پھر آسمان سے کوئی سزا نازل ہوتی تھی جو اسے ہلاک کر ڈالتی تھی، چنانچہ انھوں نے سوسن کو بھی اس پر لا کھڑا کیا۔ جب تیسرا دن ہوا تو حضرت دانیال علیہ السلام تشریف لائے اور دونوں مردوں کو سامنے لانے کا حکم فرمایا۔ پھر آپ نے دونوں سے الگ الگ دریافت کیا کہ ”اس نے سوسن کو کس درخت کے پیچھے سے برائی کرتے ہوئے دیکھا؟“ دونوں نے مختلف درختوں کے نام لئے۔ ان کی غلط بیانی ثابت ہوتے ہی آسمان سے ایک آگ آئی اور ان دونوں کو جلا کر بھسم کر دیا۔ پھر سوسن کو باعزت رہا کر دیا گیا۔ (زم الحوی)

## ☆ اپنا ہاتھ جلا دیا:

مروی ہے کہ ایک شخص کا گزر کسی حسین ترین عابدہ و زاہدہ کے

پاس سے ہوا۔ اس پر نگاہ پڑتے ہی اس کے دل میں برائی کا ارادہ پیدا ہو گیا وہ اس کے

پاس گیا اور اس سے اپنے ارادے کا اظہار کیا۔ عورت نے کہا، ”جو کچھ تو نے دیکھا اس کے دھوکے میں نہ پڑ، ایسا کبھی بھی نہیں ہو سکتا۔“ لیکن مرد پر شیطان سوار رہا حتیٰ کہ اس نے زبردستی عورت پر قابو پالیا۔ عورت کے ایک طرف آگ کے انکارے پڑے ہوئے تھے، اس نے ان پر اپنا ہاتھ رکھ دیا حتیٰ کہ وہ جل کر کوئلہ ہو گیا۔ جب مرد گناہ سے فارغ ہوا تو اس حیرت و تعجب سے پوچھا کہ ”یہ تو نے اپنا ہاتھ کس لئے جلا ڈالا؟“ عورت نے کہا کہ ”جب تو نے زبردستی مجھ پر قابو پالیا تو میں ڈر گئی کہ لذتِ گناہ میں کہیں میں بھی تیری شریک نہ ہو جاؤں اور اس کی وجہ سے مجھے بھی گناہ گار نہ ٹھہرا دیا جائے، پس اسی وجہ سے میں نے اپنا ہاتھ جلا نا مناسب خیال کیا۔“ مرد یہ بات سن کر شرم سے پانی پانی ہو گیا اور اس نے انتہائی ندامت میں مبتلاء ہوتے ہوئے کہا، ”اگر یہ بات ہے تو اللہ عزوجل کی قسم! میں بھی آئندہ کبھی بھی اپنے رب عزوجل کی نافرمانی نہیں کروں گا۔“ پھر اس نے اپنے تمام گناہوں سے توبہ کی اور اللہ تعالیٰ کی عبادت میں مشغول ہو گیا۔ (ذم الھوئی)

☆ شیر کبھی داخل نہ ہو گا۔

منقول ہے کہ ایک عجمی بادشاہ شکار کھیلنے کے لئے نکلا اور اپنے ساتھیوں سے بچھڑ گیا۔ اس کا ایک گاؤں پر سے گزر ہوا، وہاں اسے ایک بہت خوبصورت عورت نظر آئی۔ بادشاہ کا دل اس کی جانب مائل ہو گیا، وہ اس کے قریب گیا اور اپنا تعارف کروا کر گناہ کے ارادے کا اظہار کیا۔ عورت نے کہا کہ ”میں پاکی میں نہیں ہوں، غسل کر کے آتی ہوں۔“ پھر وہ اپنے گھر میں گئی اور فوراً ہی ایک کتاب لے کر باہر آئی اور بولی، ”آپ اس کا مطالعہ فرمائیں میں ابھی آتی ہوں۔“ بادشاہ نے مطالعہ شروع کیا تو اس میں زنا کی سزائیں لکھی ہوئی تھیں، جب ان نے وہ سزائیں پڑھیں تو اس کے دل میں اللہ تعالیٰ کا خوف پیدا ہوا اور وہ فوراً توبہ کر کے وہاں سے روانہ ہو

گیا۔ جب اس عورت کا شوہر گھر آیا تو اس نے تمام واقعہ اس کے سامنے بیان کیا۔ خاوند کے دل میں خوف پیدا ہوا کہ ”شائد بادشاہ کو میری بیوی کی ضرورت ہے۔“ چنانچہ وہ اپنی بیوی سے الگ رہنے لگا۔ عورت کے میسے والوں نے اسی بادشاہ سے اس کی شکایت کرتے ہوئے کہا کہ ”ہماری زمین (یعنی عورت) اس کے قبضے میں ہے نہ تو یہ اسے آباد کرتا ہے اور نہ ہمیں واپس لوٹاتا ہے، اس نے زمین کو بے کار کر رکھا ہے۔“ بادشاہ نے اس کے شوہر سے پوچھا، ”تو اپنی صفائی میں کیا کہنا چاہتا ہے؟“ اس نے عرض کی، ”میں نے اس زمین میں ایک شیر کا (یعنی تیرا) میلان دیکھا ہے، اس لئے میں اس زمین میں داخل ہونے سے ڈرتا ہوں۔“ بادشاہ نے تمام معاملہ سمجھتے ہوئے کہا، ”تو اپنی زمین کو آباد کر، شیر اس میں کبھی بھی داخل نہ ہوگا۔“ (ذم الہوی)

اللہ عزوجل ہر مسلمان بھائی اور بہن کو ان واقعات سے درس حاصل کرتے ہوئے نامحرم سے بچنے کی توفیق عطا فرمائے۔ آمین بجاہ النبی الامین ﷺ

## چھٹا علاج

اخروی انعامات پر غور:-

یہ مسلمہ حقیقت ہے کہ شیطانی چکر میں نفسانیت کا بہت بڑا دخل ہوتا ہے اور نفس کی عادت ہے کہ جب اسے کسی بڑے انعام کے حصول کا یقین ہو جائے تو چھوٹے انعام سے دست بردار ہونے کے لئے فوراً تیار ہو جاتا ہے۔ چنانچہ ہر شکارِ مرضِ عشق کو چاہیے کہ اس چکرِ نامراد کی وقتی لذت کو نظر انداز کر کے خود کو اللہ عزوجل کو راضی کرنے والے اعمال کے بدلے میں ملنے والے انعامات پر غور و تفکر کرنے کا عادی بنائے، ان شاء اللہ تعالیٰ ان ہمیشہ ہمیشہ باقی رہنے والے انعامات پر غور کرنے کی برکت سے اسے بخوبی محسوس ہوگا کہ صرف تھوڑے سے دنیاوی مزے کی خاطر اپنی محنت و وقت و صلاحیت کو ضائع کرنا بہت بڑی نادانی اور اخروی انعامات کے حصول کے

لئے ذرا سی محنت اختیار کرنا بہت بڑی سعادت مندی ہے۔ اور جب یہ احساس دل میں جڑ پکڑ لے گا تو اس چکر سے خود کو بچانا اور اللہ و رسول عزوجل ﷺ کی رضا والے اعمال پر استقامت حاصل کرنا بے حد آسان محسوس ہوگا۔ اس سلسلے میں درج ذیل احادیث و اقوال و واقعات کو سنجیدگی کے ساتھ ملاحظہ فرمائیے۔

☆ سرکارِ دو عالم ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ ”اللہ عزوجل ارشاد فرماتا ہے ”میں نے اپنے نیک بندوں کے لئے وہ نعمتیں تیار کیں ہیں جو نہ کسی آنکھ نے دیکھیں، نہ کسی کان نے سنیں اور نہ کسی انسان کے دل پر اس کا خیال گزرا۔“ (حاری و مسلم)

☆ سرکارِ مدینہ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ ”جب جنتی جنت میں پہنچ جائیں گے تو ایک پکارنے والا پکارے گا ”تمہارے لئے یہ ہے کہ تم ہمیشہ تندرست رہو گے، کبھی بیمار نہ پڑو گے، ہمیشہ زندہ رہو گے، کبھی نہ مرو گے، ہمیشہ جوان رہو گے، کبھی بوڑھے نہ ہو گے اور ہمیشہ خوش رہو گے، کبھی غمگین نہ ہو گے۔“ (مسلم)

☆ ابنِ سماک رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ میں نے ایک دیہاتی عورت کو یہ کہتے ہوئے سنا، ”اگر مومنوں کے دل اپنی فکر کے ساتھ، آخرت کے پوشیدہ انعامات کا مطالعہ کر لیں تو ان پر دنیا کا عیش بد مزہ ہو جائے اور دنیا میں ان کی آنکھ کبھی ٹھنڈی نہ ہو۔“ (ذم الہدی)

☆ کسی شاعر نے بصورتِ اشعار نصیحت کرتے ہوئے کہا،

تَبَا لَطَالِبِ الدُّنْيَا لَا بَقَاءَ لَهُ

كَأَنَّمَا هِيَ فِي تَضْرِيْفِهَا حُلْمٌ

(یعنی دنیا طلب کرنے والے کے لئے بربادی ہے، دنیا کے لئے بقاء نہیں، گویا کہ یہ اپنے آنے جانے میں ایک خواب ہے۔)

صَفَاؤُهَا كَذْرٌ وَ سَرَاؤُهَا ضَرَرٌ

أَمَانُهَا غَرَرٌ أَنْوَارُهَا ظَلَمٌ

(یعنی اس کی صفائی مگر ہے، اس کی مسرت دکھ ہے، اس کی امان فریب ہے، اس کی روشنیاں اندھیرے ہیں۔)

شَبَابُهَا هَرَمٌ رَاحَاتُهَا سَقَمٌ

لَذَائِهَا نَدَمٌ وَجَدَائِهَا عَدَمٌ

(یعنی اس کا شباب بڑھاپا ہے، اس کی راحت بیماری ہے، اس کی لذت ندامت ہے، اس کا پانا محرومی ہے۔)

فَخَلَّ عَنْهَا وَلَا تَكُنْ لِزَهْرَتِهَا

فَانْهَاجِ نَعْمٌ فِي طَيْبِهَا نِقَمٌ

(یعنی پس اسے چھوڑ دے اور اس کی چمک دمک پر نہ جا، کیونکہ یہ ایسی نعمتیں ہیں، کہ جن کے حاصل کرنے میں سزا ہے۔)

وَأَعْمَلْ لِدَارِ نَعِيمٍ لَا نَفَادَ لَهَا

وَلَا يُخَافُ بِهَا مَوْتُ وَلَا هَرَمٌ

(یعنی اور آخرت کے لئے کام کر جو کبھی فنا نہ ہوگی اور وہاں موت اور بڑھاپے کا خوف مسلط نہ ہو گا۔) (مکاشفة القلوب)

☆ دو کھجور کی گٹھلیاں:-

ایک مرتبہ حضرت مالک بن دینار رضی اللہ عنہ بصرہ کی گلیوں سے گزر رہے تھے کہ آپ نے کسی امیر و کبیر شخص کی باندی کو دیکھا کہ خدمت گاروں کے جھرمٹ میں بڑے ناز و غرور کے ساتھ جا رہی ہے۔ آپ اس قریب پہنچے اور دریافت فرمایا، ”کیا تیرا مالک تجھے بیچے گا؟“ چونکہ آپ سادہ ترین لباس میں ملبوس تھے، لہذا لونڈی کو اس سوال سے بڑا تعجب ہوا اور اس نے پوچھا کہ ”اگر فروخت بھی کرے تو کیا



تجھ جیسا مفلس مجھے خرید سکتا ہے؟“ آپ نے فرمایا ”تو کیا ہے؟ میں تجھ سے بہتر کنیر خرید سکتا ہوں۔“ لوٹڈی نے خدام کو اشارہ کیا کہ ”اس فقیر کو ساتھ لے لو، آقا کے سامنے ذرا مزہ رہے گا۔“ آپ ان کے ہمراہ گھر تک پہنچ گئے۔

لوٹڈی نے تمام قصہ اپنے آقا کے سامنے بیان کر دیا، اس کے آقا کو بھی اس بات پر بڑا تعجب ہوا اور اس نے حضرت مالک رضی اللہ عنہ کو سامنے لانے کو کہا۔ جب آپ تشریف لائے تو اس نے کہا، ”آپ کیا چاہتے ہیں؟“ فرمایا، ”اس کنیر کو خریدنا چاہتا ہوں۔“ عرض کی، ”کیا آپ اس کی قیمت دے سکیں گے؟“ فرمایا کیوں نہیں؟“ عرض کی، ”کیا قیمت دیجئے گا؟“ فرمایا، ”میرے نزدیک اس کی قیمت دو کھجور کی گٹھلیوں کے علاوہ اور کچھ نہیں۔“ اس نے تعجب سے پوچھا، ”وہ کیوں؟“ فرمایا، ”اس لئے کہ اس میں بے شمار عیب ہیں۔“ عرض کی، ”وہ کون سے عیوب ہیں، ہمیں بھی بتائیے؟“ فرمایا، ”اگر سننا ہی چاہتا ہے تو سن! یہ اگر عطر نہ لگائے تو اس کا جسم بدبو کرنے لگے، منہ نہ دھوئے تو اس سے تعفن اٹھنے لگے، بالوں کی صفائی نہ رکھے تو اس میں جوئیں پڑ جائیں، ذرا عمر بڑی ہو تو اس پر بڑھا پاپاری ہو جائے اور دیکھنے کے لائق بھی نہ رہے، حیض اسے آتا ہے، پیشاب پاخانہ یہ کرتی ہے، طرح طرح کی نجاستوں سے آلودہ رہتی ہے، رنج و غم و تکلیفوں سے اسے سابقہ پڑتا رہتا ہے، یہ تو ظاہری عیوب ہیں۔ باطنی عیوب کا حال یہ ہے کہ اس میں خود غرضی ہے آج تمہارے لئے وفادار ہے کل کسی اور کے لئے ہو جائے گی، اس کی دوستی سچی نہیں، یہ ناقابل اعتبار ہے۔ اس کے برعکس انتہائی کم قیمت میں مجھے ایسی کنیر مل رہی ہے جو ان تمام باتوں میں اس سے کہیں زیادہ بہتر ہے۔ کافور و زعفران و مشک و جوہر نور سے اس کی تخلیق ہوئی۔ کسی کھارے پانی میں اپنا تھوک ڈال دے تو وہ بیٹھے پانی میں تبدیل ہو جائے، مردے سے ہم کلام ہو تو وہ جی اٹھے، اگر سورج لے آگے اپنی کلائی کھول دے تو اس کی روشنی ماند پڑ جائے،

زیور و پوشاک سے آراستہ ہو کر دنیا میں آجائے تو سارا جہان معطر و مزین ہو جائے۔ مشک و زعفران کے باغوں اور یا قوت و مرجان کی شاخوں میں اس کی پرورش ہوئی ہے۔ آبِ تسنیم اور طرح طرح کے آرام و آسائش سے اسے پالا گیا، عہد کی پختہ اور دوستی میں یکتا ہے، بے وفائی بالکل نہیں کرتی۔ اب تم ہی بتاؤ کہ ان دونوں میں سے بہتر کون ہے؟“ عرض کی، ”یقیناً وہ جس کا ذکر آپ نے فرمایا۔“ پھر عرض کی، ”اس کی قیمت کیا ہے؟“ فرمایا، ”اس کی قیمت ہر وقت، ہر شخص کے پاس ہے، اور وہ یہ ہے کہ ”رات میں چند لمحوں کے لئے ہر شے سے بے نیاز ہو کر اخلاصِ نیت کے ساتھ دو رکعت نماز ادا کرو، تمہارے لئے انواع و اقسام کے کھانوں کا دسترخوان چنا جائے تو اس وقت کسی بھوکے کو رضائے حق کے لئے کھلاؤ، راستے سے گندگی اور پتھر دور کرو، اپنی زندگی فقرو تک دستی میں گزارو، فکر دنیا سے الگ رہو، حرص سے دور رہ کر قناعت اختیار کرو۔ پھر اس کا ثمرہ یہ ہو گا کہ کل تم آرام و سکون سے جنت کی راحتوں میں رہو گے اور بادشاہِ کریم کے دائمی پڑوس سے سرفراز ہو گے۔“

آپ کی نصیحتوں کو سن کر آقانے اس کنیر اور غلاموں کو آزاد کر کے اپنی جائیداد، ان میں تقسیم کر دی اور لباسِ فاخرہ پھینک کر، فقر کا موٹا لباس پہن لیا۔ جب کنیر نے یہ دیکھا تو اس نے بھی اپنے آقا کی تقلید کی اور موٹا لباس پہن کر اس کے پیچھے ہو لی۔ آپ نے ان دونوں کے لئے دعائے خیر فرمائی۔ یہ دونوں دنیا سے بے نیاز ہو کر عبادتِ حق میں مشغول ہوئے اور اسی حال میں اپنے خدا سے جا ملے۔ (روض الریاضین)

☆ حوریں ہاتھ باندھے کھڑی ہیں :-

مروی ہے کہ ایک شخص شاہی محل میں صفائی کیا کرتا

تھا۔ ایک مرتبہ دورانِ صفائی اس کی نگاہ شہزادی پر پڑ گئی، شہزادی کے حسن و جمال نے

اس کے دل کو گھائل کر دیا اور وہ اس کے عشق میں تڑپنے لگا، پھر اپنے اور شہزادی کے

مرتبے میں عظیم فرق کی وجہ سے اس کے حصول سے بالکل مایوس ہونے کے باعث سخت بیمار پڑ گیا۔ اس کی جگہ اس کی بیوی صفائی کے لئے جانے لگی۔ کچھ عرصے بعد شہزادی نے اس کی غیر حاضری کو محسوس کر کے اس کی بیوی سے پوچھا کہ ”اب تیرا خاوند صفائی کے لئے کیوں نہیں آتا؟“ اس نے عرض کی، ”جی، وہ کچھ بیمار ہے۔“

شہزادی نے بیماری معلوم کی تو وہ ٹال مٹول کرنے لگی، جس کے باعث شہزادی کو کچھ شک گزرا اور اس نے سختی سے اس کے بارے میں پوچھا۔ اس عورت نے جب دیکھا کہ شہزادی کسی طور سے نہیں مان رہی تو عرض گزار ہوئی کہ اگر جان کی امان پاؤں تو کچھ عرض کروں۔“ شہزادی نے امان دی تو اس نے عرض کیا کہ ”حضور! وہ آپ کے عشق میں گرفتار ہو گیا ہے اور چونکہ آپ کا دیدار ممکن نہیں لہذا اسی غم میں قریب المرگ ہو چکا ہے۔“ یہ سن کر شہزادی نے کہا، ”دل کا مائل ہونا کوئی اختیاری چیز نہیں، اگر مجھے دیکھنے سے اس کی جان بچ سکتی ہے تو اس میں میرا کیا نقصان ہے؟ لیکن مجبوری یہ ہے کہ میرا مرتبہ اس کے سامنے آنے میں بہت بڑی رکاوٹ ہے، کیونکہ باعث بدنامی ہے، البتہ میں ایک ترکیب بتاتی ہوں اگر وہ عمل کرے تو شاید مجھے دیکھ سکے اور اسکی جان بچ جائے۔ اور وہ یہ ہے کہ وہ فقیرانہ شکل بنا کر دریا کے کنارے بیٹھ جائے اور اللہ عزوجل کا ذکر شروع کر دے، کسی کی طرف متوجہ نہ ہو، دن میں کچھ بھی کھائے پئے نہیں، تو رات میں جا کر اسے کھلا پلا دیا کرنا، اگر کوئی اسے نقدی یا کھانے پینے کی چیز دے تو بالکل اس پر توجہ نہ کرے اور اگر کوئی اٹھا کر لے جائے تو منع بھی نہ کرے، اس طرح چند ہی روز میں اس کی شہرت ہو جائے گی، تو بادشاہ سلامت، وزراء و امراء کو اس کے پاس بھیجیں گے، پھر وہ خود بھی جائینگے اور اس کے بعد اجازت لے کر میں بھی پہنچ جاؤں گی، اس طرح وہ مجھے دیکھ بھی لے گا اور بات چیت بھی ہو جائے گی۔“

عورت نے یہ ساری بات اپنے شوہر کو بتائی، وہ فوراً عمل پیرا ہونے کے لئے

تیار ہو گیا اور دریا کے کنارے جا بیٹھا اور حسب ہدایت عمل شروع کر دیا۔ حسب توقع اس کی شہرت عام ہو گئی، لوگ اس کے پاس تحائف لاتے، لیکن وہ کسی کی طرف التفات نہ کرتا۔ ہوتے ہوتے یہ خبر بادشاہ تک بھی پہنچ گئی۔ بادشاہ نے بغرض امتحان اپنے وزیر کو اس کے پاس بھیجا۔ وزیر نے اس سامنے پہنچ کر نذر پیش کی، لیکن اس نے بالکل توجہ نہ کی، نہ ہی اس کی طرف دیکھا۔ وزیر نے جا کر عرض کی، حضور! جیسا سنا تھا اسے ویسا ہی پایا ہے، وہ دنیا کی طرف بالکل متوجہ نہیں ہوتا، مال و دولت سے بالکل بے پرواہ ہے۔“ اگلے روز بادشاہ خود اس کے پاس پہنچا اور اسے نذرانے پیش کئے، اس نے حسب سابق بے نیازی کا مظاہرہ کیا۔ بادشاہ بھی بہت متاثر ہو کر واپس لوٹا۔ جب بادشاہ محل میں پہنچا تو شہزادی نے اس کے بارے میں دریافت کیا، بادشاہ نے کہا، ”وہ فقیر بہت سچا اور دنیا سے بالکل بے تعلق ہے۔“ شہزادی نے موقع غنیمت جانتے ہوئے عرض کی کہ ”اگر آپ اجازت مرحمت فرمائیں تو میں بھی اس کی زیارت کر لوں؟“ بادشاہ نے کہا، ”ہاں ہاں، کیوں نہیں ایسے بزرگوں کی ضرور زیارت کرنی چاہیے۔“ اجازت ملنے پر شہزادی نے اس کی بیوی سے کہا کہ ”اپنے شوہر سے جا کر کہہ دے کہ میں صبح تیرے پاس آؤں گی۔“ عورت نے یہ پیغام اس تک پہنچا دیا۔

جب اس شخص نے یہ سنا تو سوچنے لگا کہ ”آج تک میں نے یہ سب کام اپنی نفسانی غرض کی تکمیل کے لئے کیا، پھر بھی بڑے بڑے بادشاہ و وزراء میرے قدموں میں آگئے، اگر میں سچے دل سے اپنے رب عزوجل کا نام لیتا تو نا معلوم مجھے کیا کیا نعمتیں حاصل ہو جاتیں؟“ یہ سوچتے ہی اس نے ندامت و شرمندگی سے زار و قطار رونا شروع کر دیا اور اپنے پچھلی نیتوں پر صدقِ دل سے توبہ کی، وہ اسی طرح آہ و زاری کرتا رہا حتیٰ کہ جب رات کا آخری پہر آیا تو اس کا ندامت کے ساتھ رونا، گڑ گڑانا اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں مقبول ہو گیا، ”اللہ عزوجل کی رحمت نے اسے مکمل طور پر اپنی آغوش میں لے لیا اور

فرش سے عرش تک تمام چیزیں اس پر منکشف کر دی گئیں اور جنت کے خوبصورت مناظر اس کی نگاہوں کے سامنے آ گئے۔ ”صبح حسب وعدہ شہزادی اس کے پاس پہنچی تو وہ سر جھکا کر بیٹھا ہوا تھا، اس نے نظر اٹھا کر بھی شہزادی کی طرف نہ دیکھا۔ باندیوں نے کہا، ”اے شخص! شہزادی تیرے سامنے بیٹھی ہے، کچھ بات کرنی ہے تو کر لے۔“ اس نے کچھ دیر خاموشی اختیار کی اور پھر بولا، ”اب مجھے شہزادی کی کوئی پرواہ نہیں، کیونکہ اس سے کہیں زیادہ حسین و جمیل حوریں، اس وقت ہاتھ باندھے میرے سامنے کھڑی ہیں۔“ (ذکر خیر)

### ☆ اللہ تعالیٰ کی محبت کا ثمر:

حضرت شیخ مظہر سعدی رضی اللہ عنہ، اللہ تعالیٰ کی محبت

میں ساٹھ سال گریہ و زاری فرماتے رہے۔ ایک شب آپ نے خواب میں دیکھا کہ ”آپ ایک نہر کے کنارے ہیں، نہر میں خالص مشک بہ رہا ہے، کنارے پر جواہرات کے درخت ہیں، جن کی شاخیں سونے کی ہیں، اتنے میں چند حسین و جمیل آراستہ و پیراستہ لڑکیاں وہاں آئیں جو مل کر یہ کہہ رہی تھیں،

”پاک ہے وہ ذات جس کی پاکی ہر زبان بیان کرتی ہے، پاک ہے وہ ذات جس کا وجود ہر جگہ کو محیط ہے، پاک ہے وہ ذات جس کا دوام ہر زمانے پر چھایا ہوا ہے۔“ آپ نے ان سے دریافت کیا کہ تم کون ہو اور کس کے لئے پیدا کی گئی ہو؟“ انھوں نے آپ کو دو شعروں میں جواب دیا، جس کا مفہوم یہ تھا کہ، ”ہمیں رب محمد ﷺ نے ان لوگوں کے واسطے پیدا فرمایا جو شب کو قیام کرتے ہیں، مناجات کرتے ہیں، اور اس کی محبت میں رات گزار دیتے ہیں جب کہ لوگ خواب غفلت میں پڑے رہتے ہیں۔“ (روض الراحین)

### ☆ خواب غفلت سے بیدار ہونے:

ایک بزرگ فرماتے ہیں کہ ”ایک شب ان پر نیند کا غلبہ ہو گیا،

یہاں تک کہ معمول کے اور ادو وظائف بھی چھوٹ گئے، خواب میں کیا دیکھتے ہیں کہ ایک پری پیکر دو شیزہ سامنے کھڑی ہے، ایسی حسین و جمیل صورت آپ نے عمر بھر میں نہ دیکھی تھی، اور اس کے بدن سے خوشبو کے آبشار پھوٹے پڑ رہے ہیں۔ اس نے انھیں ایک رقعہ دیا اور کہا کہ اسے پڑھ لو۔ رقعہ میں یہ اشعار درج تھے۔

لَذَّتْ بِنَوْمَةٍ عَنْ خَيْرِ عَيْشٍ

مَعَ الْوُلْدَانِ فِي غُرَفِ الْجَنَانِ

(تولدت خواب میں مشغول ہو گیا اور جنتی بالا خانوں کے عمدہ عیش و آرام اور وہاں کے خدام سے غافل ہو گیا۔)

تَعِيشُ مُخَلِّدًا لَا مَوْتَ فِيهَا

وَ تَبْقَى فِي الْجِنَانِ مَعَ الْحَسَانِ

(جہاں تجھے ایسی دائمی زندگی ملے گی کہ موت کا گزرنہ ہو اور خور و روں کے ساتھ بقائے دوام نصیب ہو۔)

تَيَقِّظُ مِنْ مَنَامِكَ أَنْ خَيْرًا

مِنَ النَّوْمِ التَّهَجُّدُ بِالْقُرْآنِ

(اٹھ! خوابِ غفلت سے بیدار ہو، بے شک قرآن کے ساتھ تہجد پڑھنا، سونے سے بہتر ہے۔)

فرماتے ہیں کہ اس کے بعد میرا یہ حال ہو گیا کہ جب بھی مجھے یہ اشعار یاد آ

جاتے ہیں تو آنکھوں سے نینداڑ جاتی ہے۔“ (ایضاً)

☆ عام جنتی کا انعام :-

ایک ہندہ حق نے چالیس برس اللہ عزوجل کی عبادت کی، ایک روز

عرض گزار ہوا، ”اے مالک و مولا! تیرے فضل و کرم سے جنت میں مجھے جو کچھ ملنے

والا ہے، اس کی کوئی جھلک مجھے بھی دکھا دے۔“ اچانک کیا دیکھتا ہے کہ محراب شق ہو

گئی اور اس میں سے ایک حور بزم آمد ہوئی۔ وہ ایسی حسین و جمیل تھی کہ اگر دنیا والے اسے دیکھ لیں تو سب اس پر شیدا ہو جائیں۔ عابد نے پوچھا، ”تو کون ہے؟“ اس نے جواب دیا کہ، ”مجھے اللہ تعالیٰ نے شب بھر تیرا دل بہلانے کے لئے بھیجا ہے، میں تیرے لئے ہوں، جنت میں مجھ جیسی سو مزید حوریں تجھے دی جائیں گی، ان تمام حوروں میں سے ہر ایک کی سو خادمائیں اور ہر خادمہ کی سو کنیریں ہوں گی اور ہر کنیر کی نائب سو سو کنیریں ہوں گی۔“ عابد یہ سن کر حیرت زدہ رہ گیا۔ پھر اس نے دریافت کیا، ”کیا جنت میں کسی کو مجھ سے بھی زیادہ ملے گا؟“ جواب ملا، ”اتنا تو ہر اس عام جنتی کو ملے گا جو صبح و شام ”استغفر اللہ العظیم“ پڑھ لیا کرے، اونچے درجے والوں کی شان تو اس سے بہت بلند ہوگی۔“ (ایضاً)

☆ نو مسلم جنت میں:-

حضرت شیخ عبدالواحد بن زید رضی اللہ عنہ سمندری سفر فرما رہے تھے، آپ کے ہمراہ فقراء کی ایک جماعت بھی تھی۔ اچانک سمندر میں طوفان برپا ہوا اور آپ کا جہاز ایک جزیرے سے جا لگا۔ آپ نے وہاں ایک بت پرست کو پایا۔ آپ نے فرمایا ”تو کس کی عبادت کرتا ہے؟“ اس نے ایک بت کی طرف اشارہ کر دیا۔ فرمایا، ”یہ بت جو خود کسی کے ہاتھ کا بنایا ہوا ہے، معبود نہیں ہو سکتا، ایسا تو ہم بھی بنا سکتے ہیں۔“ اس نے پوچھا، ”تم کس کی عبادت کرتے ہو؟“ فرمایا، ”ہمارا معبود وہ ہے کہ جس نے اس بت اور ساری کائنات کو تخلیق فرمایا ہے، جس کا عرش آسمان پر، جس کا حکم پوری کائنات میں اور جس کا اختیار زندوں اور مردوں سب پر جاری ہے۔“ اس نے پوچھا، ”تمہیں یہ باتیں کیسے معلوم ہوئیں؟“ فرمایا، ”اس بادشاہ حقیقی نے ہم میں ایک سچا رسول بھیجا، اس نے ہمیں خدائے تعالیٰ کی طرف بلایا۔“ اس نے دریافت کیا، ”وہ رسول کہاں ہیں؟“ فرمایا، ”اللہ تعالیٰ نے انھیں جس کام کے لئے مبعوث فرمایا تھا، جب وہ اسے پورا



کر چکے تو اللہ تعالیٰ نے انھیں اٹھا لیا۔“ اس نے پھر پوچھا، ”آپ کے پاس ان کی کوئی نشانی ہے؟“ فرمایا، ”بے شک ان کی نشانی کتاب اللہ ہے۔“ اور پھر اسے قرآن کی ایک سورۃ پڑھ کر سنائی۔ وہ سن کر اشکبار و بے قرار ہو گیا اور کہنے لگا، ”جس ذات پاک کا یہ مقدس کلام ہے اس کی فرمانبرداری تو دل و جان سے کرنی چاہیے۔“ پھر اس نے کلمہ پڑھا اور مسلمان ہو گیا۔ آپ نے اسے کچھ سورتیں اور دین کے احکام سکھائے۔ رات جب سب سونے لگے تو اس نے پوچھا کہ ”کیا وہ معبود سوتا بھی ہے؟“ فرمایا، ”وہ سونے سے پاک ہے، وہ ہمہ وقت زندہ اور قائم ہے۔“ اس نے کہا، ”جس کا آقا نہ سوتا ہو، اس کے بندوں کا سونا کیسی بے نصیبی ہے۔“ لوگ یہ بات سن کر متعجب ہوئے۔

جب آپ کا قافلہ جزیرے سے روانہ ہوا تو اس نے بھی ساتھ چلنے کی درخواست کی۔ لوگوں نے اسے بھی ساتھ لے لیا۔ وہاں سے ”آبادان“ پہنچے تو لوگوں نے سوچا کہ ”یہ اپنا نادار نو مسلم بھائی ہے، چندہ کر کے اس کی کچھ امداد کرنی چاہیے۔“ جب اسے پیسے دئے گئے تو اس نے لینے سے انکار کر دیا اور بولا، ”اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں، عجیب معاملہ ہے کہ تمہیں لوگوں نے مجھے راہ دکھائی اور اب خود ہی راہ راست سے ہٹ رہے ہو، بھائیو! جب میں سنسان جزیرے پر بت پرستی میں مشغول تھا، اس وقت تو اس نے مجھے ضائع نہ فرمایا اور اب جب کہ میں اسے پہچان چکا ہوں، تو کیا وہ مجھے محفوظ نہ رکھے گا؟“ اس کے بعد تین روز گزرے تھے کہ لوگوں نے حضرت کو بتایا کہ وہ نو مسلم جاں کنی کے عالم میں ہے، آپ نے اس سے دریافت فرمایا، ”کوئی خواہش ہو تو بتا دو؟“ اس نے جواب دیا، ”جس مالک الملک کے کرم نے آپ لوگوں کے ذریعے جزیرے میں دولت ایمان عطا فرمائی اسی نے میری تمام حاجتیں پوری فرمادی ہیں۔“

آپ فرماتے ہیں کہ، ”وہیں بیٹھے بیٹھے مجھے نیند کا غلبہ ہوا۔ خواب میں میں نے

خود کو ایک سبز باغ میں پایا، جہاں ایک خوبصورت قبہ کے اندر، تخت کے اوپر، نہایت حسین و جمیل نو عمر لڑکی بیٹھی ہے اور وہ مجھ سے مخاطب ہو کر کہہ رہی ہے کہ ”خدا را! اس نو مسلم کو جلد میرے پاس بھیجو، میں اس کی جدائی میں اور زیادہ صبر نہیں کر سکتی۔“ میری آنکھ جو کھلی تو دیکھا کہ اس کی روح پرواز کر چکی ہے۔ غسل و کفن کے بعد اسے دفن دیا گیا۔ آپ فرماتے ہیں کہ ”رات میں سوتے ہوئے، میں نے اسی قبہ اور باغ کو دوبارہ دیکھا، اب کی بار اس لڑکی کے پہلو میں وہ نو مسلم بھی بیٹھا ہوا تھا اور قرآن پاک کی یہ آیت تلاوت کر رہا تھا، ”وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ☆ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ“ ﴿ترجمہ: اور فرشتے ہر دروازے سے ان پر یہ کہتے آئیں گے سلامتی ہو تم پر تمہارے صبر کا بدلہ تو پچھلا گھر کیا ہی خوب ملا۔﴾

(کنز الایمان، رعد، ۲۳، ۲۴، پ ۱۳)

### ☆ شہزادے کی توبہ :-

ہو امیہ کا بانکا، چھریرا، حسین و جمیل نوجوان موسیٰ بن محمد بن سلیمان ہاشمی اپنے عیش و عشرت، تن پروری، خوش لباسی اور خوبصورت کنیزوں اور غلاموں کے جھرمٹ میں سرمستی حیات کا عادی تھا۔ انواع و اقسام کے کھانوں سے اس کا دستر خوان ہمہ وقت لبریز رہتا۔ زرق برق ملبوسات میں لیٹا، مجلسِ طرب سجائے، ساری ساری رات غم و آلام دنیا سے بے خبر پڑا رہتا۔ ایک سال میں تین لاکھ تین ہزار دینار کی آمدنی تھی، جسے مکمل طور پر اپنی عیاشیوں میں خرچ کر دیتا۔ شارع عام پر نہایت بلند و بالا خوبصورت محل بنوا رکھا تھا۔ اپنے محل میں بیٹھا کبھی تو وسیع گزرگاہوں کی رونقوں سے محظوظ ہوتا اور کبھی کچھلی جانب واقع شاندار باغ میں مجلسِ طرب سجاتا۔ محل میں ہاتھی دانت کا بنا ہوا ایک قبہ تھا، جس میں چاندی کی کیلیں تھیں۔ اس کے پیچ میں ایک قیمتی تخت خاص شہزادے کے بیٹھنے کے لئے بنایا گیا تھا۔ موسیٰ اس پر شان و شوکت کے

ساتھ بیٹھتا، ارد گرد دوست احباب کی نشستیں ہوتیں۔ پشت پر خدام و غلام باادب کھڑے ہوتے۔ قبے کے باہر گانے والوں کے بیٹھنے کی جگہ تھی، جہاں سے وہ نغمہ و سرور کے ذریعے اس کا اور اس کے دوستوں کا دل بہلاتے۔ کبھی خوبصورت گانے والیاں بھی رونقِ مجلس بڑھاتیں۔ ان میں اور مردانہ نشست گاہ میں ایک باریک پردہ حائل رہتا، جسے حسبِ خواہش کبھی ہٹا دیا جاتا۔ پردے کو جنبش دینا اس بات کا اشارہ تھا کہ گانا شروع کیا جائے، جب گانا بند کروانا ہوتا تو اس وقت بھی محض اشارہ کر دیتا۔ رات ڈھلے عیش و عشرت سے تھک کر کنیروں میں سے جس کے ہمراہ چاہتا شبِ باشی کرتا۔ دن کو شطرنج کی بساطیں جمتیں۔ کبھی بھولے سے بھی اس کی مجلس میں موت یا غم و آلام کا تذکرہ نہ چھڑتا۔ اسی عالمِ سرمستی و شباب میں ستائیس سال گزر گئے۔

ایک رات اسی طرح عیش و عشرت میں محو تھا کہ یکایک ایک دردناک چیخ کی آواز ابھری، جو گانے والوں کی آواز کے مشابہ تھی۔ اس آواز کا کانوں سے ٹکرانا تھا کہ محفل پر سناٹا چھا گیا۔ موسیٰ نے قبے سے سر نکالا اور آواز کا تعاقب کرنے لگا۔ شراب و شباب کا یہ رسیا، اس کربناک آواز کی تلخی کو برداشت نہ کر سکا۔ غلاموں کو حکم دیا کہ اس شخص کو تلاش کرو اور میرے پاس لاؤ۔ غلام و خدام محل سے باہر نکلے، انھیں قریبی مسجد میں ایک کمزور، لاغر اور نحیف و نازار نوجوان ملا، جس کا بدن ہڈیوں کا پیچر بن چکا تھا، رنگ زرد، لب خشک، بال پریشاں، دو پھٹی چادروں میں لپیٹا رہا کائنات کے حضور مناجات کر رہا تھا۔ خادموں نے اسے ہاتھ پاؤں سے پکڑا اور موسیٰ کے سامنے حاضر کر دیا۔ موسیٰ نے اس سے تکلیف کا سبب پوچھا۔ نوجوان نے کہا دراصل میں قرآنِ پاک کی تلاوت کر رہا تھا، دورانِ تلاوت ایک مقام ایسا آیا کہ اس نے مجھے بے حال کر دیا۔ موسیٰ نے کہا ”وہ کون سی آیات تھیں میں بھی تو سنوں۔“ نوجوان نے تعوذ و تسمیہ کے بعد یہ آیات تلاوت کیں، ”إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ☆ عَلَى الْأَرْآئِكَ

يَنْظُرُونَ ☆ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ☆ يُسْقُونَ مِنْ رَحِيقٍ  
 مَخْتُومٍ ☆ خِتْمُهُ مِسْكَ، وَ فِي ذَلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ☆ وَ  
 مِزَاجُهُ مِنْ تَسْنِيمٍ ☆ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ☆ ترجمہ: بے شک نیکو کار  
 ضرور چین میں ہیں تختوں پر دیکھتے ہیں تو ان کے چروں میں چین کی تازگی پہچانے،  
 تھری شراب پلائے جائیں گے جو مہر کی ہوئی رکھی ہے اس کی مہر مشک پر ہے اور اسی پر  
 چاہئے کہ لپچائیں لپچانے والے اور اس کی ملونی تسنیم سے ہے وہ چشمہ جس سے مقربان  
 بارگاہ پیتے ہیں۔ لے

تلاوت کرنے کے بعد نوجوان نے کہا ”اے فریب خوردہ! بھلا وہ نعمتیں  
 کہاں اور تیری یہ مجلس کہاں؟ جنتی تخت کچھ اور ہی ہوگا، اس پر نرم و نازک بستر ہوں  
 گے، جن کے استر استبرق کے ہوں گے۔ سبز قالینوں اور بستروں پر ٹیک لگائے لوگ  
 آرام کرتے ہوں گے۔ وہاں دو نہریں ساتھ ساتھ بہتی ہیں، وہاں ہر پھل کی دو  
 قسمیں ہیں۔ وہاں کے میوے کبھی ختم نہ ہوں گے اور نہ ان سے جنتیوں کو کوئی روکنے  
 والا ہوگا۔ اہل جنت، جنت کے پسندیدہ عیش میں ہمیشہ رہیں گے، وہاں انھیں کوئی ناگوار  
 بات سنائی نہ دے گی۔ وہاں اونچے اونچے تختوں کے ارد گرد چمک دار آب خورے قطار  
 سے رکھے ہوں گے۔ یہ تمام نعمتیں اللہ تعالیٰ کے فرمانبردار بندوں کے لئے ہوں گی۔  
 اور کافروں کے لئے کیا ہوگا؟ ان کے لئے آگ ہی آگ ہوگی، آگ بھی ایسی کہ کبھی سرد  
 نہ ہونے والی، کافر اس میں ہمیشہ رہیں گے ان کا عذاب کبھی موقوف نہ ہوگا، وہ اس  
 میں اوندھے منہ پڑے ہوں گے اور جب انھیں سر کے بل گھیٹا جائے گا تو کہا جائے گا  
 ”لو یہ عذاب چکھو۔“

ان پر اثر کلمات کے باعث موسیٰ کے دل کی دنیا میں انقلاب برپا ہو گیا، بے

اختیاری میں تخت سے اتر اور اس نوجوان سے لپٹ کر رو پڑا، پھر تمام خدام و غلام و کنیزوں کو رخصت کر کے نوجوان کو ساتھ لئے گھر کے اندرونی حصے میں چلا گیا اور ایک یورے پر بیٹھ کر اپنی جوانی کے ضائع ہونے پر خود کو ملامت کرنے لگا۔ نوجوان اسے دلاسا دیتا اور اللہ تعالیٰ کی ستاری و غفاری یاد دلاتا رہا۔ اسی عالم میں پوری رات گزر گئی۔ جب صبح ہوئی تو موسیٰ نے سچی توبہ کی، تازہ غسل کیا اور نوجوان کے ساتھ مسجد میں داخل ہوا، عبادت الہیہ کو اپنا مقصد بنا لیا۔ تمام مال و دولت، سونا چاندی، کپڑے وغیرہ صدقہ کر دئے۔ غلاموں کو فروخت و آزاد کر دیا۔ لوگوں کے حقوق شمار کر کے ادا کر ڈالے۔ موٹا لباس زیب تن کر لیا، شب بیداری کو شعار بنایا، دن کو روزہ رکھتا اور رات بھر جاگ کر اللہ تعالیٰ کے حضور روتا، گڑ گڑاتا۔ مجاہدہ و ریاضت میں اس قدر مشغول ہوا کہ دیکھنے والوں کو اس پر رحم آنے لگا۔ بڑے بڑے صلحاء و زہاد اس کی زیارت کو آتے اور اتنی سخت مشقت سے اسے روکتے۔ جب وہ نصیحتیں سنتا تو اپنے گزرے غفلت کے ایام یاد کر کے خوب روتا۔ بالآخر وہ دن بھی آیا کہ ننگے پیر، ایک معمولی سا لباس پہنے، حج بیت اللہ کے اردے سے نکلا۔ اس پاک سر زمین پر پہنچا تو دل کی کیفیت میں مزید انقلاب پیدا ہو گیا، اکثر حجر اسود کے پاس یہ مناجات کرتا ہوا نظر آتا،

”اے مالک بے نیاز! سینکڑوں خلوتیں غفلت میں گزر گئیں اور عمر کے کتنے ہی سال گناہوں میں ضائع ہو گئے، نیکیاں تو جاتی رہیں بس حسرت و ندامت پاس رہ گئی ہے۔ جس روز تیری بارگاہ میں حاضری ہوگی تو کیا منہ دکھاؤں گا؟

اے میرے رب کریم! میں اب تیرے سوا کس کے سامنے اپنا دکھ بیان کروں؟ کس سے التجاء کروں؟ کس کی جانب دوڑوں؟ کس پر اعتماد کروں؟

اے مالک و مولیٰ! میں اس لائق تو نہیں کہ تجھ سے جنت کا سوال کروں، میں تو بس تیری شانِ کریمی سے محض اتنے کرم کا متمنی ہوں کہ میری مغفرت فرمادے۔“

حج کے بعد اس نے وہیں اقامت اختیار کر لی اور اسی طرح مشغول عبادت رہتے ہوئے وارفانی سے کوچ کر گیا۔ (ایضاً)

☆ میں عبادت کیوں نہ کروں؟

ایک نیک شخص کے پڑوس میں ایک ضعیفہ خاتون رہائش پزیر تھی، جو اپنی طویل عمر کے باوجود مجاہدہ و ریاضت میں بے حد کوشش کرتی تھی۔ اس شخص کو اس کی حالت پر ترس آیا، چنانچہ وہ اس کی خدمت میں حاضر ہوا اور عرض کی کہ ”آپ کو اتنی زیادہ محنت و مشقت نہیں کرنی چاہیے، کچھ اپنے جسم و اعضاء کو بھی آرام دیجئے۔“ ضعیفہ خاتون نے جواب دیا، ”اگر میں اپنی جان کو آرام دینے لگوں تو اپنے مالکِ حقیقی کے دروازے سے علیحدہ اور دور ہو جاؤں گی، اور جو دنیوی مشاغل کے باعث اس سے دور ہوا اس نے خود کو عظیم آزمائش میں ڈالا۔ اور اگر میں سعی و کوشش کے ساتھ عمل کروں تو بھی میرے عمل کی حیثیت کتنی؟ اور اگر میں کوتاہی کروں تو باقی کیا ہے گا؟ حسرت و غم ان کو جو آگے بڑھیں اور فراق انھیں جو محبوب سے دور رہیں۔ آگے بڑھنے والوں کی حسرت یہ کہ جب محشر میں قبروں سے مردے اٹھیں گے، صالحین نور کے براق پر سوار جنت کو جائیں گے انھیں مقربین کے درجے ملیں گے، حور و غلمان ہاتھ باندھے خدمت کے لئے کھڑے ہوں گے، تو پیچھے والے کفِ افسوس ملتے رہ جائیں گے، اس وقت حسرت و غم سے ان کے قلوب پارہ پارہ ہو کر بہہ جائیں گے۔ اور فراق یہ کہ لوگ میدانِ قیامت میں الگ الگ ٹولیوں میں تقسیم کئے جائیں گے۔ رب ذوالجلال سب کو یکجا فرمائے گا، ایک اعلان کرنے والا اعلان کرے گا، ”وَأَمْتَاؤُا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ“ ترجمہ: اے مجرمو! آج علیحدہ ہو جاؤ۔“ اس دن شوہر اپنی بیوی سے، بیٹا ماں باپ سے اور دوست دوست سے الگ ہو جائے گا، کوئی کسی کے کام

نہ آئے گا نفسی نفسی کا عالم ہوگا۔ کسی کو عزت و تکریم کے ساتھ جنت بریں میں لے جائیں گے اور کسی کو زنجیر و سلاسل میں جکڑ کر داخل جہنم کریں گے۔ جدا جدا راستے اور الگ الگ منزلیں ہوں گی، آنکھوں سے اشکوں کی نہریں جاری ہوں گی، جدائی اور فراق کے عالم میں ایک دوسرے کو انتہائی حسرت سے دیکھتے ہوں گے۔ "اللہ کریم، اپنے کرم کے صدقے عذاب اور عذاب تک پہنچانے والے اعمال سے بچائے۔ آمین۔" (ایضاً)

اللہ تعالیٰ ہر مسلمان کو فنا ہو جانے والے دنیوی مزوں کے مقابلے میں ہمیشہ باقی رہنے والے اخروی انعامات کو ترجیح دینے کی توفیق عطا فرمائے۔ آمین

## ساتواں علاج

### عذابِ آخرت کا خوف:

اللہ تعالیٰ نے نفس کی فطرت ایک بچے کی مانند بنائی ہے، چنانچہ جس طرح اپنی بات منوانے کے لئے کبھی بچے کو انعام کے لالچ اور کبھی ڈانٹ ڈپٹ اور ڈرانے دھمکانے سے کام لے کر کامیابی حاصل کی جاتی ہے، بالکل اسی طرح نفس کو کسی کام پر لگانے یا کسی کام سے روکنے کے لئے انھیں دونوں طریقوں پر عمل پیرا ہونا ضروری ہے۔ شیطانی چکر سے مکمل طور پر چھٹکارے کے لئے جہاں اخروی انعامات پر غور و تفکر کی سعادت حاصل کرنی ضروری ہے، وہیں "بتلائے چکر حضرات کے لئے" عذاباتِ الہیہ کو ہمہ وقت ذہن نشین رکھنے کے شرف کا حصول بھی واجب و لازم ہے۔ اس کے لئے درج ذیل احادیث مبارکہ، اقوال بزرگانِ دین اور "نافرمانوں کو حاصل ہونے والے عذابات پر مشتمل واقعات" کو بغور ملاحظہ فرمائیے۔

☆ حضرت انس رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ کا فرمان

عالمیشان ہے کہ، "بے شک نیکی کے سبب دل میں نور، چہرے پر رونق اور عمل میں



قوت پیدا ہوتی ہے، اور گناہ سے دل میں سیاہی، عمل میں سستی اور چہرے پر بد نمائی پیدا ہوتی ہے۔“ (زم الہدیٰ)

☆ حضرت وہب بن منبہ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”اللہ تعالیٰ نے بنی اسرائیل کو جو کچھ فرمایا تھا، اس میں یہ بھی تھا کہ ”جب میری فرمانبرداری کی جاتی ہے تو میں اس سے راضی ہوتا ہوں اور جب راضی ہوتا ہوں تو برکت دیتا ہوں اور میری برکت کی کوئی انتہاء نہیں ہوتی۔ اور جب میری نافرمانی کی جاتی ہے تو میں ناراض ہوتا ہوں اور جب ناراض ہوتا ہوں تو لعنت کرتا ہوں (یعنی اپنی رحمت سے دور کر دیتا ہوں) اور میری یہ لعنت سات پشتوں تک جاتی ہے۔“ (زم الہدیٰ)

☆ حضرت حسن بصری رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”جب کوئی شخص اللہ تعالیٰ کی نافرمانی کرتا ہے تو اللہ تعالیٰ اس کو ذلیل کر دیتا ہے۔“ (زم الہدیٰ)

☆ حضرت سلیمان رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”انسان چھپ کر گناہ کرتا ہے لیکن دن کے وقت اس کی ذلت اس کے منہ پر چھائی ہوتی ہے (جسے اہل بصیرت بخوبی محسوس کر لیتے ہیں۔)۔“ (زم الہدیٰ)

☆ حضرت ابو سعید خدری رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”جب انسان چار چیزوں کی زیادتی کرتا ہے تو وہ اسے غارت کر دیتی ہیں اور مغبوط الحواس (یعنی بد حواس) بنا دیتی ہیں۔ جماع کی کثرت، شکار، جو اور گناہ۔ (تبیہ المنعین)

☆ حضرت وہب بن منبہ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”آدمی اس وقت تک نہیں مرتا جب تک وہ کاتب اعمال فرشتوں کو نہیں دیکھ لیتا۔ اب اگر اس نے ان کے ساتھ خوبی سے رفاقت کی ہے (یعنی نیک اعمال میں وقت گزارا ہے) تو وہ کہتے ہیں کہ ”اللہ تعالیٰ تجھ جیسے ساتھی کو جزائے خیر عطا فرمائے، تو ہمارا بڑا اچھا دوست تھا، تو ہمیں بہت مرتبہ نیکیوں کی مجالس میں لے گیا تھا اور تیری بے ریا طاعت میں ہم نے بہت مرتبہ عمدہ

خوشبوئیں سونگھی ہیں۔“ اور اگر اس نے برائی کے ساتھ ان کی رفاقت کی ہے (یعنی گناہوں میں وقت ضائع کیا ہے۔) تو وہ کہتے ہیں کہ ”خدا تجھے جزائے خیر نہ دے، تو ہمارا برا ساتھی تھا تو نے بہت مرتبہ ہمیں گناہوں کے مقامات میں موجود ہونے کا موقع دیا ہے اور اس کے باعث ہم نے کئی مرتبہ تجھ سے بدبو سونگھی ہے۔“ (حیۃ المعزین)

اب چند عنایات پر مشتمل واقعات ملاحظہ فرمائیے۔

### ☆ مردہ ہاتھ چبارہا تھا:-

ابن ابی الدنیار رضی اللہ عنہ روایت فرماتے ہیں کہ ”جب ابو جعفر نے کوفہ کی خندق کھودی اور لوگوں نے اپنے مردوں کو منتقل کرنا شروع کیا تو ایک نوجوان کی قبر میں یہ حالت تھی وہ اپنے ہاتھ خود چبارہا تھا۔ (شرح الصدور)

### ☆ تمام بدن میں کیلیں:-

عبدالمومن بن عبداللہ رضی اللہ عنہ روایت فرماتے ہیں کہ ”ایک کفن چور نے توبہ کی تو اس سے دریافت کیا گیا کہ تو نے اپنے اس زمانے میں جو عجیب تر چیز دیکھی ہو، وہ بیان کر۔“ وہ کہنے لگا کہ میں نے ایک شخص کی قبر کھودی تو اس کے تمام بدن میں کیلیں لگی ہوئی تھیں اور ایک بڑی کیل سر میں پیوست تھی اور دوسری دونوں ٹانگوں میں۔“ ایک دوسرے کفن چور سے یہی سوال کیا گیا تو وہ کہنے لگا کہ ”میں نے ایک کھوپڑی دیکھی جس میں سیسہ پگھلا کر بھرا گیا تھا۔“ (ایضاً)

### ☆ ہائے میں نماز پڑھتا تھا:-

حضرت عبداللہ بن مدینی رضی اللہ عنہ اپنے ایک دوست سے روایت فرماتے ہیں کہ ”میں ایک مرتبہ اپنی زمین پر گیا تو ایک قبرستان کے پاس مغرب کا وقت ہو گیا، میں نے وہاں نماز مغرب ادا کی۔ تھوڑی دیر بعد ایک طرف سے رونے کی آواز آئی، میں اس قبر کے پاس گیا، جس سے آواز آرہی تھی میں نے کان لگا کر سنا کوئی کہہ رہا

تھا، ”ہائے میں نماز پڑھتا تھا، ہائے میں روزے رکھتا تھا۔“ میں نے اپنے ساتھ کو قریب کیا تو اس نے بھی وہ آواز سنی۔ پھر میں اپنی زمین پر واپس آ گیا۔ دوسرے روز میں نے پھر اسی جگہ پر جا کر نماز پڑھی۔ وقت مقررہ پر پھر وہی آواز آئی، اب کی مرتبہ جب میں گھر لوٹا تو دو مہینے تک ہمارا رہا۔“ (ایضاً)

### ☆ ناپگھلنے والی کیلیں :-

مروی ہے کہ ایک شخص بغداد کے لوہاری بازار میں آیا اور چھوٹی چھوٹی کیلیں فروخت کیں، لوہار نے ان کو پگھلانے کی بے حد کوشش کی لیکن ناکام رہا، بالآخر اس نے بچنے والے کو تلاش کیا اور اس سے پوچھا کہ تو یہ کیلیں کہاں سے لایا تھا؟ ”پہلے تو اس نے بتانے میں ٹال مٹول سے کام لیا لیکن پھر بعد میں بتایا کہ ”میں نے ایک قبر کھلی ہوئی دیکھی، اس میں ایک مردے کی ہڈیوں میں یہ کیلیں پیوست تھیں میں نے نکالنے کی کوشش کی، لیکن آرام سے نہ نکلیں، بالآخر میں نے ایک پتھر سے ہڈیوں کو توڑا اور یہ کیلیں جمع کر لیں۔“ (ایضاً)

### ☆ کالے رنگ کا آدمی :-

عبد الکافی رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں کہ ”وہ ایک جنازے میں شریک ہوئے تو ایک کالے رنگ کا آدمی بھی ساتھ شریک ہو گیا، لیکن اس نے نماز نہ پڑھی۔ جب مردے کو دفن دیا گیا تو وہ شخص ان کی طرف متوجہ ہو کر بولا، ”میں اس کا عمل ہوں۔“ یہ کہہ کر وہ بھی قبر میں داخل ہو گیا، اس کے بعد انھیں کچھ بھی نظر نہ آیا۔“ (ایضاً)

### ☆ کفن چور اندھا ہو گیا :-

حضرت ابو اسحاق ابراہیم رضی اللہ عنہ روایت کرتے ہیں کہ ”ہمارے

۱۔ اعمال کی سیاہ رنگت ظاہر کرتی ہے کہ مردہ برے اعمال کا حامل تھا۔

پاس ایک اندھا کفن چور تھا۔ وہ لوگوں سے بھیک مانگنے کے ساتھ ساتھ کہتا تھا کہ ”جو مجھے کچھ دے گا میں اسے ایک عجیب بات سناؤں گا اور جو زائد دے گا اسے ایک عجیب چیز دکھاؤں گا۔“ ایک مرتبہ کسی نے اسے کچھ دیا تو میں پاس ہی کھڑا ہو گیا، اس نے اپنی آنکھیں دکھائیں، میں نے دیکھا تو وہ گدی تک دھنسی ہوئی تھیں اور اس کے منہ سے گدی کے پیچھے کا منظر نظر آتا تھا۔ پھر اس نے بتایا کہ، ”میں اپنے شہر کا کفن چور تھا، لوگ مجھ سے ڈرا کرتے تھے، میں کسی کی پرواہ نہ کیا کرتا تھا۔ اتفاقاً قاضی شہر بیمار ہو گیا اور اس کے بچنے کی کوئی امید نہ رہی، تو اس نے سو دینار میرے پاس بھجے اور کہلوا بھیجا کہ ”ان سو دینار کے بدلے میں، میں اپنی پردہ داری تجھ سے خریدنا چاہتا ہوں۔“ میں نے دینار لے لئے۔ پھر اتفاقاً وہ تندرست ہو گیا اور پھر کچھ عرصے بعد بیمار رہ کر انتقال کر گیا۔ میں نے سوچا کہ ”وہ پیسے تو پہلے والے مرض کے تھے، چنانچہ اس کا کفن بھی چرانا چاہئے۔“ جب میں نے اس ارادے سے قبر کھودی تو قبر میں عذاب کے آثار تھے، قاضی کے بال بھرے ہوئے تھے اور آنکھیں سرخ ہو رہی تھیں۔ اچانک میں نے اپنے گھٹنوں میں سخت درد محسوس کیا اور کسی نے میری آنکھوں میں انگلیاں ڈال کر مجھے اندھا کر دیا اور کہا کہ ”اے اللہ عزوجل کے دشمن! تو اللہ کے بھیدوں پر کیوں مطلع ہوتا ہے؟“ (ایضاً)

### ☆ آہ، آہ کی آوازیں :-

یزید بن عبد اللہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ ”ایک شخص ایک قبر کے پاس پہنچا تو اس نے قبر سے آہ، آہ کی آوازیں سنیں، جب اس نے کان لگا کر سنا تو آواز آرہی تھی کہ ”تجھے تیرے عمل نے رسوا کر دیا۔“ (ایضاً)

ما قبل میں صرف وہ عذباتِ قبر ذکر کئے گئے ہیں کہ جو اللہ تعالیٰ نے لوگوں پر

حصولِ عبرت کے لئے منکشف فرمائے۔ سمجھ دار کے لئے ان ہی میں بہت کچھ موجود

ہے اور نادان انسان کو تو چاہے سارا قرآن ہی کیوں نہ سنا دیا جائے وہ درجہ عبرت حاصل کرنے کے لئے بالکل تیار نہیں ہوتا۔ گناہ گار و نافرمان کو قبر کے عذاب کے علاوہ بوقت موت، بروز قیامت اور اگر اللہ ناراض ہو تو جہنم میں دخول کی صورت میں بھی شدید ترین عذابات بھگتنا پڑیں گے، جیسا کہ آیات کریمہ اور احادیث مبارکہ سے ثابت ہے۔

اللہ تعالیٰ معمولی وقتی لذت کی خاطر سخت عذابات کا مستحق بننے سے بچنے کی توفیق عطا فرمائے۔ آمین بجاہ النبی الامین ﷺ

## آٹھواں علاج

خواہشاتِ نفسانی کی مخالفت :-

”شیطانی چکر“ سمیت ہر قسم کے گناہ سے خود کو محفوظ رکھنے کے لئے ”خواہشاتِ نفسانی کی مخالفت کی عادت“ اختیار کرنا بے حد ضروری ہے۔ نفس کی مخالفت کے بغیر کامیابی کا حصول ناممکنات میں سے ہے۔ یہ حقیقت ہے کہ نفس پر غلبہ حاصل کرنا اور پھر اس پر استقامت پزیر رہنا مشکل ترین کاموں میں سے ایک ہے، لیکن اگر خلوص کے ساتھ اس کوشش کا آغاز کیا جائے تو اللہ عزوجل کی جانب سے غیبی امداد ضرور حاصل ہوتی ہے اور پھر کچھ عرصے کی محنت کے بعد سابقہ غیر قابو نفس، ہر معاملے میں اطاعت کرنے لگ جاتا ہے، جیسا کہ اللہ تعالیٰ کا فرمانِ عالیشان ہے،

”وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ ☆“

ترجمہ: اور جنہوں نے ہماری راہ میں کوشش کی ضرور ہم انہیں اپنے راستے دکھادیں گے اور بے شک اللہ نیکوں کے ساتھ ہے۔ (کنز الایمان، عنکبوت ۲۹، پ ۲۱)

نفسانی خواہشات کی مخالفت کا ذہن بنانے کے لئے ”اتباعِ نفس“ کی مذمت اور ”مخالفتِ نفس“ کی فضیلت پر غور و تفکر بہت ضروری ہے۔ ذیل میں اولاً

”اتباعِ نفس“ کی مذمت اور ثانیاً ”مخالفتِ نفس“ کی فضیلت پر چند کلمات ملاحظہ فرما کر اپنے اندر اس عظیم کام کی ہمت پیدا کرنے کی کوشش کیجئے۔  
اتباعِ نفس کی مذمت :-

اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا، ”وَاتَّبِعْ هَوَاهُ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ الْكَلْبِ تَرْجَمَهُ : اور اپنی خواہش کا تابع ہو تو اس کا حال کتے کی طرح ہے۔“ (کنز الایمان، اعراف ۱۷۶ پ ۹)  
☆ ایک اور مقام پر ارشاد ہوا، ”وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ“ ترجمہ : اور خواہش کے پیچھے نہ جانا کہ تجھے اللہ کی راہ سے بہکا دے گی۔

(کنز الایمان، ص: ۲۶، پ: ۲۳)

☆ ایک جگہ ارشاد فرمایا، ”أَفْرَاءَ يُتَّخَذُ مِنَ الْهَوَاهُ“ ترجمہ : بھلا دیکھو تو وہ جس نے اپنی خواہش کو اپنا خدا ٹھہرا لیا۔ (کنز الایمان، الجاثیہ ۲۳ پ ۲۵)  
☆ حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا، ”تین چیزیں ہلاک کر دینے والی ہیں ﴿1﴾ پیروی کیا جانے والا نخل۔ ﴿2﴾ پوری کی جانے والی خواہش۔ ﴿3﴾ آدمی کا اپنے آپ کو پسند کرنا (یعنی عجب و خود پسندی۔) (مجمع الرواۃ للہیثمی)

☆ امام شافعی رضی اللہ عنہ نے ارشاد فرمایا،

إِذَا جَالَ أَمْرُكَ فِي مَغْنِينٍ

وَلَمْ تَدْرِ حَيْثُ الْخَطَاءِ وَالصَّوَابِ

(جب تیرا معاملہ دو مقاصد میں پھر رہا ہو اور تو نہ جانتا ہو کہ غلط کون سا ہے اور ٹھیک کون سا؟)

فَخَالَفَ هَوَاكَ فَإِنَّ الْهَوَى

يَقُودُ النَّفْسَ إِلَى مَا يُعَابِ

(تو خواہش کی مخالفت کر، کیونکہ خواہش انسان کو معیوب باتوں کی طرف لے جاتی ہے۔) (مکاشفة القلوب)

☆ ایک شاعر کہتا ہے کہ

إِنَارَةُ الْعَقْلِ مَكْسُوفٌ بِطَوَعِ هَوَى

وَ عَقْلٌ عَاصِي هَوَى يَزِدَادُ تَنَوِيرًا

(اتباعِ عقل کے باعث ہی عقل کی روشنی بھٹی ہوئی ہے اور خواہش کی مخالفت کرنے والے کی عقل کی روشنی بڑھ جاتی ہے۔) (ایضاً)

مخالفتِ نفس کی فضیلت :-

☆ حضرت عبد اللہ بن عمرو رضی اللہ عنہ روایت فرماتے ہیں کہ

رسول اللہ ﷺ کا فرمانِ عالیشان ہے کہ ”لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّىٰ يَكُونَ هَوَاهُ تَبَعًا لِمَا جِثَّتْ بِهِ“ (یعنی تم میں سے کوئی اس وقت تک (کامل) مومن نہیں ہو سکتا جب تک کہ اپنی خواہشات کو میرے لائے ہوئے احکام کے تابع نہ کر دے۔) (مشکوٰۃ)

ہدینہ :- یقیناً پیارے آقا ﷺ کی لائی ہوئی تعلیمات پر عمل پیرا ہونا ”نفس کی مخالفت“ کے بغیر ممکن نہیں، چنانچہ معلوم ہوا کہ جو نفس کی مخالفت کرے گا تو اللہ تعالیٰ اس کے ایمان کو کامل فرمادے گا۔

☆ بزرگ ہوا میں :-

خلیل بن خدیوہ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”ایک مرتبہ حضرت ابراہیم رضی اللہ عنہ ایک عابد کے پاس سے گزرے جو ہوا میں اللہ تعالیٰ کی عبادت کر رہا تھا، آپ نے اس سے پوچھا، ”تجھے اللہ عزوجل کی بارگاہ سے یہ مقام و مرتبہ کس وجہ سے حاصل ہوا؟“ عرض کی اس معمولی وجہ سے کہ ”میں نے خود کو دنیا سے الگ کر لیا، لا یعنی گفتگو سے پرہیز کیا، جس کا مجھے حکم دیا گیا میں نے اس میں غور کر کے پیروی اختیار کی اور جس سے مجھے منع کیا گیا میں غور کر کے اس سے رک گیا۔ لہذا اب یہ حالت ہے کہ جب میں اس سے التجاء کرتا ہوں تو وہ عطاء فرماتا ہے، جب دعا کرتا ہوں تو قبول کرتا ہے، جب



اس کے متعلق قسم کھاتا ہوں تو اس قسم سے بری کر دیتا ہے (یعنی اسے پورا کر دیتا ہے۔) میں نے اپنے رب عزوجل سے یہ سوال کیا تھا کہ وہ مجھے ہوا میں ٹھہرا دے، تو اس نے مجھے ٹھہرا دیا۔“ (زم الہوی)

☆ حضرت سلیمان بن داؤد رضی اللہ عنہ نے ارشاد فرمایا، ”جو شخص اپنی خواہشات پر قابو پالیتا ہے وہ اس شخص سے زیادہ طاقت ور ہے جو کسی شہر کو اکیلے فتح کرے۔“ (احیاء العلوم)

☆ اپنی مرضی اللہ کی مرضی کے تابع :-

حضرت حذیفہ بن قنادہ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”میں ایک کشتی میں سفر کر رہا تھا کہ اچانک وہ کشتی ٹوٹ گئی۔ میں اور ایک عورت ایک تختے پر باقی رہ گئے، ہم نے سات دن اسی حالت میں گزارے۔ پھر عورت نے کہا کہ ”مجھے پیاس لگی ہے۔“ یہ کہہ کر اللہ عزوجل سے پانی طلب کیا، میں نے دیکھا کہ آسمان سے ایک زنجیر اتاری گئی، جس کے ساتھ پانی کا ایک کوزہ لٹکا ہوا تھا۔ عورت نے اس سے پانی پی لیا۔ میں نے اس زنجیر کو دیکھنے کے لئے اوپر سر اٹھایا تو ایک آدمی کو ہوا میں چوڑی مارے بیٹھے دیکھا۔ میں نے پوچھا، ”تم کون ہو؟“ اس نے کہا، ”انسان ہوں۔“ میں نے کہا، ”تم اس درجے پر کیسے پہنچے؟“ میں نے اپنی مرضی کو اللہ کی مرضی کے تابع کر دیا، پس اسی نے مجھ کو یہاں بٹھایا ہے جیسا کہ تم دیکھ رہے ہو۔“ (زم الہوی)

☆ حضرت ابو علی دقاق رضی اللہ عنہ فرمایا کرتے تھے کہ ”جس شخص نے جوانی میں اپنی خواہشات پر قابو پالیا، اللہ تعالیٰ اس کو بڑھاپے میں فرشتہ صفت بنا دے گا۔“

(زم الہوی)

☆ حور کا مہر :-

علی بن سعید رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”میں نے خواب میں ایک عورت

دیکھی، جو دنیا کی عورتوں کی مثل نہیں تھی۔ میں نے اس سے پوچھا تو کون ہے؟“ کہا، ”حور ہوں۔“ میں نے کہا کہ ”میرے ساتھ شادی کرو گی؟“ کہا، ”میرے آقا (یعنی اللہ تعالیٰ) کو میرے ساتھ نکاح کا پیغام دو۔“ میں نے پوچھا، ”تیرا مہر کیا ہے؟“ کہا، ”تمہارا اپنے نفس کو اس کی پسندیدہ چیزوں سے بازر کھنا۔“ (ذمہ منہوی)

اللہ عزوجل ہمیں موت سے پہلے پہلے اپنے نفس کی مکمل طور پر مخالفت کرنے کی توفیق عطا فرمائے۔ آمین بجاہ النبی الامین ﷺ

## نواں علاج

مقصد زندگی پر نظر:-

اس برے کام سے مکمل طور پر نجات کے لئے ”اپنے مقصد حیات“ کا جاننا اور پھر اس کی تکمیل کے لئے ”بھرپور عملی کوشش“ کو اختیار کرنا بھی بہت ضروری ہے۔ کیونکہ جس طرح مزدور کو مزدوری اسی وقت ملتی ہے کہ جب وہ اپنا کام پورا کر دکھاتا ہے، بغیر کام مکمل کئے مزدوری کی توقع، یقیناً بے وقوفی اور کام دینے والے کے عتاب کا سبب بنے گی۔ بالکل اسی طرح اللہ تعالیٰ نے ہمیں جس مقصد کے لئے یہ مختصر سی زندگی عطا فرمائی اس کی تکمیل کے بدلے جنت اور عدم تکمیل کی صورت میں جنت سے محرومی اور مالک کائنات کی ناراضگی قبول کرنی پڑے گی۔

اب یہ بات تو ہر بے وقوف سے بے وقوف مسلمان بھی تسلیم کرے گا کہ اللہ عزوجل نے مردوں کو، ”عورتوں کو تاکنے، ان کا پیچھا کرنے، ان پر الٹی سیدھی آوازیں کسنے، انہیں محبت بھرے خطوط لکھنے، ذہن میں ان کا تصور لا کر لذت حاصل کرنے اور ان کے باعث بے شمار دیگر گناہوں میں مبتلاء ہونے کے لئے تو پیدا نہیں فرمایا اور نہ ہی عورتوں کو اس لئے کہ اجنبی لڑکوں کو جان بوجھ کر اپنے پیچھے لگایا جائے، ان سے تحفظ وصول کئے جائیں، ان کے ساتھ اسکوٹر پر بالکل چپک کر بیٹھا جائے، ان کے ہاتھوں

میں ہاتھ ڈال کر پکنک پوائسنٹس پر گھوما جائے اور پھر نفسانی خواہشات سے مغلوب ہو کر ان کے ہمراہ منہ کالا کیا جائے یا گھر سے راہ فرار اختیار کر کے اپنے بوڑھے والدین کے لئے بدنامی کا باعث بنا جائے۔ ”کیونکہ اللہ عزوجل ایسے بے کار و گندے کاموں کے لئے تخلیق مخلوق سے بالکل بے نیاز و پاک و صاف ہے۔ نتیجہ یہ نکلا کہ اس بات میں کوئی شک نہیں ہو سکتا کہ اس نے ہمیں کسی بہت ہی پاکیزہ مقصد کے لئے پیدا فرمایا ہے۔ اب یقیناً سوال پیدا ہوتا ہے کہ آخر وہ کون سا مقصد ہے کہ جس کی تکمیل کے لئے اللہ کریم نے ہمیں زندگی جیسی اعلیٰ نعمت عطا فرمائی؟ لاریب اس کے جواب کے لئے قرآن پاک سے رجوع کرنا بے حد مفید رہے گا، چنانچہ اللہ تعالیٰ ”سورہ ملک“ میں ارشاد فرماتا ہے کہ ”الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيْكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ط“ ﴿ترجمہ۔ وہ جس نے موت اور زندگی پیدا کی کہ تمہاری جانچ ہو تم میں سے کس کا کام زیادہ اچھا ہے۔﴾ (نزل الامان، الملک ۲، ۲۹)

اس آیت پاک سے بالکل واضح طور پر معلوم ہو گیا کہ ہمیں مذکورہ غلیظ کاموں کے لئے نہیں بلکہ نیک اعمال کی ادائیگی کے لئے اس دنیا میں بھیجا گیا ہے، پس اب اگر ہم اللہ عزوجل کو راضی کرنا چاہتے ہیں تو ہمیں ان بیکار کاموں سے خود کو بچا کر نیک اعمال کی ادائیگی کا عادی بننا پڑے گا، تاکہ اخروی انعامات کے مستحق بن سکیں، بصورت دیگر ہو سکتا ہے کہ اللہ تعالیٰ ناراض ہو کر ہمیں انعامات سے محروم اور عذاب میں گرفتار فرمادے۔

اللہ جل شانہ ہمیں ہر بے مقصد کام سے بچ کر صرف بامقصد کاموں کو اختیار کرنے کی توفیق عطا فرمائے۔ آمین بجاہ النبی الامین ﷺ

دسواں علاج

موت کی یاد اور تلاوتِ قرآن:-

جیسا کہ پہلے گزر چکا کہ ”شیطانی چکر“ میں مبتلاء کروانے میں ”نفس و شیطاں“ بڑا اہم کردار ادا کرتے ہیں، ان دونوں کی گمراہ کن دعوت قبول کرنے کی وجہ سے انسان غفلت کا شکار ہو جاتا ہے، پھر یہی غفلت اسے گناہوں میں مبتلاء کروادیتی ہے۔ اور اللہ تعالیٰ کی نافرمانیوں کا عادی ہو جانا، دل کی سیاہی کا سبب بنتا ہے، اور پھر دل کی یہ سیاہی قبولِ حق و نصیحت کی راہ میں بہت بڑی رکاوٹ بن جاتی ہے، اور جب انسان خطاؤں کا عادی ہو جائے اور نصیحت قبول کرنا بھی اسے بوجھ محسوس ہو تو پھر آخرت کی تباہی و بربادی یقیناً اس کا مقدر بن جائے گی۔ لہذا اس چکر سے نجات و محفوظ رہنے کے لئے غفلت اور دل کی سیاہی کو دور کرنا بہت ضروری ہے۔ اور ان دونوں سے امن حاصل کرنے کے لئے ”موت کو یاد اور قرآنِ کریم کی تلاوت کرنا“ لازم و ضروری ہے۔ جیسا کہ

☆ حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ کا فرمانِ عالیشان ہے کہ ”ان دلوں کو بھی زنگ لگ جاتا ہے جیسا کہ لوہے کو زنگ لگ جاتا ہے۔“ عرض کی گئی، ”یا رسول اللہ (صلی اللہ علیہ وسلم)! ان کو روشن کرنے کا طریقہ کیا ہے؟“ فرمایا، ”قرآنِ پاک کی تلاوت کرنا۔“ (کنز العمال للتحفی الہندی)

☆ حضرت ابراہیم خواص رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”دل کی دو پانچ چیزوں میں ہے۔ (1) قرآنِ عظیم کو فکر کے ساتھ پڑھنا۔ (2) پیٹ کو (حرام و مشتبہ چیزوں اور زیادہ کھانے سے) خالی رکھنا۔ (3) رات کو تہجد پڑھنا۔ (4) سحری کے وقت اللہ تعالیٰ کے سامنے عاجزی و انکساری سے گڑ گڑانا۔ (5) نیک لوگوں کی صحبت میں بیٹھنا۔ (زم) کیا ابھی دل جھکنے کا وقت نہیں آیا:-

الفصیل بن موسیٰ زحمہ اللہ علیہ نے بیان کیا کہ ”فضیل بن عیاض ڈاکو تھے اور

ایورواور سرخس کے درمیانی علاقہ میں ڈاکہ زنی کیا کرتے تھے۔ ان کی توبہ کا سبب یہ ہوا کہ ان کو ایک لڑکی سے عشق ہو گیا، ایک مرتبہ جب وہ دیوار پر چڑھ کر اس کے پاس جا رہے تھے تو ان کے کانوں میں قرآن مجید کی تلاوت کی آواز آئی، پڑھنے والا یہ آیت پڑھ رہا تھا ”اَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ۔ ترجمہ: کیا ایمان والوں کو ابھی وہ وقت نہ آیا کہ ان کے دل جھک جائیں اللہ کی یاد کے لئے۔“ اس پر انہوں نے کہا ”اے میرے رب عزوجل! ہاں وقت آ گیا ہے۔“ پھر یہ واپس چلے آئے۔ انہوں نے رات ایک ویرانہ میں گزار دی وہاں کچھ مسافر لوگ تھے، ان میں سے ایک نے کہا ”یہاں سے چلے چلو۔“ دوسروں نے کہا ”صبح تک یہیں رہو کیونکہ راستہ میں فضیل ہے، وہ ہمیں لوٹ لے گا۔“ اس پر فضیل نے توبہ کر لی اور انہیں امان دی اور تادم مرگ مکہ میں رہا۔ (رسالہ تفسیر)

**حلیہ:**۔ مذکورہ حدیث پاک، قول مبارک اور واقعہ سے معلوم ہوا کہ دل کا علاج قرآن پاک کی تلاوت میں پوشیدہ ہے۔ لیکن اس کا مکمل فائدہ اسی صورت میں ہو گا کہ جب قرآن کو ”ترجمہ و تفسیر“ کے ساتھ پڑھا جائے۔ اس کے لئے مشورہٴ عرض ہے کہ ”ایسا قرآن پاک خرید لیجئے کہ جس کے ساتھ اعلیٰ حضرت رضی اللہ عنہ کا ترجمہ قرآن ”کنز الایمان“ اور مولانا نعیم الدین مراد آبادی رضی اللہ عنہ کی تفسیر ”خزائن العرفان“ ہو۔ اب روزانہ جتنا آسانی کے ساتھ پڑھ سکیں اولاً تلاوت کیجئے اور پھر ترجمہ و تفسیر پڑھئے ان شاء اللہ عزوجل کچھ ہی دنوں میں واضح فرق خود محسوس فرمائیں گے، لیکن ضروری ہے کہ درمیان میں ناغہ بالکل نہ ہو۔

☆ حضرت عطاء خراسانی رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ ایک

ایسی مجلس کے پاس سے گزرے کہ جس میں خوب ہنسی مذاق ہو رہا تھا۔ (اس غفلت کو

ملاحظہ فرما کر) آپ نے ارشاد فرمایا، ”اپنی مجلس میں لذتوں کو توڑنے والی چیز کی ملاوٹ بھی کر لیا کرو۔“ عرض کی گئی، یا رسول اللہ (صلی اللہ علیہ وسلم)! وہ کیا ہے؟“ آپ نے فرمایا، ”موت کی یاد۔“ (شرح الصدور)

☆ حضرت زید سلمی رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ جب اپنے صحابہ میں غفلت محسوس کرتے تو بلند آواز سے پکار کر فرماتے، ”اے لوگو! تمہارے پاس موت آگئی، نیک بختی کا پیغام بن کر یا بد بختی کا۔“ (شعب الایمان)

ان احادیث سے بخوبی اندازہ لگایا جاسکتا ہے کہ موت کی یاد غفلت کو دور کرنے کا ایک عظیم سبب ہے۔ ہمارے اسلاف کرام کس طرح ہمہ وقت موت کی یاد میں مشغول رہا کرتے تھے اس کی تھوڑی سی جھلک حصولِ عبرت کے لئے درج ذیل واقعات میں ملاحظہ فرمائیے۔

### ☆ کوچ کے لئے تیار قافلہ :-

کسی نے ایک بزرگ کو قبرستان سے آتے دیکھا، تو پوچھا، ”کہاں سے تشریف لارہے ہیں؟“ فرمایا، ”اس مقام پر ایک قافلہ خیمہ زن ہے، اسی کے پاس سے آرہا ہوں۔“ عرض کی، ”کیا اہل قافلہ سے کچھ گفتگو بھی ہوئی؟“ فرمایا، ”ہاں، میں نے ان لوگوں سے پوچھا تھا کہ ”یہاں سے کوچ کب کرو گے؟“ تو انہوں نے جواب دیا کہ ”جب تم لوگ بھی شامل قافلہ ہو جاؤ گے۔“ (روض الریاضین)

### ☆ مُردوں کی تمنا:-

حضرت ابراہیم بن یزید عبدی رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ میرے پاس حضرت ریح قیسی رضی اللہ عنہ تشریف لائے اور فرمایا، ”ہمارے ساتھ آخرت والوں کے پاس چلو تاکہ ہم ان کے پاس جا کر ایک عہد باندھیں۔“ میں ان کے ساتھ چل

پڑا، حتیٰ کہ ہم قبرستان پہنچ گئے۔ وہاں ایک قبر کے پاس بیٹھ کر انھوں نے فرمایا، ”اے ابو اسحق! تمہارا کیا خیال ہے، اگر ان مردوں میں سے کوئی تمنا کرے تو کیا تمنا کرے گا؟“ میں نے کہا، ”واللہ! وہ یہ تمنا کرے گا کہ اس کو دنیا میں واپس بھیج دیا جائے تاکہ وہ اللہ تعالیٰ کی اطاعت کی باتیں سنے اور اپنی اصلاح کرے۔“ یہ سن کر آپ نے فرمایا، ”ہم ابھی اس دنیا میں موجود ہیں (لہذا اپنی اصلاح کرنا ممکن ہے) پھر آپ اٹھ کھڑے ہوئے اور عبادت و ریاضت میں خوب مشقت برداشت کی اور بہت تھوڑا عرصہ زندہ رہ کر فوت ہو گئے۔ (زم الہوئی لابن جوزی)

### ☆ آپ کو بھی ایک دن مرنے کے :-

منقول ہے کہ ایک روز حضرت یزید رقاشی رضی اللہ عنہ، حضرت عمر بن عبد العزیز رضی اللہ عنہ کے پاس تشریف لائے، تو آپ نے ان سے فرمایا، ”اے یزید! مجھے کچھ نصیحت کیجئے۔“ انھوں نے کہا، ”اے امیر المومنین! آپ پہلے خلیفہ نہیں جو مریں گے۔ (یعنی آپ سے پہلے والے بھی دنیا سے رخصت ہو گئے اور ان کی موت باعثِ عبرت ہے۔) یہ سن کر آپ رونے لگے، پھر فرمایا، ”کچھ اور ارشاد فرمائیے۔“ انھوں نے کہا، ”آپ کے تمام آباء اجداد مر چکے ہیں، آپ اور آدم علیہ السلام کے درمیان جتنے باپ ہیں، ان میں سے اس وقت کوئی بھی زندہ نہیں۔“ (اور یہ اس بات کی دلیل ہے کہ آپ بھی ضرور مریں گے۔) یہ سن کر آپ مزید روئے، پھر فرمایا، ”کچھ اور نصیحت کیجئے۔“ اس پر انھوں نے کہا، ”جنت اور دوزخ کے درمیان اور کوئی مرتبہ نہیں، لہذا آپ یا تو جنت میں جائیں گے یا جہنم میں۔“ یہ سن کر آپ بے ہوش ہو کر گر پڑے۔ (تنبیہ المغترین)

ہدایہ :- اپنے اسلاف کے نقش قدم پر چلتے ہوئے ہر مسلمان کو عموماً اور ”چکر میں گرفتار خواتین و حضرات“ کو خصوصاً اپنی موت کو ہمہ وقت یاد رکھنے کی کوشش کرنی



چاہئے۔ ضمناً عرض ہے کہ اپنی موت کو یاد کرنے کے کئی طریقے ہیں مثلاً (i) اطراف میں اٹھنے والے جنازوں کو دیکھ کر۔ (ii) اخبار میں ایکسڈنٹ وغیرہ کے ذریعے ہلاک ہونے والوں کی خبریں پڑھ کر۔ (iii) کبھی موقع ملے تو اسپتال کے مردہ خانے میں جا کر مردوں کو دیکھنے کے ذریعے۔ (iv) کبھی قبرستان میں اکیلے جا کر قبروں میں موجود لوگوں کی بے بسی کو یاد کر کے۔ (v) اور کبھی تصور ہی تصور میں خود کو مردہ حالت میں دیکھیں، کبھی تختہ غسل پر، کبھی سفید کفن میں لپٹے ہوئے، کبھی مردوں کی چارپائی پر، کبھی لوگوں کو خود پر نماز پڑھتے ہوئے، کبھی اپنے گھر والوں اور دیگر رشتہ داروں کو اپنی لاش پر روتا دیکھ کر، غرض یہ کہ موت کے بعد کے مناظر کو بار بار نگاہوں کے سامنے لائیں، ان شاء اللہ تعالیٰ کچھ ہی عرصے میں اللہ عزوجل کی رحمت مکمل طور پر اپنی آغوش میں لے لے گی۔

اللہ جل شانہ ہم سب کو قرآن پاک کی تلاوت اور موت کو کثرت سے یاد رکھنے کی توفیق عطا فرمائے۔ آمین

## گیارہواں علاج

عشق حقیقی کے حصول کی کوششیں:

پچھے بیان کردہ تفصیل سے بخوبی معلوم ہو گیا کہ عشق

مجازی میں مبتلاء ہونے والوں کے حصے میں عموماً دنیا و آخرت کے خسارے کے علاوہ اور کچھ بھی نہیں۔ لہذا ایسے حضرات اگر عشق و محبت کے بغیر رہنا اپنے لئے ناممکن تصور کرتے ہوں تو انھیں چاہئے کہ اس شیطانی چکر سے جان چھڑا کر ”عشق حقیقی“ کے حصول کے لئے محنت کریں۔ تھوڑا سا غور کیجئے کہ جب اس ”مجازی محبت“ میں اتنی لذت ہے تو ”حقیقی عشق“ میں کتنا مزہ پوشیدہ ہوگا؟، یہی وجہ ہے کہ جب کوئی ایک

مرتبہ ”عشقِ حقیقی“ کی چاشنی سے آشنا ہو جائے تو پھر اسے ”عشقِ مجازی“ کے پھیکے پن میں بالکل مزہ نہیں آتا، اور پھر اللہ تعالیٰ کی جانب سے اس پر جن انعامات کی بارش ہوتی ہے، ان کے بارے میں جاننے کے بعد تو صرف وقتی مزے کی خاطر ”شیطانی چکر“ میں پھنسنے والوں کی بے وقوفی میں کسی قسم کا شک باقی نہیں رہ جاتا۔ امید ہے کہ درج ذیل اقوال و واقعات کو خوب سنجیدگی سے پڑھ کر آپ بھی راقم الحروف سے سو فیصد اتفاق فرمائیں گے۔

☆ حضرت احمد بن ابی الحواری رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ”محمود نے حضرت ابو سلیمان دارانی رضی اللہ عنہ سے سوال کیا کہ ”اللہ عزوجل کا مقرب بننے کے لئے کون سا عمل بڑا ذریعہ ہے؟“ آپ سوال سن کر رو پڑے اور فرمایا، ”مجھ جیسے سے ایسا عظیم سوال کیا جا رہا ہے، پھر فرمایا، ”سب سے زیادہ پسندیدہ عمل، جس کے ذریعے اللہ تعالیٰ کا قرب حاصل ہوتا ہے، یہ ہے کہ اللہ عزوجل تیرے دل کی طرف متوجہ ہو تو تیری یہ حالت ہو کہ تو دنیا اور آخرت میں صرف اسی کا طلب گار ہو۔“ (ذم الہوی لابن جوزی)

☆ اس کی تجہیز و تکفین فرشتے کریں گے:-

منقول ہے کہ حضرت ذوالنون مصری رضی اللہ عنہ ایک بار ملکِ شام تشریف لے گئے۔ آپ کا گزر ایک نہایت سرسبز و شاداب سیبوں کے باغ پر ہوا، آپ نے ملاحظہ فرمایا کہ وہاں ایک نوجوان مشغول نماز ہے۔ آپ کو اس نوجوان سے ہم کلامی کا اشتیاق ہوا، جب اس نے سلام پھیرا تو آپ اس سے سلام کر کے ہم کلام ہوئے، لیکن اس نے کوئی جواب نہ دیا، بلکہ زمین پر یہ شعر لکھ دیا،

مُنِعَ اللِّسَانُ مِنَ الْكَلَامِ لِأَنَّهُ

كَهْفُ الْبَلَاءِ وَ جَالِبُ الْآفَاتِ

فَإِذَا نَطَقْتَ فَكُنْ لِرَبِّكَ ذَاكِرًا

لَا تَنْسَهُ، وَ اِحْمَدُهُ، فِي الْحَالَاتِ

(یعنی زبان کلام سے روک دی گئی ہے، اس لئے کہ وہ طرح طرح کی بلاؤں کا غار ہے، اور آفتیں لانے والی ہے۔ اس لئے جب یو لو تو اللہ ہی کا ذکر کرو، اسے کسی وقت فراموش نہ کرو، اور ہر حال میں اس کی حمد کرتے رہو۔)

نوجوان کی اس تحریر کا آپ کے قلب پر گہرا اثر پڑا اور آپ پر گریہ طاری ہو گیا، جب کچھ افاقہ ہوا تو آپ نے بھی انگلی سے زمین پر یہ اشعار لکھے،

وَمَا مِنْ كَاتِبٍ إِلَّا سَيِّئِلِي

وَ يَنْقِي الدَّهْرُ مَا كَتَبْتَ يَدَاهُ

فَلَا تَكْتُبْ بِكَفِّكَ غَيْرَ شَيْءٍ

يَسْرُكَ فِي الْقِيَمَةِ أَنْ تَرَاهُ

(یعنی ہر لکھنے والا عنقریب بوسیدہ ہو جائے گا اور جو کچھ اس نے اپنے ہاتھ سے لکھا زمانہ اسے باقی رکھے گا اس لئے اپنے ہاتھ سے لکھو تو ایسی بات لکھو، جسے دیکھ کر تمہیں قیامت میں خوشی میسر ہو۔)

آپ فرماتے ہیں کہ میرا لکھا ہوا شعر پڑھ کر اس نوجوان نے ایک چیخ ماری اور اپنی جان آفرین کے سپرد کر دی۔ میں نے سوچا اس کی تجہیز و تکفین کا انتظام کر دوں، مگر غیب سے ایک آواز آئی، ”ذوالنون! اسے رہنے دو، رب کائنات نے اس سے وعدہ کیا ہے کہ اس کی تجہیز و تکفین فرشتے کریں گے۔“ فرماتے ہیں کہ یہ سن کر میں باغ کے ایک کونے میں مصروف عبادت ہو گیا اور چند کعتیں پڑھنے کے بعد اس طرف نظر کی تو وہاں اس نوجوان کا نام و نشان بھی نہ تھا۔“ (روض الراحین)

☆ پاگل کنیز:-

حضرت عطاء رضی اللہ عنہ کا ایک بازار سے گزر رہا تھا، وہاں ایک پاگل کتیر کی بولی لگ رہی تھی، لیکن کوئی اسے خریدنے کے لئے تیار نہ ہوتا تھا۔ آپ نے اسے پاگل جانتے ہوئے بھی سات دینار میں خرید لیا اور اپنے ساتھ گھر لے آئے۔ رات ہوئی تو دیکھا کہ اس نے چپکے سے اٹھ کر وضو کیا اور نماز شروع کر دی۔ نماز میں اس کے انہماک اور تضرع کی یہ کیفیت تھی کہ آنکھوں سے آنسوؤں کی برسات ہو رہی تھی، سانس پھول رہا تھا۔ اس کے بعد مناجات کی تو اس طرح کہنے لگی، ”اے میرے پروردگار! اس محبت کی قسم جو تو مجھ سے فرماتا ہے، مجھ پر رحم فرما۔“ آپ نے یہ الفاظ سنے تو اس کے جنون کا سبب سمجھ میں آگیا۔ آپ نے اس کے قریب آ کر فرمایا، ”تجھے اللہ عزوجل سے اس طرح دعا کرنی چاہیے کہ اے میرے پروردگار! اس محبت کی قسم جو میں تجھ سے کرتی ہوں تو مجھ پر رحم فرما۔“ اس نے جو بلا کہا کہ ”آپ تو بالکل بے کار آدمی ہیں، مجھ سے دور ہو جائیے، مجھے اس ذاتِ حق کی قسم! اگر وہ مجھ سے پیار نہ فرماتا تو آپ کو میٹھی نیند سلا کر مجھے عبادت کے لئے نہ اٹھاتا۔“ یہ کہہ کر وہ اوندھے منہ گر پڑی اور چند اشعار پڑھے، پھر بلند آواز سے پکار اٹھی، ”اے ارحم الراحمین! اب تک تیرا اور میرا راز پوشیدہ تھا، مگر اب یہ راز لوگوں پر ظاہر ہو چکا ہے، اس لئے بس اب تو مجھے اپنے پاس بلا لے۔“ آپ فرماتے ہیں کہ اس کے بعد اس نے ایک چیخ ماری اور اس کے ساتھ ہی اس کا دم نکل گیا۔

(روض الریاضین)

☆ اپنے پروردگار سے محبت کرو:-

مروی ہے کہ حضرت ذوالنون مصری رضی اللہ عنہ کوہ لبنان کے ایک چھوٹے سے غار میں تشریف لائے، تو وہاں آپ نے ایک بہت عمر رسیدہ بزرگ کو دیکھا، لاغری ان کے جسم پر طاری تھی اور گرد و غبار سے پورا بدن اٹا ہوا تھا اور نماز کی

اداگی میں مشغول تھے۔ جو نہی انہوں نے سلام پھیرا، آپ نے انہیں سلام کیا، انہوں نے جواب دے کر فوراً پھر نماز کی نیت باندھ لی اور مسلسل عصر تک مصروف نماز رہے، اس کے بعد ایک چٹان کا سہارا لے کر تسبیح پڑھنے لگے۔ جب کافی دیر گزر گئی تو آپ نے خود ہی آگے بڑھ کر عرض کی، ”حضور! میرے حق میں دعائے خیر فرمائیے۔“ فرمایا، ”اللہ، تجھے اپنے قرب سے مانوس فرمائے۔“ عرض کی کچھ اور؟“ فرمایا ”بیٹے! اللہ تعالیٰ جس کو اپنے قرب کی الفت سے نوازتا ہے اسے چار نعمتیں دیتا ہے۔ عزت بغیر نسب کے، علم بغیر طلب کے، غنا بغیر مال کے، انس بغیر جماعت کے۔“

اتنا فرمانے کے بعد ایک زوردار نعرہ لگایا اور پھر بے ہوش ہو گئے۔ تین روز تک اسی حالت میں گزار دئے۔ تین دن بعد ہوش آیا تو اٹھ کر وضو فرمایا، اور آپ سے پوچھا، ”میں نے کتنی نمازیں نہیں پڑھیں؟“ عرض کی تین روز کی۔ فوراً کھڑے ہوئے اور تمام نمازیں پوری کیں۔ پھر رخصت ہونے لگے، لیکن آپ نے روتے ہوئے ان کا دامن تھام لیا اور عرض کی، ”حضرت! میں تین دن تک صرف اس لئے حاضر خدمت رہا ہوں کہ کچھ اور نصیحت فرمائیں گے۔“ فرمایا، ”اپنے پروردگار سے محبت کر، اور اس کی محبت کے بدلے کسی معاوضے کا خیال نہ لا، کیونکہ جو اس کے سچے عاشق ہیں وہی ساری مخلوق کے تاجدار، زاہدوں کے سردار، رب کا انتخاب، خدا کے دوست، اللہ کے ولی اور اس کے حقیقی بندے ہیں۔“ آپ فرماتے ہیں کہ اس وقت انہوں نے پھر ایک چیخ بلند کی، میں نے دیکھا تو ان کا جسم بے جان پڑا تھا۔ تھوڑی دیر بعد ہی پہاڑ کے مختلف گوشوں سے عابدوں کی جماعت آپہنچی اور سب نے مل کر کفن و دفن کا انتظام کیا۔“ (ایضاً)

☆ باندی جنت میں :-

روایت ہے کہ ”شیخ محمد حسین بغدادی رضی اللہ عنہ حج کے لئے تشریف لے گئے۔ بازارِ مکہ میں ملاحظہ فرمایا کہ ایک بوڑھا، ایک باندی فروخت کرتے ہوئے پکار رہا تھا، ”میں کے اس عیبوں سے بری ہوں، کوئی پیس دینا سے زیادہ دے تو لے سکتا ہے۔“ آپ اس بوڑھے کے پاس پہنچے اور دریافت فرمایا کہ اس میں کیا عیب ہیں؟“ اس نے عرض کی، ”یہ پاگل ہے، ہر وقت اداں رہتی ہے، رات بھر بیدار اور دن بھر بھوک پیاسی رہتی ہے اور تنہائی پسند ہے۔“ یہ سن کر آپ نے اس لونڈی کو خرید لیا۔ قیام گاہ پر پہنچ کر وہ کچھ دیر سر جھکائے بیٹھی رہی پھر اس نے دریافت کیا کہ ”میرے آقا! اللہ تعالیٰ آپ پر رحم فرمائے، آپ کہاں کے باشندے ہیں؟“ فرمایا، ”عراق کا۔“ عرض کی، ”عراق میں کس شہر کے؟ کوفہ یا بصرہ؟“ فرمایا، ”نہ کوفہ، نہ بصرہ۔“ عرض کی پھر تو آپ مدینۃ السلام بغداد کے باشندے ہیں۔“ فرمایا، ”ہاں تو نے سچ کہا۔“ عرض کی، ”کیا خوب، وہ تو عابدوں اور زاہدوں کا شہر ہے۔“ آپ اس کی اس بات پر متعجب ہوئے اور فرمایا، ”اچھا یہ بتاؤ، تم بغداد کے بزرگوں میں سے کس کس کو جانتی ہو؟“ عرض کی، ”حضرت مالک بن دینار، حضرت بٹر حافی، حضرت صالح مزنی، حضرت ابو حاتم سجستانی، حضرت معروف کرخی، حضرت محمد بن حسین بغدادی، رابعہ عدویہ، شعوانہ، میمونہ رضی اللہ عنہم ان سب کو میں جانتی ہوں۔“ فرمایا، ”تو انھیں کس طرح جانتی ہے؟“ عرض کی، ”بھلا میں انھیں کیوں نہ پہچانوں گی یہ لوگ تو دلوں کے معالج اور محبانِ حق کے رہنما ہیں۔“

آپ نے فرمایا، ”کیا تو جانتی ہے کہ میں ہی محمد بن حسین بغدادی ہوں۔“ عرض کی، ”اے ابو عبد اللہ! میں نے اللہ تعالیٰ سے دعا مانگی تھی کہ آپ سے میری ملاقات کروادے۔ بتائیے آپ کی وہ دل سوز آواز کیا ہوئی جس سے اہل ارادت کے دل

میں زندگی پیدا ہوتی تھی اور سننے والوں کی آنکھیں اشک بار ہو جاتی تھیں؟“ فرمایا، ”میری وہ آواز اپنے حال پر ہے۔“ عرض کی، ”آپ کو رب ذوالجلال کی قسم! مجھے کلام اللہ کی کچھ آیتیں سنائیے۔“ آپ فرماتے ہیں کہ میں نے تلاوت سے پہلے بسم اللہ شریف پڑھی، جسے سنتے ہی وہ بے ہوش ہو گئی۔ میں نے اس کے منہ پر پانی کے چھینٹے مارے، تو ہوش آیا۔ عرض کی، ”یہ تو اس کا نام ہے، اس وقت میرا کیا حال ہو گا کہ جب میں اس کی معرفت حاصل کروں گی اور جنت میں اس کا دیدار نصیب ہو گا؟ اے ابو عبد اللہ! اللہ آپ پر رحم فرمائے، اور پڑھئے۔“ فرماتے ہیں کہ میں نے تلاوت شروع کی اور یہ آیت پڑھی، ”أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ نَجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءً مَحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ“☆

ترجمہ: کیا جنہوں نے برائیوں کا ارتکاب کیا یہ سمجھتے ہیں کہ ہم انہیں ان جیسا کر دیں گے جو ایمان لائے اور اچھے کام کئے ان کی زندگی اور موت برابر ہو جائے کیا ہی برا حکم لگاتے ہیں۔ ﴿

عرض کی اے ابو عبد اللہ! ہم نے نہ کسی بت کی پرستش کی اور نہ ہی کسی دوسرے کو بطور معبود قبول کیا۔ مزید پڑھئے اللہ تعالیٰ آپ پر رحم فرمائے۔“ فرمایا، ”پھر میں نے یہ آیت تلاوت کی، ”إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا لَا آخَاطَ بِهِمْ سُرَادِقَهَا وَإِنْ يَسْتَعِينُوا يُعَاثُوا بِمَا كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهُ بِشْرِ الشَّرَابِ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا“☆ ترجمہ: اور بے شک ہم نے ظالموں کے لیے وہ آگ تیار کر رکھی ہے جس کی دیواریں انہیں گھیر لیں گی اور اگر پانی کے لئے فریاد کریں تو ان کی فریاد رسی ہوگی اس پانی سے کہ چرخ دئے (کھولتے ہوئے) دھات کی طرح ہے کہ انکے



منہ بھون دے گا کیا ہی برا پینا ہے اور دوزخ کیا ہی بری ٹھہرنے کی جگہ۔“

عرض کی اے ابو عبد اللہ! آپ نے خود کو مایوسی کا پابند کر لیا ہے، امید و شکم کے درمیان رہیے، اور کچھ پڑھئے۔“ فرمایا، ”میں نے پڑھا، ”وَجُوه“ یَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا مُسْفِرَةٌ“ ☆ ضاحکہ“ مُسْتَبْشِرَةٌ“ ☆ ترجمہ: کتنے منہ اس دن روشن ہونگے ہنستے خوشیاں مناتے۔ ۱۔ ”وَجُوه“ یَوْمَئِذٍ نَّاطِرَةٌ“۔ ترجمہ: اور کچھ منہ اس دن بگڑے ہوئے ہوں گے۔ ۲۔“

عرض کی، ”جس روز وہ اپنے دوستوں کے لئے ظاہر ہوگا، مجھے اس سے ملنے کا کس قدر شوق ہوگا؟“ کچھ اور پڑھئے۔

فرمایا پھر میں نے پڑھا، ”يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ“ ☆  
 بَاكُونَ وَابْرَارٌ مِّن مَّعِينٍ ☆ لَا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنْفَوْنَ ☆  
 وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ☆ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ☆ وَخُورٍ عَيْنٍ“ ☆  
 كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ☆ جَزَاءً ۱۱ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ☆ ترجمہ: ان کے گرد لئے پھریں گے ہمیشہ رہنے والے لڑکے کوزے اور آفتابے اور جام اور آنکھوں کے سامنے بہتی شراب کہ اس سے نہ انہیں درد سر ہو اور نہ ہوش میں فرق آئے اور میوے جو پسند کریں اور پرندوں کا گوشت جو چاہیں اور بڑی آنکھ والی حوریں جیسے چھپے میں رکھے ہوئے موتی صلہ ان کے اعمال کا۔ ۲۔“

عرض کی اے ابو عبد اللہ! میرا خیال ہے کہ، ”آپ نے حور کو پیغام تو دیا ہے، مگر کیا مہر کے لئے کچھ خرچ بھی کیا ہے؟“

فرمایا، ”میں تو مفلس ہوں تو بتا کہ کیا کروں؟“ عرض کی، ”نمازوں کے

ساتھ شب بیداری کیجئے، ہمیشہ روزہ اور فقراء و مساکین سے محبت رکھئے۔“ اتنا کہتے کہتے بے ہوش ہو گئی۔ آپ نے اس کے چہرے پر پانی کے چھینٹے مارے، ہوش میں آئی تو مناجات کرنے لگی، پھر اللہ تعالیٰ کی حمد و ثناء کی اور اس کے بعد التجاء کرتے کرتے خاموش ہو کر زمین پر گر پڑی۔ آپ نے دیکھا تو وہ مر چکی تھی۔ آپ کو اس کے مرنے کا بہت صدمہ ہوا۔ نڈھال حالت میں کفن وغیرہ خریدنے بازار گئے، واپس آئے تو اسے ایک کفن میں ملبوس اور خوشبو سے آراستہ پایا، اس کے علاوہ اس پر دو جنتی لباس پڑے ہیں اور کفن پر دو نورانی سطریں لکھی ہیں،

لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ

اَلَا اِنْ اَوْلِيَاءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ۔

آپ اس کے کفن و دفن سے فارغ ہو کر اداس و غمگین اپنے حجرے میں چلے گئے۔ دو رکعت نماز پڑھ کر سو گئے۔ خواب میں اس باندی کو دیکھا کہ وہ جنت میں لعل و جواہر کا تاج پہنے، بہشتی لباس زیب تن کئے، پاؤں میں سرخ یا قوت کی جوتیاں ڈالے، آفتاب و ماہتاب سے زیادہ روشن و تابندہ رخسار کے ساتھ ٹہل رہی ہے۔ آپ نے دریافت فرمایا، ”تجھے یہ عظیم مقام کیسے ملا؟“ اس نے کہا، ”فقراء و مساکین کی محبت، استغفار کی کثرت اور مسلمانوں کے راستے سے تکلیف دہ چیزوں کے دور کرنے سے۔“

(ایضاً)

یونہی ما قبل بیان کے مطابق انبیاء علیہم السلام کی محبت بھی دراصل اللہ عزوجل کی ہی محبت ہے اور عشق حقیقی میں داخل۔ یونہی دینی دوستوں سے اللہ تعالیٰ کی رضا کی خاطر دوستی رکھنا بھی اسی میں شمار کیا جائے گا۔ لہذا عشق مجازی میں مبتلاء حضرات کو چاہئے کہ دینی دوستوں کے علاوہ انبیاء و اولیاء کرام سے عشق و محبت کے تعلق کو مضبوط

سے مضبوط تر کریں، خصوصاً تعلق سید الانبیاء، حبیب کبریٰ ﷺ کو۔ کیونکہ آپ ﷺ کا فرمان عالیشان ہے کہ ”تم میں سے کوئی اس وقت تک مومن نہیں ہو سکتا جب تک کہ میں اسے اس کے والد، اسکی اولاد اور تمام لوگوں سے زیادہ پیارا نہ ہو جاؤں۔“

(متفق علیہ)

ان شاء اللہ عزوجل ان نفوسِ قدسیہ کی محبت کی برکت سے نہ صرف دنیا میں امن و چین و سکون نصیب ہو گا بلکہ آخرت میں بھی کامیابی، قدم چومتی نظر آئے گی۔

### بارہواں علاج

محبوب سے متعلق گندگیوں پر غور:-

اگر کسی کی محبت دل سے دور نہ ہو رہی ہو اور اس کے باعث گناہوں میں مبتلاء ہونے کا صحیح اندیشہ ہو تو ایسے اعمال کا اختیار کرنا واجب و ضروری ہے کہ جن کی وجہ سے امن نصیب ہونے کا تھوڑا بہت بھی یقین ہو۔ ان ہی اعمال میں سے ایک عمل یہ بھی ہے کہ ایسی شخصیت کی ذات میں موجود گندگیوں پر غور و تفکر شروع کر دے، اگر یہ غور کرنے والا خود ”گندی فطرت“ کا مالک نہ ہو تو ایک، دو مرتبہ کے تصور کے ساتھ ہی دل میں بیزاریت و کراہیت کے آثار نمایاں ہونا شروع ہو جائیں گے۔

☆ علامہ ابن جوزی فرماتے ہیں کہ ”اگر انسان، بدن کی ان گندگیوں اور برائیوں کو فکر میں استعمال کرے کہ جنھیں لباس نے چھپا رکھا ہے، تو اس کا عشق ٹھنڈا ہو جائے۔“ (زم الہدیٰ)

☆ یہی وجہ تھی کہ حضرت عبداللہ ابن مسعود رضی اللہ عنہ فرمایا کرتے تھے کہ ”جب تم میں سے کسی کو کوئی عورت اچھی لگے تو تم اس کی آلائشوں اور گندگیوں پر

غور کرو۔“ (زم الہوی)

پچھلے صفحات میں اخروی انعامات پر غور کے تحت حضرت مالک بن دینار رضی اللہ عنہ والے واقعے کو ایک مرتبہ دوبارہ پڑھ کر دیکھئے، جس میں آپ نے امیر شخص کو توبہ کرواتے ہوئے اس طریقے کو بھی استعمال کیا تھا، چنانچہ آپ نے باندی کے عیوب بیان کرتے ہوئے ارشاد فرمایا تھا کہ ”یہ اگر عطر نہ لگائے تو اس کا جسم بدبو کرنے لگے، منہ نہ دھوئے تو اس سے تعفن اٹھنے لگے، بالوں کی صفائی نہ رکھے تو اس میں جو مین پڑ جائیں، ذرا عمر بڑی ہو تو اس پر بڑھا پٹاری ہو جائے اور دیکھنے کے لائق بھی نہ رہے، حیض اسے آتا ہے، پیشاب پاخانہ یہ کرتی ہے، طرح طرح کی نجاستوں سے آلودہ رہتی ہے اور رنج و غم و تکلیفوں سے اسے سابقہ پڑتا رہتا ہے۔“

☆ عقل مند شخص کی نصیحت :-

اسی طرح منقول ہے کہ ایک عقلمند شخص کا انتقال ہونے لگا تو اس نے اپنے بیٹے کو بلوایا اور اسے الوداعی نصیحت کرتے ہوئے کہا کہ بیٹے! اگر کبھی تیرا شراب پینے کو دل کرے تو پہلے شراب خانے جا کر کسی شرابی کو دیکھ لینا، اگر جو اکھیلنے کو دل چاہے تو پہلے کسی ہارے ہوئے ہوئے جواری کا مشاہدہ کر لینا اور اگر کبھی زناء کو دل کرے تو بالکل صبح کے وقت طوائف خانے جانا۔“

اس کے انتقال کے کچھ عرصے بعد لڑکے کے دل میں شراب پینے کا خیال پیدا ہوا، باپ کی نصیحت کے مطابق وہ نوجوان ایک شرابی کے پاس پہنچا جو نشے میں دھت ایک نالی میں گرا ہوا تھا، اس کی یہ عبرت ناک حالت دیکھ کر اس کے دل میں خیال پیدا ہوا کہ ”اگر میں نے بھی شراب پی تو میرا حشر بھی یہی ہو گا۔“ اس خیال کے ساتھ ہی اس نے شراب پینے کا ارادہ ترک کر دیا۔

پھر ایک مرتبہ شیطان نے اسے جوئے کی ترغیب دلائی، حسب وصیت یہ پہلے ایک ہارے ہوئے جواری کے پاس پہنچا، اس نے دیکھا کہ ہار جانے کے باعث وہ جواری شدید قسم کے رنج و غم میں گرفتار تھا اور اس کی حالت نہایت قابلِ رحم ہو رہی تھی، اس کی یہ حالت دیکھ کر اسے بھی اپنے بارے میں یہی خوف پیدا ہوا اور یوں جوئے سے بھی باز آ گیا۔

پھر کچھ عرصے بعد نفس نے زناء کی خواہش کا اظہار کیا، اس مرتبہ بھی یہ حسب نصیحت صبح کے وقت طوائف خانے پہنچا، جب دروازہ بجایا تو کچھ دیر بعد ایک طوائف باہر آئی، نیند سے بیدار ہونے کی وجہ سے اس کی آنکھوں میں گندگی بھری ہوئی تھی، بال بکھرے ہوئے تھے، بغیر سرخی پاؤڈر کے چہرہ بالکل بے رونق نظر آ رہا تھا اور اس پر مردنی سی چھائی ہوئی تھی، تروتازگی نام کونہ تھی، منہ سے بدبو کے بھپکے اڑ رہے تھے، لباس میلا کچھلا پن رکھا تھا جن سے پسینے کی بو بھی محسوس ہو رہی تھی، گویا کہ شام کو ملمع کاری کر کے ”شکار“ کو اپنی جانب راغب کرنے والی ”حور پری“ اس وقت غلاظت کا ایک ڈھیر نظر آرہی تھی، طوائف کا یہ بھیانک حلیہ دیکھ کر اس نوجون کے دل میں زناء سے کراہیت پیدا ہو گئی اور اس نے اپنے ارادے سے ہمیشہ کے لئے توبہ کر لی۔

(عامہ کتب)

پس اسی طرح ہر ”اصلاح و نجات کے خواہش مند عاشق“ کو چاہئے کہ اپنے محبوب کے عیوب کی فکر میں لگ جائے۔ نیز بہت بوڑھی عورتوں کو غور سے دیکھے۔ ایک وقت تھا کہ یہ بھی جوان تھیں، ان کا چہرہ بھی خوشنما ہوگا، لیکن بڑھاپے کے باعث

(۱- یاد رکھئے کہ بہت زیادہ بوڑھی عورتوں کو دیکھنا ممنوع نہیں کیونکہ ہدایہ میں ہے اگر عورت بہت زیادہ بوڑھی ہو کہ محلِ شہوت نہ ہو تو اس سے مصافحہ کرنے میں حرج نہیں“ (جب مصافحہ کرنا جائز تو دیکھنا بدرجہ

اولیٰ جائز ہوگا) (باب فی الوطی والنظر والمس)

وہ ساری رونق ختم ہو گئی اور اب صورتِ حال یہ ہے کہ کوئی ان کی طرف دیکھتا بھی نہیں، اگر عمر طویل ہوئی تو یہی معاملہ ایک دن اس کے محبوب کے ساتھ بھی ہو گا۔ جب یہ ایک ایسی حقیقت ہے کہ جس کا انکار ممکن ہی نہیں تو پھر چند روزہ مزوں کے لئے اللہ تعالیٰ اور اس کے رسول ﷺ کو ناراض کرنا، ”حماقت نہیں تو اور کیا ہے؟“

## تیسرا سوال علاج

فکر کو دراز کرے :-

جب انسان، نفس کی ہر خواہش کو پورا کرتا چلا جاتا ہے تو اس کی سوچ کا دائرہ بے حد محدود ہو جاتا ہے، کیونکہ ایسی صورتِ حال میں نفس اسے خواہش کی تکمیل کے نتیجے میں حاصل ہونے والے نقصانات پر غور و تفکر کی مہلت ہی نہیں دیتا، بلکہ ہر بری چیز کو ایسے اچھے رنگ میں پیش کرتا ہے کہ اس کا غلام یہ انسان اپنے آقا کے حکم کی بجا آوری میں دیر یا اس کی مخالفت کرنا بہت دشوار محسوس کرتا ہے، یہی وجہ ہے کہ ”شیطانی چکر“ میں گرفتار افراد کو اس میں موجود عیوب نظر ہی نہیں آتے، نفس انھیں صرف اور صرف ان کی مرضی کے مطابق نتیجہ نکلنے کے سہانے خواب ہی دکھاتا رہتا ہے۔ نتیجتاً کوئی نظر کی بناء پر یہ حضرات اکثر اوقات بعد میں شدید پچھتاتے ہوئے نظر آتے ہیں۔ لہذا ہر عاشق کو چاہیے کہ کبھی درج ذیل باتوں پر بھی خوب اچھی طرح ٹھنڈے دل سے غور کرنے کی سعادت حاصل کر کے اپنے اندر نفس کی چالوں کو سمجھنے کا شعور بیدار کرے۔

{1} اللہ تعالیٰ نے نفس کی فطرت بالکل ایک بچے کی فطرت کی مثل تخلیق

فرمائی ہے، چنانچہ جب بچے کو کوئی چیز اچھی لگتی ہے تو وہ اس کے حصول کے لئے شدید ضد کرتا ہے، جب تک اسے حاصل نہ کر لے، بے چین و بے قرار رہتا ہے اور اس

کے بغیر صبر کرنا سے بے حد دشوار محسوس ہوتا ہے۔ لیکن جب وہی شے اسے حاصل ہو جائے تو تھوڑی دیر بعد ہی اس کا دل بھر جاتا ہے اور وہ اسے بھول کر کسی دوسری چیز کی طرف متوجہ ہو جاتا ہے۔ بالکل اسی طرح جب نفس کو کوئی شخصیت اس کے کسی بھی وصف کی بناء پر اچھی لگنے لگے تو وہ اس کے قرب کے حصول کے لئے لگاتار شدید قسم کا مطالبہ کرنا شروع کر دیتا ہے، بطور نتیجہ اس کے بغیر جینا بہت دشوار محسوس ہوتا ہے، بلکہ بعض اوقات تو انسان یوں محسوس کرتا ہے کہ ”اگر فلاں کا قرب میسر نہ ہو تو میری موت واقع ہو جائے گی۔“ لیکن جب وہی ہستی اس کے بے حد قریب آجائے، فاصلے سمٹ جائیں اور اس قرب میں کسی بھی قسم کی دشواری کا سامنا نہ کرنا پڑے، تو یہی بے قرار رہنے والا، اپنی بے چینی و بے قراری میں بے حد کمی محسوس کرتا ہے بلکہ بسا اوقات آہستہ آہستہ یہی بے قراری، نفرت و بے زاری میں تبدیل ہو جاتی ہے، اور پھر اس کا نتیجہ نکلے گا اس کا اندازہ کرنا کچھ زیادہ دشوار نہیں۔

”عشق و محبت“ کے نتیجے میں قائم ہونے والی شادیوں کی ناکامی کی اکثر وجہ یہی ہوتی ہے۔

یونہی جب ایک چیز کے ”ایک سے زیادہ مطالبہ کرنے والے“ پیدا ہو جائیں تو بھی بچے کی طبیعت میں اس شے کے حصول کے لئے شدید بے قراری پیدا ہو جاتی ہے اور وہ کسی بھی صورت میں اس شے سے دست بردار ہو کر دوسروں کو خود پر فوقیت دینے کے لئے تیار نہیں ہوتا، اب اس مقصد کی تکمیل کے لئے اسے کتنی ہی جدوجہد کیوں نہ کرنی پڑے وہ کرنے کے لئے تیار ہوتا ہے۔ لیکن اگر بقیہ مطالبہ کرنے والے کسی وجہ سے دست بردار ہو جائیں اور وہ شے اسے دے دی جائے تو پھر وہی سابقہ صورت حال پیدا ہو جاتی ہے کہ تھوڑی سی دیر میں اس چیز سے دل بھر جاتا ہے اور وہی چیز کہ جس



کے لئے یہ تھوڑی دیر پہلے دوسرے بچوں سے دست و گزبان تھا، بے یار و مددگار گھر کے کسی کونے میں پڑی ہوئی نظر آتی ہے۔ جن گھروں میں ایک سے زیادہ بچے ہوں ان میں یہ مناظر اکثر دیکھے جاسکتے ہیں۔

بعینہ اسی طرح جب ایک شخص، ”مطلوبہ شخصیت کے قرب“ کے اپنے

علاوہ بھی کچھ مزید دعوے دار اطراف میں دیکھتا ہے، تو وہ اپنی طبیعت میں بطور ضد اس شخصیت کے قریب ہو جانے کی شدید تمنا محسوس کرتا ہے اور اس کا نفس کسی بھی صورت میں دوسروں کے لئے ایثار کرنے کے لئے تیار ہوتا نظر نہیں آتا، اب بعض اوقات اس معاملے میں نفس کا مطالبہ بے حد شدت اختیار کر لیتا ہے، نیز شیطان اسے جلد بازی کا مشورہ دیتا ہے اور جلد بازی نہ کرنے کی صورت میں دوسروں کی کامیابی کا یقین دلانے کی کوشش کرتا ہے، اس کا نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ یا تو ممکن ہونے پر یہ شخص بلا سوچے سمجھے اس شخصیت کے قرب کی کوئی صورت نکال لیتا ہے مثلاً اس سے شادی کر لینا اور یا پھر دیگر مطالبہ کرنے والوں کو راہ سے ہٹانے کی کوشش میں اپنی دنیا و آخرت کو برباد کر بیٹھتا ہے۔ اب پہلی صورت میں جب اس شخصیت کا قرب حاصل ہو گیا اور دیگر مطالبہ کرنے والے مفقود ہو گئے، تو ان کی وجہ سے طبیعت میں پیدا ہونے والی جلد بازی اور ضد بھی ختم ہو جاتی ہے، اور جب یہ ضد ختم ہوتی ہے تو وہ حیرت انگیز طور پر سابقہ تڑپ و بے قراری و محبت میں کمی محسوس کرتا ہے، بلکہ بعض اوقات تو ماضی میں دیکھے گئے حسین خوابوں کی مرضی کے مطابق تعبیر حاصل نہ ہونے کی بناء پر وہ اپنے اس فیصلے کی جلد بازی پر افسوس اور اپنے آپ پر شدید غصے کا اظہار کرتا ہوا بھی نظر آتا ہے۔ اور پھر اس کا وہی نتیجہ نکلتا ہے کہ جس کا ذکر ماقبل میں گزر چکا ہے۔

{2} جب انسان کو کسی شے سے محبت ہو جائے تو اسے اس چیز میں کسی قسم

کا عیب نظر نہیں آتا اور نہ ہی وہ اس کے کسی عیب پر مطلع ہونا پسند کرتا ہے۔ لیکن اگر کسی وجہ سے محبوب سے محبت میں کمی واقع ہو جائے یا یہ محبت نفرت و بیزاریت میں تبدیل ہو جائے تو اب وہی بے عیب شخصیت عیوب و نقائص کا مجموعہ نظر آنے لگتی ہے جس کا لازم نتیجہ بعد و دوری کی صورت میں ظاہر ہوتا ہے۔

عشق و محبت میں گرفتار حضرات کی بھی یہی صورت حال ہوتی ہے کہ جب تک و درشتہ ازدواج میں وابستہ نہیں ہوتے انھیں ایک دوسرے میں کسی قسم کا عیب نظر نہیں آتا اور نہ ہی نفسانی خواہش کی شدت کسی عیب کے ظاہر ہونے کو پسند کرتی ہے، لیکن جب ان کی شادی ہو جائے (یا معاذ اللہ ان سے آپس میں کوئی گناہ سرزد ہو جائے جس کے باعث بدنامی کا صحیح خوف پیدا ہو جائے) اور ”ما قبل میں مذکورہ تفصیل“ کے مطابق محبت و اپنائیت میں کمی واقع ہو جائے تو پھر ایک دوسرے کی ذات میں ڈھیروں عیب نظر آنے شروع ہو جاتے ہیں، جن کو وقتاً فوقتاً لڑائی جھگڑے کے دوران بیان بھی کیا جاتا ہے۔ پھر جب نفرتوں کے اظہار کا یہ سلسلہ مسلسل جاری ہو جاتا ہے تو بالآخر اس کہانی کا انجام ”طلاق یا خلع“ کی صورت میں ہی ظاہر ہوتا ہے۔

{3} یہ انسان کی فطرت ہے کہ وہ دوسروں کو اپنی ذات و صفات سے متاثر

کرنا پسند کرتا ہے، جس کے لئے وہ اکثر ”بناوٹ و ریاکاری یا اپنی کمزوریوں اور عیوب کو چھپانے“ سے کام لیتا ہے۔ مثلاً غصے کا نہایت تیز ہے لیکن دوسروں کے سامنے خلاف مرضی کاموں یا باتوں پر مسکراتا رہتا ہے، حالانکہ اگر یہی کام یا بات اس کے گھر والوں میں سے کوئی کرتا تو جب تک زبان یا ہاتھ سے غصہ ٹھنڈانہ کر لیتا اسے سکون ملنا ممکن ہی نہ تھا، یا ٹھیل و کنجوس ہے، لیکن لوگوں کے درمیان خوب پیسے خرچ کرتا ہے، یا فطر تا گندگی پسند ہے، لیکن لوگوں کے سامنے بہت صاف ستھرا رہنے کی کوشش کرتا

ہے، یا بعض ”معاشرتی یا دینی پابندیوں“ کا سختی سے قائل ہے لیکن باہر خود کو زبردست روشن و آزاد خیال ظاہر کرتا ہے، یا بہت ضدی طبیعت ہے لیکن باہر دوسروں کی پسند کو اپنی پسند پر فوقیت دے کر ثابت کرنا چاہتا ہے کہ وہ کسی معاملے میں اپنی رائے کو جبراً مسلط کرنے کا قائل نہیں یا بد زبان ہے، گالیاں وغیرہ بجنے کی عادت ہے، لیکن باہر بڑے شستہ و مہذب طریقے سے گفتگو کرتا ہے وغیرہ وغیرہ۔

لیکن یہ تکلف وہیں اختیار کیا جاتا ہے کہ جہاں سامنے والے کا ساتھ مختصر مدت کے لئے ہو، کیونکہ تکلف میں تکلیف محسوس ہوتی ہے، اب یہ تکلیف تھوڑی دیر کے لئے تو برداشت ہو جاتی ہے لیکن ایک لمبے عرصے تک اس کی اذیت برداشت کرنا بہر حال دشوار ہو جاتا ہے۔ یہی وجہ ہے کہ اگر کسی کے ہمراہ ہمیشہ یا طویل مدت تک رہنا ہو تو پھر یہ تکلفات ختم ہو جاتے ہیں اور انسان ”سامنے والے کے بد ظن نہ ہونے کا یقین کر لینے کی بناء پر بالکل بے پرواہ ہو کر“ اپنی کمزوریاں ظاہر کرنے میں قطعی عار محسوس نہیں کرتا۔ اپنے گھر اور اسکول و کالج و یونیورسٹی و آفسز اور بے تکلف دوستوں کے درمیان ”تکلف اختیار کرنے یا نہ کرنے میں“ یہی حکمت پوشیدہ ہوتی ہے۔

مضمون سے مطابقت کی بناء پر درج ذیل دو روایتیں بغور ملاحظہ فرمائیے۔

☆ حضرت ہرم بن حبان رضی اللہ عنہ نے حضرت اویس قرنی رضی اللہ عنہ سے عرض کی، ”ہمیں ملاقات و زیارت“ کے ذریعے اپنے ساتھ ملائے رکھئے۔“ آپ نے فرمایا، ”میں نے ان دو سے بھی زیادہ نافع شے کے ساتھ تجھے اپنے سے ملا رکھا ہے، اور وہ تیری عدم موجودگی میں تیرے حق میں دعائے خیر ہے۔ ملاقات و زیارت ٹھیک نہیں، کیونکہ اس سے ریاء و زینت وغیرہ پیدا ہوتے ہیں۔ (منہاج العابدین)

☆ امام غزالی رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ایک مرتبہ میرے شیخ کی کسی عارف

کامل سے ملاقات ہو گئی۔ دونوں ایک دوسرے سے جو گفتگو رہے۔ پھر اختتامِ کلام پر ایک دوسرے کے لئے دعائے خیر کی۔ علیحدہ ہوتے وقت میرے شیخ نے اس عارف کامل سے کہا کہ ”میں آج کی مجلس کو بہترین مجلس تصور کرتا ہوں۔ اس عارف نے جواباً کہا، ”لیکن میں اسے ایک خطرناک مجلس تصور کرتا ہوں کیونکہ کیا ہم اپنی اپنی گفتگو کو مزین اور اپنے اپنے علوم کو ایک دوسرے پر ظاہر نہیں کر رہے تھے؟ اور کیا اس طرح ہم ریاء و تکلف میں مبتلاء نہیں ہو گئے تھے؟“ یہ سن کر میرے شیخ رو پڑے اور اتنے روئے کہ آپ کو غشی آگئی۔“ (ایضاً)

اب چونکہ ”شیطانی چکر“ میں گرفتار ”خواتین و حضرات“ یہ بات اچھی طرح سمجھتے ہیں کہ سامنے والے کا قرب اسی صورت میں حاصل ہو سکتا ہے کہ جب اسے اپنی ذات سے کسی بھی طرح متاثر کرنے میں کامیابی حاصل کی جائے، تو پھر اس کا ایک طریقہ یہ بھی اختیار کیا جاتا ہے کہ ”سامنے والے سے اپنی کمزوریاں چھپائی جاتی ہیں اور اپنی ذات میں ان اوصاف کی موجودگی کا یقین دلایا جاتا ہے کہ جن سے اللہ تعالیٰ نے اسے محروم فرمایا ہوا ہے اور اس طرح اپنے آپ کو ایک کامل ترین شخصیت کے روپ میں پیش کرنے کی کوشش کی جاتی ہے۔ اور اس مقصد کے حصول کے لئے ہر طرح کے ”تضییع و بناوٹ“ سے کام لیا جاتا ہے۔

لیکن جب اس دھوکہ دہی میں کامیابی کے بعد شادی کی صورت میں ایک دوسرے کا بظاہر دائمی قرب حاصل ہو جاتا ہے، تو آہستہ آہستہ یہ تکلفات ختم اور شخصیت کا اصل رنگ ظاہر ہونا شروع ہو جاتا ہے، اور پھر بعض اوقات یہ رنگ اصلی دوسرے فریق کی طبیعت کو بالکل پسند نہیں آتا، چنانچہ نتیجہ وہی نکلتا ہے کہ جس کا ذکر پہلے ہو چکا۔ یا یوں بھی ہوتا ہے کہ وہی ”مضوعی و صف“ متاثر کرنے کا سبب بنا ہوتا

ہے، اب جب ظاہر ہوتا ہے کہ وہ وصف تو سامنے والے میں حقیقتاً موجود ہی نہیں، تو پھر سابقہ محبت، شدید نفرت میں بدل جاتی ہے۔

{4} کسی بھی کام کو اختیار کرنے سے پہلے اس کے مثبت اور منفی پہلوؤں پر اچھی طرح غور کر لینا، بے شمار نقصانات سے محفوظ و مامون رہنے کا سبب بن جاتا ہے۔ جب کہ ہر یا کثیر پہلوؤں پر توجہ نہ رکھنے کے باعث عموماً کسی نقصان و ناکامی کا شکار ہو کر پچھتانا پڑ جاتا ہے۔ یہی وجہ ہے کہ رحمتِ عالم ﷺ نے اپنے ایک پیارے صحابی رضی اللہ عنہ کو نصیحت کرتے ہوئے ارشاد فرمایا ”کام تدیر سے اختیار کرو، پھر اس کے انجام میں بھلائی دیکھو تو گزر و اور گمراہی کا خوف ہو تو باز رہو۔“ (شرح الحد)

اس چکر میں مبتلاء حضرات، اکثر و بیشتر اس برے کام کے انجام کے بارے میں شدید قسم کی خوش فہمی کا شکار رہتے ہیں، فلموں، ڈراموں، ناولوں اور ڈائجسٹوں کی کہانیوں کے اختتام پر قیاس کرتے ہوئے انہیں اپنی ”کہانی کا انجام بھی بہت دلکش اور خوبصورت نظر آتا ہے۔ لیکن کاش! یہ بات سمجھ میں آجاتی کہ ”قلم اور حقیقت میں بہت فرق ہوتا ہے۔“

اس تمہید کے بعد اپنی مسلمان بہنوں کے لئے ذیل میں چند معروضات خصوصی طور پر پیش کرنے کی سعادت حاصل کی جاتی ہے۔

(i) ہماری مسلمان بہنوں کو چاہئے کہ عشق و محبت کی تباہ کاریوں کو ہمیشہ ذہن میں رکھیں اور اس بات سے خود کو آزاد تصور نہ فرمائیں کہ یہ بھی کبھی ان نقصانات میں سے کسی کا شکار ہو سکتی ہیں۔

(ii) چونکہ ”نا محرم“ سے میل جول، ”ہمارے مذہب میں حرام اور معاشرے میں معیوب“ سمجھا جاتا ہے، لہذا خود کو اللہ تعالیٰ کی ناراضگی اور ”اپنے

والدین، بھائیوں اور دیگر خاندان و برادری والوں کو بدنامی سے بچانے کے لئے اپنی خواہشات کی قربانی دینا بہت ضروری ہے۔ اس سے پہلے کہ معاملہ ”محترمہ“ کے ہاتھ سے نکل جائے اور اس کے ماں باپ خاندان اور دیگر دنیا والوں کے سامنے شرم و غیرت سے نگاہ بھی نہ اٹھا سکیں، ہمت کر لینے میں ہی عافیت ہے۔

(iii) جب انسان پر خواہشات کا زبردست غلبہ ہو جائے اور اس نے کبھی خود کو ان کی مخالفت کے لئے تیار نہیں کیا ہوتا، تو ایسے وقت میں سوائے ان کو پورا کرنے کے کوئی اور حل نظر نہیں آتا، اور جیسا کہ عرض کیا گیا کہ پھر ”نفس و شیطان“ اس خواہش کی تکمیل کے نتیجے میں حاصل ہو نیوالے نقصان پر غور کرنے کی مہلت بھی نہیں دیتے، نتیجتاً جب معاملہ سیدھی طرح حل ہوتا نظر نہیں آتا تو انسان اس کے لئے ہر قسم کا قدم اٹھانے کے لئے تیار ہو جاتا ہے مثلاً تاریخ و اخبارات کی خبریں اور مشاہدات گواہ ہیں کہ جب اپنی پسندیدہ شخصیت سے ”ماں باپ وغیرہ کی مخالفت“ کے باعث شادی ممکن نہ ہو تو پھر گھر سے راہ فرار کے منصوبے بنائے جاتے ہیں، اور اس انتہائی بڑے قدم کو اٹھانے کے لئے صنفِ نازک میں ہمت پیدا کرنے میں نفس و شیطان کے ساتھ ساتھ ”دوسرے فریق“ کا بھی بہت بڑا ہاتھ ہوتا ہے، اس کے لئے سابقہ وعدے یاد دلائے جاتے ہیں، کم ہمتی پر طعنہ زنی کی جاتی ہے، خوب سبز باغ دکھائے جاتے ہیں، اپنی وفاداری کا یقین دلایا جاتا ہے، ماں باپ کے احسانات کو بھلا کر انہیں ”ظالم معاشرے“ کا نام دینے کی ترغیب دی جاتی ہے، اور اس طرح ”عقلی معاملے میں کمی کی شکاریہ جلسِ نازک“ خود ہی اپنے پاؤں پر کلھاڑی مار لیتی ہے۔

چنانچہ گھر سے راہ فرار اختیار کر لینے کے بعد بے شمار نقصانات اسے اپنے

زرغے میں لے کر زندگی کو عذاب بنا دیتے ہیں۔ مثلاً

☆ سب سے پہلے تو گھر سے نکلتے ہی ایک خوف و دہشت دل پر طاری ہو

جاتی ہے، ہر لمحے پکڑے جانے کا خوف راتوں کی نیندیں حرام کر دیتا ہے۔

☆ پھر پہلے چونکہ مکمل طور پر اپنے ”محبوب“ کی محتاجی نہ تھی، لہذا رویہ کچھ

اور تھا، اب جب کہ کامل طور پر اس کے ”رحم و کرم“ پر گزارا کرنا پڑتا ہے، تو حضرت

بھی کچھ ہی عرصے میں بے زار ہو جاتے ہیں اور اس رویے میں واضح طور پر فرق محسوس

ہونا شروع ہو جاتا ہے۔ اس وقت بھری دنیا میں تنہائی کا احساس اور مستقبل کے بارے

میں خطرناک اندیشے زبردست ذہنی ٹینشن میں مبتلاء کر دیتے ہیں۔

☆ پھر اگر حضرت سے شادی ہو بھی جائے تو پہلے چونکہ کوئی ذمہ داری نہ

تھی تو زندگی بڑی خوشگوار نظر آتی تھی، اب جب کہ بیوی اور ضروریات زندگی کے

اخراجات کا مکمل طور پر بوجھ اس کے نازک کندھوں پر پڑ جاتا ہے اور گھر کا ماہانہ خرچ،

ڈاکٹر وغیرہ کی فیس، مکان کا کرایہ اور بچہ ہو جانے کی صورت میں اس کے دودھ کا خرچ

وغیرہ نکالنے کی فکر میں چین و سکون ہوا ہو جاتا ہے، تو پھر کچھ ہی عرصے میں لہجے کی

نرمی، سختی اور پیار و محبت کا اظہار، نفرت و بے زاریت میں تبدیل ہو جاتا ہے۔ جس کا

نتیجہ لڑائی جھگڑے کی صورت میں نکلتا ہے، اس موقع پر حضرت کا باطنی کردار بالکل

کھل کر سامنے آ جاتا ہے، لیکن اب ”محترمہ“ کو یہ تمام اذیتیں اور تکلیفیں نا چاہتے ہوئے

بھی برداشت کرنی پڑتی ہیں، کیونکہ واپسی کے تمام راستے بند کرنے کی حماقت تو خود

اپنے ہاتھوں ہی سرزد ہوئی تھی۔

☆ کبھی یوں بھی ہوتا ہے کہ حضرت نے ”محترمہ“ کی کسی جسمانی خوبی پر

اپنی محبت کی بنیاد رکھی ہوتی ہے، مثلاً آنکھیں یا بال یا چہرے کی خوبصورتی وغیرہ

پر۔ پھر بعض اوقات کسی بیماری یا دیگر ناگہانی آفت کی بناء پر وہ خوبی زائل ہو جاتی ہے،



اب جس پر محبت کی بنیاد تھی وہ چیز ہی باقی نہ رہی تو محبت کس طرح قائم دائم رہ سکتی ہے؟ چنانچہ نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ ایک دن ”محترمہ“ کی زبان پر انتہائی حسرت کے ساتھ یہ جملہ جاری ہو جاتا ہے کہ ”نہ یہاں کے رہے، نہ وہاں کے رہے۔“ لہذا اگر ابتداء میں ہی محسوس ہو جائے کہ محبت کی بنیاد محض ایک جسمانی خوبی ہے تو ایسی ناقابل اعتبار محبت سے تو خصوصی طور پر دامن چھڑالینا چاہئے۔

☆ جس سے محبت کی وہ قبول کیجئے! :-

”حضرت عتبہ بن الغلام رضی اللہ عنہ کی توبہ کے بارے میں ایک واقعہ یہ بھی منقول ہے کہ ”ابتداء میں آپ ایک خوبصورت عورت کو دیکھ کر اس پر عاشق ہو گئے۔ کسی نہ کسی طرح اس عورت کو بھی آپ کے عشق کا حال معلوم ہو گیا۔ اس نے آپ کی طرف پیغام بھیجا کہ ”آپ کو مجھ میں کون سی خوبی نظر آئی کہ عاشق ہو گئے؟“ آپ نے جواب بھیج دیا کہ ایک مرتبہ تمہاری آنکھوں پر نگاہ پڑ گئی تھی بس ان کی خوبصورتی نے میرے دل کو گھائل کر دیا۔“ جب اس عورت تک آپ کا پیغام پہنچا تو اس نے اپنی دونوں آنکھیں نکال کر ایک تھال پر رکھوا کر خادمہ کے ہاتھ آپ کو بھیج دیں اور ساتھ میں کہلوا دیا کہ ”جس چیز سے آپ نے محبت کی تھی وہ حاضر خدمت ہے۔“ جب آپ نے یہ ماجرا دیکھا تو دل پر ایک کیفیت طاری ہو گئی، فوراً حضرت خواجہ حسن بھری رضی اللہ عنہ کی خدمت میں حاضر ہوئے اور توبہ کی سعادت حاصل کر لی۔ (تذکرۃ الاولیاء)

☆ کبھی یوں بھی ہوتا ہے کہ وہ نوجوان ”محترمہ“ کو اپنے خاندان میں لے جاتا ہے، ماں باپ سے لڑ جھگڑ کر اور بہنوں وغیرہ کو کسی نہ کسی طرح راضی کر کے گھر میں جگہ بنالی جاتی ہے، بظاہر یہ چیز عشق و محبت کی کامیابی نظر آتی ہے لیکن حقیقت میں

ایسا نہیں ہوتا، کیونکہ جیسا کہ پہلے عرض کیا جا چکا کہ ”لڑکوں سے میل جول بڑھانے اور گھر سے راہ فرار اختیار کرنے کو ہمارے معاشرے میں اب بھی بے حد معیوب سمجھا جاتا ہے۔“ چنانچہ حضرت کی غیر موجودگی میں مختلف چھوٹی چھوٹی باتوں پر بڑے بڑے طعنے دئے جاتے ہیں مثلاً

☆ اگر تجھ میں شرم و حیا ہو تو اپنے ماں باپ کی عزت کو خاک میں کیوں ملاتی؟ ☆ یار کے ساتھ بھاگتے ہوئے تجھے بالکل حیا نہ آئی، اب بڑی شرم والی بنتی ہے۔ ☆ ارے جس نے اپنے ماں باپ کا احسان نہ مانا وہ ہمارا احسان کیا مانے گی؟ وغیرہ وغیرہ۔ ان طعنوں کا عموماً سبب یہ بھی ہوتا ہے کہ ان محترمہ کی وجہ سے ماں کو اپنے بیٹے اور بہنوں کو اپنے بھائی کی شادی کی صورت میں دلی ارمان پورے کرنے کا موقع نہیں ملتا ہے، لہذا دل کا وہ پوشیدہ غصہ طعنوں کی شکل میں کم کرنے کی کوشش کی جاتی ہے۔ اب روزانہ کے یہ طعنے دل کو چھلنی کرتے رہتے ہیں، ان کے جواب میں اگر ”محترم“ سے شکایت کی جائے اور وہ اس کا دفاع کرنے کی کوشش کرے تو ساس اور نندوں کی طرف سے مزید تکلیف کا سامنا کرنا پڑتا ہے، بعض اوقات تو یوں بھی کہا جاتا ہے کہ ”اس ڈائن نے اپنے گھر والوں کا سکون تو تباہ و برباد کر ہی دیا ہے، اب ہمارے گھر میں بھی پھوٹ ڈالنا چاہتی ہے۔“ اور بسا اوقات یوں بھی ہوتا ہے کہ حضرت کی طرف سے کہا جاتا ہے کہ ”جیسے بھی ہو برداشت کرو اگر یہاں سے نکال دئے گئے تو گزارا کرنا مشکل ہو جائے گا۔“ یا کبھی بار بار کی شکایت سے بے زار ہو کر کہہ دیا جاتا ہے کہ اگر یہاں گزارا نہیں کر سکتی، میری ماں اور بہنیں اتنی ہی بری لگتی ہیں تو اپنے ماں باپ سے کہو کہ ہمیں الگ مکان لے دیں۔“

اب جب کہ واپسی کے راستے بند، ساس نندوں کا رویہ ناقابل برداشت اور

جس کے سہارے کو مضبوط سمجھ کر یہ قدم اٹھایا تھا، وہ بھی برأت و سبز اریٹ کا اظہار کرنا شروع کر دیتا ہے تو پھر اپنے ماں باپ کی شفقتیں اور محبتیں یاد آتی ہیں اور اس کے جواب میں اپنی بے مروتی پر شدید پچھتاوا دامن گیر ہو جاتا ہے، آخر کار اس کا نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ یا تو ساری زندگی یوں ہی سسک سسک کر گزارنی پڑتی ہے یا پھر شیطان کے بہکائے میں آکر خود کشی کی حماقت کی جاتی ہے اور یا پھر کوئی مہلک بیماری مثلاً ٹی بی وغیرہ رہی سہی کسر پوری کر دیتی ہے۔

☆ اس کا ایک بہت بڑا نقصان یہ بھی ہوتا ہے کہ ایسی ”باہمت خواتین“ کی اولاد کی زندگی بھی عموماً آزمائشوں کا شکار رہتی ہے، مثلاً جب انھیں ”ماں باپ“ کے کارناموں کی خبر ہوتی ہے تو وہ اپنے قلوب میں ان کی عظمت و محبت کو کم ہوتا محسوس کرتے ہیں، پھر بسا اوقات لوگوں کے طعنوں کے باعث انھیں وقت گزارنا مشکل ہو جاتا ہے نتیجتاً ان کا رویہ بھی تبدیل ہو جاتا ہے، پھر یا تو وہ اسی طرح اظہارِ بے زاریت کے ساتھ زندگی گزارتے ہیں اور یا پھر ممکن ہونے پر گھر بار ہی چھوڑ کر چلے جاتے ہیں۔

☆ پھر اگر ایسے افراد کی اولاد بھی عشق و محبت میں گرفتار ہو جائے تو چاہے ”سامنے والا یا والی“ کیسی بھی قوم یا خاندان سے تعلق رکھتے ہوں، یہ ماں باپ انھیں روکنے پر قادر نہیں رہتے، اور روکیں بھی تو کس منہ سے؟ خود جرم کر کے دوسرے کو اسی جرم سے روکنے کی کوشش یا تو کی ہی نہیں جاتی اور اگر کی بھی جائے تو عموماً رائیگاں چلی جاتی ہے۔ یوں اولاد کی طرف سے بھی مختلف انداز میں رنج و غم برداشت کرنا پڑتا ہے۔

☆ پھر بسا اوقات ایسا بھی ہوتا ہے کہ بہلا پھسلا کر ساتھ لے جانے

والا ”مخلص عاشق“ چند آوارہ گرد دوستوں کی موجودگی میں، ”کسی موقع سے فائدہ اٹھانے والے قاضی“ سے نکاح پڑھوا کر اور بعض اوقات (معاذ اللہ) بغیر نکاح کے ہی ”اپنا مقصد“ پورا کر کے ”محترمہ“ کو ”چند ٹکوں“ کے بدلے میں کسی اور کے حوالے کر کے ہمیشہ ہمیشہ کے لئے منہ چھپا کر غائب ہو جاتا ہے، ایسی صورت حال میں ”محترمہ“ کا کیا انجام ہو گا؟ اس کا تصور کر کے ”غیرت مند مسلمان بہنوں“ کو تو خوف سے لرز جانا چاہئے۔

☆ پھر اگر یہ سب کچھ نہ ہو بلکہ راہ فرار کے بعد کسی سبب سے گھر واپس آنا پڑ جائے تو یقیناً وہ عزت کبھی بھی دوبارہ حاصل نہیں ہو سکتی، جو اس نامعقول قدم کو اٹھانے سے پہلے اللہ تعالیٰ نے عطا فرمائی ہوئی تھی، رشتہ داروں کے طعنے اور محلے والوں کی طنزیہ نگاہیں جینا دو بھر کر دیتی ہیں۔ مجبوراً بعض اوقات گھر والوں کو ”اس ہو نہمار صاحب زادی“ کے ”قابلِ فخر کارنامے“ کی وجہ سے اس مقام سے نقل مکانی کرنی پڑ جاتی ہے اور اس طرح پورے گھر کا چین و سکون برباد ہو جاتا ہے۔

اس بارے میں ابھی مزید بہت کچھ لکھا جاسکتا ہے لیکن عقلمند کے لئے صرف اشارہ ہی کافی ہوتا ہے اور.....

### متعلقین کی خدمت میں عرض

اگر کوئی شخص اس شیطانی چکر میں مبتلاء ہو جائے تو اس سے تعلق رکھنے والے حضرات کو چاہئے کہ اس سے ناراضگی یا اظہارِ نفرت کے بجائے، کسی حکمت و دانائی کے ساتھ اسے اس حرام فعل سے دور کرنے کی کوشش کریں، کیونکہ ایسے شخص سے ناراض ہونے کا مطلب یہ ہو گا کہ ہم نے اسے مکمل طور پر نفس و شیطان کے رحم و کرم پر چھوڑ دیا، اب خود غور فرمائیے کہ اپنے پیارے کو شیطان سے بچانا بہتر ہے یا

اسے اس کے حوالے کر کے اس کی آخرت کی تباہی سے بے پرواہ ہو جانا؟ چنانچہ ماں باپ، بھائی بہن، دوست احباب اور مشائخِ عظام وغیرہ کو چاہئے کہ ایسے موقع پر جذباتی پن کی بجائے، ہوشمندگی سے کام لیں اور مذکورہ شخص کی اصلاح کی کوشش کریں۔ اس ضمن میں چند اقوال و واقعات ملاحظہ فرمائیے۔

☆ حضرت ابراہیم نخعی رضی اللہ عنہما شاد فرماتے ہیں کہ ”کسی گناہ کے ارتکاب کی بناء پر اپنے بھائی سے تعلقِ دوستی منقطع نہ کر، کیونکہ اگر وہ آج بتلائے گناہ ہے تو ممکن ہے کہ کل توبہ کر لے اور اس سے باز آجائے۔ (یمنائے سعادت)

☆ ایک شخص سے کہا گیا کہ ”تیرا دوست اللہ تعالیٰ کی نافرمانی میں مبتلاء ہو گیا ہے اور تو نے ابھی تک اس سے دوستی ختم نہیں کی ہے؟ اس نے جواب دیا، ”میرے، اس دوست کو آج میری دوستی اور بھائی چارے کی بہت ضرورت ہے، کیونکہ وہ غلط کام میں پھنس گیا ہے، میں اس سے اس حالت میں کس طرح علحیدگی اختیار کر سکتا ہوں؟ میں نرمی اور شفقت کے ساتھ اسے دوزخ کے راستے سے ہٹاؤں گا اور اس کی دستگیری کروں گا۔“ (ایضاً)

ملینہ :- گناہ گار سے قطع تعلق نہ کرنا اسی وقت مستحب ہے کہ جب اس کی اصلاح کی امید ہو اور اپنے بارے میں مکمل اطمینان ہو کہ اس کی وجہ سے گناہوں میں مبتلاء نہ ہوں گے۔ اس کے برعکس اگر خود بھی گناہوں میں شریک ہو جانے کا یقین ہو تو اب قریب رہنا گناہ اور علحیدہ ہو جانا واجب ہے۔

☆ دل بیمار ہو گیا:-

منقول ہے کہ بزرگانِ دین میں سے دو اشخاص آپس میں دوست

تھے۔ ان میں سے ایک خواہشِ نفس کے تحت کسی کے عشق میں مبتلاء ہو گیا اور اپنے

دوست سے کہا کہ ”میرا دل بیمار ہو گیا ہے، اگر تو چاہتا ہے کہ مجھ سے محبت و دوستی کا تعلق ختم کر لے تو تجھے اس کا اختیار ہے۔“ اس کے دوست نے جواب دیا کہ ”معاذ اللہ! یہ کیسے ہو سکتا ہے کہ صرف ایک گناہ کی وجہ سے میں تجھ سے رشتہ دوستی منقطع کر لوں۔“ پھر اس نے پختہ ارادہ کر لیا کہ جب تک اللہ تعالیٰ میرے دوست کو اس گناہ سے نجات عطا نہ کرے گا، میں کھانا نہ کھاؤں گا۔ اب وہ وقتا فوقتا اس سے پوچھتا رہتا کہ کیا حال ہے؟ وہ یہی جواب دیتا کہ ”بدستور مبتلائے مرض ہوں۔“ یہ دوست مسلسل کھانے سے کنارہ کش رہا اور غم میں اندر ہی اندر گھلتا رہا، آخر کار اس کا جذبہ اصلاح، اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں مقبول ہو گیا اور ایک دن وہ دوست اس کے پاس آیا اور خوشخبری سنائی کہ ”الحمد للہ! اللہ عزوجل نے مجھے اس مرض سے نجات عطا کر دی ہے اور میرا دل معشوق کے عشق سے متفر ہو گیا ہے۔“ جب اس نے یہ سنا تو اللہ تعالیٰ کا شکر ادا کیا اور پھر کھانا کھایا۔ (بیانِ سعادت)

☆ شفقت کے باعث عشق سے توبہ کر لی :-

مروی ہے کہ ”بنی اسرائیل میں دو دوست تھے۔ یہ دونوں ایک پہاڑ پر اللہ تعالیٰ کی عبادت میں مشغول رہا کرتے تھے۔ ایک مرتبہ ان میں سے ایک شہر میں کچھ خریدنے آیا تو اس کی نگاہ ایک فاحشہ عورت پر پڑ گئی اور وہ اس کے عشق میں گرفتار ہو گیا اور اس کی مجلس اختیار کر لی۔ جب کچھ روز گزر گئے اور وہ واپس نہ آیا تو دوسرا دوست اسے تلاش کرتا ہوا شہر میں پہنچا، معلومات کرنے پر اس کے بارے میں سب کچھ جان گیا۔

یہ اس سے ملنے پہنچا تو عاشق دوست نے شرمندہ ہو کر کہا کہ ”میں تو تجھے جانتا ہی نہیں۔“ اس نے اس کی بات کو نظر انداز کر کے کہا، ”پیارے بھائی! دل کو اس

کام میں مشغول نہ کر۔ میرے دل میں جس قدر شفقت آج پیدا ہوئی ہے پہلے کبھی نہ ہوئی تھی۔“ یہ کہہ کر اسے اپنے سینے سے لگا لیا۔ گناہ گار دوست نے جب اس کی طرف سے محبت کا یہ مظاہرہ دیکھا تو جان لیا کہ ”میں اس کی نگاہوں سے گرا نہیں ہوں۔“ پس فوراً طوائف کی محفل سے اٹھا، توبہ کی اور اس کے ساتھ واپس آ گیا۔ (ایضاً)

☆ پانی مٹی سے بنی چیزیں چھوڑ دے :-

ابو عصمت فرماتے ہیں کہ ”میں حضرت ذوالنون مصری رضی اللہ عنہ کی خدمت میں بیٹھا ہوا تھا، ان کے سامنے ایک نوجوان بھی موجود تھا، آپ اسے کچھ لکھوار ہے تھے۔ اچانک سامنے سے ایک خوبصورت عورت کا گزر ہوا، وہ نوجوان نظریں چرا کر اس کی طرف دیکھنے لگا، حضرت ذوالنون رضی اللہ عنہ فوراً سمجھ گئے اور اس کی گردن اس جانب سے پھیر کر یہ شعر پڑھا،

دَعِ الْمَصُوغَاتِ مِنْ مَاءٍ وَ طِينٍ

وَ اشْغَلْ هَوَاكَ بِحُورٍ خَرَدٍ وَعَيْنٍ

(یعنی ان چیزوں کو چھوڑ دے جو پانی اور مٹی سے بنی ہیں اور اپنی خواہش کو ایسی حور کے ساتھ مشغول کر دے جو کنواری اور بڑی آنکھوں والی ہے۔“ (ذم الھوئی لابن جوزی)

☆ کیا ابھی توبہ کا وقت نہیں آیا؟ :-

حضرت شاہ شجاع کرمانی رضی اللہ عنہ کے ہاں پہلا بیٹا پیدا ہوا تو اس کے سینے پر واضح طور پر ”جل جلالہ“ لکھا ہوا تھا۔ جب وہ جوان ہوا، تو اس نے رباب و چنگ (یعنی سادگی و سادگی) بجانا سیکھا، آواز بھی اچھی تھی۔ ایک رات وہ چنگ بجاتا گلی سے گزر رہا تھا کہ ایک عورت نے ”جو کہ اپنے شوہر کے پاس سو رہی تھی“ اس آواز کو سن لیا اور اس کے شوق میں اٹھ کر نوجوان کے پیچھے پیچھے چل پڑی۔ اسی اثناء میں شوہر



کی آنکھ کھل گئی، بیوی کو نہ پا کر تلاش شروع کی، تو دیکھا کہ اس نوجوان کے پاس کھڑی ہوئی ہے، اس نے یہ حال دیکھ کر کہا کہ ”کیا ابھی توبہ کا وقت نہیں آیا؟“ یہ الفاظ تیر کی طرح صاحبزادے کے دل میں پیوست ہو گئے، اسی وقت پا جا توڑا اور عورت سے منہ موڑ کر فرمایا، ”ہاں توبہ کا وقت آگیا ہے۔“ پھر گھر جا کر غسل کیا اور ریاضت میں مشغول ہو گئے۔ جب شاہ شجاع رضی اللہ عنہ نے اپنے بیٹے کا یہ حال ملاحظہ فرمایا تو ارشاد ہوا کہ ”جو بات مجھ کو چالیس سال میں ملی وہ اس کو چالیس دنوں میں مل گئی۔“ (تذکرۃ الاولیاء)

☆ تو نے گندگی سے محبت کی ہے :-

منقول ہے کہ ایک مرید اپنے پیر صاحب سے ملنے کے لئے ان کے گھر پر گیا، دروازہ مچانے پر حضرت کی حسین و جمیل و نیک و پارساہ لونڈی باہر آئی، مرید کی نگاہ جو نہی اس پر پڑی، اس کا دل شدت کے ساتھ اس کی طرف مائل ہو گیا اور شیطان اسے برائی پر ابھارنے لگا۔ آخر دل کے ہاتھوں مجبور ہو کر اس نے لونڈی کو پیغام بھیجا کہ ”وہ اسے تنہائی میں ملے۔“ لونڈی نے فوراً وہ پیغام پیر صاحب تک پہنچا دیا۔ پیر صاحب نے حکمت کے ساتھ اس کی اصلاح کا ارادہ فرمایا چنانچہ لونڈی سے فرمایا کہ اسے جو بآ پیغام بھجو او کہ ”تین دن بعد فلاں باغ میں مجھ سے ملاقات کرو۔“ لونڈی نے حسب حکم پیغام بھجوادیا۔ وہ مرید حوصلہ افزاء جواب پا کر بہت خوش ہوا اور بے چینی کے ساتھ تیسرے دن کا انتظار کرنے لگا۔

یہاں پیر صاحب نے لونڈی کو ایک دوا دی اور فرمایا، ”اسے کھا لو، اس کے باعث تمہیں دست لگیں گے، جو کچھ غلاظت نکلے اسے ایک برتن میں جمع کرتی جانا۔“ لونڈی نے اس حکم پر بھی عمل کرنا شروع کر دیا۔ جب اسے دست لگے تو اس کی حالت خراب ہو گئی اور تین دن میں مسلسل دستوں کے باعث چہرے کی رونق جاتی

رہی، جسم سوکھ گیا، رنگ پیلا پڑ گیا، آنکھیں اندر کو دھنس گئیں اور ان کے گرد حلقے پڑ گئے۔ جب تین دن گزر گئے تو وہ پیر صاحب لوٹدی اور گندگی کے تھال سمیت مقررہ وقت پر معینہ باغ میں پہنچ گئے۔ خود ایک درخت کے پیچھے چھپ گئے اور لوٹدی کو بھی حکم فرمایا کہ کسی درخت کے پیچھے کھڑی رہے اور جب وہ مرید آجائے تو اچانک اس کے سامنے نکل آئے۔ جب مرید باغ میں پہنچا تو لوٹدی اچانک اس کے سامنے آگئی، لوٹدی کی موجودہ بھیانک صورت دیکھ کر اس کے منہ سے نکلا، ”تو کون بلا ہے؟ تو وہ تو نہیں جس کی طرف میرا دل مائل ہوا تھا؟“ یہ سنتے ہی پیر صاحب درخت کے پیچھے سے برتن سمیت سامنے تشریف لے آئے اور اسے آگے رکھ کر فرمایا، ”بیٹا تم نے دراصل اس لوٹدی سے نہیں بلکہ اس گندگی سے محبت کی تھی، کیونکہ جب تک یہ گندگی اس کے بدن میں رہی تمہارے دل میں اس کی محبت بھی باقی رہی لیکن جب یہ اس کے جسم سے نکل گئی تو تم نے اسے پہچاننے سے ہی انکار کر دیا۔“ مرید یہ سن کر انتہائی شرمندہ ہوا اور آئندہ کے لئے صدقِ دل سے توبہ کر لی۔ (عائتہ کتب)

☆ پہلے چالیس دن باجماعت نماز پڑھو:-

ایک مرتبہ ایک شخص، کسی نیک و پارسا شادی شدہ عورت پر فریفتہ ہو گیا، ہمت کر کے ایک خط کے ذریعے اپنے جذبات کا اظہار کرنے کے ساتھ ساتھ ملاقات کا متمنی ہوا۔ عورت نے وہ خط اپنے شوہر کو دے دیا۔ اس کا شوہر بہت سمجھ دلا اور ایک مسجد میں امام تھا۔ اس نے اپنی زوجہ کی طرف سے اس عاشقِ نامراد کو پیغام بھجوایا کہ ”اگر ملاقات کرنی ہے تو پہلے چالیس دن تک فلاں امام (یہاں اپنا ذکر کیا) کے پیچھے باجماعت نماز ادا کرو، اس کے بعد دیکھا جائے گا۔“ وہ عاشق بظاہر اس آسان سی شرط کو دیکھ کر بہت خوش ہوا اور اس نے فوراً نمازیں شروع کر دیں۔ جیسے

جیسے دن گزرتے گئے اس پر نماز کی برکات آشکارا ہوتی گئیں حتیٰ کہ جب چالیس دن گزر گئے تو اس نے خود یہ پیغام بھجوایا کہ ”پہلے میں حرام کاری کے خواب دیکھا کرتا تھا، لیکن نماز کی برکت سے اب میرے دل کی دنیا بدل چکی ہے اور اب تیرے بجائے اللہ تعالیٰ کی محبت غالب آگئی ہے۔ میں اپنے گناہوں کے ارادے سے توبہ کرتا ہوں اور تجھ سے بھی معافی کا طلبگار ہوں۔“ جب اس نیک عورت نے شوہر کو یہ پیغام سنایا تو وہ بہت خوش ہوا اور اس کی زبان سے بے ساختہ نکلا ”اللہ تعالیٰ نے بالکل سچ فرمایا کہ ”إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِط“ (ترجمہ: بے شک نماز منع کرتی ہے بے حیائی اور بری بات سے۔ (کنز الایمان، العنکبوت ۲۵ پ ۲۱) (نزہۃ المجالس)

### شادی شدہ خواتین و حضرات کی خدمت میں خصوصی عرض

ایسے شادی شدہ خواتین و حضرات کی خدمت میں کہ جو شادی شدہ ہونے کے باوجود اس لعنت میں گرفتار ہیں اور اپنے رفیق حیات کی باطنی کیفیات سے بے پرواہ ہو کر صرف اور صرف اپنے نفس کی خواہشات کی تکمیل کو مقصد زندگی سمجھے بیٹھے ہیں، خصوصی گزارش ہے کہ اپنے آپ کو سنبھالنے کی بھرپور کوشش کیجئے، ورنہ دنیا و آخرت میں شدید ذلت و رسوائی، آپ کا بھی مقدر بن سکتی ہے۔ ایسے خواتین و حضرات کو درج ذیل نکات پر تھوڑا سا غور کرنا چاہئے۔

﴿1﴾ یقیناً اس واہیات چکر میں پھنس کر اپنے شریک حیات کے حقوق کی

اداائیگی میں کوتاہی کا شکار ہونا ایک لازمی امر ہے، جس کے بارے میں بروز قیامت سخت باز پرس کی جائے گی، کیونکہ حدیث پاک میں آتا ہے کہ

☆ حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ سرکارِ مدینہ ﷺ نے ارشاد

فرمایا ”تم میں سے ہر ایک نگران ہے اور ہر ایک سے اس کے ماتحت کے بارے میں سوال

کیا جائے گا۔ بادشاہ نگران ہے اور ہر آدمی اپنے گھر والوں کا نگران ہے اور عورت اپنے خاوند کے گھر اور اولاد کی نگران ہے، پس ہر ایک نگران ہے، ہر ایک سے اس کے ماتحت افراد کے بارے میں سوال کیا جائے گا۔ (بخاری) اور

☆ ایک روایت میں ہے کہ ایک مرتبہ رسول اللہ ﷺ جنگل کی طرف تشریف لے گئے اور وہاں دو مسواکیں توڑیں، ایک سیدھی تھی اور دوسری ٹیڑھی۔ ایک صحابی بھی آپ کے ساتھ تھے۔ سیدھی مسواک آپ نے صحابی کو عطا کی اور ٹیڑھی خود رکھ لی۔ صحابی نے عرض کی یا رسول اللہ (صلی اللہ علیہ وسلم)! اچھی مسواک آپ لیں۔ آپ نے ارشاد فرمایا، ”جو شخص کسی کے ساتھ ایک گھڑی کے لئے بھی صحبت و مجلس کرتا ہے، قیامت کے دن اس صحبت کے حق میں اس سے باز پرس ہوگی کہ اس کا حق ادا کیا یا ضائع کیا؟ (کیسے سعادت)

**مذہبہ :-** دونوں احادیث کا خلاصہ یہ ہے کہ دنیا میں جو جو لوگ کسی انسان کے حکم کے تابع یا صحبت میں رہنے والے ہیں، بروز قیامت ان کے حقوق کے بارے میں اس سے سوال کیا جائے گا کہ ادا کیا یا ضائع کر دیا؟ چنانچہ شوہر سے بیوی بچوں، استاد سے شاگردوں، مالک سے نوکروں اور ملکی عہدے داروں سے عوام الناس کے بارے میں پوچھ گچھ کی جائے گی۔

اور آپ جانتے ہی ہیں کہ حقوق العباد (یعنی بندوں کے حقوق) کا فیصلہ اللہ تعالیٰ براہ راست نہ فرمائے گا بلکہ جس کے حق میں کوتاہی کی اسے راضی کرنا ضروری ہوگا، اگر راضی کرنے میں کامیاب ہو گئے تو ٹھیک اور اگر ناکام رہے تو جہنم کا سخت اور ناقابل برداشت عذاب بھگتنے کے لئے تیار رہنا چاہئے۔ اس سلسلے میں چند احادیث مبارکہ خوفِ خدا کے ساتھ ملاحظہ فرمائیے۔

## ☆ مفلس کون؟ :-

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے ایک مرتبہ ارشاد فرمایا، ”کیا تم جانتے ہو کہ مفلس کون ہے؟“ ہم نے عرض کی کہ ”جس کے پاس درہم و دینار اور سامانِ زندگی نہ ہو۔“ آپ (ﷺ) نے فرمایا، ”میری امت کا مفلس وہ ہے جو قیامت کے دن نماز، روزہ اور زکوٰۃ لے کر آئے گا، مگر اس نے کسی کو گالی دی ہوگی، کسی کو تہمت لگائی ہوگی، کسی کا مال کھایا ہوگا، کسی کا خون بہایا ہوگا اور کسی کو مارا ہوگا (یعنی لوگوں کے حقوق تلف کئے ہوں گے اور انھیں اذیتیں پہنچائی ہوں گی۔) اس کی وجہ سے اس کی نیکیاں (کچھ) کسی کو دے دی جائیں گی اور کچھ کسی کو۔ اس نے لوگوں کے حقوق جس قدر چھینے ہوں گے، اگر ان کا عوض ادا کرنے سے پہلے اس کی نیکیاں ختم ہو جائیں گی، تو ان لوگوں کی برائیاں لے کر اس پر ڈالی جائیں گی اور پھر اسے جہنم میں پھینک دیا جائے گا۔ (مسند امام احمد بن حنبل)

☆ حضرت ابن مسعود رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ جناب رسول اللہ ﷺ

نے فرمایا ”سر زمینِ عرب میں بت پرستی کے سلسلے میں شیطان مایوس ہو چکا ہے، البتہ وہ تم سے اس بات میں خوش ہے کہ معمولی جرائم کرو اور وہی ہلاک کرنے والے ہیں پس جس قدر ہو سکے ظلم سے بچو، کیونکہ بروز قیامت ایک آدمی پہاڑوں کے برابر نیکیاں لے کر آئے گا جنہیں وہ اپنے نامہ اعمال میں دیکھے گا، پھر ایک آدمی آئے گا کہے گا ”یارب اس نے مجھ پر ظلم کیا تھا۔“ حکم ہوگا ”اس کی نیکیاں اسی مقدار میں لے لو۔“ اسی طرح لوگ اس کی نیکیاں لے جاتے رہیں گے، حتیٰ کہ اس کی نیکیوں میں سے کوئی بھی شے باقی نہ رہے گی۔ اس کی مثال اس طرح ہے کہ کچھ مسافر جنگل میں پڑاؤ کریں، ان کے پاس ایندھن نہ ہو، پھر وہ ایندھن اکٹھا اور خوب آگ جلائیں اور سب ایندھن فنا کر

دیں، یعنی دوسروں پر ظلم کرنے والا گناہوں کے ذریعے اس نیکیوں کو فنا کر دیتا ہے۔ (کنز العمال)

☆ حضرت انس رضی اللہ عنہ کہتے ہیں کہ میں نے رسول اللہ ﷺ کو فرماتے سنا کہ ”اللہ تعالیٰ بروز قیامت لوگوں کو برہنہ، غبار آلود اور اس حال میں اٹھائے گا کہ ان کے پاس کوئی بھی چیز نہ ہوگی۔ پھر اللہ تعالیٰ ان سے ایسی آواز کے ساتھ کلام فرمائے گا کہ جسے دور والا بھی اسی طرح سنے گا جیسے نزدیک والا۔ (وہ فرمائے گا) ”میں بدلہ لینے والا بادشاہ ہوں، اہل جنت میں سے کسی ایسے شخص کو جنت میں داخلے کی اجازت نہیں کہ جس نے اہل نار میں سے کسی پر تھوڑا سا بھی ظلم کیا ہو حتیٰ کہ میں اس کا بدلہ لے لوں۔ اور اہل نار میں سے کسی ایسے شخص کو نار میں دخول کی اجازت نہیں کہ جس نے اہل جنت میں سے کسی پر تھوڑا سا بھی ظلم کیا ہو، جب تک کہ میں اس کا بدلہ نہ لے لوں، چاہے ایک تھپڑ ہی کیوں نہ ہو۔“ عرض کی گئی، ”ہمارا کیا حال ہو گا؟ جب کہ ہم رب عزوجل کے پاس برہنہ، غبار آلود اور خالی ہاتھ پہنچیں گے؟“ فرمایا، ”ہم نیکیوں اور برائیوں کے ساتھ پہنچو گے۔“ (بخاری)

اب یہ غور طلب بات ہے کہ دنیا میں انسان جس شخصیت کی ذات کے لئے مسلسل روحانی اذیت کا باعث بنتا رہا، اس کے جذبات و احساسات کی پرواہ کئے بغیر صرف اپنے جذبات کی تسکین کا سامان کرنا کافی سمجھا اور اس کی ناراضگی کو بالکل معمولی تصور کیا، تو کیا ایسی شخصیت کو بروز قیامت خود سے راضی کرنا ممکن ہو گا؟

اگر جواب نفی میں ہے، تو کیا ایسی صورت میں قیامت کی سخت گرفت سے بچنے کے لئے اپنی تھوڑی سی خواہش کو دبا کر اللہ تعالیٰ کی رضا پر راضی رہنے کی سعادت حاصل کرنا دانش مندی نہیں؟

☆ یقیناً ایک طویل عرصے تک ساتھ رہنے کی بناء پر دونوں فریق ایک

دوسرے کی عادات و اطوار سے اچھی طرح واقف ہو چکے ہوتے ہیں، چنانچہ جب ان میں سے کوئی ایک عدم التفات کا مظاہرہ کرتا ہے، تو دوسرا فریق فوراً اسے محسوس کر لیتا ہے اور سابقہ توجہ کو طلب کرتا ہے، لیکن چونکہ خائن فریق ”کسی اور ہی مشغلے میں مشغول“ ہو چکا ہوتا ہے، لہذا اس توجہ طلبی کا مثبت انداز سے جواب دینے سے قاصر رہتا ہے، جس کا نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ دونوں میں ایک کشمکش پیدا ہو جاتی ہے جس کا سب سے زیادہ منفی اثر ان کی اولاد پر پڑتا ہے، یہ بے چارے ایک فریق کی محبت سے تو ”شیطانی چکر“ میں مشغولیت کی بناء پر محروم ہو جاتے ہیں، جب کہ دوسرا فریق شدید ٹینشن میں مبتلاء ہونے کی وجہ سے انہیں اپنی شفقت سے دور کر دیتا ہے، اس عدم توجہی کے باعث ان بچوں میں احساس کمتری کا مادہ پیدا ہو جاتا ہے، وہ ہر وقت سہمے سہمے رہنا شروع کر دیتے ہیں، ایک نامعلوم خوف ان پر مسلط ہو جاتا ہے، وہ تنہائی پسند ہو جاتے ہیں اور پھر ان سب امور کی وجہ سے ان کی ذہنی و جسمانی صلاحیتوں میں اضافہ رک جاتا ہے۔

کاش! ایسے حضرات اپنی اولاد کی ذہنی نشوونما اور ان کے بہتر مستقبل کی

خاطر ہی اس گناہ سے بعض آجاتے.....

☆ ایسے حضرات کو اس پہلو پر بھی غور کرنا چاہئے کہ بعض اوقات انسان کو

اس کے گناہوں کی سزا دنیا میں ہی حاصل ہو جاتی ہے، اس کی ایک بصورت یہ بھی ہوتی

ہے اس شخص نے جس طریقے سے کسی کو اذیت و نقصان پہنچایا ہوتا ہے، اللہ تعالیٰ اپنے

عدل و انصاف سے اس کی اولاد کو اسی کرب و تکلیف میں مبتلاء فرما کر سامان رنج و غم پیدا

فرما دیتا ہے، جسے صاحبِ بصیرت فوراً سمجھ بھی جاتے ہیں کہ یہ سب کچھ ہمارے شامت



اعمال کا ہی نتیجہ ہے۔ چنانچہ بسا اوقات دیکھا گیا ہے کہ اگر کسی نے اپنے اہل خانہ کو تکلیف پہنچائی تو اس شخص کو اپنی اولاد کو اسی رنج میں گرفتار دیکھنا پڑا۔

اس تمام تمہید کو پیش نظر رکھ کر اس گناہ میں مبتلاء ہر مسلمان بھائی اور بہن کو خود سے سوال کرنا چاہئے کہ جو کچھ آج میں اپنے دوسرے ساتھی کے ساتھ کر رہا ہوں کل اگر یہی سب کچھ میری اپنی اولاد کے ساتھ ہو جائے تو کیا میں اسے پسند کروں گا؟

یقیناً اس کا جواب نفی میں ہی ہو گا، اس منفی جواب کے ساتھ ہی مؤدبانہ گزارش ہے کہ ”جب آپ یہ معاملہ اپنی اولاد کے لئے صرف اس لئے پسند نہیں کر رہے کہ اس کی وجہ سے اسے سخت تکلیف کا سامنا کرنا پڑے گا، تو اپنے شریک حیات کے بارے میں آپ کا کیا خیال ہے؟ کیا وہ کسی کی اولاد نہیں؟“

کاش! ایسے حضرات درج ذیل حدیثِ کریمہ پر ٹھنڈے دل سے غور کرنے کی سعادت حاصل کر لیتے کہ

☆ حضرت معاذ ابن جبل رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ ”سرکارِ مدینہ ﷺ سے افضل ایمان (یعنی ایمان کی اعلیٰ ترین خصلت و عادت) کے بارے میں سوال کیا گیا ”تو ارشاد فرمایا، ”وہ یہ ہے کہ تو اللہ عزوجل کی رضا کی خاطر محبت اور اسی کی رضا کی خاطر بغض رکھے۔“ عرض کی گئی، ”یا رسول اللہ (صلی اللہ علیہ وسلم) اور کیا؟“ فرمایا، ”اور یہ کہ تو لوگوں کے لئے وہی پسند کرے جو اپنے لئے پسند کرتا ہے اور ان کے لئے وہی ناپسند کرے جو خود اپنے لئے ناپسند کرتا ہے۔“ (احمد)

نیز اس حدیثِ پاک میں بھی سعادت مندوں کے لئے بہت کچھ ہے۔

☆ مروی ہے کہ ایک نوجوان رسول اللہ ﷺ کی بارگاہ میں حاضر ہوا اور

عرض کی، ”یا رسول اللہ (صلی اللہ علیہ وسلم)! مجھے زنا کی اجازت دیجئے۔“ یہ سنتے ہی تمام صحابہ کرام رضی اللہ عنہم جلال میں آگئے اور اسے مارنا چاہا۔ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ اسے نہ مارو۔“ پھر اسے اپنے پاس بلا کر بٹھایا اور نہایت نرمی اور شفقت کے ساتھ سوال کیا، ”اے نوجوان! کیا تجھے پسند ہے کہ کوئی تیری ماں سے ایسا فعل کرے؟“ اس نے عرض کی، ”میں اس کو کیسے روارکھ سکتا ہوں؟“ آپ نے ارشاد فرمایا، ”تو پھر دوسرے لوگ تیرے بارے میں اسے کیسے روارکھ سکتے ہیں؟“ پھر آپ نے دریافت فرمایا، ”تیری بیٹی سے اگر اس طرح کیا جائے تو تو اسے پسند کرے گا؟“ عرض کی نہیں۔“ فرمایا، ”اگر تیری بہن سے کوئی ایسی ناشائستہ حرکت کرے تو؟“ اور اگر تیری خالہ سے کرے تو؟ اسی طرح آپ نے ایک ایک رشتے کے بارے میں سوال فرمایا، اور وہ یہی کہتا رہا کہ مجھے پسند نہیں اور لوگ بھی رضامند نہیں۔ تب رسول اللہ ﷺ نے اس کے سینے پر ہاتھ رکھ کر اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں عرض کی، ”یا الہی عزوجل! اس کے دل کو پاک کر دے، اس کی شرمگاہ کو بچالے اور اس کا گناہ بخش دے۔“ اس کے بعد وہ نوجوان تمام عمر زنا سے بے زار رہا۔ (مشکوٰۃ)

﴿دوسروں کا گھر بگاڑنے والے عشاق کی خدمت میں عرض﴾

ایسے خواتین و حضرات جو دوسروں کے بسے بسائے گھر کو اپنی خواہشات نفسانی کی تکمیل کی خاطر اجاڑنے کی لعنتی کوشش میں مصروف عمل ہیں، اللہ تعالیٰ کے قہر و غضب سے ڈریں۔ کسی کا دل دکھا کر اور اس کی بددعائیں سمیٹ کر خوشیاں حاصل کرنے کی تمنا ایک خواب کے سوا اور کچھ بھی نہیں، جس کی ہولناک تعبیر یا تو دنیا میں واضح طور پر دیکھی جاسکے گی اور یا پھر موت کا ایک زوردار جھٹکا سارے عیش و آرام مٹی میں ملا دے گا۔ لہذا انھیں چاہئے کہ اللہ تعالیٰ کے غضب کو آواز نہ دیں اور

درج ذیل حدیث و واقعے سے عبرت حاصل کریں۔

☆ حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما سے روایت ہے کہ ”رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا، ”مَنْ خَبَّ امْرَأَةً عَلَى زَوْجِهَا فَلَيْسَ مِنَّا۔ یعنی جو شخص کسی عورت کو اس کے خاوند کے خلاف بھڑکائے وہ ہم میں سے نہیں۔ (المعجم الصغير للطبرانی) اس ضمن میں ایک عبرت ناک واقعہ ملاحظہ فرمائیے۔

☆ بادشاہ گونگا، بھرا ہو گیا۔

مروی ہے کہ بنی اسرائیل میں ایک نیک آدمی تھا جو کپڑا بننے کا کام کیا کرتا تھا، اس کی بیوی بنی اسرائیل کی تمام عورتوں سے زیادہ حسین و جمیل تھی۔ جب اس کے حسن کی شہرت اس وقت کے ایک ظالم بادشاہ تک پہنچی تو اس نے ایک بڑھیا کو اس کام کے لئے تیار کیا کہ وہ اس عورت کے پاس جائے اور اسے اس کے خاوند کے خلاف کر دے، اور اس کے لئے یوں کہے کہ ”تو اتنی خوبصورت ہونے کے باوجود ایک کپڑے بننے والے کے پاس کیوں پڑی ہے؟ اگر تو ہمارے پاس ہوتی ہم تجھے سونے سے لاد دیتے، تجھے ریشم پہناتے اور بے شمار نوکر چاکر تیزی خدمت کے لئے مقرر کرتے۔“ بڑھیا نے حسب ہدایت یہ تمام باتیں اس عورت کے سامنے کہہ دیں، ان باتوں نے اس کے دل پر اثر کیا اور وہ اپنے شوہر سے بدظن ہو گئی۔ نتیجتاً اس نے اپنے شوہر کی خدمت کرنا بالکل چھوڑ دی۔ جب شوہر اس سے وجہ دریافت کرتا تو بد اخلاقی سے جواب دیتی، ”بس ٹھیک ہے، جو میں نے کیا ہے وہ تم دیکھ ہی رہے ہو۔“ آخر دل برداشتہ ہو کر نیک شخص نے اس عورت کو طلاق دے دی۔

عورت نے چھٹکارہ پاتے ہی اس ظالم بادشاہ سے شادی رچالی۔ جب بادشاہ جملہ عروسی میں گیا اور پردے چھوڑ دئے تو اللہ کے حکم سے بادشاہ اور یہ عورت دونوں

اندھے ہو گئے، بادشاہ نے چاہا کہ چلو اسے چھو کر تو دیکھ لوں، یہ سوچتے ہی اس کا ہاتھ بھی خشک ہو گیا، پھر عورت نے ہاتھ بڑھا کر اسے چھونا چاہا تو اس کا ہاتھ بھی سوکھ گیا، پھر ان دونوں کو گونگا، بہرا کر دیا گیا اور ان کی شہوت مٹادی گئی۔ جب صبح پردے ہٹائے گئے تو یہ دونوں اندھے، بہرے اور گونگے پائے گئے۔ ان کا یہ معاملہ اس زمانے کے نبی علیہ السلام کے سامنے پیش کیا گیا، انھوں نے اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں عرض کی، تو اللہ تعالیٰ کی طرف سے جواب ملا، ”میں ان کو کبھی معاف نہیں کروں گا، کیا یہ دونوں یہ سمجھتے ہیں کہ جو کچھ انھوں نے کپڑا بننے والے کے ساتھ کیا ہے، میں اسے دیکھ نہیں رہا تھا؟“ (ذم الھوی)

## {حرفِ آخر}

اللہ تعالیٰ کی رحمت سے قوی امید ہے کہ اس ”فعلِ بد انجام“ میں مشغول جس جس مسلمان بھائی یا بہن کا دل ابھی تک زندہ ہے وہ مذکورہ تمام تقاصیل سے ضرور ضرور درسِ عبرت و نصیحت حاصل کرے گا اور حصولِ عبرت کی برکت سے اس کے عمل میں نمایاں تبدیلی واقع ہوگی، لیکن یہ بھی عین ممکن ہے کہ یہ کیفیت وقتی ہو اور کچھ ہی عرصے بعد یہ تمام باتیں ذہن سے فراموش ہو جائیں، جس کے باعث نفس دوبارہ گندگی کی طرف مائل کرنے کے لئے زور لگانا شروع کر دے۔

اس مشکل کا حل فقط یہ ہے کہ انسان خوب ہمت کر کے استقامت کے ساتھ اپنے نفس سے جہاد کرتا رہے اور اس جہاد میں آسانی و سہولت کے لئے ضروری ہے کہ اس کتاب کا بار بار مطالعہ کرے، اپنی صحبت اچھی رکھے اور بری صحبت سے فوراً جان چھڑائے۔ آگے اللہ تعالیٰ کی رحمت بہت وسیع ہے، وہ کسی کی محنت کو رائیگاں نہیں جانے دیتا۔ اس ضمن میں ایک ایمان افروز واقعہ رقتِ قلبی کے ساتھ پڑھنے کی

سعادت حاصل کیجئے۔

☆ افسوس کی بات ہے :-

حضرت ابو حفص حداد رضی اللہ عنہ ابتداء میں ایک لوٹدی پر عاشق ہو کر اپنے صبر و قرار کو کھو بیٹھے۔ کسی نے آپ کو بتایا کہ ”فلاں علاقے میں ایک یہودی رہتا ہے، وہ بہترین جادو جانتا ہے۔ وہ یقیناً تم کو تمہاری مطلوبہ سے ملا دے گا۔“ آپ فوراً اس یہودی کے پاس پہنچے اور اپنا تمام حال بیان کیا۔ اس یہودی نے کہا کہ ”تمہارا کام ہو جائے گا لیکن اس کی شرط یہ ہے کہ انتم چالیس دن تک کسی بھی قسم کا نیک عمل نہیں کرو گے، پہلے اس پر عمل کرو پھر میرے پاس آنا۔“ آپ نے اس شرط کو قبول کر لیا، چالیس دن حسب شرط گزارنے کے بعد آپ اس کے پاس پہنچ گئے۔ اس نے جادو کرنا شروع کیا، لیکن اس کا کوئی اثر مرتب نہ ہوا۔ کئی مرتبہ کوشش کرنے کے بعد اس نے کہا کہ ”ہو نہ ہو، تم نے ان چالیس دنوں میں کوئی نہ کوئی نیکی ضرور کی ہے، ورنہ میرا جادو کبھی ناکام نہ جاتا۔“ آپ نے فرمایا، ”ویسے تو مجھے کوئی قابل ذکر چیز یاد نہیں، ہاں ایک دن راستے میں پڑے ہوئے پتھر کو اس خیال سے ایک طرف کر دیا تھا کہ کوئی مسلمان بھائی اس سے ٹکرا کر زخمی نہ ہو جائے۔“ یہ سن کر اس جادو گرنے کہا، ”کس قدر افسوس کی بات ہے کہ آپ اس پروردگار کی عبادت کو چھوڑ بیٹھے ہیں کہ جس نے آپ کے ایک معمولی سے عمل کو وہ شرف قبولیت بخشا کہ میرا جادو مکمل طور پر ناکام ہو گیا؟“ اس بات سے آپ کے دل میں ایک آگ سی لگ گئی، فوراً توبہ کی اور اللہ تعالیٰ کی عبادت میں مشغول ہو کر کچھ ہی عرصہ میں درجہ ولایت پر فائز ہو گئے۔“ (تذکرۃ الاولیاء)

ذہنی پاکیزگی، اچھی صحبت اختیار کرنے اور بری صحبت سے محفوظ رہنے کے لئے ”دعوتِ اسلامی“ کے غیر سیاسی ماحول سے وابستگی بہت ضروری

ہے، ان شاء اللہ تعالیٰ عزوجل کچھ عرصہ باقاعدہ اس ماحول میں شرکت و وقت گزارنا، انسان کے علم و عمل و قلب و دماغ میں انقلابی تبدیلیاں پیدا کر دیتا ہے۔ آزمائش شرط ہے۔

یہ بھی عین ممکن کہ ماحول کے قریب آنے کے باوجود ”محبوب شخصیت“ کی یاد مکمل طور پر دل سے محو نہ ہو اور طبیعت بار بار اس کو دیکھنے یا اس سے ملاقات کی جانب مجبور کرے۔ یقیناً اس قسم کی کیفیات کے وارد ہونے پر انسان کو قابل گرفت نہیں ٹھہرایا جاسکتا، کیونکہ ان پر بالکل توجہ نہ کرنا اس کے بس سے باہر ہے، ہاں ایسی صورت میں اس پر ایسے اعمال کا اختیار کرنا لازم ہے کہ جن کے باعث طبیعت کا تقاضا بدل جائے۔

اس مشکل کا بھی ایک بہترین حل موجود ہے۔ اس حل کو جاننے سے پہلے یہ بات اچھی طرح سمجھ لیجئے کہ جس مقام یا شخصیت سے انسان کو کسی قسم کی جذباتی وابستگی ہو ”اس کی یاد“ اور ”اس کی طرف سے اپنے دل کے میلان کو دور“ کرنے کا مسلم اصول یہ ہے کہ ایسا شخص اس مقام یا شخصیت سے کچھ عرصہ کے لئے بہت دور چلا جائے اور اس دوسرے مقام پر جا کر خود کو کسی نیکی کے کام میں مصروف و مشغول کر دے۔ جب اسے ”دوری“ اور ”ذہن کو کسی اچھے کام میں مشغولیت“ کی دولت حاصل ہوگی، تو ان شاء اللہ تعالیٰ کچھ ہی عرصے میں خود دیکھے گا کہ جس کام کو اس نے بہت زیادہ دشوار گزار تصور کیا تھا، اللہ تعالیٰ کی رحمت سے بے حد آسان ہو گیا ہے۔ مذکورہ اصول درج ذیل حدیث پاک سے ماخوذ ہے۔

قاتل کی مغفرت ہو گئی :-

رحمت عالم ﷺ ارشاد فرماتے ہیں کہ ”تم سے پہلے لوگوں میں

ایک آدمی تھا جس نے ننانوے قتل کئے۔ پھر اسے توبہ کا خیال آیا، وہ ایک عابد کے پاس پہنچا اور اس سے پوچھا کہ کیا میری توبہ ہو سکتی ہے؟ ”اس نے کہا، ”نہیں۔“ اس آدمی نے اسے بھی قتل کر دیا۔ پھر اس نے ایک عالم سے دریافت کیا کہ ”میں نے سو قتل کئے ہیں کیا میری توبہ کی کوئی صورت ہے؟“ اس نے کہا، ”ہاں، تیرے اور توبہ کے درمیان کون حائل ہو سکتا ہے؟ لیکن اس کے لئے فلاں علاقے میں چلا جا، وہاں کچھ لوگ اللہ تعالیٰ کی عبادت کر رہے ہوں گے، تو بھی ان کے ساتھ مل کر اللہ عزوجل کی عبادت کر، اور اپنے علاقے کی طرف مت آنا یہ بروں کا علاقہ ہے (چنانچہ اگر تو یہیں رہا تو پھر گناہوں میں مشغول ہو جائے گا۔)۔“ یہ سن کر وہ توبہ کے ارادے سے مذکورہ علاقے کی طرف چلا۔ ابھی نصف راستہ ہی چلا تھا کہ ملک الموت علیہ السلام تشریف لے آئے اور اس کی روح قبض کرنی۔

اب (مثبت الہی کے تحت) رحمت اور عذاب کے فرشتوں کے درمیان جھگڑا ہو گیا۔ رحمت کے فرشتوں کا کہنا تھا کہ یہ شخص توبہ کے ارادے سے اس طرف آیا ہے۔ جب کہ عذاب کے فرشتوں کا کہنا تھا کہ ”اس نے کبھی نیکی کا کام نہیں کیا۔“ (ابھی یہ جھگڑا جاری تھا کہ اللہ عزوجل کے حکم سے) ایک فرشتہ انسانی شکل میں آیا۔ انہوں نے اسے اپنے درمیان فیصلہ کرنے کے لئے کہا۔ اس فرشتے نے کہا کہ ”تم دونوں طرف کا فاصلہ ناپو، یہ جس علاقے سے قریب ہو گا، اس طرف کے فرشتے اسے اپنے ساتھ لے جائیں گے۔ جب فاصلہ ناپا گیا تو وہ اس علاقے سے زیادہ قریب تھا کہ جس کا اس نے ارادہ کیا تھا۔ اور ایک روایت میں ہے کہ ”وہ نیک لوگوں سے ایک بالشت قریب تھا لہذا اسے انہی میں سے کر دیا گیا۔ (متفق علیہ)

اب اگر کوئی مسلمان بھائی یا بہن اپنے دل سے کسی نامحرم کا خیال دور کرنا



چاہے تو اسے چاہیے کہ فوراً کسی سفر پر روانگی کا ارادہ کر لے۔ اس کے لئے مسلمان بہنوں کو تو کسی دور دراز علاقے میں رہنے والے رشتہ دار کے ہاں کچھ عرصہ گزارنا چاہیے، لیکن کوشش یہ ہو کہ یہ وقت فضول کاموں میں ضائع نہ ہو بلکہ وہاں خوب نیک اعمال کا ارتکاب کرنے کی کوشش کریں، اچھی صحبت اختیار کریں اور بہت بہتر ہے کہ اپنے ساتھ اصلاحی موضوعات پر مشتمل کتابیں بھی ضرور لے کر جائیں اور وقتاً فوقتاً ان کا مطالعہ کرتی رہیں۔ جب کہ مسلمان بھائیوں کے لئے راقم الحروف کا مخلصانہ مشورہ ہے کہ آپ اپنی آخرت کی بھلائی کے حصول کے لئے اپنا قیمتی وقت نکال کر ”دعوتِ اسلامی“ کے سنتوں کی خدمت کے لئے روانہ ہونے والے مدنی قافلوں کے ساتھ سفر کرنے کی سعادت ضرور حاصل کیجئے۔ اگر ”مرض میں بہت زیادہ شدت“ محسوس ہو تو اولاً کم از کم تیس دن کے قافلے میں سفر فرمائیں، اور اگر شدت میں کمی ہو تو ہر ماہ تین دن کے لئے شرکت کرنے کی عادت بنا لینا بھی کافی رہے گا۔ ان شاء اللہ عزوجل

”پہلی ہی خوراک“ میں خاطر خواہ فائدہ محسوس ہوگا۔

نیز تمام مسلمان بھائیوں اور بہنوں کی خدمت میں پر خلوص درخواست ہے کہ ”اپنے اپنے شہروں میں منعقد ہونے والے ”دعوتِ اسلامی“ کے ہفتہ وار اجتماع میں بھی ضرور شرکت کریں اور اپنی اور اپنی نسلوں کی آخرت کو ہر قسم کے خطرات سے محفوظ فرمائیں۔

اللہ تعالیٰ اپنے محبوب ﷺ کے وسیلہٴ جلیلہ سے ہمیں صرف اور صرف اپنی، اپنے حبیبِ کریم ﷺ اور دیگر مقربینِ بارگاہ کی محبت و الفت میں زندگی گزارنے اور ہر قسم کی ناجائز محبت و قربت سے بچنے کی توفیق عطا فرمائے۔

امین بجاہ النبی الامین ﷺ

## ﴿خصوصی توجہ فرمائیے﴾

زندگی کے روزمرہ معمولات کے بارے میں عموماً اور عبادات کے سلسلے میں خصوصاً قرآن و حدیث سے رہنمائی حاصل کرنا بے حد ضروری ہے۔ تعلیمات قرآن و حدیث کو چھوڑ کر اپنی عقل سے مسائل کا حل تلاش کرنا انسان کو گمراہی اور بعض اوقات کفر تک پہنچا دیتا ہے۔ اس حقیقت کو تسلیم کرنے کے بعد ہر مسلمان کو چاہئے کہ قرآن و حدیث سے اخذ شدہ مسائل کو زیر مطالعہ رکھے تاکہ کسی بھی معاملے میں گمراہی کا شکار ہونے سے محفوظ رہ سکے۔

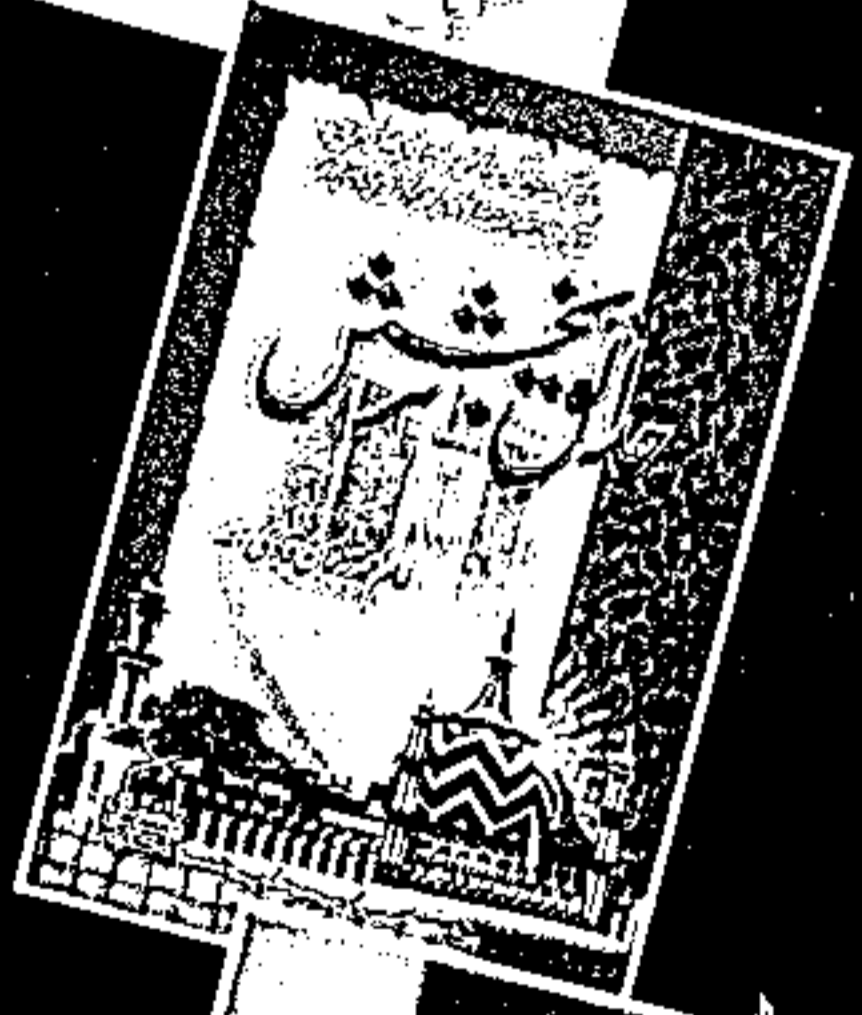
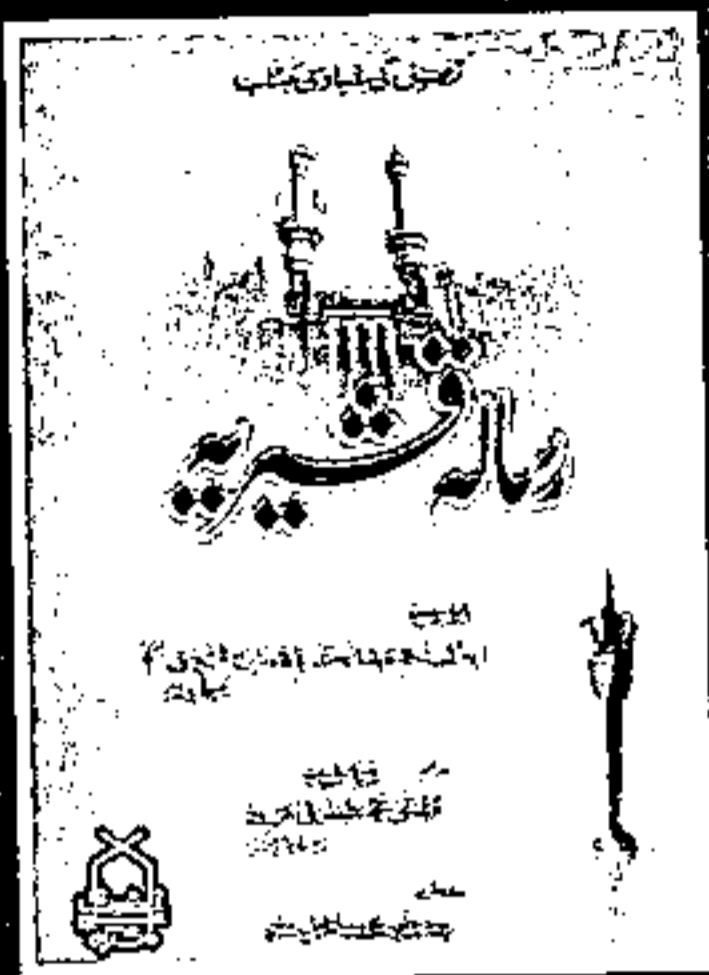
مکتبہ اعلیٰ حضرت (رضی اللہ عنہ) نے عوام کی اسی ضرورت کے پیش نظر ”اعلیٰ حضرت (رضی اللہ عنہ)“ کے شہرہ آفاق فتاویٰ کے مجموعے ”فتاویٰ رضویہ“ سے اخذ شدہ مختلف مسائل کو ”رہنمائے کامل“ کے نام سے آسان ترین شکل میں پیش کرنے کا سلسلہ شروع کیا ہے۔

جس کا طریقہ کار یہ ہے کہ پہلے اصل فتویٰ بعینہ لکھا جاتا ہے، پھر اس کے وضاحت طلب امور کی وضاحت کے لئے وضاحت و خلاصہ کے عنوان کے تحت وضاحت بیان کی جاتی ہے، پھر نفس مسئلہ کو مزید آسان کرنے کے لئے ”نقشہ جات“ کا استعمال کیا جاتا ہے۔ وضاحت و خلاصہ اور نقشہ جات کی وجہ سے مسئلہ اتنا آسان ہو جاتا ہے کہ ایک عام مسلمان بھائی بھی باسانی مسئلے کو سمجھنے اور سمجھانے کی سعادت حاصل کر سکتا ہے۔

ابھی تک اس سلسلے کے چار (4) رساں عوام و خواص میں شرف قبولیت حاصل کر چکے ہیں۔ اگر آپ بھی قرآن و حدیث سے اخذ شدہ مستند و معتبر مسائل کی روشنی میں اپنی زندگی کے معمولات کے بارے میں ہدایت و رہنمائی حاصل کرنا چاہیں تو ان رساں کو فوراً سے پہلے حاصل فرما کر زیر مطالعہ رکھئے۔ ان شاء اللہ عزوجل امید قوی ہے کہ بے شمار معاملات میں غلطیوں سے محفوظ رہنے یا توبہ کرنے کا موقعہ ضرور حاصل ہوگا۔

مکتبہ اعلیٰ حضرت سرائے مغل جناز گاہ مزنگ لاہور



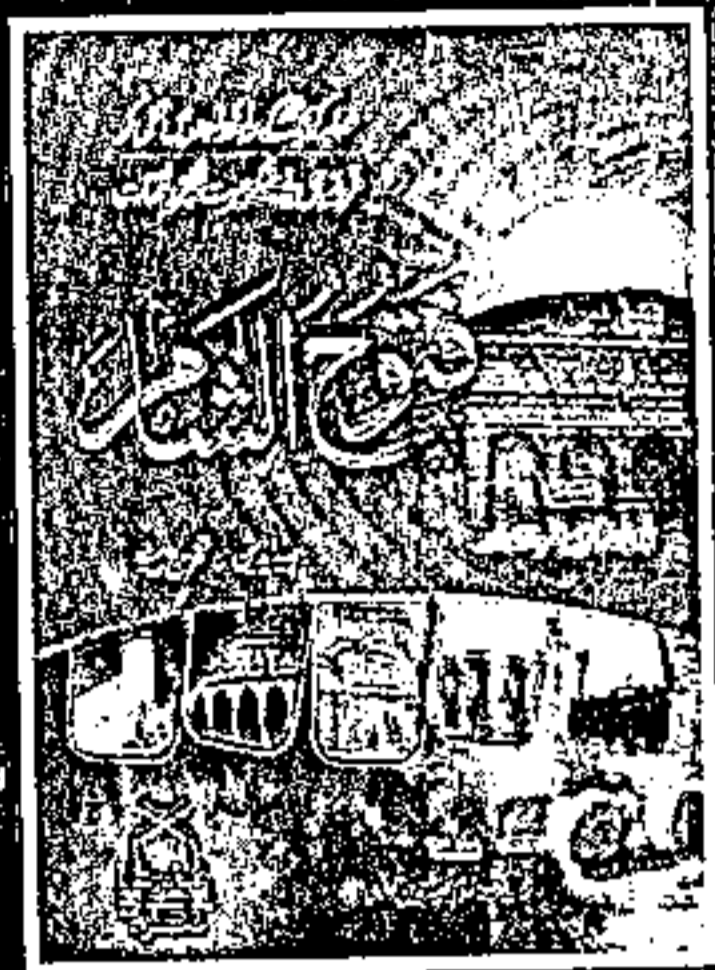
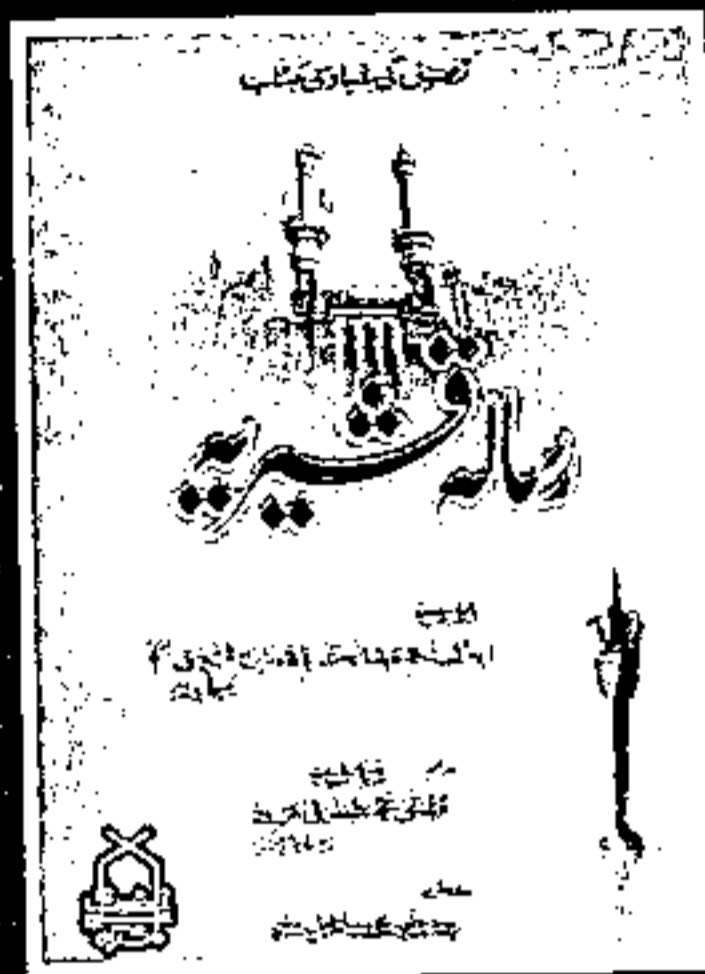


مکتبہ عالی حضرت

داتا دربار مارکیٹ، لاہور

042-377247301  
0300-8842540

Marfat.com



داتا داربار مارکیٹ، لاہور

042-37247301  
0300-8842540

مکتبہ عالیہ حضرت

